CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

आत्मनिवेदन

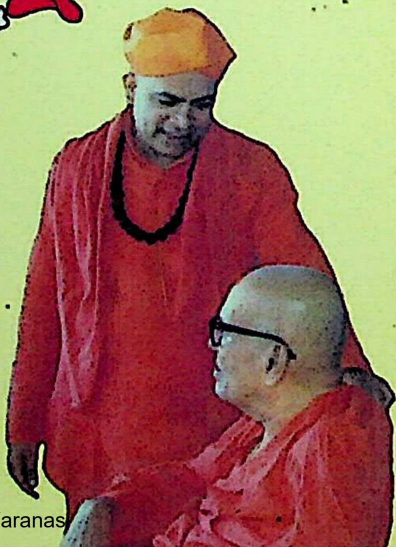

श्रीमदुज्जयिनि सद्धर्म सिंहासनाधीश

श्री तरलबालु जगद्गुरु

श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
४.३

आत्मनिवेदन

संपादक:

श्रीमदुज्जयिनि सद्धर्मसिंहासनाधीश

श्री तरळबाळु जगद्गुरु

डॉ. शिवमूर्ति शिवाचार्य महास्वामीजी

श्री तरळबाळु जगद्गुरु बृहन्मठ
सिरिगेरे - ५७७ ५४१, चित्रदुर्ग जिल्ला, कर्नाटक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ATMA NIVEDAN
(Cry of the Inner Self)

Spiritual Experiences of His Holiness Sri Taralabalu Jagadguru Sri Shivakumara Shivachary Mahaswamiji as recorded in his diaries of the year 1937 and 1938. Edited by his successor: His Holiness Sri Taralabalu Jagadguru Dr. Shivamurthy Shivacharya Mahaswamiji.

Publishers : Sri Taralabalu Jagadguru Brihnmath
SIRIGERE - 577 541
Chitradurga Dist
Karnataka

Pages : 332

Edition : First Edition (Hindi Translation) Sept, 2015
Edition : Second Edition (Hindi Translation) Dec, 2015

Copies : 500

E-mail : swamiji@taralabalu.org

Telephone : 08194-268829, 268842

Copyright : Sri Taralabalu Jagadguru Brihnmath
Sirigere

Price : 150
Printer : Sharada Bhavan, Agutsya Kund, Varanasi

मूल्य: 150

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारुण्यसागर गुरो! गुरुशांतदेव!
सत्याग्रदारुक! नताखिलकल्पशाखिन्!
पृथ्वीतले प्रविचरन् तवकीर्तिचन्द्रः
आनन्दयेदिहजनं कमिवातिवेलम्।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भक्तिपूर्वक समर्पण

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरंग

अनुवादकों की बातें 9

सम्पादक की बातें 14

1937

१. परिताप - पुकार 49

२. विचार - विश्वास 61

३. स्वाध्याय 73

४. शरणागति 77

५. स्थिरता और संतृप्ति 99

६. सद्गुरु श्रीरक्षा 107

▪ ज्ञापक पत्र 112

1938

▪ मुमुक्षु के जमा-खर्च का ब्यौरा 116

७. विपत्ति-दिव्यानुग्रह 121

८. त्रिरत्न : सत्य -ब्रह्मचर्य-परोपकार 133

९. अधम गुरुजन-नीच शिष्य जन 147

१०. षड्यंत्र-आहुति 157

▪ श्रद्धाञ्जलि 161

(११ – १६) ------>

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११. संस्मरणम् 163
१२. श्रीगुरुवन्दना 167
१३. समस्यापूर्तिः 177
१४. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 181
१५. पत्रावलिः 195
१६. श्रीगुरुःशरणम् 209

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुवादकों की बातें

हम अपना अहोभाग्य समझते हैं कि 'आत्मनिवेदन' जैसी अमूल्य कृति के अनुवाद का यह पवित्र कार्य हमारे हाथ लगा है। यह प्रातःस्मरणीय लिंगैक्य तरळबालु वीसवें जगद्गुरु श्री ११०८ शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामी महाराजजी के पवित्र संकल्प शक्तियों का अमूल्य संग्रह है। जो हृदय के अन्तर्गत भावों से परिपूर्ण अत्यंत हृदयाह्लादक और निष्कल्मश प्रस्तुति है। जिसे वर्तमान जगद्गुरु परमपूज्य श्री ११०८ डा. शिवमूर्ति शिवाचार्य महास्वामीजी बड़ी श्रद्धा से उन्हें अपने सिर आँखों पर लगाकर अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं। आप केलिए उसका मिलना क्या है? मानों अपने गुरुवर्य के प्रसाद से ही विरासत के रूप मे आपको उपलब्ध 'तत्वनिधि' ही है। इस निधि को कीड़े-मकोड़े जैसे चोर लुक-छिपकर चोरी करके उठा ले जा रहे थे। आपने (गुरुवर्य) ऐन मौके पर वहाँ पहुँचकर, उन चोरों से उस प्रसाद निधि को छीनकर, उसे अपने वश में कर लिया। अपनी विरासत को दूसरा कोई हड़पने लगेगा तो, कोई मौन होकर देखता रहेगा? नहीं न?

अतः गुरु से शिष्य को (वर्तमान जगद्गुरुवर्य को) प्रसाद के रूप में उपलब्ध इस ग्रंथ को 'प्रसाद ग्रंथ' क्यों न कहा जाय? अपने गुरु से उपलब्ध इस प्रसाद को केवल अपने लिए ही बचाकर रखना स्वार्थ हो जायेगा न? जगद्गुरु जैसे उदार गुणी से यह कभी संभव होगा? नहीं, कदापि नहीं। अतः आपने इसे सर्वलोक हिताय विनियोग कर दिया। वर्तमान जगद्गुरुवर्य के अभिमतानुसार, यह ग्रंथ लिखने के उद्देश्य को लेकर लिखा गया ग्रंथ तो नहीं है। यह अभिमत न केवल आप अकेले का है, अपितु सार्वजनिक है। ये सारे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवेदन, जगत् कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। आदर्श समाज के निर्माण को अपना प्रधान लक्ष्य मानकर चलनेवाले को उस पथ पर उगे कांटेदार झाड़ों को निष्ठुरता से उखाड़ फेंकना ही होगा; तथा इस दिशा में आनेवाले दुश्चक्र के दमन केलिए भी तैयार रहना होगा। इसकेलिए अपरिमित स्थैर्य एवं साहस की आवश्यकता होती है। 'आत्मनिवेदन' के कर्ता इन साहस एवं स्थैर्य गुणों के प्रतिमूर्ति तो थे ही। इन निवेदनों का सिलसिला धीरे-धीरे क्रमशः बढ़ते-बढ़ते उस सीमा तक पहुँच गया है कि ये निवेदन क्या? परिपक्व हृदय(आत्मा) अर्थात् सम्पूर्ण संतृप्त आत्मा की आवाज हैं। इन उदारों के स्थित्यंतर को देखते हुए हमें यह उपनिषद् वाणी याद आ रही है "ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते"। इसका अनुभव, पाठकगण को अपने आप ही हो जायेगा, जव वह इन निवेदनों के बीच में से होकर गुजरने लगेगा। इस कृति के बारे में और कुछ कहना उचित नहीं होगा। क्योंकि हम जो कुछ भी कहें वह अपूर्ण ही होगा; पूर्ण नहीं हो पायेगा। आत्मनिवेदन के कर्ता, अपने अनुभवों से स्वयं संतुष्ट होकर कहते हैं कि "इस (आत्म निवेदन) को जो कोई भी पढ़ेगा उसका जन्म धन्य हो जायेगा"। यह बात शत-प्रतिशत सत्य है और तथ्यपूर्ण भी है।

श्री तरळबाळु जगद्गुरु २१ वें श्री शिवमूर्ति शिवाचार्य महास्वामीजी के सन्निधान में इस कृति के हिन्दी अनुवाद कार्य का श्रीगणेश हुआ है। अतः हम अनुवादकों का मानना है कि यदि इस कार्य में कहीं भी यत्किंचित् दोष होंगे तो वे अनुवादकों के होंगे, गुण परमपूज्य जगद्गुरु महास्वामीजी के। ऐसी स्थिति में, यह बात एक प्रश्न बनकर अपने उन अनुवादकों के मन का दरवाजा बार-बार खटखटा रही है और चेतावनी दे रही है कि तुम लोग जैसे कच्चे अनुवादक इस गुरुतर कार्य को कैसे संभाल सकोगे? अतः कार्यारम्भ से पहले खूब सोच विचार कर कदम उठाओ। नहीं तो लेने के देन पड़ जायेंगे। हाँ, यह बात तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्ण रूप से सच है। फिर भी अपना मन इस कार्य से अपना मुँह मोड़ना नहीं चाहता। उनकेलिए यह प्रयोग दूसरा प्रयोग है न? पहले प्रयोग के उत्साह वर्धक प्रोत्साहन ने इनके आत्मविश्वास को और बढ़ा दिया है। परिणाम स्वरूप हम तीनों अनुवादकों ने यह दृढ संकल्प कर लिया है कि जो भी हो, हम यह काम करके ही रहेंगे। क्या आप लोग जानते हैं कि हमारे इस दृढ संकल्प का बलवत्तर कारण क्या है? यह कारण मामूली नहीं है; इस आत्मनिवेदन के कर्ता प्रातःस्मरणीय लिंगैक्य जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी के बलवत्तर आशीर्वाद हमें प्राप्त हैं; जिनके बल से वज्रादपि कठोराणि के सदृश विघ्न-बाधाएँ भी झंझावात के तिनके के समान अपने आप उड़ जाएँगी और उस परम दिव्य आत्मा को साष्टांग प्रणिपात करते हुये कीर्तिर्यस्य स जीवति रूपी यशः काय को साक्षी मानकर हम तीनों इस कार्य कर रहे हैं। हम तीनों का पूरा-पूरा विश्वास है कि उनके आशीर्वाद ही इस कार्य को सुसंपन्न करा देंगे।

हम तीनों अनुवादक उन उत्तर भारतीय हिन्दी भाषा-भाषी भाई-बहनों से विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आप लोगों की हिन्दी सुमधुर एवं लालित्य पूर्ण हुआ करती है जिसके माधुर्य का रसास्वादन कर आप लोगों की जिह्वा भी उस माधुर्य की प्रेमी बनकर उसी की अनुभवी भी बन चुकी है। ऐसी स्थिति में हम लोगों की यह नीरस एवं तीखी हिन्दी आप लोगों को कैसे पसंद आएगी? अपनी इस हिन्दी के स्पर्श मात्र से ही आप लोगों की जीभ अहा! उहूँ करने लगेगी और लालारस उगलने लगेगी। हम सारे पाठक बन्धुओं से एक और विनम्र निवेदन करना चाहते हैं कि आप लोग कृपया इस 'आत्मनिवेदन' को और साथ ही साथ इन अनुवादकों को भी अपना समझ लें, इस अनुवाद में जो दोष दृष्टिगत हों उनके लिये क्षमा करें यदि उन दोषों को निष्पक्ष रूप से हमें बता देने की कृपा करेंगे तो हम अगले संस्करण में उनका सुधार कर सकें।

हम तीनों अनुवादक, परमपूज्य जगद्गुरुवर्य के बड़े आभारी हैं; जिन्होंने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हम तीनों को `आत्मनिवेदन' के अनुवाद कार्य सौंपकर हम लोगों पर बड़ी कृपा की है।

अत्यन्त सहृदयी डॉ. विनोदराव पाठक जी का हम बडा आभार मानते हैं; जिन्होंने अनुवाद से लेकर, इसकी छपाई, कला विन्यास आदि-आदि कार्यों में हर तरह से सहायता पहुँचायी है। यह सहायता यथार्थ भी है। आत्मनिवेदन के कर्ता शिवैक्य जगद्गुरुवर्य के विद्यागुरु आप ही के प्रातःस्मरणीय पिता श्री गौरीनाथ पाठक थे; जो अपने समय में वाराणसी के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों में से एक थे। कई ग्रंथों के लेखक, अनुवादक, संपादक-एवं प्रकाशक भी थे। डॉ.विनोदराव पाठक जी अपने पिताश्री के सारे कार्यों को विरासत के रूप में अपनाकर आगे बढ़ा रहे हैं। आप काशी हिंदू विश्वविद्यालय के श्री रणवीर संस्कृत् कालेज में साहित्य के वरिष्ठ प्राध्यापक हैं अपने इस अनुवाद कार्य में हाथ बंटाया जिससे यह कार्य पूर्ण हो सका, अतः हम आपके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

हमने इस अनुवाद कार्य के सिलसिले में पाठक जी को बहुत कष्ट दिया है, इसके लिए हम उनसे क्षमा चाहते हैं और उनके इस हार्दिक सहयोग एवं सहकार के लिए चिर कृतज्ञ हैं। इस आत्मनिवेदन का डिटिपि करनेवाले प्रभुदेव जि.डि.·आर्शिवाद कंपूर्टस्, सिरिगेरे को हमारि कृतज्ञता हैं।

अंत में, इस महनीय कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग केलिए उन सबका आभार मानते हैं जिनके सहकार्य से इस कार्य को पूर्णकर पाये हैं।

भवदीय विनम्र अनुवादक

निदिगे विश्वकुमार शर्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निवृत्त हिन्दी पण्डित
श्री तरलबालु जगद्गुरु विद्यालय
सिरिगेरे, चित्रदुर्ग जिल्ला, कर्नाटक।

डा. एम्. ईश्वर शर्मा
निवृत्त हिन्दी पण्डित
श्री मैसूरू बसवय्य महा विद्यालय
सिरिगेरे, चित्रदुर्ग जिल्ला, कर्नाटक।

बी.एन्. गोविन्द राव्
निवृत्त हिन्दी पण्डित
श्री बी. लिंगय्या पदवि पूर्व विद्यालय
सिरिगेरे, चित्रदुर्ग जिल्ला, कर्नाटक।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री गुरुभ्यो नमः

आत्मनिवेदन

सम्पादक की बातें

-१-

पचासवाँ दशक था। तव हम प्राथमिक पाठशाला में पढनेवाले एक गाँव के लड़के थे। हमारा जन्म स्थान तुंगा और भद्रा नदियों के संगम स्थान पर स्थित एक छोटा-सा गाँव जिसका नाम है `सूगूर' । वहाँ से आठ मील दूरी पर शिवमोग्गा नाम के एक शहर और आसपास के दो चार गाँवों को छोड़कर हमें अन्य स्थानों का परिचय नहीं के वरावर था। साथ ही साथ हमें इस बात का भी पता नहीं था कि दुनियाँ इतनी विशाल है। भूगोल में विभिन्न देशों के जन-जीवन, उद्योग, पानी, फसल आदि के बारे में पढ़ा जरूर था लेकिन वे सव परीक्षा में उत्तर देने के लिए सीमित थे। वास्तविक स्वरूप की कल्पना विलकुल नहीं थी।

पास के गावँ में एक गुरुवर्य पधारे थे। उनके सामने हमने कुछ भक्ति गीत गाये। सुनकर गुरुवर्य वहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पूछा कि यह वालक कौन है? पास में वैठे हुए एक सज्जन ने हमारा परिचय दिया। वातें करते-करते उस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सज्जन ने गुरूजी से निवेदन किया कि इस वालक को संगीत में अत्यधिक अभिरुचि है। शिवमोग्गा शहर के बाजार में रास्ते पर नारियल के छिलके से बने बेला बजाते हुए एक भिक्षुक को देखा। बस क्या था? घर आने पर यह वालक भी उसी प्रकार के प्रयत्न में लगा। गुरूजी ने हँसकर हम से कहा कि अपने मठ में एक अच्छी वायलिन है जिसे हम लौटने के वाद भिजवा देंगे। अच्छी तरह से सीख लो। दूसरे दिन ही हरा रंगवाली `गजानन` नाम के बस से एक वायलिन आ ही गई। जिसे भेजनेवाले और कोई नहीं थे अपितु वे हमारे परमाराध्य गुरुवर्य श्री तरलवालु जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी । न जाने उनके द्वारा भेजे गये उन वायलिन के तारों में कौन सा जादू था! वह तो हमें गुरुदेव के पवित्र सान्निध्य की ओर दिन प्रति दिन निकट से निकटतर खींचती ले गयी।

- २ -

सत्तर का दशक। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में डाक्टरेट उपाधि के लिए 'सूत संहिता' पर तैयार किया गया अपना संशोधन प्रवंध (thesis) समाप्ति के स्तर पर पहुँच चुका था। अपने प्रवंध की निर्देशिका (research guide) थी प्रोफेसर पद्मा मिश्रा। जो लंदन नगर में पढ़कर डाक्टरेट् उपाधि प्राप्त एक सुसंकृत भारतीय महिला थीं। वे बहुत सात्विक स्वभाववाली थी और उत्तर भारत की आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए केन्द्र बिन्दु माँ आनन्दमयी की शिष्या भी थीं। हमेशा सफेद साड़ी पहननेवाली प्रोफेसर पद्माजी हमारे लिए तो साक्षात् विद्या सरस्वती-सी नजर आती रहीं। हमारे संशोधन प्रवंध के हर एक अक्षर को ही नहीं पूर्णविराम, अर्धविराम, प्रश्नार्थक आदि चिह्नों (punctuation) पर भी नजर दौड़ाकर, उन्हें शुद्ध करने से वे कभी नहीं चूकनेवाली थीं। वे हमें कहा करती थीं कि जो भी आप लेख लिखें उसको दूसरों को पढने दें। अगर वह पढने के वाद आपके विचारों को ठीक ठीक समझ लें तब आपका लेख ठीक है। अगर वह गलत समझ लें तो आपको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपना लेख सुधारना होगा। इसका कारण यह था - उन्होंने प्रशिक्षण पाया था पाश्चात्य संस्कृत विद्वान् ए. एल्. बाशम (A.L.Basham) से जो लंदन में उनके प्रोफेसर रहे। भारत का `म्लेच्छ' मित्र[1] बनकर उन्होंने (A.L.Basham) "The Wonder that was India" नामक एक अद्भुत ग्रंथ लिखा था। वे आँग्ल देश के विश्वविख्यात संस्कृत के विद्वान् भी थे। वे एक दो बार बनारस भी आये थे। तब उन्हें प्रोफेसर पद्माजी के घर में देखा था। उनके अद्वितीय पांडित्य से[2], सरल सज्जनता से हम बहुत प्रभावित हुए थे। लदंन में जब पद्माजी को डाक्टरेट की उपाधि मिली थी तब उन्होंने पद्माजी को एक अंग्रेजी पुस्तक भेंट में दी थी। उस ग्रन्थ के प्रारंभिक पृष्ठ पर प्रोफेसर ए. एल्. बाशम जी ने संस्कृत में ही लिखा था – `इदं पुस्तकं मिश्रकुलपद्मायै लदंन-नगरे डाक्टरेट-पद-प्रास्त्यवसरे तदध्यापकेन सादरं समर्पितम्'। पद्मामिश्रा नाम को मिश्रकुलपद्मायै (मिश्रनामक कुलके पद्मस्वरूप) इस प्रकार काव्यमय भाषा में लिखा गया संस्कृत वाक्य हमारे आकर्षण का मूल कारण

---

1 ......a friendly mleecha, who has great love and respect for the Civilization of their lands (p.vii) इस प्रकार प्रोफेसर ए एल बाशम जी स्वयम् अपने ग्रंथ के प्रास्ताविक में लिखते हैं।

2 The Wonder that was India नामक पुस्तक में वीरशैवों में मृतकों को जलाने की नहीं समाधि (गाड़ना)बनाने की प्रथा है। इन बातों को लिखते हुए अपने शंकायुक्त अभिमत को इस प्रकार व्यक्त करते हैं कि बसवण्णा पर मुसल्मानों का प्रभाव हुआ। "It is possible that he was influenced by what he had heard of Islam" (पृ.336) इस विषय का स्पष्टीकरण करते हुए हमने प्रोफेसर साहब से पूछा कि प्राचीन द्राविड संस्कृति मे गाड़ने की प्रथा थी न? आज भी हिंदू संन्यासियों को सामाधि दी जाती है, जलाते तो नहीं न? इष्टलिंग दीक्षा से नर जन्म मिटा कर, शिव जन्म को प्राप्त करने के कारण से, कायक ही कैलाश (काय ही कैलास-याने मुक्ति धाम है) इस तत्व का बोध करनेवाला वीरशैव, इस प्रकार तात्त्विक रूप से संन्यासियों का जो मान्यता प्राप्त थी, उसे सांसारिक लोगों को क्यों न दिया गया हो? इस प्रश्न के उत्तर में प्रोफेसर ए एल बाशम ने तुरंत अपने मुँह से पीते हुए सिगार पइप को निकाल कर मुस्कुराते हुए कहा "My dear boy! When I wrote that book I thought it to be so. Now it is for you to make a deep study and refute it!"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था। विदेशी होने पर भी संस्कृत भाषा और साहित्य में उनका असामान्य जो पांडित्य था उसे देख़ हमने दाँतों तले ऊंगली दवाई थी।

हमारे शोधकार्य (संशोधन) में उत्साह बढ़ानेवाले दूसरे विद्वान् थे उस समय के संस्कृत विभाग के प्रधान -मयूरभंज प्रोफेसर डा. सिद्धेश्वर भट्टाचार्य, जो बंगाली थे। आप भी मूर्धन्य विद्वान् थे। लंदन में ही अध्ययन करके "The Philosophy of Srimad Bhagavata" नामक विषय पर एक प्रौढ़ प्रबंध की रचना कर आपने डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। देखने में वे अंग्रेज जैसे लगते थे। अंग्रेजी में वे बहुत अच्छा बोलते थे। अगर संभाषण संस्कृत में हो तो संस्कृत में ही बोलते थे। एक बार कक्षा में मुस्कुराते हुए विद्यार्थियों से वे कह रहे थे "वयं कोट्-प्यांट्-धारिणः संस्कृतं ब्रूमः ... भवन्तोऽपि गीर्वणवाण्यां कथयन्तु"।

और एक बार संस्कृत विभाग के एक सेमिनार में अध्यापकों के बीच किसी विषय को लेकर एक अहितकर घटना घटी । उस समय आपने फटकारते हुए कहा था कि "जो दस साल संस्कृत पढ़ते हैं वे गधे होते हैं"। हम सोचने लगे कि यदि ऐसी वात है तो दस वर्षों से भी अधिक काल तक संस्कृत पढाकर जो प्रोफेसर बने हुए हैं, उन्हें स्वयं अपनी ही इस वात का शिकार बन कर सवसे बडा गधा बनना पड़ेगा न? हम सोचने लगे कि उनकी बातों का मतलब क्या है? उसी क्षण हमें बारहवीं शताब्दी का अपने संप्रदाय के महान् दार्शनिक श्री वसवेश्वर का वह वचन याद आया, जिसमें उन्होनें कहा है - "वेदभारभराक्रांताः ब्राह्मणाः गार्दभाः एम्बेनु" (वेदों के महाभार को पीठ पर ढोये हुए ब्राह्मणों को मैं गधा कहता हूँ)। बसवेश्वर स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी यह अपने लोगों के बारे में कडी आलोचना करते हैं। इसका मतलब यह है कि जो वेदों के मंत्रार्थ को जाने बिना केवल कंठस्थ करके बडबडानें लगते हैं, वे गधे हैं । पतंजलि ने भी अपने महाभाष्य में यह लिखा है कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यद्धीतमविज्ञातं निगदेनैव शब्यते।
अनग्नाविव शुष्कैधो न तद्‌ ज्वलति कर्हिचित्‌॥

लकडी जितनी भी सूखी हो अग्निस्पर्श के विना अपने आप कभी नहीं जलती है। वैसे ही कोई कितने भी शास्त्रों को पढें, अगर उसको अर्थ ज्ञान न हो तो वह केवल शब्दों की वडवडाहट होगी। उसमें ज्ञानज्योति प्रकाशमान न होती है।

इस प्रकार अच्छे से अच्छे विद्वानों के तत्त्ववेत्ताओं के बीच हमारा संशोधन कार्य निर्विघ्नता से आगे बढ़कर, अंतिम स्तर तक पहुँच चुका था।

-३-

इसी बीच पूज्य गुरुजी ने श्रीमठ के अधिकार से स्वयं निवृत्ति की घोषणा करते हुए अधिकृत रूप से एक त्याग पत्र को छपवा कर, प्रकाशित करवाया। इस त्याग पत्र ने श्रीमठ के शिष्यों में तथा देश के लोगों में हलचल मचा दी। दिग्भ्रांत शिष्य समुदाय ने दावणगेरे शहर में एक विराट सभा का आयोजन किया। जिसमें श्री गुरुजी से अपने त्यागपत्र को वापस लेने के लिये कई प्रकार की आरजू-मिन्नत की। लेकिन गुरुजी अपने दृढ निश्चय पर अटल रहें। आपने साफ साफ कहा कि हम सन्‌ १९६७ में दावणगेरे शहर में जो तरलबालु पूर्णिमा महोत्सव हुआ था, उस शुभ अवसर पर ही लाखों शिष्य लोगों की भरी सभा में खुले तौर पर अपने साठवें उम्र में पदत्याग करने की सूचना दे चुके थे। लेकिन तुम्हीं लोगों ने उस पर ध्यान नहीं दिया। इस केलिए हम क्या करें? किसी भी संघ संस्था में किसी भी व्यक्ति को अपने दम घुटने तक अधिकार में नहीं रहना चाहिए । नहीं तो उन संघ-संस्था की श्रेयोभिवृद्धि केलिए हानिकारक होगा। अतः किसी भी हालत में हम त्यागपत्र वापस नहीं ले सकते। तव लाचार होकर समाज के वरिष्ठ वयोवृद्ध, बेंगलूर हाईकोर्ट के भूतपूर्व एडवोकेट जनरल (हाल ही में अपनी ८८ वर्ष की उम्र में लिंगैक्य) श्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जी. चन्नप्पाजी की अध्यक्षता में उत्तराधिकारी के चयन केलिए एक समिति का संघटन किया गया। उस समिति ने काशी में अध्ययन करते हुए हमें ही सर्वानुमत से उत्तराधिकारी चुन लिया। साथ ही साथ, समिति ने गुरुवर्य से यह प्रार्थना की कि चुने गये उत्तराधिकारी का विद्याभ्यास जव तक पूर्ण नहीं हो जाता तव तक आप ही जगद्गुरु के पद पर वने रहने की कृपा करें।

बहुत दिन कर्नाटक से दूर रहे हमें अपने वाल्यकाल से ही पालन पोषण कर प्रौढ विद्या व्यासंग के लिए जिन्होंने काशी भेजा था उन परमाराध्य गुरुवर्य का स्मरण कभी कभी वहुत जोर पकड़ कर अपने मन को गहरे दुःख में डुवो देता था। हर वार सिरिगेरे गाँव से काशी रवाना होते समय चिक्कजाजूर रेल स्टेशन तक आकर, मध्यरात्रि तक साथ रहकर रेल पर चढवाकर जो परमपूज्य गुरुदेव भेजा करते थे उनका मातृहृदय हमें उनकी तरफ खींच रहा था। समिति के फैसले को सुनकर अपना मन इसलिए अधीर हो उठा कि क्या हम इतना गुरुतर उत्तरदायित्व को संभाल सकेंगे? एक वार एकाएक एक ऐसा दुःस्वप्न हुआ कि रेडियो से यह हृदय विदारक समाचार सुनने में आया कि अपने परमाराध्य गुरुवर्य का देहावसान होगया। जिसे सुनते ही हम सहसा उठ बैंठे। मन वहुत उद्विग्न हो गया था। सवेरा होते होते डाकिया एक तार लाया। जिसमें गुरुजी ने लिखा था कि "हमें तुम्हे देखने की इच्छा हुई है। अतः तुम तुरंत चले आओं"। बस अब देर किस बात की? गुरुवर्य के दर्शन पाने सीधे हम तुरंत सिरिगेरे चले आये। गुरूजी को बिलकुल स्वस्थ देखकर साँस में साँस आयी। गुरुवर्य से हमने विनती की कि यथा शीघ्र अपने प्रबंध को विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर लौटेंगे। तव गुरुवर्य ने आदेश दिया कि "तुम्हे केवल अपने देश का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है। गद्दी पर आसीन होने से पहले विदेश में भी शिक्षा पाकर आना होगा। जगद्गुरु होनेवाले को सारे जग का ज्ञान पाना आवश्यक हैं"। साथ ही साथ आपने श्रीमत्साधु सद्धर्म वीरशैव संघ की एक वैठक में यह प्रस्ताव भी पारित कराया कि हमारे विदेशी विद्याभ्यास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

केलिए पचास हजार रूपयों की ग्रॉण्ट मंजूर की जाय। कुछ लोगों ने मूक आपत्ति भी की कि वर्तमान गुरुवर्य को अधिकार छोड़ने की इच्छा बिलकुल नहीं है। अतएव अपने उत्तराधिकारी को विदेश भेजकर हाथ धोना चाहते हैं और स्वयं अधिकार पर बने रहना चाहते हैं। विदेश गये लोग कभी लौटकर आ सकते हैं क्या? अपने पुत्र के लिये कन्या का निश्चय कर लेने पर भी शादी किये विना विदेश भेजने केलिए झिझकनेवाले जो लौकिक लोग हैं वे अपने गुरुवर्य की इस पारलौकिक दृष्टि को क्या समझ पायेंगे। लेकिन हम विदेश जाने से इसलिए शंकाकुल हो गये कि समाज के हजारों रूपये लेकर विदेश जाना कहाँ तक उचित होगा? इस विषय पर हमारे मठ के शिष्य केनडा निवासी प्रख्यात समाजशास्त्रज्ञ हिरेमल्लूर ईश्वरन् ने हमें पत्र लिखकर समझाया कि "जो समाज सेवा के लिए ही अपने जीवन को समर्पित करनेवाले हैं उनको समाज के धनराशि की सहायाता पाने में कोई हर्ज नहीं है। जहाँ तक हो सके मैं भी मदद करूँगा"। फिर भी अपने मन ने इस वात को मानने से विलकुल इन्कार कर दिया। वचपन से ही कई छात्रवृत्तियाँ प्राप्तकर चुके हम, इस निश्चय पर डटे रहे कि अगर स्वदेशी विद्याभ्यास की तरह विदेश के विद्याभ्यास में भी कोई छात्रवृत्ति मिले; तभी हम विदेश जाएँगे अन्यथा कदापि नहीं।

संस्कृत के अध्ययन केलिए सारी दुनियाँ में काशी के अतिरिक्त जर्मनी ही दूसरे मायके के नाम से प्रसिद्ध है। हमने सुना था कि जर्मनी की अकाडमिक एक्सेंज (DAAD=Deutsche Akademische Austauch Dienst) नामक संस्था बाहर से पढने आनेवाले विद्यार्थियों केलिए फेलोशिप दिया करती है। पूज्य गुरुजी ने यह आदेश दिया कि दिल्ली जाकर संसद् सदस्य श्री टी. वी. चंद्रशेखरप्पा के जरिये श्री बी. डी. जत्ती जी से मिलो; जो उस समय भारत के उपराष्ट्रपति थे। उपराष्ट्रपति जी ने कहा कि हम सिफारिश करेंगे। लेकिन तब तक इस जर्मन संस्था ने विज्ञान के विषयों को छोड़कर अन्य विषयों केलिए छात्रवृत्ति वन्द कर दी थी। अतः यह काम नहीं वन सका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तव हमारे मठ के दूसरे संसद् सदस्य लिंगैक्य कोंडज्जीवसप्पा जी अन्य कोई छात्रवृत्ति दिल्वाने केलिए उस समय केन्द्र के शिक्षामंत्री जी के पास हमें ले गये। शिक्षामंत्री प्रो. नूरुल हसन जी ने हँसते हुए यह कहा कि "What is there to study Sanskrit in Germany when those people come here to learn Sanskrit" (जव उस देश के लोग संस्कृत सीखने यहाँ आया करते हैं तव जर्मनी में संस्कृत पढने की क्या जरूरत है?)। जिससे हम वहुत निराश हुए। शिक्षामंत्री के इस अज्ञान को देखकर उन पर तरस आयी। अर्जुन का विषाद योग हम पर छा गया। जिससे हम दिग्भ्रांत हो गये। हताश होकर काशी लौट आये।

अव यह समाचार उन तक पहुँचा जो वियेन्ना विश्वविद्यालय में संस्कृत की अध्यापिका रही जिनका नाम था डा. वेटिना वोयमर (Dr. Bettina Baumer)। वे कभी कभी काशी भी आया करती थीं। संस्कृत के कारण हमें उनका थोड़ा वहुत परिचय था। वियेन्ना लौटने पर उन्होने हमें एक अर्जी फार्म भेजा। उनके सूचनानुसार फार्म भरके भेज दिया। संशोधनात्मक प्रवंध पूरा करके हमारे मठ पहुँचते पहुँचते ही वियेन्ना से वह छात्रवृत्ति मंजूर होकर सिरिगेरे पहुँच चुकी थी। हमें बाद में पता चला कि वियेन्ना विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रोफेसर डा. गेरहार्ड् ओवरहामर (Prof. Dr. Gerhard Oberhammer) हमारे प्रवंध के वाह्य परीक्षक (External Examiner) थे और उन्होंने हमारे प्रवंध को पूरा पढकर वहुत तारीफ की थी।

-४-

सन् १९७६ इसवी का दिसंवर महीना। वियेन्ना जाने केलिए अभी दो महीने वाकी थे। अभी काशी में संशोधन करके लौटे हुए हमारे मस्तिष्क में शोध कार्य का गुनगुनाहट दूर नहीं हुआ था। श्रीमठ में जो पुराने कागजात थे उन्हें मुर्गी की तरह छाँट छाँट कर देखने लगे। एक जगह पर बड़ी हिफाजत से गाँठ वाँध कर कपड़े से लपेटे गये कुछ गाँठ दिखायी पड़ें जो इतिहास के पाथेय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाँठ जैसे थे। एक एक गाँठ को खोलकर उनमें रखे गये पुराने कागजातों को अपने सामने फैलाकर बैठ गये। उन सारे कागजातों को कालानुसार जोड़ने लगे। पहले ईसवी के अनुसार वर्गीकरण किया, बाद में निर्दिष्ट वर्ष का महीना और दिन के अनुसार विभाजन किया। प्रत्येक विभाग को अलग पंच करके अलग अलग फाइलों में रख दिया। गाँठ में रहे कुछ बहुत पुराने, जीर्ण, अन्य रिकार्डों को पंच न कर पाया। क्योंकि हमें इस बात का भय होने लगा कि पंच करने पर कहीं उसके अक्षर कट न जाएँ। इसलिए ऐसे पुराने कागजातों को पारदर्शक लिफाफों में हिफाजत से रखकर सुरक्षित किया।

श्रीमठ का एक एक कोना छानकर, पुराने कागजातों को इस प्रकार ढूँढते ढूँढते चलने पर हमें अपना शोध मार्ग, श्रीमठ के महाद्वार पर स्थित उस कमरे तक खींच ले गया जो चाँदी का कमरा नाम से पुकारा जाता था। उस कमरे में हमने देखा कि श्रीमठ को भक्ति से समर्पित चाँदी की थालियाँ, गिलास, ताँबे, करंडक, दीप, नीलांजन आदि चारों ओर विखरे पड़े थे। जो पुराने जमाने के भक्तों की भक्ति के प्रतीक थे। उनके बीच एक दीवार में लगी एक अलमारी के निचले हिस्से के एक खाने में कुछ पुरानी दिनचरियाँ (डायरी) नजर में आई जो धूल से भरी पड़ी थीं। उन सब की धूल झाड़ पोंछकर, ईसवी के अनुक्रम से जोड़कर रखा। कुतूहल से उनमें से दो एक दिनचरियों को खोलकर देखने पर पता चला कि उनमें उस समय के गुरुजनों को अर्पित दक्षिणा के जमा खर्च का हिसाब किताव था। जब हमने बाकि दिनचरियों में क्या है जानने केलिए और एक दिनचरि पर हाथ लगाया तब अपने सहायक बनकर बगल में खड़े जाबालीपुरी मठ के श्री एस. मरुलसिद्धय्या के मुँह से सहसा यह निराशाजनक बात निकली कि "सिर्फ हिसाब-किताव तो है। इनमें देखने को रखा ही क्या है"? तब हमने उसे समझाया कि तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो? जमाने की दृष्टि से तो उनका कुछ महत्व जरूर है। कम से कम इतना जानने केलिए तो वे सहायक होंगे कि उन दिनों बाजार के मूल्य क्या थे? इन दिनों बाजार के मूल्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्या है? कितना फर्क पड़ता है? (उदाहरण केलिए इस डायरी में ११.९.१९३८ के लेखानुसार उस जमाने में २ गैलन अर्थात् आजकल के दस लीटर पेट्रोल का दाम २ रूपये १४ आना था)। उस समय हमें एक क्षण ऐसा लगा कि उन सब को बाद में देखा जाय। लेकिन दूसरे ही क्षण अपने मन में विचार आया कि हाथ लगी दिनचरियों के पृष्ठों को पलटे विना उनको यों ही रख देना कहाँ तक उचित होगा? ऐसे ही उस दिनचरी का एक पन्ना खोला। आश्चर्य! ज्योतिषी का तोता पिंजड़े से छूटते ही झूमता हुआ चार कदम आगे बढ़कर, सामने फैलाए कई ताड़पत्रों में से कोई एक पत्र अपनी चोंच से चुनकर भविष्य सुनाता है - वैसा ही अनुभव हमें उस समय हुआ। पढ़ते ही कंठ गद् गद् हुआ। आँखों से आँसू छलकने लगे। उस पृष्ठ में यह लिखा हुआ था कि "हे भगवान ! तुम्हारे वियोग ने अपने मन को मुरझा दिया था। आज तुम्हारे दर्शन से अपना मनःकुसुम अपनी खुशबू चारों ओर फैला रहा है। मैं धन्य हुआ। अपने आनंद का कोई आर पार नहीं। आनंद ही आनंद! अपनी दिनचरी को जो पुण्यात्मा पढ़ेगा वही धन्य है! (४-४-१९३८ पृष्ठ ९०)। ज्योतिषियों के नक्षत्र बल, ग्रहबलों पर विश्वास नहीं रखनेवाले हमें इस सृष्टि के पीछे जो अदृश्य हाथ है उसकी आश्चर्यजनक लीला अपनी अनुभूति में आकर आनंदतुंदिल हो उठे। बगल में खड़े मरुळसिद्धय्या मंत्र मुग्ध सा हो गया। हम यह नहीं कह सकते हैं कि सन् १९३८ ईसवी के पूर्व (हमारे जन्म के दस साल पहले) हमारे परमाराध्य गुरुवर्य के हाथ से लिखी गयी यह दिनचरी ३८ वर्षों के बाद हमारे हाथ लगने में भगवान् की क्या इच्छा होगी?

दिनचरी के बाकी पृष्ठों को जैसे जैसे पढ़ते गये वैसे वैसे धन्यता का भाव बढ़ता ही गया। हमारे मन में यह भावना अंकुरित हुई कि अपने पूर्व जन्म के पुण्य का फल ही आज साकार होकर अपने हाथ लगा है। हम आशा करते हैं कि इस ग्रंथ के आंतरिक पृष्ठों को शुद्धांतःकरण से जो लोग पढ़ेंगे उन सब पाटकों को उसी प्रकार की धन्यता का भाव अवश्य होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-५-

पाठकों को यहाँ पर खूब ध्यान रखने का एक मुख्य विषय यह है कि यह प्रकाशित करने हेतु प्रज्ञापूर्वक लिखा हुआ ग्रंथ नहीं हैं। रोज अपने अनुभव में आनेवाली घटनाओं से अपने भीतर सहज रूप से जागृत अंतरंग की तीव्रतर नैज भावनाओं की धड़कनें यहाँ पर हैं। जीवन में सारे लौकिक सुखानुभवों को पाकर मुँह सिकोड़कर निरासक्त बने एक पैर को इहलोक में दूसरे पैर को परलोक में रखे उम्र ढले लोगों से लिखी आत्म कहानी भी यह नहीं है। उम्र के ढलने पर पिछली घटनाओं का स्मरण कर कई प्रकार के प्रलाप पूर्ण हताश भावनाओं का संग्रह भी यह नहीं है। सिर्फ यही क्या असलियत को छिपा कर झूठ को पिरोकर वढ़प्पन पाने के उद्देश्य से लिखी गई आत्मकथा की आत्मवंचना व ठगाई भी यह नहीं है। प्रायः २३-२४ वर्ष की युवावस्था में लिखी हुई इन डायरियों में उम्र के सहज आशा-आकांक्षाओं का आकर्षण हैं, उम्र से बढ़कर अमूल्य आध्यात्मिक साधनाकांक्षाओं की धड़कनें भी इन में देखने मिलती हैं जिससे यह लिखावट सजीव लगती है। कथनी और करने की पारदर्शिकता को प्रतिबिंवित करनेवाली यह लिखावट, ऐसा प्रतीत होता है मानों महात्मा बसवेश्वर के भक्तस्थल के वचनों का ही यह गद्यरूप है। दृष्टांत के तौर पर उनकी दिनचरी से उद्धृत अधोलिखित एक अंश को देख सकते हैं।

"हे परमात्मन् ! मुझमें न कोई नीति न आचार न ही एक नियम है । मनमाने चलनेवाला दुराचारी हूँ मैं। इसीलिए मुझे यह भरोसा ही नहीं है कि तुम मुझे दर्शन देने की कृपा करोगे। फिर भी हे अंतरात्मन्! मैं दिन रात तुम्हारे ध्यान में निरत हूँ। मैं तुम्हारी यादगार में रोया करता हूँ और चडपडाता हूँ। मैं कोई सुख नहीं चाहता। तुम्हारे दर्शन से जो परम शांति हासिल होगी वही मेरी अभीप्सा है। कृपया दर्शन दो हे जगन्नाथ! मैं क्यों ज्यादा वड़वड़ाऊँ? तुम सर्वज्ञ हो। तुम पर मुझे अपरिमित विश्वास है जो मुझे जरूर उस पार पहुँचादेगा। देवाधिदेव! तुम सदा मेरे हृदय में विराजमान होकर वहाँ के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाढांधकार को दूर करो। अपने मन को सन्मार्ग दिखाकर मेरी रक्षा करो हे मेरे परमपिता[3]।

सन् १९३७ और १९३८ में जो दिनचरियाँ लिखी गयी है उस समय परमपूज्य गुरुदेव हासन जिले के 'यलहंक' मठ के अधिपति थे। २३-२४ वें वर्ष की युवावस्था में होते हुए भी उम्र से वढ़कर अनुभव, आदर्श, किसी प्रकार के छल कपट, लुका छिपी न करके अपने अंतरंग के उद्गारों को परमात्मा के पवित्र चरणों में निवेदन कर रहे हैं वह आपका ईश्वरीय असीम विश्वास, निर्मल भक्ति का द्योतक है। पाठक इस वात को अवश्य समझेंगे कि अपने मठ व समाज के अभ्युदय के पीछे क्या पवित्र संकल्प की शक्ति है। यह हमारा अभिमत है कि यह दिनचरी (डायरी) आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिए और किसी मठ के भावी स्वामी लोगों के लिए आदर्श हस्त पुस्तिका है। आजकल पथभ्रष्ट धर्म गुरुजनों के वारे में प्रतिदिन समाचार पत्रों में जो समाचार प्रकट हुआ करते हैं। उनके आधार पर देखा जाय तो प्रायः पचास वर्ष पहले उस समय के नीतिभ्रष्ट स्वामिजनों के वारे में इस दिनचरी में लिखी निम्नलिखित

---

[3] 'वमवण्णा के नीचे दिये इन वचनों से तुलना कीजिए:-
मेरा चित औंदुंवर का फल है अय्या-
विचारने पर सार नहीं है अय्या - (वचन सं :२१)

मेरी करनी एक, मेरी कथनी और
देखो अय्या, मेरा अंतरंग शुद्ध नहीं।
कथनी के समान चाल देखते ही
कूडलसंगमदेव बसे अपने हृदय में - (वचन सं :३०)

'अय्या अय्या' ऐसा मैं पुकार रहा हूँ
'अय्या-अय्या' ऐसा मैं चीख रहा हूँ
'हाँ' ऐसा तुम क्यों नहीं बोल रहे हो?
फिर भी मैं आप को पुकार रहा हूँ,
मौन क्यों हो कूडलसंगमदेव - (वचन सं ५६) ('अय्या' कन्नड में गौरव वाचक व भक्ति वाचक है)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बातें इतनी तीक्ष्ण एवं कटु हैं जिन्हे शायद ही कोई निर्भीक पत्रकार, विद्वान, आलोचक लिख सकता है।

"आजकल के सन्यासियों से जग को भयंकर हानि हुई है। संन्यासी लोगों के अधःपतन केलिए भक्तों का अज्ञान ही कारण है। जहाँ अज्ञान है वहाँ सत्य का कोई मूल्य नहीं है। अंधविश्वास रखनेवाली दुनियाँ सुखी नहीं हो सकती। जो अनपढ हैं, विषयकूप में डूबे हुए हैं और विषयवासनाओं से ग्रस्त हैं, अगर वे लोग गुरु बन जाये तो किस जग का उद्धार होगा? ऐसा लगता है कि लोगों की भावना में गुरु बनना मतलब नाटक में वेष-भूषण धारण करके अभिनय करना! हाय हाय! शिव शिव! गाय चरानेवाले, झूठ बोलनेवाले, विधवाओं को प्यार करनेवाले ढोंगी गुरु लोग तुम्हारे नाम से इस जग में हलचल मचा रहे हैं! हाय! मूढ भक्तगण! तुम लोगों ने अपनी भक्ति के अनुसार ही गुरु पाया हैं। हाय! हे निर्दयी गुरुवर्ग! कम से कम तुम लोगों को शरम नहीं आती कि पाप करते करते इस दुनिया को बरबाद कर रहे हैं? शिव शिव! सारे जग का सूत्र व्यभिचारियों के हाथ में है। व्यभिचारी लोग अपने को गुरु कहने पर जरा सा भी शर्मिंदा नहीं होते हैं! हर! हर! शिव! शिव! (१५-५-१९३८)

"शिष्यों के धन को लेकर मठ में रहनेवाले अपने भाइयों के बीबी-बच्चों को खिलानेवाले ये ढोंगी गुरु वर्ग जब तक समाज से हटेंगे नहीं तब तक हमारा कल्याण नहीं है। ये लोग अपने भाईयों की बीबियों से परदों के पीछे प्यार करके यह समझो कि उनके मर्दों को कमाने के परिश्रम से मुक्त करने का महोपकार कर रहे हैं। जिन मठों में संभोग, बच्चों की झोली पालना आदि घरगृहस्थी के `धर्मकार्य` चलते हैं वैसे मठ निश्चित ही पापक्षेत्र होते हैं। ऐसे पापक्षेत्रों में आकर नमस्कार करनेवाले शिष्य वर्ग का कल्याण होना शुद्ध असंगत है। भाई बहनों की भलाई केलिए मठ है क्या? यह समझ में नहीं आ रहा है। यदि शिष्यगण इस तरह के पापकृत्यों को बन्द नहीं करायेंगे तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सचमुच उनका कल्याण नहीं है। नहीं तो यह कहना पडेगा कि हमारे समाज के जैसे मूढ शिष्यगण सारी दुनिया में कहीं नहीं हैं।" (२४-६-१९३८)

उपर्युक्त बातें वसवेश्वर के उस वचन की याद दिलाती हैं जिसमें कहा गया है:

"नदी नालों में डुबकी लगानेवाले भाइयों!
नदी नालों में गोता लगानेवाले स्वामिजनों!
त्यागो तुम लोग परनारियों का संग,
त्यागो, त्यागो तुम लोग, परधन की लालच त्यागो"

इन दुराचारी स्वामिजनों का इतनी निष्ठुरता से खंडन करनेवाले परमपूज्य गुरुवर्य वसवण्णा जैसे ही हैं - निर्भीक स्पष्टवक्ता, न कभी दाक्षिण्यवश होता है, न किसी पक्ष का साथ देनेवाला होता है, क्योंकि लोग विरोधी शरण किसी से भय नहीं खाता है। इस प्रकार परमपूज्य गुरुवर्य दृढता एवं प्रज्ञापूर्ण लक्ष्य रखनेवाले हैं। आपने इसी दिनचरी के और एक स्थान पर कहा है कि "मैं तो कभी असत्य को न सहनेवाला हूँ न सत्य को छिपानेवाला। मैं असत्य का खंडन किये विना चुप नहीं बैठ सकता। इससे यदि दोषी ऊब उठे तो मैं क्या करूँ? अपने छिपे हुए दोषों को न सुधार करके, अपनी गुनाहओं के लिए अपने आप को निन्दा करना छोडकर, मुझे निन्दा करने आयेगा तो मैं पीछे हटनेवाला नहीं हूँ।" (३-८-१९३८)। इस प्रकार अपने कठोर सत्य प्रतिपादन का समर्थन कर लेते हैं। 'मुत्तुगदूर' गांव के श्री महदेवय्या और श्रीमती वसम्मा दंपती के तृतीय पुत्र होकर उनके पुण्य गर्भ से सन् १९१४ ई. के वसवजयंती के पवित्र दिन रोहिणी नक्षत्र में जन्म लिए श्री जगद्गुरुवर्य परमपूज्य गुरुदेव अपने निकटवर्तियों को वसवण्णा के प्रतिरूप ही नजर आते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

-६-

श्रीजगद्गुरुवर्य तत्कालीन अपने गुरुमहाराज श्री गुरुशांतराज देशिकेंद्र महास्वामी के कृपाशीर्वादों से संस्कृत अभ्यास के लिए सन् १९२९ के नवंबर महीने में काशी गये। काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री गौरीनाथ पाठकजी के अत्यंत प्रिय अंतेवासी होकर अध्ययन करने लगे। श्री जगद्गुरुवर्य ने सात वर्षों में ही संस्कृत भाषा पर पूर्ण प्रभुत्व हासिल कर लिया। निरातंक से पांडित्यपूर्ण स्वतंत्र कविताओं की रचना में आप सिद्धहस्त हो गये। इस बात की प्रामाणिकता के लिए सन् १९३३ ई. के फरवरी १०वीं तारीख को श्री गुरुशांतराज देशिकेंद्र महास्वामीजी के नाम पर एक पत्र लिखा गया है, जो श्रीमठ के पुराने कागजातों में पाया गया। उस पत्र के दूसरी तरफ गुरुभक्ति से लिखे श्लोक देखने लायक हैं। सन् १९३५-१९३६ ई. में "अमर भारती" नामक संस्कृत मास पत्रिका काशी से प्रकाशित हुआ करती थी जिसमें आपकी जो संस्कृत कविताएँ, प्रकाशित की गई हैं वे आपके पांडित्य के प्रतीक हैं। आपके अध्ययन काल की पुस्तकों में कई स्वरचित श्लोक प्रायः पाये जाते हैं। आपने हर एक पुस्तक के आरंभ के पृष्ठ पर अपने नाम के बदले में पुस्तक के विषय के आधार पर एक एक संस्कृत श्लोक लिखने की अच्छी आदत बना रखे थे। उन सभी श्लोकों में अपने गुरुवर्य श्री गुरुशांतराज देशिकेंद्र महास्वामीजी को भक्ति भाव से स्मरण इस तरह करते हैं कि यह पुस्तक आपके दिव्यानुग्रह से प्राप्त हुई है, जिन्होंने पढ़ने के लिए काशी भेजा था[4]। इन में दो श्लोक चुनकर, अनुवाद करके इस पुस्तक के आरंभ में भक्ति समर्पण करने केलिए और अंत में श्रद्धांजलि के लिए यथोचित् उपयोग में लाये गये हैं।

---

[4] इस प्रकार हम ने अपने गुरुजी के द्वारा विरचित अपूर्व संस्कृत श्लोक, संस्कृत लेख, संस्कृत पत्र और दूसरे प्रकार के साहित्यिक लेखों का संग्रह किया है जिन्हें द्वितीय संपुट में प्रकाशित करने केलिए तैयार कर रहे हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपनी गुरु परंपरा में अपने पितामह श्रीगुरुशांतराज देशिकेंद्र महास्वामीजी को जव दुष्टलोगों ने षड्यंत्र रचकर विषपान कराके उनकी हत्या की थी, उस अवसर पर अति दुःखी होकर जो लेख लिखा है, वह वड़ा हृदयस्पर्शी है -

"हे गुरुदेव! तुम्हारे चेहरे की वह मुस्कुराहट मेरी आँखों के सामने नाच रही है। हे परमेश्वर! इस समाज के लिए तुम गुरु, पिता, वंधु, मित्र और सव कुछ थे। विना कारण, कुछ ही दिनों में हम सव को छोडकर चल वसे। हम निर्भाग्य हैं! हे गुरुदेव! आप समाज के लिए कलश सदृश थे। वह कलश अव टूट पड़ा। अव आगे हमारी क्या दशा होगी? समाज के कष्टकार्पण्यों को कौन देखेगा? हे गुरुदेव! मैं तो वहुत दुःखी हुआ हूँ। मेरे हृदय की दुःखाग्नि को शमन करने का तरीका क्या हैं? गुरुदेव! गुरुदेव! गुरुदेव! गुरुदेव"! दुःख भरी ये वातें कल्याण की उस दुर्गति की याद दिलाती है जिससे दुःखी शरणजन के मुँह से ये हृदयविदारक परमक्लेशमयी वातें निकली थीं: "दीप टूट पड़ा ! तेल खाली हो गया ! ज्योति बुझ गई !"

समाधि के दूसरे दिन भी आँसुओं से भीगी गुरुवर्य की कलम तीन पंक्तियों से आगे न चल कर आधे में ही रुक गई थी। यह प्रसंग पाषाण हृदय को भी पिघला देनेवाला है।

सन् १९३८ के अगस्त ११वीं तारीख को घटी इस घनघोर घटना के वाद लिखे दो-एक पृष्ठों को छोड़कर यह दिनचरी (डायरी) वहीं समाप्त हो जाती है। यह कन्नड के आध्यात्मिक साहित्य केलिए एक आघात ही कहा जा सकता है। फिर भी वसवेश्वर आदि शिवशरणों ने साहित्य को दृष्टि में रखकर अपने वचन-साहित्य का निर्माण नहीं किया। जनमन को जागृत कराने के लिए साहित्य का केवल एक माध्यम के रूप में उपयोग किया। उसी आदर्श पथ पर कदम वढाते हुए पूज्य गुरुजी ने `दीप से दीप जलें!` की तरह ज़ाज्वल्यमान ज्योति वनकर चार दशकों से अहर्निश श्रम करके समाज को उत्तुंग शिखर पर चढ़ा दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सन् १९३७ ई. के अगस्त दूसरी तरीख को दावणगेरे के छात्रावास के लिये धनसंग्रह करने के उद्देश्य से एक मंत्रणा बैठक दावणगेरे शहर में बुलायी गयी थी। लेकिन पूज्य गुरुजी उसमें भाग न ले सके। क्योंकि `हासन' जिले के `यलहंक' से `दावणगेरे' तक जाने केलिए मार्गव्यय के लिए पैसे तक नहीं थे। इस घटना को आपने उस दिनचरी में लिख रखा है। वहीं अपने गुरुवर्य ने बाद में पैसे पैसे इकट्ठा करके केवल कर्नाटक के ही क्यो? सारे भारत के ग्रामीण प्रदेशों में आज तक न देखी गयी ऐसी वहुत सी संस्थाओं की स्थापना की । जिसे देखकर लोग दाँतों तले ऊँगली दवा रहे हैं। वह हवा में जादूगरी से किया गया कमाल नहीं है। उसके पीछे धीर संकल्प शक्ति है।उसी अगस्त मास की २३ तारीख को आपने लिखा हैं -

> "यदि इसी प्रकार अपने दुर्भाग्य से विपत्तियाँ अपनी चारोंओर आ घेरेंगी तो मुझे कायर बनना पड़ेगा । शिव शिव। मैं कायर बनकर कैसे जीऊँ? जब तक इस शरीर में प्राण रहेंगे तब तक मैं कभी कायर बनकर न जी सकूँगा। चाहे मुझपर कष्टों के पहाड़ ही क्यों न टूट पड़े, जिससे होनेवाली पीड़ा का अवश्य साहस से सामना करूँगा और आगे बढ़कर कर्मवीर बन, हुतात्मा हो जाऊँगा।"

ऐसे वीर संकल्प शक्ति के वल पर ही समाज का संघटन तथा संवर्धन करके १९७९ वीं फरवरी तारीख ११ को अर्थात् माघ शुद्ध पूर्णिमा के दिन हमें "सद्धर्म सिंहासन" के गद्दी पर बिठाकर "तरळ! बाळु!" (हे वत्स ! चिरंजीवी रहो) इस शुभ आशीर्वाद के साथ श्रीमठ की सारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को मेरे नन्हें कंधों पर डाल दिये। अपने गुरुवर्य का यह वैविध्यमय जीवन सारे देश के लिए एक खुला ग्रंथ सावित हुआ है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कालगर्भ में लीन होने से वची यह अमूल्य कृति सन् १९७६ ई. में हमारे हाथ लगने पर भी, इस वीच दो वर्ष वियेन्ना में पढने के लिए जाने के कारण, वहाँ से लौटते ही पट्टाभिषिक्त होकर श्रीमठ के संघ संस्थाओं की देखरेख की जिम्मेदारी अपने कंधे पर लेने के कारण, देखते देखते यों ही नौ वर्ष गुजर गये। माता के गर्भ से नवमास पूर्ण शिशु जैसे इस कृति का जन्म नौ वर्ष के बाद होते देखकर हमें आत्मतृप्ति मिली है। हमें इस बात का पूर्ण विश्वास है कि इसे अपने हाथ में लेकर पढनेवालों को भी उतना ही आनंद का अनुभव होगा। हम पहले से विश्वविद्यालयों के बौद्धिक वातावरण में ही थे। आजकल सवेरा होते ही हमारी आँखों के सामने आनेवाली सैकड़ों शाला कालेजों की प्रशासन समस्याएँ अपने सिरपर तनी तलवार सी बन गई हैं। निरंतर अध्ययन चिंतन करके कुछ न कुछ लिखने की साहित्य सेवा में रोड़ा अटकानेवाले ये लौकिक व्यवहार वसवण्णा के कथनानुसार -

शिशु को गोदी में रखी वेश्या
धन की लालच में पड़कर
न तो विट को बहला सकती
न ही अपने शिशु को,
एक बार शिशु को बहलाने लगेगी
और एक बार विट को

इस प्रकार डोलायमान स्थिति पैदा हो गयी है। इधर साहित्य शिशु का संरक्षण - उधर समाज की सेवा, किसी को किसी भी हालत में न छोड़ने की विपरीत परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। अव तक देश विदेशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन करके बहुत कुछ लिखने की इरादे से हम से बहुत सी सामग्रियाँ इकट्ठे की गई। अव हमें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोहरी को जुटाते ही रह गये हम
लगेगी आग कब, बनेगी रसोई कब?
हे भगवान! मेरी नसीब में लिखे हो क्या?

इस प्रकार प्रलाप करने की परिस्थिति पैदा हो गयी है। "काय लीन होने से पहले पकाकर खाओ ! जितनी गोहरी होंगी समय बीतने के पहले ही पकाकर खाओ!" इस प्रकार अपनी साहित्य प्रज्ञा बारबार चेतावनी देती आ रही है। उस चेतावनी का परिणाम ही हमारें द्वारा संपादित यह "आत्मनिवेदन" ग्रंथ है।

-८-

यह ग्रन्थ काँट छाँटकर पाठकों के लिए लिखा गया किताब नहीं है। निरातंक से, कहीं किसी प्रकार की रोकथाम के बिना आध्यात्मिक हिमालय शिखर से बहती आयी विचारवाहिनी गंगा मैया है। इसे पढ़कर कई दुर्धर प्रसंगों में हमें तसल्ली मिली है। जैसे लोभी खजाने में रखे धन को रात में निकालता, देख देखकर खुश होता है, फिर यथा स्थान रखा देता है, वैसे ही हम अब तक कभी कभी इसे पढ़कर सांत्वना पाकर मेज की पेटी में रख देते थे। लेकिन अब तो सब को पढ़कर आनंद का अनुभव करने का सुअवसर प्राप्त हो गया है।

इस दिनचरी में पूज्य गुरुवर्य के स्वानुभवों से अद्भुत जो अपूर्व विचार हैं वे ऐसे लगते हैं जैसे बसवेश्वर के वचनों के ही विस्तृत गद्य रूप है। जिन्हें पढ़नेवालों के हृदय एकदम खिल उठते हैं। उनमें से कुछ इने गिने वचनों को चुनकर आगे दिये गये हैं। जैसे ऊपर लिखा गया है, यह बुद्धिपूर्वक लिखी गयी पुस्तक नहीं है। काल गति के अनुरूप हृदय में आविर्भूत सहज विचार एवं चिन्तन इसमें भरे हैं। यहाँ पर मामूली दिनचरी में जो प्रतिदिन के लौकिक व्यवहार हैं उनको छोड़ दिया गया है। वे दिनचरी के पृष्ठों पर रोजाना उस-उस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तारीख में ही आ जाते हैं। लेकिन आध्यात्मिक विचार तो दैनंदिन पृष्ठों के साथ ही साथ जहाँ-तहाँ दिनचरी के पृष्ठ खाली पड़े हैं वहाँ-वहाँ लिखे गये हैं। इस वजह से अनुक्रम न रह गया है। इस प्रकार दूसरे पृष्ठों पर लिखे जाने पर कुछ में उस दिन की तारीख दर्ज की गई है और कुछ में नहीं। इस की वजह से हमें यह निर्णय करने में परिश्रम उठाना पड़ा कि किसी एक पृष्ठ पर लिखी लिखावट उसी तारीख की है या दूसरी की? फिर भी लिखावट की स्याही, अक्षरों का विन्यास और आगे पीछे विचारों की तुलना करके कुछ तारीखों को हमने ही खुद तयकर दिया है। इस समस्या का सामना अधिकतर सन् १९३७ ई. की दिनचरी में ही करना पड़ा। लेकिन १९३८ ई. की दिनचरी में समस्या उतनी नहीं रहीं। दिनचरी के फैलाव में फैले सारे विचारों को हमने विषयानुक्रम से विभाजन करके, भिन्न भिन्न अध्याय बनाकर कालानुक्रम से ही रख दिया है। उद्यान वन में अपने समक्ष दिख रहे रंग-विरंगे फूलों को चुनकर आकर्षक माला पिरोनेवाले माली का काम को हम ने इस ग्रन्थ में किया है। फूल का सौन्दर्य और सौगन्ध फूल का ही हैं। सिर्फ माला पिरोने का प्रयत्न हमारा है। यहाँ पर पाठक एक पवित्र आत्मा के पूर्ण विकास पथ को साफ-साफ दर्शन कर सकते हैं।

यहाँ पाठकों को ध्यान देना होगा कि जहाँ-तहाँ आनेवाले संस्कृत श्लोक और हिन्दी कविताएँ जो हैं उनकी लिखावट के भावों के ही अनुसार भाषा न समझनेवालों को अनुवाद करके जहाँ तक हो सके उनके मूल को पता लगाकर निचली टिप्पणियों में दी गयी हैं।

"षड्यंत्र –आहुति" नामक अध्याय में आनेवाले कुछ नामों को जान-बूझकर हमने छोड़ दिया है। मूल दिनचरी में उन नामों के होते हुए भी समाज की स्वस्थ दृष्टि को ध्यान में रखकर उन्हें छोड़ देने का निश्चय करके उन स्थानों पर संख्याओं का निर्देशन करके भाग चिह्न लगाये गये हैं। हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह अपने सत्यसन्ध गुरुवर्य को बिलकुल पसंद न होगा। सत्यं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रूयात् (सत्य कहना चाहिए) इस प्रकार का अनुशासन होते हुए भी अपने इस निर्धार का मानदंड है – मा ब्रूयात् सत्यमप्रियम् (ऐसा सत्य मत बोलो जो अप्रिय लगे)। यह तो सत्य का ही दूसरा स्वरूप है। लेकिन "प्रियं च नानृतं ब्रूयात्।" कथनानुसार पाठकों को प्रिय लगने केलिए कहीं भी झूठ नहीं जोड दिया गया हैं। लौकिक सत्य और झूठ परस्पर सापेक्ष (Relative) तथा संकीर्ण हैं। इस दृष्टि से कहा जाय तो आत्यंतिक सत्य (Absolute Truth) केवल आत्मा ही है! अपने जीवन की दिनचरी में याद रखने लायक यादि कोई चीज है तो वह है एक मात्र आत्मा।

२४-९-१९८५ श्री तरळबाळु जगद्गुरु
सिरिगेरे डॉ. शिवमूर्ति शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस दिनचरी में स्वानुभव के नीतिवाक्य

१. सुख नाम की चीज वस्तुओं के संग्रहों में नहीं है..... सुख आत्मानुग्रह से आत्मा से ही मिलनेवाली वस्तु है।

२. दुर्बुद्धि की दवा क्या है? ज्ञान, धैर्य ही दवा है। जगदीश्वर ही दवा है।

३. मनुष्य की वर्वादी के लिए और उद्धार के लिए मन ही कारण है।

४. ईश्वर पर भक्ति रखकर चलनेवाले से कभी पापाचरण नहीं होंगे। यदि भक्त से पापकृत्य होते रहेंगे तो वह कभी भक्त नहीं कहलाएगा।

५. तुम मनःपूर्वक रोया करो, भगवान् अवश्य मिलेगा।

६. जो अपने मन से आप डरा करता है, उसका शीघ्रातिशीघ्र उद्धार होगा।

७. बुद्धि का पावित्र्य ही मन की निश्चलता का कारण है। मनोनिग्रह के लिए आत्मस्थैर्य चाहिए।

८. जो अपने मन को स्थिर नहीं कर सकता उसे साम्राज्य से भी सुख हासिल नहीं हो सकता।

९. जो सुख चाहता है उसे आत्मा का सहारा लेना चाहिए।

१०. पवित्र विचारों के अर्जन के लिए संगति को भी पवित्र रखना चाहिए।

११. चित्त के स्थिर हो जाने पर ही कार्याकार्य का ज्ञान हो सकता है।

१२. ईश्वर पर विश्वास रखनेवाला कभी पाप कार्य नहीं करेगा। पाप कार्य करनेवालों में जरूर ईश्वर विश्वास नहीं होगा।

१३. जो यह पूछता है कि ईश्वर कहाँ है? ईश्वर कहाँ है? वही वास्तव में ईश्वर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४. मोक्ष न तो कोई गाँव है , न ही कोई विशेष उपाधि है। वह न कोई फल भी है। मोक्ष तो आत्मा में मन की स्थिरता से उत्पन्न एक अलौकिक शांत भाव है।

१५. पाप कृत्य तभी रुक सकेंगे जब ईश्वर पर विश्वास हो।

१६. जो हमारे भगवान् , तुम्हारे भगवान् कहेंगे वे ईश्वर द्रोही हैं। ईश्वर एक ही है।

१७. जो भगवान् मस्जिद में रहता है वही मंदिर में रहता है। जो मंदिर में रहता है वह गिरजाघर में भी रहता है।

१८. हिन्दु लोगों के भगवान् को नाश करने निकले मुहम्मद अपने अल्लाह को ही मारता है। अपने अल्लाह का द्रोही बन जाता है।

१९. बाह्य आकारों में वैविध्य के होने पर भी सत्य एक ही है। सारे धर्मों में भगवान् है। अपने धर्म को छोड़कर अन्य धर्म की ओर कदम बढ़ानेवाला अज्ञानी भी है और चंचल भी। इसे कभी भगवान् न मिल सकेगा।

२०.. यदि दुनियाँ को सुख चाहिए तो वह अध्यात्म विद्या से ही -- नामधारी गुरुओं से लोक की हानि होगी।

२१. आजकल के पढ़े लिखे लोगों से ही दुनियाँ को काफी नुक्सान हो रहा है।

२२. सुख के लिए बाह्य वस्तुओं का संग्रह करनेवाला कभी सुखी नहीं होगा। अन्तःशक्ति का संग्रह करना चाहिए। अन्तःशक्ति का मतलब है - आत्मबल, आत्मविश्वास।

२३. शिक्षण क्षेत्र में जब तक परिवर्तन न होगा तब तक दुनियाँ का सुख नहीं मिल सकता है। विद्यार्थियों को औद्योगिक, व्यावहारिक, आध्यात्मिक, इत्यादि विविध शिक्षण देना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२४. जिस समाज में अच्छी माताएँ न हो, वह समाज कभी प्रगति न कर सकेगा।

२५. आदर्श के अनुसार चलनेवाला अभ्युदय को प्राप्त कर सकता है।

२६. जिस समाज के नेता लोग स्वार्थ, उदासी, घूसखोरी के वश में हो जाते हैं वह समाज कभी प्रगति न कर सकेगा।

२७. जल्दवाजी से वड़ा नुकसान होगा, चुगलखोरी अनर्थ का कारण बनेगी।

२८. संयम ही सुख का मूल है।

२९. नासमझ मूर्ख जैसा मौन रहना ही ज्ञानी का लक्षण है।

३०. जैसा अन्न वैसा गुण।

३१. कुत्ते का मल भक्षण बड़ा असह्य लगता है। वैसे ही मानव का विषयोपभोग विचारशील (ज्ञानी) को वड़ा असह्य लगता है।

३२. मन को वश में रखना जितेन्द्रियत्व है।

३३. जो मन के वश में रहता है वही भवि, अज्ञानी, बद्ध-जीवात्मा; जो मन को अपने वश में रखता है वही ज्ञानी जीवन्मुक्त है।

३४. एकान्त उत्तम है, यदि मन अपने वश में हो। एकांत से बड़ी हानि है, यदि मन के वश में हो।

३५. बच्चे को खिलौना मिलने पर माँ को भूल बैठना सहज है। वैसे ही जीवात्मा को विषयों के मिलने पर परमात्मा को भूल बैठना सहज है।

३६. लोगों के अपवादों के लिए मत डरो। स्वार्थ हाथ न लगने पर निन्दा करने लगते हैं। उनकी प्रशंसा का कोई मूल्य है ही नहीं; न उनके थूकने (निन्दा) का कोई मूल्य।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३७. अपने मन की इच्छा से किया जानेवाला काम और दूसरों के कहने पर किया जानेवाला काम इन दोनों में बड़ा फर्क होता है।

३८. जबतक तुम सामने रहोगे तबतक निन्दक लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं, आखिर चुप हो जाते हैं। वैसे ही कुत्ते डरनेवालों को देखकर बहुत भौंकते हैं; जिनके हाथ में लाठी हो उन्हें देखते ही नौ दो ग्यारह हो जाते हैं।

३९. ऐसा करना चाहिए वैसा करना चाहिए, इस प्रकार कहने की अपेक्षा कर दिखाना अच्छा है।

४०. यदि स्वार्थ सिद्ध न हुआ तो निन्दा करनेवाले बहुत लोग हैं।

४१. दूसरों की निन्दा से दुःखी मत हो, तुम्हारे दोष को देखकर कोई तुम्हारी निन्दा नहीं करता, स्वार्थ सिद्ध न हुआ तो तुम्हारी निन्दा करते हैं।

४२. भगवान् पर विश्वास करो। मदमत्त होकर घमंड से यह मत कहा करो कि भगवान ही नहीं है।

४३. क्रोध के मारे कटी नाक फिर चिपकाई नहीं जा सकती। क्रोध से सुख कहाँ? प्रशांत को दुःख कहाँ?

४४. यदि स्त्रियों में सुख होता तो वे कभी पुरुषों को न चाहतीं। पुरुषों में सुख होता तो वे कभी स्त्रियों को नहीं चाहते। ये समझते हैं कि सुख उनमें है, वे समझती हैं कि सुख इनमें है। विचारशील (ज्ञानी) को सुख इन दोनों में भी नहीं है। आत्मा में ही सुख है। सुख का एकमात्र आधार - आत्मा ही है।

४५. बाहर कहीं सुख को मत ढूँढो, सुख और दुःख तुम में ही हैं।

४६. सुख की लालच से बाह्य वस्तुओं का संग्रह जितना भी करते जाओ, उनसे सुख नहीं मिलेगा उनसे दुःख और बढ़ता ही जाएगा।

४७. चंचल मन ही सारी विपत्तियों का मूल कारण है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८. देश काल को समझ-वूझकर वोलना भी एक प्रकार से मौन ही है। दुनिया में मितभाषी ही बुद्धिमान है।

४९. गांभीर्य रहित का जीवन गार्दभ का जीवन है।

५०. संसार एक बाजार है। इस बाजार में जितना व्यवहार करना चाहिए, बस उतना ही करें।

५१. जव विश्वास रखनेवालों को सामान्य मनुष्य भी नहीं भूलते तब कोई यह कहे कि जगदीश भूल जाता है; यह मिथ्या नहीं तो और क्या है?

५२. भगवान् पर विश्वास करनेवालों में आजतक कोई बिगड़ा नहीं।

५३. लोगों के अपवादों के लिए शुद्धात्मा कभी न डरेगा।

५४. जैसे बच्चे की रुलाई को माता नहीं सह सकती, वैसे ही परमात्मा भी।

५५. ईश्वर और भक्त के मिलन सुख को माता और बच्चे अल्प प्रमाण में ही सही जरूर अनुभव करते हैं।

५६. धीर, इस भवसागर को ईश्वर की कृपारूपी नाव पर बैठकर पार कर सकता है।

५७. ईश्वर-भक्ति ही परतर मुक्ति की सुयुक्ति है।

५८. सत्य ही सुधारस है। जो सत्य को पकड़ेगा वह सर्वत्र विजय हासिल कर सकता है।

५९. जो प्रापंचिक सुख है, वह वास्तव में सुख नहीं है।

६०. सत्य की रक्षा के लिए जीओ; चाहे जान भले ही चली जाय, डरते क्यों हो? वह अनित्य है; उसे जाना ही चाहिए। उसके लिए चिंता क्यों?

६१. देवताओं के लिए अमृत सुधा है। प्राणियों के लिए शांति ही सुधा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६२. तुम में देवता को देखनेवाला जो इंद्रिय है वही जब ढक गया है तब तुम यह कहो कि ईश्वर नहीं दिखायी दे रहा है, यह मत कहो कि ईश्वर ही नहीं है।

६३. अपने-अपने दोष हमें मालूम नहीं होते। दोषी भी आत्मा को मनवाकर ही करता है। निर्दोषी भी आत्मा को मनवाकर ही करता है।

६४. मनुष्य जितनी परीक्षा में आ जावे उतना ही भला।

६५. ईश्वरेच्छा वैविध्यमय है। जग ही उसके विनोदार्थ सजाया गया है।

६६. हमारे मन की अस्थिरता से अपनी जितनी बेइज्जती होती है; उतनी बेइज्जती और किसी से नहीं होती।

६७. जिसका मन स्थिर न हो, उसे किसी कार्य का आरम्भ नहीं करना चाहिए।

६८. जब तुम्हें अपनी गहराई का पता तक नहीं है तब दूसरों की निन्दा करने के पाप कूप में क्यों पड़ते हो?

६९. दुःख अज्ञान जन्य है। मन की अधीरता दुःख को दुगुना कर देती है।

७०. शांति से ही सुख। सत्य मार्ग से ही सुख।

७१. इस लोक में कोई भी अपने सत्य का मूल्य नही आंकता।

७२. आप सत्यनिष्ठ होने पर भी निन्दा का जवाब यदि निन्दा से ही देते हैं तो आप अपने वातावरण को स्वयं बिगाड़ लेते हैं।

७३. सज्जन के संग से दुर्जन भी सत्पुरुष बन जाता है।

७४. दूसरों की निन्दा करने वाला ही दुष्ट पुरुष है। सच तो यह है कि सज्जन उसकी निन्दा न करके उसके बारे में उपेक्षा करता है । इसलिए दुष्ट निन्दा करते करते स्वयं ही परास्त हो जाता है।

७५. दया ही परमेश्वर का मंदिर है, हृदय ही गर्भ मंदिर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७६. परमात्मा के अनुग्रह के विना कोई मनुष्य प्रगति नहीं कर सकता।

७७. सत्य ही आत्मा का आहार है, सत्य के लिए जीओ और सत्य में जो आनंद है उसका अनुभव करो।

७८. अनित्य प्राण को देकर, नित्य सत्य का महत्त्व दुनियाँ को दिखा दो।

७९. अस्थिर चित्त ही विपत्ति का आवास स्थान है; स्थिर चित्त ही निश्चिंतता का मूल स्थान है।

८०. जिसमें ब्रह्मचर्य न हो, वह शांति नहीं पा सकता।

८१. जिसमें ब्रह्मचर्य न हो, उसमें कोई गुण नहीं टिकता। उसमें चाहें जितने भी गुण क्यों न हों, वे स्थिर नहीं रह सकते जैसे छेदवाले घड़े में भरा पानी।

८२. सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार ये तीनों परमेश्वर के पास ले जानेवाले साधन हैं। सत्य ही रथ है, ब्रह्मचर्य ही सारथि, है परोपकार ही अश्व है।

८३. आहार की परिशुद्धि के विना ब्रह्मचर्य का पालन करना सर्वथा असंभव है।

८४. दुनियाँ में सत्य बचा नहीं है। यहाँ पर सत्य का कोई मूल्य ही नहीं।

८५. गुरु लोगों को यह मंत्र अच्छी तरह समझना चाहिए कि शिष्य सेवा ही ईश्वर सेवा है।

८६. मिल्लत न हो तो कोई कार्य नहीं चलेगा।

८७. ढ्रोंगी गुरु को छोड़ो।

८८. एक मनुष्य दूसरे का कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। परमेश्वर की कृपा छूट गयी तो कोई उसकी रक्षा नहीं कर सकता।

८९. गुरु से बडा कोई नहीं है, सद्गुरु से बडा तो कोई है ही नहीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९०. आजकल के गुरुजन जितना पाप कार्य कर रहे हैं, उतना और कोई नहीं कर रहा है।

९१. स्त्री का नाम सुनते ही मुँह खोलकर खडा हो जाता है गुरुवर्ग।

९२. मानव के ईर्ष्या की एवं अहंकार की भी कोई सीमा नहीं है।

भक्ति संवाद

९३. मैं इस दुनियाँ में अपने जीवन को पामर जैंसे कभी नही बिताऊँगा। मुझे अपने जन्म और मृत्यु को सार्थक बनाना चाहिए। मुझे परमात्मा पर विश्वास रखकर इस जन्म-मरण-वंधन को तोड़ फेंकना चाहिए।

९४. अगर मैं निर्दोषी बनने पर तुम प्रसन्न होगे, मैं निर्दोषी नहीं बना, तुम प्रसन्न नहीं हुए।

९५. शिव शिव! कहाँ हो? चुप क्यों हो? हे नाथ, सचमुच मैं बड़ा दुखी हूँ क्या आपको मालूम नहीं हैं कि मैं दुःख सागर में डूबा हुआ हूँ। मैं कायर होकर कैसे जीवन बिताऊँ? शंकर! परमाराध्य पिता! कहाँ हो? नाथ! कहाँ प्रभो! कहाँ हो? सांत्वना दो। शंकर! पिता कहाँ हो प्रभो! कहाँ हो? भिक्षा देकर सांत्वना दो। शंकर! पिता! कहाँ हो? आओ, क्यों मुझसे इतने निष्ठुर बने रहो? अपराधों की गिनती कहाँ तक सही है यदि मुझे दंड देना हो तो मुझे मार डालो। यह जीवन मृत्यु अब मुझे सह्य नहीं।

९६. हे जगदीश! पार करो इस भवसागर को। हाय! पिता हे देव, क्या मेरी पुकार तुम्हें सुनायी नहीं दे रही है?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९७. मुझे इस परीक्षा से ऊपर उठाना तुम्हारे वश में है। यदि मैं अनुत्तीर्ण हो गया तो यह तुम्हारी वेइज्जती है। जब मैं अपना सब कुछ तुम्हें समर्पण कर चुका हूँ तव अयोग्य समझ कर छोड़ देना कहाँ तक उचित होगा? यदि छोड़ा गया तो तुम्हारी शरण नाम की उपाधि निरर्थक हो जाएगी न? अहा! मै धन्य हो गया; ईश्वर का कृपा पात्र वन गया।

९८. यदि तुम्हारा नामोच्चारण मेरी जीभ पर सदा नाचता रहेगा तो मैं नरक में भी पुण्यात्मा होकर ही रहूँगा।

९९. जव तक विपत्ति सामने नहीं आती तव तक कोई भी प्राणी, रक्षक की अपेक्षा नहीं करता और उसका स्मरण तक नहीं करता हे । परमात्मा! तुम ही इस दुनियाँ के रक्षक हो। हे देव सारी दुनियाँ के लोग तभी तुम्हारा स्मरण करते हैं जव विपत्तियाँ लोगों को घेर लेती हैं।

१००. तुम्हारी विपत्तियों का ढेर ही तुम्हारे भक्त जानों के लिए दिव्यानुग्रह है।

१०१. विपत्ति ही तुम्हारे भक्तों की संपत्ति है। क्योंकि लौकिक संपत्ति से लौकिक पुरुष जैसे अपनी उन्नति कर सकता है वैसे ही तुम्हारा भक्त भी विपत्ति से उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है।

१०२. परमात्मा के निवास से जव भक्त का आनन्द रूपी अमृत रस बहने लगता है तव उसका हृदय पूर्ण रूप से शांत हो जाता है उसकी सारी वासनाएँ नष्ट होकर निष्कल्मष हो जाती हैं। उस वाह्य परिस्थिति का वर्णन यह काली मुँहवाली लेखनी क्या कर सकेगी?

१०३. तुम जिसके पक्ष में रहोगे वह लोक दृष्टि में कैसे अकेला? उसे पराजित करना सारी दुनियाँ से भी संभव नहीं है।

१०४. जो तुम सर्वज्ञ हो तो तुम से विनती करना तुम्हारे स्वरूप का ही अपमान करना सावित होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०५. हे जगदीश्वर! मुझमें जो दोष हैं, वे मुझे अच्छी तरह मालूम है। उन्हें दूर करना तुम्हारे वश में है।

१०६. हे जगदीश! तुम मुझे कब देखोगे? जल्दी आओ। क्या इस पुत्र की उत्कट इच्छा तुम्हें मालूम नहीं है? आओ, जल्दी आओ, आओ, आओ।

१०७. हे जगदीश्वर! मैं और किसी पर विश्वास नहीं रखता। मुझें तुम ही एकमात्र सहारा हो। मैं निष्कपट होकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। मेरे पाप और पुण्य दोनों तुम्हारे ही हैं

१०८. हे जगदीश्वर! बस करो इस भव को। हाय पिता! रोने को मुँह तक नहीं है। हे देव! क्या मेरी पुकार तुम्हें सुनायी नहीं दे रही है? हाय! नाथ! रक्षा करो। शिव शिव!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बधाइयाँ

जिन्होंने बचपन से ही हमारा हाथ पकड़ कर, आगे बढ़ना सिखाया तथा अपने जीवन की गति को ही एकदम बदल डाला ऐसे महान् आध्यात्मिक पिता परमपूज्य श्री तरलबालु जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी को सर्वप्रथम हम अपना भक्तिपूर्ण प्रणाम समर्पित करना चाहते हैं।

इस पुस्तक के मुख पृष्ठपर दिखाई देने वाले संयुक्त दिनचरियों के चित्र मूल दिनचरियों के यथारूप हैं। इसे हमारे निर्देशानुसार अपना मनपसंद परिवर्तन करके भक्तिभाव से लिखा गया चित्रकलाकार श्री एल. सीताराम जी को एवं पुस्तक के शीर्षक और ग्रंथकर्ता के नाम को खूब सुन्दर ढंग से लिख के दिये कलाकार श्री कमलाशंकरजी को अनेक आशीष।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। शिव ।।

ओ मेरा अंतरात्म!

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१

परिताप-पुकार

हे अपनी अंतरात्मा! इधर तनिक भी दया नहीं है तुम्हें? हे प्रेम की माता ! अपने में जो दोष हैं उन्हें मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ। मैं उसके कारण ही इस दुःख़ को भोग कर रहा हूँ। तुम इसे भली प्रकार जानते हो कि मैं उसके लिए बहुत कुछ पछता भी रहा हूँ।

भगवान, तुम्हारे दर्शन के बिना निष्काम बनना असंभव है। ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन! तिष्ठति इस प्रकार गीता संदेश सुना रही है। क्या हृदय को चीर कर देखूँ? अज्ञानी! हे भगवान् तुम दया करो, दर्शन दो। हृदय तपकर गरम होगया है। कम से कम इस जन्म में ही सही, तुम अपना परिचय मुझसे कराने की कृपा करो भगवान! मैने अनंत जीवराशियों के बीच जन्म लिया है। अब तो रहम कर, रक्षा करो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह सच है कि अपने हृदयांतर का परिताप सहनातीत हो गया है। इसका जिम्मेदार कौन है? अज्ञान ही अपना बहुत बड़ा शत्रु बन बैठा है। इस शत्रु को मार भगाने में मददगार बनो। वह अपनी सारी संपत्ति को लूटने आया है।

भगवान्, क्या तुम्हें मेरा करुणाजन्य आक्रंदन अब भी सुनाई नहीं दे रहा है? हाँ, मुझे मालूम हो गया कि तुम मुझे यही समझ, उपेक्षा कर रहे हो। भगवान्! यह सच है कि मैं पापी ही क्यों? महापातकी हूँ। मै बड़ा अपराधी हूँ। अपने में जो दुर्गुण हैं, वे मुझे पीछे ढकेल रहे हैं। मैं इसकेलिए पछता रहा हूँ।

इस पर तुम्हारी मर्जी हो सके तो कृपा करो; नहीं तो आगे जो होनेवाला है वह होकर ही रहेगा। पहले के कर्मानुसार जो वासनाएँ जमकर पक्की बन गयी हैं उनकेलिए अब पछताने से क्या फायदा? इस पर तुम जो समझो करो। "न खलु परतंत्रः प्रभुधियः" प्रभु का चित्त पराधीन नहीं है न! यदि तुम्हारे दर्शन न होंगे और शांति न मिलेगी, तो इसमें कोई शक नहीं है कि मैं जरूर पागल हो जाऊँगा।

रे मन! इस नास्तिक विचार श्रृंखला को मत पकड़ो कि ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर के अस्तित्व केलिए प्रमाण है जैसे (१) यह जग; (२) रामकृष्ण परमहंस (३) वेद, ये तीनों प्रबल प्रमाण हैं।

मैं थक गया हूँ अब बस करो। अपना अंतरंग बहुत क्षुब्ध हो उठा है। मैं व्यर्थ ही बर्बाद हो गया - व्यर्थ ही बर्बाद! दुर्बुद्धि से ईश्वर को भूल बैठा।

मैं पहले यह नहीं जानता था कि आपके दर्शन के लिए क्या करना चाहिए? कम से कम उसे तो बतला दो। मैं जहाँ तक समझता हूँ कि जिस रास्ते को अपनाकर तुम्हारे पास पहुँचने के लिए चल पड़ा हूँ वही रास्ता सुगम है। इस रास्ते पर चलते-चलते बहुत दिन गुजर गये। कोई प्रयोजन नहीं है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थक कर शक्ति ही खो बैठा हूँ। ऐसी बात भी तो नहीं, तुम मिले भी, नहीं मिले भी, हे महादेव! मेरी मन की कामना पूर्ण करो।

२६-४-१९३७

अपने मन में दिखायी देनेवाले कृत्याकृत्यों को विना छिपाये साफ साफ तुम्हारे सामने निवेदन कर देना अपना कर्तव्य है। हे मेरे पिता! तुम से यदि कपटाचरण करूँ तो क्या वह तुम से छिपा रह सकेगा? इसलिए अपने हृदय में जो गुणावगुण हैं, उन सबको तुम्हारे सामने रखकर क्षमा माँगने के अलावा, अपने दुर्गुणों का विनाश कर सद्-बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना तुमसे दिन रात किया करूँगा।

महादेव! मन को, विषयांतर्गत सुखों को दुःख बतलाने पर भी न जाने पुरातन संस्कार के कारण या वर्तमान संग दोष के कारण अथवा आहार दोष के कारण, अथवा अपने नरक सूचक दुर्भाग्य के कारण समझ नहीं पा रहा हूँ। विषय की सामग्री आँखों के सामने आते ही उसे पाप न समझ कर, विष न जानकर अपनाए जा रहा हूँ। आत्मन्! तुम्हारी योग्यता का अपमान देखकर भी उसका प्रतीकार न करके अपनी व्यथा बहुत बढ़ गयी है।

मैं तो! वैविध्यमय विचारों से तड़प रहा हूँ कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों यह मन ठीक रास्ते पर आयेगा। लेकिन हे भगवान्; मालूम हो रहा है कि तुम मुझे भूल बैठे हो। अपना मन तो विषय सामग्रियों से मिलकर खुशियाँ मनाने में तत्पर है। हे सर्वज्ञ! तुम्हारे सामने अपने दुखड़े को रोने से तुम्हारे सर्वज्ञत्व के लिए च्युति अवश्य हो जाएगी। हे महादेव! मैं इस डर से आंतरिक दुःख का शिकार बनकर कमजोर हो गया हूँ। अपने मन रूपी बंदर को भक्ति नाम के खूँटे से बांधकर स्थिर कर दो दयानिधे! कई बार दुत्कारा भी। लेकिन बहुत कुछ करने पर भी विषयों में जो सुख बुद्धि थी, वह नष्ट न हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पायी। दिन रात यही चिंता मुझे सता रही है। कालज्ञ जो तुम हो, तुम्हीं उचितानुचित करनेवाले हो।

मुझे इस दुनिया में सुख दिखायी नहीं दे रहा है। सुख पाना अपने बस संकल्प में ही रह गया है। संकल्प मात्र से भी सुख पाने लायक मैं नहीं रहा हूँ। इस शरीर को यदि इसलिए छोड़ दूँ कि इस में सुख नहीं है, अगले शरीर में भी सुख नही मिल सकेगा। क्योंकि शरीर के परिवर्तन मात्र से कुछ होता नहीं है। वहाँ पर भी वही जीवात्मा रहता है। सुख के लिए बाहरी वस्तुओं का संग्रह करना मूर्खता का काम होगा। सुख वस्तुओं के संग्रह में नहीं है। बडी जिगुप्सा से शरीर त्याग करने पर भी सुख नहीं मिल पायेगा। सुख जो है वह आत्मानुग्रह से, आत्मा से ही आत्मा में ही मिलनेवाली वस्तु है। हे परमात्मन्! अपनी अधोमुख प्रवृत्ति के प्रयत्न को अंतर्मुख करके रक्षा करो। आज अपना दुःख सीमातीत होगया है। इस दुःख को तुम्हारे सिवाय और कोई दूर नहीं कर सकता। यह तुम्हें मालूम ही है कि अपने हृदय की आज की परिस्थिति अज्ञान जन्य है। हे भगवान् मुझे पूरा पूरा विश्वास हो गया है कि मैं पूर्ण रूप से पराधीन हूँ। अपनी इस नीच बुद्धि का यदि क्रमशः नाश न होगा तो अधःपतन निश्चित है। हे परमपिता! इस अनाथ पर दयाकरके रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है। अज्ञान के मारे अपरिमित दुःख सहने की शक्ति मुझमें नहीं है। करूँ क्या? दुर्भाग्य, कर्मविपाक। पहले जो कुछ किया गया, अब भविष्य में भी ऐसा न होने पाये। इसलिए मुझे जागृत रख कर रक्षा करने की कृपा करना तुम्हारे वश में है। हे प्रेमाधार! अकारण वत्सल! दीनबंधो! प्राणनाथ! मैं तुम्हें किन शब्दों से संबोधित करूँ? इस मूर्ख बेचारे दीन पुत्र की रक्षा कर सत्पथ पर ले जाना तुम्हारी जिम्मेदारी है। अपने अंतरंग की सारी परिस्थितियों को तो तुम जानते ही हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिताप- हम्बल

बीच पानी में हाथ छोड़ दिया!
मैं अतिदीन हूँ हे जगदीश!
चाल चलन का मोल कहाँ इस जग में?
बीच पानी में हाथ छोड़ दिया।

क्या लिखूँ ? मन को कुछ नहीं सूझ रहा है। हे शिव ! मुझे मत भूलो यह विनम्र प्रार्थना है। जो सहनशील है, वही सार्थक जीवन बिता सकता है। दुर्बुद्धि की दवा क्या है? ज्ञान, धैर्य ही दवा हैं। जगदीश्वर ही दवा है।

२९-४-३७

हे दयानिधे ! विषयों में सुख पाने की जो बुद्धि है वह अब तक दूर नहीं हुई। उसके लिए मन कई प्रकार से छटपटाता है, तुम से माँग माँग कर मन ऊब उठा। इस पर मैं कब तक कितनी प्रार्थना करूँ ? मुझे अब तक एक भयंकर विपत्ति का सामना करना पड़ा है। इसे तुम्हारे सिवाय और कोई दूर नहीं कर सकता।

मनुष्य के उद्धार और विनाश केलिए मन ही कारण है। अपने मन को पवित्र करके रक्षा करना तुम्हारा जिम्मा है। अपने मन विषयों में प्रवृत्त होना ही मेरे लिए महान् विपत्ति है। बस इसको दूर करने के सिवाय मुझे और कुछ नहीं चाहिए। तुम सर्वज्ञ हो, तुम्हारे लिए मैं और क्या कहूँ?

ईश्वर की भक्ति किस प्रकार हो? भक्ति का माने अखंड, अछेद्य, व्यापक विश्वास है। यदि इस विश्वास को भगवान् में रखा जाय तो सर्वत्र भगवान् के दर्शनानुभव हो सकता है। उसके बाद परमात्मा को देखकर मन विकृत नहीं होता। सच्ची शांति को वह प्राप्त कर लेता है।

ईश्वर पर अखंड विश्वास रखना ही भक्ति मार्ग है। ईश्वर में भक्ति रखनेवाला भक्त कभी पापाचरण नहीं कर सकेगा। यदि भक्त से पापाचरण हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो वह कभी भक्त नही कहलाएगा। ईश्वर है, ईश्वर का स्वरूप अमुक प्रकार का है, ईश्वर यहाँ पर है। इस प्रकार का ज्ञान हो जाने पर, और किस वस्तु के संग्रह के लिए पापाचरण किया जाय? पाप कृत्य तभी बंद होंगे जव ईश्वर पर विश्वास दृढ होगा।

इस बात का ज्ञान तो जरूर है कि ईश्वर है! दिन रात विविध प्रकार से ईश्वर का ध्यान करते हैं। फिर भी पापकृत्य नहीं रुकते। कारण क्या है ?

इस बात का ज्ञान तो अवश्य है कि ईश्वर पर विश्वास है, ईश्वर तो अवश्य है। ईश्वर की सेवा भी करते हैं, फिर भी तो पापाचरण हम से नहीं होना चाहिए वे हो रहे हैं। क्यों? हमारा ईश्वरीय विश्वास विलकुल दृढ नहीं है। यदि सुदृढ होता तो पापाचरण होने की संभावना ही नहीं रहती। पूरे चौवीस घंटे ईश्वर की सेवा करने पर भी मन विलकुल पाताल तक नीचे गिर गया है ऐसी हालत में ईश्वर का क्या दोष है?

इसमें कोई शक नहीं है कि तुममें ईश्वरीय विश्वास परिपूर्ण अवस्था तक न पहुँच पाया है। चौबीसों घंटे ईश्वरीय सेवा तो यथा प्रकार चलती ही रहती है, इसलिए सूक्ष्म रूप से आत्म परिशोधन कर लो। सूक्ष्म रूप से चिंतन करने पर वह दोष देखने में आएगा। उस दोष को धैर्य से उखाड़ फेंको, फल अवश्य हासिल होगा।

रे मन! अपने निजस्वरूप में आओ। विषय विष हैं, विश्वास मत करो। तुम धोखा खा गये हो। पीछे से उनपर बहुत पछताना होगा। इस वात पर पूरा विश्वास कर लो कि वाहर कोई सुख नहीं है। इसमें कोई संशय नहीं है कि तुम्हारी हालत बहुत चिंताजनक है। तुम यदि जल्दी से न सुधरोगे तो तुम्हारा अधःपतन स्वतः सिद्ध है। अपने हितोपदेश को थोड़ा बहुत सुन लो। व्यर्थ वर्वाद मत हो। बहुत कुछ कह चुका हूँ। अब भी तो न छोड़ोगे?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छिः! पापी! इसमें कोई शक नहीं है कि तुमने पिछले जन्म में घोर रोमांचक पाप किया है।इसीलिए उसके परिणाम स्वरूप ही आज ऐसी परिस्थिति हुई है। इतना जगाने पर भी जागते नहीं हो, विष को ही अमृत समझनेवाली तुम्हारी मूढ बुद्धि को मैं क्या कहूँ ?

महादेव! मेरे पुराकृत कर्म जरूर बलवत्तर हैं। मैं अपराधी हूँ, लज्जा बलवती है। मैं तुम्हारी कृपा के बिना इस विपत्ति से पार नहीं हो सकता। अनाथ हो गया हूँ। हे देव मेरी रक्षा करो! हाय! भगवान! मुझे क्यों यह दुरवस्था आ घेरी! महादेव! अपराध, महापराध। मुझे क्षमा कर मेरी रक्षा करो।

विषयानल मुझे जला रहा है। यह विषय मारुत मुझे ढोकर ले जाएगा और पाप कूप में ढकेल देगा। विषय का शैतान मुझे लुका छिपाकर पाप की ओर खींच ले जा रहा है। हे देव! सर्वथा तुम्हीं मेरे रक्षक हो। हे देव! यह कहा नहीं जा सकता कि कब क्या होगा? दया करो। दर्शन दो। मुझसे सन्निहित रहो। बस हो गया। अपनी यह बुरी हालत कर्मफल का ही परिणाम है। मौन होकर रहना ही अच्छा है। जितना भी बको फल क्या है? हमने जो पाया है उसे भोगकर चुकाना ही होगा।

देव महादेव--- शिव शिव शिव शिव शिव
शिवधो। शिवधो। शिवधो। शिवधो।
शिवधो। शिवधो। शिवधो। शिवधो।
रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो।
रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो।
रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो।
रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो। रक्षा करो।

मुझे सही रास्ता दिखा दो, मुझे सत्पथ पर ले जाओ। अब काफी हो गया। हे नाथ! फिर कभी इस भव में न आना चाहूँगा! महादेव तुम्हारे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आदेशानुसार चलने तैयार होते हुए भी अव मुझमें शक्ति कम है। क्षमा करके रक्षा करो।

हे वृथा धूम मचानेवाले तुम मन से रोया करो, भगवान् अवश्य मिलेगा।

भयंकर रोक टोक है। रामकृष्ण परमहंस जी रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए। रक्षा कीजिए।

महादेव! इतने दिनों तक व्यर्थ पाप चिंतनों में, दुष्ट चस्कों में और दूसरों की निंदा में तुमको भूलकर समय गँवाया। चाहे जितना भी परिताप क्यों न करूँ, गुजरा समय लौटकर आ नहीं सकता। इसलिए अपना मन अधिक दुःखी है; यह सर्वज्ञ तुम जानते ही हो। अब भी मुझपर कृपा करोगे तो मैं सुखी जीवन बिता सकूँगा। हे सर्वज्ञ! तुम से क्या छिपाया जा सकता है? तुम से मैं क्या कहूँ? मेरी पाप प्रवृत्ति तो बेहद बढ़ गई है यह भी तुम्हे मालूम ही है। अनाथ नाथ अशरण शरण! दीनदयालो! परित्राहि मां करुणासिंधो! रक्षा करो, हे जगद्गुरु! हे शंकर। रक्षा करो।

मन की निश्चलता, गांभीर्य और निरंतर तुम्हारे ध्यान निष्ठा प्राप्त करने की शक्ति प्रदान कर इस याचक के मनोरथ को पूरा करो। यद्यपि मैं तुम्हारा कृपापात्र न हूँ तो भी इस जगत् में प्रसिद्ध है कि तुम अनाथनाथ हो और पात्रापात्र विचार किये बिना कृपा करते हो । इस पापी के पापों की कोई गिनती ही नहीं। इस नीच का जो दुरहंभाव है, वह अधःपतन का मूल कारण बना है।

मार्ग दिखला कर इस अंधे पर कृपा करो। अगाध करुणासागर! तुम्हारे पदपंकजों में गिर कर लोट रहा हूँ। मैं तुमसे कुछ भी नहीं माँगूँगा, तुम्हारा ध्यान ही मेरे लिए चिंतामणि है।

मेरा पालन करना तुम्हारा संकल्प है। तुम्हारे स्थान की इज्जत बनाये रखनेवाले तुम्हीं हो! सब कुछ तुम्हारा ही है! हे गुरो हे गुरो! शिवनंजुंडेश्वर!।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिताप- हम्बल

मुझे कुछ नहीं सूझ रहा है। दुनिया मेरेलिए विपरीत दीख रही है।

गुरुशंभुलिंग! रक्षा करो! करुणामूर्ति! पादपद्मों में प्रणाम, रक्षा करो करुणामूर्ति! ईश्वर रक्षा करता है। जगदीश्वर मुझे मत भूलो।

कार्पण्यदोषोऽपहतः स्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्[1]॥

सर्वज्ञस्त्वं निरवधिकृपासागरः पूर्णशक्तिः
कस्मादेनं न गणयसि ममापदब्धौ निमग्नम्।
एकं पापात्मकमपि रुजा सर्वतोऽत्यंतदीनं
जंतुं यद्युद्धरसि शिवकस्तावतातिप्रसंगः[2]॥

क्षंतव्यं वा निखिलमपि मे भूतभाविव्यलीकम्
दुर्व्यापारश्रवणमथवा शिक्षणीयं मनो मे।
नत्वे वार्त्यां निरतिशयया त्वत्पदाब्जप्रपन्नम्
त्वद्भिन्यस्ताखिलभरममुं युक्तमीश प्रहातुम्॥[3]

---

1 कार्पण्य दोषों से घबरा चुका हूँ-
धर्माधर्म के ज्ञान के बिना दिङमूढ बन गया हूँ।
बस मैं तुम से यही पूछता हूँ
मैं तुम्हारा शिष्य हूँ; शरण में हूँ, समझाओ॥ - भगवद्गीता २.७

2 तु सर्वज्ञ, सर्वशक्त हो, तुम्हारे कृपा सागर की न कोई परिधि,
फिर भी विपत्ति के सागर में डूबे मुझे
तुम परवाह क्यों नहीं करते ?
पापी होने पर भी सब तरह से अति दीन इस बिचारे का
हे शिव! उद्धार करोगे तो, इसमें तुम्हारा अधिक प्रसंग ही क्या है? - श्रीमृत्युंजय स्तोत्र

3 क्षमा करो अपने आगे पीछे के सारे पापों को
नहीं तो इस दुर्व्यसनी अपने मन को दंड दो,
निरतिशय विनय से तुम्हारे चरण कमलों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभो! शंभो! दीनं विहितशरणं त्वच्चरणयोः
भवारण्यादस्मात् विषमविषयाशी विषवृतात्।
समुद्धृत्य श्रद्धाविधुरमपि बद्धादरकरं
दया दृष्ट्या पश्यन् निजतनयमात्मीकुरु शिव॥[4]

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समो नहि।
एवां ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु॥[5]

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः संति सरलाः
अहं तेषां मध्ये विरलतरलोऽयं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे।
कुपुत्रा जायन्ते क्वचिदपि कुमाता न भवति॥[6]
अपराधपरम्परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतं।

. सब कुछ समर्पण करके; शरण में आये को दण्ड देना कहाँ तक सही है-शिव शिव।

4 हे प्रभु- हे शंभो- मैं दीन तुम्हारे चरण युगलों की शरण में आया हूँ
श्रद्धाशून्य भले ही हो सादर कर जोड़े मुझे
विषम विषय खिलाने वाले उस भवारण्य के विषवर्तुल से
दयार्द्र दृष्टि से देख- ऊपर उठाकर अपन सगा पुत्र समझो-रक्षा करो हे शिव।

5 मुझ बराबर पातकी न और कोई
तुझ बराबर पापहर न ही और कोई
इस भांति जान, हे महादेव की राणी
वही मुझे दो माँ, जो मुझे योग्य हो। - देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र श्लोक 12

6 माँ! हैं तुम्हारे लाल इस लोक में बहुसंख्यक,
उन में से अतिविरलतर हूँ मैं, तुम्हारा बेटा।
मेरी इस तरह उपेक्षा करना तुम्हारे लिए कहाँ तक उचित होगा हे देवि-
बुरे पुत्र भले ही जन्म लें, बुरी माता तो कहीं देखने में नहीं आती। - देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

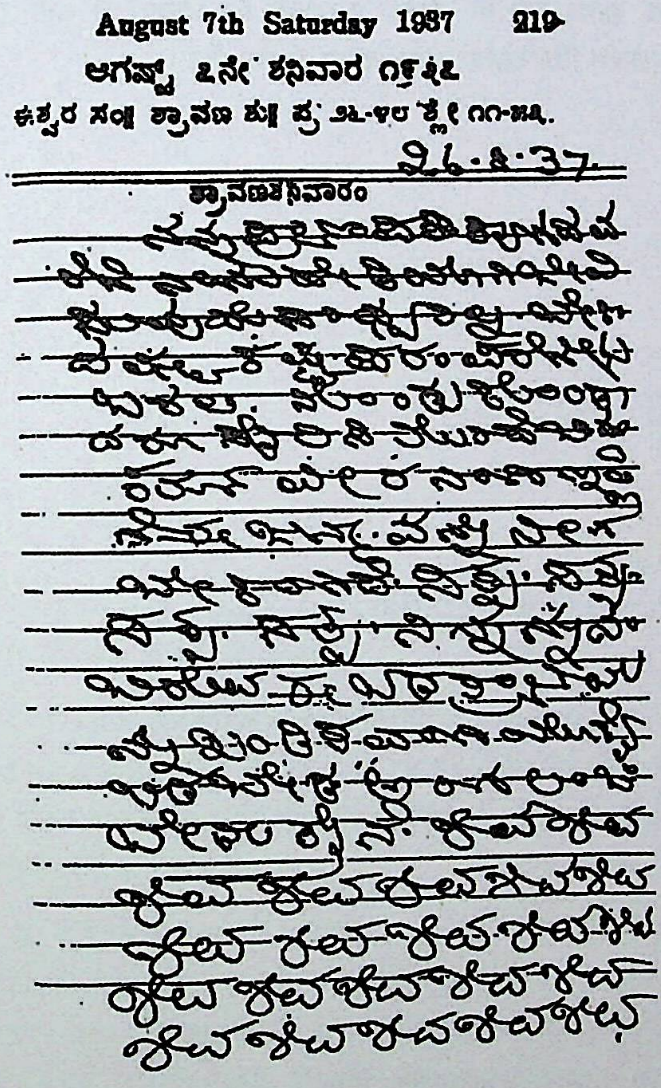
August 7th Saturday 1937 219
ಆಗಸ್ಟ್ ೭ನೇ ಶನಿವಾರ ೧೯೩೭
26.8.37
ಶ್ರಾವಣಶನಿವಾರಂ

अपने प्राण त्याग के पर्यंत मैं कायर बन कर जीना पसंद नहीं करूँगा। चाहे कष्टों की परंपरा ही क्यों न आ धमके, दुःखी होकर भी आगे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वढ़कर कर्मवीर हो यहीं अपना जीवन समाप्त करना है। यह सत्य है सत्य, सत्य, सत्य। तुम पर विश्वास रखनेवाले इस विचारों से कभी हाथ न झटकाओ। गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता हूँ। शिव शिव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२

विचार-विश्वास

२५-४-१९३७

अपने मन से जो डरता है उसका शीघ्रातिशीघ्र उद्धार होगा। मानव को सबसे पहले अपने दोषों को ढूँढना चाहिए।

विचारों में ही अभ्युदय है। विचार के अनुसार ही मन तैयार हो जाता है। विचार मन के अधीन में है। बुद्धि मन का सहायक है। जैसे जैसे उत्तम विचार प्रकट होते जाएँगे वैसे वैसे बुद्धि भी पवित्र होती जाएगी। बुद्धि की पवित्रता ही मन की स्थिरता का कारण है।

मन के निग्रह के लिए बुद्धि का स्थैर्य आवश्यक है। बुद्धि के स्थैर्य के लिए विचार की आवश्यकता है। जो मन को स्थिर न कर सकेगा - उसके लिए अखंड साम्राज्य पाने पर भी कोई सुख न मिल सकेगा। इसलिए गीता के उपदेशानुसार "यतो यतो निश्चरति मनश्चंचलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्।" (श्रीमद् भगवद्गीता ६, २६) चलना चाहिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊपर का श्लोक बताता है कि सुख आत्मा में ही है । इसलिए आत्मा ही सुख का आधारभूत है । सुख चाहनेवाले को आत्मा का आश्रय लेना होगा । "आत्मन्येव" शब्द यह सूचित करता है कि अनात्मजन्य सुख सुख नहीं है, अपि तु दुःख ही है ।

मानव का सुख मन की स्थिरता पर निर्भर है। सबसे पहले यह साक्षात्कार कर लेना चाहिए कि इस दुनिया में जो वस्तुएँ दिखायी दे रही हैं उनमें से किसी में सुख नहीं है । उसके बाद वैराग्य उत्पन्न होता है। अनादि काल से मानव का विचार प्रवाह सुखान्वेषण के पीछे पड़ा है। इस जगत के वस्तुओं में सुख नहीं है – यह जानने पर भी मनुष्य की सुखापेक्षा बंद नहीं हो पाती। इसके बाद ही उसे सुख के रहस्य का पता लगता है। वैराग्य ही सुख का सहायक है। विचार का प्रवाह अंतर्मुख होकर सुखस्वरूप जो आत्मा है उसमें विश्राम पाता है। आत्माभिमुखी विचार क्रांति ही मानव को अपरिमित आनंद की प्रदायिका है। इसलिए दुनिया की वस्तुओं में जो सुखबुद्धि है उसे वहाँ से हटाकर, मन को अंतर्मुखी करो जिससे शीघ्र ही सुख का पता लग जाएगा।

विचार क्रांति कब शांत होगी? जिस दिन आत्मा का परिज्ञान होगा उसी दिन। पवित्र विचार को प्राप्त करने के लिए संग भी पवित्र होना चाहिए। संग कई प्रकार के होते हैं। जब वे सब पवित्र निकलेंगे तभी यह साध्य है। संग - भोजन, पोषाक, घर, गृहस्थी, मित्र, हवा, ग्रंथ, आँखों के सामने आनेवाली वस्तुएँ। ये सब ठीक रहने पर विचार क्रांति भी पवित्र होकर मन को स्थिर कर देती है। "स्वस्थे चित्ते बुद्धयः प्रस्फुरन्ति।"[2] इसके अनुसार चित्त के स्थिर होने पर विवेकबुद्धि स्फुरित होती है और कार्याकार्य का ज्ञान हो जाता है।

जो ईश्वर में भक्ति रखता है वह कभी पापकर्म नहीं करेगा। जो पापकर्म करेगा उसे कभी ईश्वर पर विश्वास नहीं रहेगा। जब विश्वास जम जायेगा तभी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मानव पापकृत्यों को करना छोड़ देगा। ईश्वर का ज्ञान होने पर पापकृत्यों में मन नहीं लगेगा। ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसे ईश्वर न जानता हो। ईश्वरीय मार्ग पर चलनेवालों में यदि सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप से पाप विचार दिखायी दे तो हम जरूर कह सकते हैं कि उसमें ईश्वरीय विश्वास दृढ नहीं है। ईश्वर पर विश्वास जम गया तो स्थिर शांति अनुभव सिद्ध है। यदि सुख चाहते हो तो ईश्वर की शरण लो। सुख की लालच से बाहर इधर-उधर मत घूमा-फिरा करो।

ईश्वर कहाँ है? जो यह पूछता है वही स्वयं ईश्वर है। क्या तुम इसे नहीं जानते कि वह किस जगह पर रहता है? यदि यह सच हो तो सुनो - ईश्वर तुम्हारे हृदय में रहता है। वह ही सबकी प्रेरक शक्ति है। यदि तुम उसके विरह में छटपटा रहे हो तो वह भी तुम्हारे विरह में छटपटाता रहता है।

सुखोत्पादक वस्तुओं की लालच में पड़कर माँ से बिछुडा बछड़ा अपनी माँ को याद नहीं करता। जब तक उन वस्तुओं में सुख की भावना बनी रहेगी, तब तक माँ को याद नहीं करेगा। जब उसे पता चल जाता है कि उन वस्तुओं में कोई सुख नहीं है तभी वह यह सोचने लगेगा कि मैं यहाँ पर क्यों आया? तुरंत ही, अंबा! की पुकार लगाते हुए माँ की तरफ दौड़ने लगेगा। इस पुकार को माँ सुनते ही प्रतिपुकार लगाती हुई उसका अभिनंदन करेगी। यदि बछड़े की पुकार माँ को सुनाई देगी तो माँ क्षणमात्र भी अपनी जगह पर नहीं टिकती। अगर किसी कारण से माँ जल्दी न मिलेगी तो बछड़े की छटपटाहट बढ़ जाती है। छटपटाहट के बढ़ने पर कोई राही उसे माँ के पास पहुँचाने का प्रबंध करेगा।

रे मन! परमात्मा ही माँ है। जीवात्मा ही बछड़ा है। मोहक वस्तुओं की लालच में पड़कर जीवात्मा परमात्मा को भूल बैठा है। जब जीवात्मा को इस बात का पता लगेगा कि इस दुनिया में केवल लालच ही लालच है वास्तविक सुख नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है तव वह उल्टा रोने लगेगा । यह रुलायी ऐसी हो जो माँ को सुनाई दे। रोना काफी है। सुनते ही माँ टिक न सकेगी। इसलिए हे अन्तरात्मा! तुम समझ लो इस दुनिया के पदार्थों में दिखायी देनेवाला जो सुख है, वह सुख नहीं है।

यह ज्ञान मोक्ष का मूल कारण वनता है । जो यह समझता है कि इसमें सुख है - यही बंधन का मूल कारण वनता है। यही शिवमंत्र का अर्थ भी है। इसका हमेशा मनन करना चाहिए। इससे ही नित्य सुख मिलता है। भरा घड़ा कभी नहीं छलकता। जीवात्मा जीवन्मुक्त हो जाने पर कभी दुःखी न होगा। जो नित्य शांत हो वही जीवन्मुक्त है। मोक्ष न तो किसी गाँव है, न किसी उपाधि है, न वह किसी फल है। मोक्ष तो आत्मा में मन की स्थिरता से उत्पन्न एक अलौकिक शांत भाव है।

पापकृत्य तो तभी बंद होंगे जव ईश्वर पर विश्वास जम जायेगा। यदि दुनिया को सुख चाहिए तो उसे ईश्वर पर पूरा भरोसा रखना चाहिए। जैसे जैसे ईश्वर में विश्वास बडता जायेगा वैसे वैसे उपद्रव बंद होते जाएँगे।

जो लोग कहेंगे कि "यह अपना भगवान् है; यह तुम्हारा भगवान् है" वे सव ईश्वरद्रोही हैं। ईश्वर एक ही है। ईश्वर में जो तर-तम का भाव करेगा वह ईश्वर का भक्त नहीं है। जैसे पानी नाम की एक ही वस्तु, देशकाल भाषाओं के वैविध्य से वाटर, पानी, ज़ल, सलिल आदि भिन्न-भिन्न शब्दों से पुकारी जाती है वैसे ही भगवान् नाम की एक ही वस्तु अल्लाह, गॉड, शिव, विष्णु, शक्ति, गणपति आदि आदि भिन्न-भिन्न नामों से संवोधित की जाती है।

जो भगवान् मंदिर में है वही मस्जिद में भी है। जो मस्जिद में है वही गिरजाघर में भी है। जिसे मंदिर में रहनेवाला भगवान् मस्जिद व गिरिजाघर में न दिखाई दे वह भक्त नहीं है। वह धर्मद्रोही है । हिंदू लोगों के भगवान् की मूर्तियों को नाश करनेवाला मुसल्मान मानों अपने 'अल्लाह' को ही मारता है। इसलिए वह अल्लाह का द्रोही बन जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाह्य आकारों में भिन्नता होने पर भी सत्य एक ही है। सभी धर्मों में भगवान है। इस धर्म में भगवान् नहीं है - ऐसा सोचकर जो अन्य धर्म को स्वीकार करेगा; उससे उसकी अक्षम्य चंचलता अभिव्यक्त होती है और अज्ञान भी प्रकट होता है। चंचलता ही भगवान् से दूर करती है। अपने धर्म को छोडकर अन्य धर्म की ओर जानेवाला अज्ञानी है, चंचल भी। उसे भगवान् कभी न मिल पायेगा। केवल वाह्य ढोंगी प्रार्थनाओं से भगवान् प्रसन्न नहीं होता। उनकी प्रसन्नता मन की स्थिरता पर ही निर्भर है।

जिस समाज में परमत द्वेष जितना बढ़ गया है; समझो कि वह समाज उतना ही धर्म मार्ग से पिछड़ा हुआ है। अगर दुनिया को सुख चाहिए तो वह सिर्फ अध्यात्म विद्या से ही होगी। इस अध्यात्म विद्या का प्रचार करनेवाला कौन है? वे हैं धार्मिक गुरुजन! लेकिन अफसोस की बात यह है कि नाममात्र के गुरुजन जो हैं उनसे सारे लोक की हानि हो रही है। धर्मगुरुओं का संघटन होना चाहिए। सभी को अपने-अपने आचार्यों के संदेशों को दुनिया के सामने रखना चाहिए। जब तक समाज में गुरुजन अपनी अपनी जिम्मेदारी न निभायेंगे तब तक दुनिया में सुख नहीं है। सब से पहले धार्मिक गुरुजनों को सुसंग में रहकर विद्यार्जन करना चाहिए। बसवादि शिवशरणों के अनुसार, कथनी के अनुसार करनी भी होनी चाहिए।

आजकल पढ़े-लिखे लोगों से ही दुनिया की बड़ी हानि हो रही है। व्यावहारिक शिक्षा के साथ ही साथ आध्यात्मिक शिक्षा भी आवश्यक है। जबतक विचार क्रांति में परिवर्तन नहीं होगा तबतक इस जगत में सुख नहीं मिलेगा। सुख के लिए वाह्य वस्तुओं का संग्रह करनेवाला कभी सुखी नहीं होगा। अन्तःशक्ति का संचय करना चाहिए। अंतःशक्ति का मतलब है - आत्मबल और आत्मविश्वास।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिक्षा में परिवर्तन लाये बिना दुनिया को सुख नहीं मिलेगा। विद्यार्थियों को औद्योगिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक - इन तीनों प्रकारों की शिक्षा देनी चाहिए। जिस समाज में अच्छी माताएँ न हो वह समाज कभी प्रगति पथ पर नहीं जा सकता। समाज को सुधारने में माताओं की देन अनमोल हैं।

आदर्श के अनुसार चलनेवाला व्यक्ति अभ्युदय को प्राप्त कर सकता हैं। जो अपना अभ्युदय चाहता है उसे आदर्श का पालन करना चाहिए। जिस समाज के नेता लोग स्वार्थी, उदासीन, घूसखोर बने हुए हैं, वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकेगा।

दुनिया में शांति फैलाने का उत्तरदायित्व धार्मिक गुरुजनों पर है। जिस समाज के धार्मिक गुरुजन कर्तव्य भ्रष्ट होंगे वह समाज कभी प्रगति नहीं कर पाएगा।

जल्दबाजी से बड़ी हानि होती है। चुगलखोरी अनर्थ का मूल कारण है। कल्पना के आधार पर गलत अर्थ मत निकालो। ईश्वर को सदैव मत भूलो। दृढता जितनी पक्की होगी उतना ही सुख है। धैर्यं सर्वत्र साधनम्। सत्य के पक्षपाती को कभी भय नहीं है। "सत्यमेव जयते नानृतम्!"

हरेक स्त्री पुरुष को अपने-अपने कर्तव्यों को ठीक-ठीक समझकर उनका पालन करना चाहिए।

संयम में ही सुख है। इन्द्रियों का निग्रह करो। निग्रह जो है वह शत्रुओं के लिए किया जाता है। इससे क्या तुम नहीं समझ सकते कि इन्द्रिय भी शत्रु हैं? शत्रुवचनों के वश में होनेवाला व्यक्ति अविवेकी है। उसमें नैतिकता नहीं है।

जो आध्यात्मिक सार को नहीं चखेगा उसे सुख कभी नहीं मिलेगा। इस बात को पद-पद पर, पल-पल पर अनुभव पाने का दृढ विश्वास रखना चाहिए कि भगवान् अपने हृदय में है। भगवान् पर विश्वास किये बिना सुख कभी नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिलेगा। भगवान् पर विश्वास ही उन्नति मार्ग पर ले जायेगा। उन्नति का अर्थ यह नहीं है कि धन-कनक आदि संपत्तियों को इकट्ठा करना। उन्नति का मतलब यह भी नहीं है कि दुनिया की समस्त विद्याओं को करतलामलक कर लेना। उन्नति माने यह भी नहीं है कि जन मन पर जादू डालनेवाली मीठी बातों का भाषण देना। उन्नति का अर्थ यह है कि मन का स्थैर्य। उन्नति का अर्थ यह है कि ईश्वर पर अखंड विश्वास। मन आनंद से परिपूर्ण होकर लहलहराने लगे।

रे मन! मैं ने अहंकार में व्यर्थ ही तुम्हारे ऊपर भरोसा रखे धोखा खाया कि मुझे ईश्वर पर संपूर्ण विश्वास है। यदि तुम में ईश्वर पर विश्वास होता तो तुम कभी पापकृत्य नहीं करते। तुम से जो पाप कृत्य हो रहे हैं वे तुम्हें ईश्वर से दूर कर रहे हैं। विषयों से सुख पाने की तुम्हारी जो लालसा है; उसी ने तुम्हें पीछे की ओर ढकेल दिया है।

हे मेरे परमपिता! तुम अपने पुत्र का करुणाक्रंदन तो सुनो। तुम्हारे विरह से जो दुःख हो रहा है, उसका वर्णन तो मैं नहीं कर सकता। हे सर्वज्ञ! ऐसा कौन सा विषय है, जिसे तुम नहीं जानते? उचितानुचित का विचार तुम्हीं करो? आपकी सर्वज्ञता ने मुझे मूक बना दिया है। तुम्हारे शरण में आये हुए इस पुत्र की मनोविचार क्रांति को यहीं परिसमाप्त कर दो। तुझ से मेरी विनती यही है कि तुम पर मेरा अखण्ड विश्वास सदा बना रहे । मेरे मन का एक हिस्सा विषयों के वश में है और दूसरा हिस्सा तुम्हारे वश में है । इस लालच को दूर करके रक्षा करना तुम्हारे हाथ में है। मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है कि ईश्वर पर दृढ विश्वास रखना ही दुनिया की शांति का एकमात्र साधन है। मेरे हृदय के दुर्विचार और दुस्संगों को दूर करो। ऐसा करो कि मेरी कथनी और करनी में बिलकुल तालमेल हो जाये । हे पिता! बहुत दिनों से तुम्हारे विरह में मैं छटपटा रहा हूँ। हे सर्वज्ञ! मेरी इस तमन्ना को तुम जरूर जानते ही हो । इस को पूरा करने की क्षमता तुम्हारे अलावा और किसमें है!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नासमझ मूर्ख जैसे मौन रहना ही ज्ञानी का लक्षण है। जय शिव! मुझे सद्-बुद्धि प्रदान करना तुम्हारे वश में है।

जैसे अन्न वैसे गुण। यह निश्चय है कि जब मैं स्वतंत्र होकर सात्विक आहार सेवन करने लगूँगा तभी मैं स्थिर चित्त हो जाऊँगा। हे महादेव! मुझे पराधीनता से दूर करो। आहार के विषय में स्वतंत्र बना कर रक्षा करो। अपनी माँग और कुछ नहीं है। तुम सर्वज्ञ होने के नाते ऐसा कोई विषय नहीं हो सकता है जो तुम्हारी जानकारी में न हो । सही गलत का फैसला करना तुम्हारे वश की बात है। मेरे मन में तुम्हारे सर्वज्ञत्व की भावना जागृत होते ही अपनी वाक् शक्ति झुक जाती है। हे भगवान्! रक्षा करो।

न मानव जन्म पाना कोई कठिनाई की बात है, न मरना। लेकिन इन दोनों के बीच में अज्ञान में पडकर भव यातनाओं का अनुभव करना जो है वह नरकवास से भी ज्यादा भयानक है। कुत्ता, अपनी चाव से ही मल खाता है; वैसे ही अज्ञ जन विषयों को ईश्वर से अपने लिए दी गई भोग्य वस्तु समझकर भोगते हैं। कुत्ते को मल खाते हुए देखकर लोगों के मन में बहुत घृणा होती है। वैसे ही लोगों को विषयों में लिपटे हुए देखकर विचारशील पुरुष को बडी जिगुप्सा होती है।

अगर मन को निश्चल न किया जाय तो शांति को प्राप्त करना असंभव है। मन को अपने वश में रखना ही जितेंद्रियत्व है। जो मन के अधीन रहता है वह `भवि` (नास्तिक), अज्ञानी, बद्धजीवात्मा है। जो मन को अपने वश में रखता है वही ज्ञानी और जीवन्मुक्त है।

मन को निश्चल बनाने का क्या उपाय है? मन को हमेशा किसी न किसी काम में लगा देना चाहिए। जो लोग मन को अपने अधीन में नहीं रख सकते हैं उन्हें एकांत में न रहकर बड़ों की संगति में दिन रात रहना चाहिए। जो अपने मन को वश में रखते है उनके लिए एकांतवास सर्वोत्तम है। लेकिन जो अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन के अधीन रहते हैं उनके लिए एकांतवास बड़ा हानिकारक है। मन को हमेशा अच्छे-अच्छे कामों में लगाना चाहिए। यदि कार्य वाहुल्य से ऊब उठा हो तो अपने को स्नान व व्यायाम में लगा देना चाहिए। प्रतिज्ञापूर्वक हर रोज कम से कम एक वार अपने इष्टदेव का जप करना चाहिए। साथ ही साथ यह समझलेना चाहिए कि भगवान् हमेशा अपने लिए सहारा वना हुआ है। भगवान् को अपना सब कुछ समर्पण कर देना चाहिए।

कहते हैं कि हम चाहें जितना भी भजन-कीर्तन करें भगवान् नहीं मिलेगा। जिस के हृदय में दुरहंकार भरा हुआ हो कि मैं भगवान् को भजनेवाला भक्त हूँ, भगवान् उसमें कैसे वस सकता है? जवतक उसके हृदय से यह दुरहंकार मिट नहीं जाएगा तव तक उसे भगवान् का दर्शन पाना दुर्लभ है। निरहंकारी यह कभी नहीं कहेगा "जितना भी भजन करो भगवान् का दर्शन नहीं मिल पायेगा"।

बच्चे को खिलौना मिलने पर माता को भूल वैठना सहज ही है। वैसे ही जीवात्मा भोग्यवस्तुओं को पाकर भगवान् को भूल जाना सहज है।

रे मन! तुम इधर-उधर चारों ओर मत घूमा-फिरा करो। जहाँ कहीं भी जाओ वह एक ही वस्तु दिखायी देगी। लेकिन तुम्हारी चंचलता कई वस्तुओं को दिखलाती है।

लोगों की निन्दा से मत डरो। अगर अपना स्वार्थ सिद्ध न हो तो लोग निंदा करते हैं। हाथ लगे तो प्रशंसा करते हैं। न तो उनकी प्रशंसा का कोई मूल्य है न निन्दा का।

तुम जो देश सेवा कर रहे हो उसे तुम करते जाओ। दूसरों के कहने पर सेवा करनेवाला भला क्या करेगा? जो काम अपने हृदय में उत्पन्न कर्तव्य की भावना से होता है और वह काम जो दूसरों के कहने पर होता है इन दोनों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बडा फर्क है। सिर्फ कहनेवाले से कुछ नहीं होगा। वह इसलिए दूसरों से कहता है कि वह स्वयं उस काम को करने में सर्वथा असमर्थ है। लेकिन जो दुरहंकार से परिपूर्ण और अनात्मज्ञ है, उसे अपना दौर्वल्य समझ में नहीं आता।

तुम जितना हो सकें उतना तन-मन-धन से देश की सेवा करो। निंदक तबतक तुम्हारी निंदा करेंगे जबतक तुम रहोगे।आखिर में वे चुप हो जायेंगे। कुत्ते डरनेवालों को देखकर बहुत भौंकते हैं। लेकिन हाथ में लाठी हो तो नौ दो ग्यारह हो जाते हैं ।

देश सेवा करने वालों को विघ्नकारी मत बनो। परंतु तुम जो कुछ कर रहे हो उसे मत छोडना। ऐसा करना चाहिए; वैसा करना चाहिए - इस तरह की फिजूल बातें करने के बजाय उसे खुद करके दिखाना बेहतर होगा।

चंचल चित्तवालों की आक्रोश भरी बातों से क्षुब्ध मत बनो। जो सहनशील होगा वही फूले-फलेगा। यदि स्वार्थ हाथ न लगेगा तो निंदा करनेवाले लोग बहुत हैं। अंतरात्मा को धोखा न देकर, तुम से जितना हो सके उतना परोपकार करो।

दूसरों की निंदा से वृथा व्याकुल मत हो। तुममें दोष देखकर कोई तुम्हारी निंदा नहीं करता है। अपना स्वार्थ पूरा न होने के कारण वे तुम्हारी निंदा करते हैं। परंतु मिलने पर प्रशंसा करते हैं। ऐसे लोगों की निंदा - प्रशंसा का कोई मूल्य ही नहीं है।

भगवान् पर पूरा भरोसा रखो, उन्मत्त होकर दुरहंकार से यह मत बको कि भगवान् है ही नहीं । सज्जनों के मन को मत दुखाओ। हमेशा शांति से अपना काम करो। गुस्से में कटी नाक फिर कभी नहीं जुड़ सकती। क्रोधी कभी सुख चैन से नहीं रह सकता। जो शांतिपूर्वक रहता है उसे दुःख ही नहीं है ।

स्त्रियों में सुख होता तो कभी पुरुषों को वे नहीं चाहतीं। अगर पुरुषों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुख होता वे कभी स्त्रियों को नहीं चाहते। ये कहते हैं कि उनमें सुख है; वे कहती हैं कि इनमें सुख है। विचारशील को इन दोनों में सुख नहीं है। सुख आत्मा में ही है । आत्मा ही सुख का आधार है। बाहर कहीं सुख को मत ढूँढा करो। सुख तुम में ही है। "अशांतस्य कुतस्सुखम्!"[1] (अशान्त को सुख कहाँ?). अज्ञानी का कहना है कि बाहर सुख है। ज्ञानी कहते है कि सुख और कहीं नहीं, अपने में ही है। सुख की लालच में बाहर की वस्तुओं का संग्रह जितना बढ़ता जायेगा दुःख भी उतना ही बढ़ता जायेगा। बादशाह को किसी की चीज की कमी नहीं है। लेकिन उसने अपनी जिंदगी में कितना सुख पाया है और कितना दुःख? जानोगे तो समझ पाओगे।

२६-४-१९३७

पिछला दिन परिशुद्ध होकर गुजर गया। हे भगवान्! आज भी मन निष्काम होकर जीवन्मुक्त के सुख का सुअवसर प्रदान करना तुम्हारे ऊपर निर्भर है।

मन के ऊहापोहों को मिटाकर, स्थिर करके अंतरात्मा में आनंद विभोर होकर रहने दो भगवान्। चंचल मन ही समस्त विपत्तियों का मूल कारण है। मेरे मन में तीन दुश्मन मौजूद हैं - चंचलता, काम और क्रोध। इन्हें विनाश करने की शक्ति प्रदान करके रक्षा करो हे गुरुदेव! अपने हृदय में जो कल्मश है उसे धोकर साफ करके रक्षा करना तुम्हारे ऊपर है।

३०-४-१९३७

आज थोड़ा समय ही सही, सिद्धासन में रहकर परमात्मा का ध्यान किया। इसी प्रकार हर रोज करना अपना कर्तव्य है।

---

[1] जिसमें शांति न हो उसमें सुख कहाँ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संतोषामृततृप्तानां यत्सुखं शांतचेतसाम्।
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।[2]

१-४-१९३७

सच है यह वात "यदभावि न तद्भावि भावि चेन्न तदन्यथा।"[3]।

हे जगद्गुरु! मेरा कोई काम तुमसे छिपा हुआ नहीं है? तुम निष्पक्षपाति हो; तुम जो भी करते हो उसमें अवश्य औचित्य रहता है। मुझे इसका पता विलकुल नहीं हैं कि मैं अपने मन को क्या कहूँ?

इस प्रकार निरुद्योगी वनकर बैठना बेशक पाप का फल ही है। समझ में नहीं आ रहा है कि उस जगन्नियामक का मंतव्य क्या है?

जो कुछ होनेवाला है सो होने दो। धैर्य से यदि रोका न जाय तो रोते हुए ही सही उसे रोकना ही पड़ेगा। वह कभी नहीं चूक सकता। हे भगवान्! क्या तुम्हें तनिक भी दया नहीं है? मुझे अपनी गहराई का पता हीं नहीं लग रहा है। जो भी हो, मैं विलकुल ऊब चुका हूँ। सव कुछ दैवेच्छा के अनुसार ही होगा। सोचने से कोई फायदा नहीं है। अधर्म की चिंता भी नहीं छूटती। तुम ही मेरे रक्षक हो। मैं तेरे शरण में आया हूँ ।

---

[2] संतोषामृत से संतृप्त शांत चित्तों का सुख
धन के लोभ से चारों ओर चक्कर लगाने वालों को कहाँ – हितोपदेश १-१४५

[3] जो न होने का है वह कभी नहीं होगा।
जो होने का है वह अवश्य होकर ही रहेगा। - हितोपदेश -२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३

स्वाध्याय

३-५-१९३७

हे जगदीश्वर! तुम्हीं को पालन करना होगा। हे पिता! तुम्हारा करुणाकटाक्ष ही मेरी गति मति है।

४-५-१९३७

चिक्केगौड़ जी ने कहा कि पढ़ाई मत छोडना; साल में कम से कम तीन महीनें काशी में रहकर प्रयत्न जारी रखना। मुझे भी यह बात ठीक लगती है।

लेकिन अव की मेरे मन की भावनाओं से यह स्पष्ट हो रहा है कि विद्याधिदेवता महामाता शारदा देवी मुझे न भूल वैठी है। लेकिन इस विषय को मैं प्रकट करना नहीं चाहता हूँ।

हे जगदीश्वर! कृपा करके मेरी रक्षा करो कि मैं अपनी आचार्य परीक्षा में पास हो जाऊँ और कीर्तिमान बनूँ। ऐसा होने पर ही प्रतिज्ञा पूर्ण हो सकेगी। ईश्वर अवश्य रक्षा करेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४-५-१९३७

अगर मैं अपने आप को यह समझूँ कि मैं बुद्धिमान् हूँ, मैं अच्छा हूँ, मैं कर्तव्यदक्ष हूँ तो दूसरों की निंदा करने में, निर्दोषियों को सदोषी बनाने में लग जाऊँगा। इसलिए रे मानव "कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी" - इस उक्ति के अनुसार आज तुम्हारे समान मेधावी न रहने पर भी इस निरवधि काल में कभी न कभी भूमि के विशाल होने के नाते कहीं न कहीं तुम्हारी बुद्धि से बढ़कर और कोई बुद्धिमान् अवश्य जन्म लेगा। इसलिए तुम हमेशा अपने आप को बुद्धिमान् मत समझो। इसे अच्छी तरह से जान लो कि इसकी वजह से बड़ा अनर्थ होगा।

७-५-१९३७

अनंत शक्ते! अपार कारुण्यपारावार गुरुदेव! मैं कहाँ का हूँ और आप कहाँ के हैं? फिर भी आपकी कृपा मुझे आपकी पदपंकजों के समीप खींच लायी है। मैं धन्य हो गया। अहा! देव! आपके प्रेम के प्रत्यक्ष अनुभव से मैं वंचित रह गया हूँ। हे देव! कम से कम उस समय के अंदर ही कृपा करके जरूर मेरी रक्षा और उद्धार करो हे गुरुनाथ! अकारणबंधो! त्राहि त्राहि शंकर! हे गुरुशांतेश्वर! रक्षा करो।

८-५-१९३७

सिरिगेरे श्री स्वामीजी से मलेबेन्नूर उत्सव में आने के लियें पत्र आया है। साथ ही साथ हस्त पत्रिका और छपाई पत्र भी। मैंने वीरशैवों का सच्चा इतिहास लिखने की शुरुआत की है।

९-५-१९३७

अंततः मैं मन को समझाते समझाते थक गया हूँ। फिर भी उसने अपने सहज स्वभाव को नहीं त्यागा। खासकर आचार्य परीक्षा को छोड़ देना अपने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिए बडी वेइज्जती की वात होगी। इसलिए शत-प्रतिशत प्रयत्न करके आचार्य परीक्षा देनी ही होगी । भगवान् को मेरी रक्षा करनी चाहिए। लेकिन मैं स्वयं भगवान् पर पूरा विश्वास नहीं रख सका हूँ। मैं जो पापकृत्य कर रहा हूँ, वे ही इसके सवूत हैं । मेरे मन को यह पूर्ण रूप से विदित है कि मैं अपराधी हूँ।

१०-५-१९३७

यह जन्म तो सुकृत जन्य जन्म नहीं है। वहुत कुछ कष्ट परंपरा को सहना पड़ रहा है। जो आनेवाले हैं, उन्हें आने दो और कोई चारा ही नहीं है। जगदीश्वर रक्षा करेगा।

११-५-१९३७

गुरुदेव! मैं तुम्हारी सेवा करके ऋणमुक्त होना चाहता हूँ । गुरु शिष्य के इस संवंध को इस दुनिया में चिरस्थायी वनाना चाहता हूँ । मेरी यह कामना है कि हम्हारा यह आपस का संवंध औरों के लिए मार्गदर्शक एवं अद्भुत वन जाए। लेकिन हे नाथ! मैं पराधीन हूँ। अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी नही होता है। हाँ यह जरूर संभव है जब तुम्हारे शरणागत में आये हुए मेरे ऊपर तुम्हारी कृपा हो जाये । मैं ऋणमुक्त हो जाऊँगा। लेकिन ये सव तुम्हारे वश में हैं। हे गुरुशांतेश! रक्षा करो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२८-५-१९३७

इस साल में मेरे अनुभव

- संदर्भानुसार बोलना भी एक प्रकार का मौन ही है।
- दुनिया में मितभाषी ही बुद्धिमान् है।
- जिसके व्यक्तित्व में गंभीरता नहीं है उसका जीवन गार्दभ का जीवन है।
- शांति स्वर्गीय पितामह की कृपा है।
- जो हमेशा शांत रहता है वही सुखी होता है।
- जो दूसरों की निंदा को सहता है वही हमेशा सुखी रहता है।
- किसी को भी आत्मीय नहीं समझना चाहिए।
- यह संसार एक बाजार है। बाजार में जितना व्यवहार करना है-- बस उतना ही करना चाहिए।
- भगवान् पर जो असीम प्रेम रखता है वही उस पार पहुँचता है।
- मुझे जो कुछ सुख मिला है, वह सब ईश्वर की देन है।
- ब्रह्मचर्य एक श्रेष्ठतम तप है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४

शरणागति

१-५-१९३७

मन में शोचनीय ऊहापोह उठ खड़े होते हैं। फिर भी जगदीश्वर मन में कभी प्रकाशित कभी अप्रकाशित होकर यह दिखाता है कि यह दुनियाँ विजली जैसी क्षणभंगुर है। मेरा मन एक पलक पहले कुछ याद कर दुःखी था। फिलहाल वह धैर्य से आगे बढ़ रहा है। कुछ भी हो अगर मेरा उद्धार होना हो तो वह ईश्वर की कृपा से ही होगा । अन्यथा अधःपतन निश्चित है। मेरा सर्वस्व परमात्मा के अधीन है।

हें परमात्मन्! क्या इस वेचारे के ऊपर अभी भी तुम्हारी करुणा नहीं है? हे देव! मैं रो रोकर थक गया हूँ । अव आगे तुम जो उचित समझोगे वही करो।

२-५-१९३७

हे ईश्वर! मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि तुम्हारे हृदय की अपेक्षा क्या है?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह भी मालूम नहीं हो रहा है कि मुझे इस प्रकार के बंधन में क्यों रखे हो? भगवान् यह सच्ची बात है कि हम तुम्हारी महिमा को नही समझ पा रहे हैं। लेकिन हे नाथ! यह भी साफ नजर नहीं आ रहा है कि तुम्हारे दास को इस बंधन स्थिति में कब तक रहना पड़ेगा। हे ईश्वर! मैं जरूर तुम्हारे शरण में आया हूँ। तुम्हें तिरस्कार करने की बुद्धि मुझमें पैदा नहीं हुई है। हे देव! तुम्हारी नजर में यह पामर व्यक्ति कैसे आ सकेगा? हे स्वामिन्! भिक्षा रूप से ही सही व शिक्षा रूप से ही सही, इस पामर के मन को शांति दो। हे जगन्नाथ! मेरे हृदय की परिस्थिति तुम जैसे सर्वज्ञ को अविदित नहीं है । हे महामहिम! मेरी रक्षा करना तुम्हारे हाथ में है। हे जगन्नियामक! मुझे सत्कर्मों में नियुक्त करके मेरे चित्तको शान्तिसुधा की रसानुभूति करा दो । हे मंगलस्वरूप! इस दीन के भावी अमंगल को दूर करो। हे ईश्वर! मैं यह नहीं जानता कि तुम्हारी इच्छा क्या है? चाहे जितना भी नुकसान क्यों न हो, मैं लोगों से झगड़ा मोल लेने को तैयार नहीं। यह तुम्हारे लिए कोई नयी बात नहीं है कि मुझे पहले से ही शांति पर अत्यधिक विश्वास है। हे सद्गुरुनाथ! कृपा करके रक्षा करो। यदि तुम अपने बच्चे को भूल जाओगे तो मेरी रक्षा कौन करेगा? मैं अनाथ बन जाऊँगा। मैं बार बार यह कहना नहीं चाहूँगा कि मैं बहुत थक गया हूँ। उदास होकर तुम्हारा संग छोड़ने को भी मन नहीं लगता है। संग में रहने पर भी शांति सुधा को पी नहीं पा रहा हूँ। हे जगदीश्वर! मैं तुम से यही प्रार्थना करता हूँ कि तुम सर्वज्ञ हो, मेरे लिए जो उचित होगा वही तुम करोगे। ऐसा करो-वैसा करो इस तरह की माँग केवल अज्ञानी ही करता है जिसका कोई फल नहीं ।

३-५-१९३७

हे शिव! क्या कुमार की रक्षा करने के बजाय यों ही छोड़ दोगे? यह कभी नहीं होगा। लेकिन किसी कर्मविपाक ने प्रतिबंधक बन कर हम दोनों को विछोड़ दिया है। लेकिन मैं यह नहीं जानता कि इस विपाक कब खत्म होगा?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे जगदीश्वर! तवतक इस विरह को कैसे सहा जाय? परमेश्वर! मुझपर कैसी विपत्ति आ पड़ी है? हे देव! तुमसे मैं कैसे विछुड गया ? परमात्मन्! मैं सही में वहुत थक गया हूँ। हे सर्ववित्! क्या यह तुम से छिपा थोड़े ही है कि अव अपने हृदय की परिस्थिति कैसी है? रक्षा करो शंकर। करुणाकर! दीन दयालो! शरणागत रक्षक! - यही मेरी मनोकामना है। हाँ। हाँ। मनःकामना। हे भगवान्! मेरी रक्षा करो। रक्षा करो। कम से कम सपने में ही सही तुम्हारे निज दर्शन देकर सांत्वना दो। हे ईश्वर! इस वेचारे, अनाथ वच्चे का हाथ मत छोड़ो। तुम्हारे विना मैं और किसी पर विश्वास नहीं करता हूँ। हे जगदीश्वर! तुम्हारा कृपा कटाक्ष ही मेरा रक्षा कवच है।

हे जगद्वंधो! तुम कहाँ हो? आओ, जल्दी से आओ। इस वच्चे को दर्शन देकर सांत्वना दो। हे पिता! मुझ पर क्यों इतनी उपेक्षा? शीघ्र आओ। क्यों इतनी देरी? हे नाथ! मैं थक गया हूँ। क्या मेरी परीक्षा ले रहे हो? हे भगवान् ! हाय! माता पार्वती! लक्ष्मी! सरस्वती! समस्त देवी देवताओं! क्या किसी को भी मेरी दुःखभरी पुकार सुनायी नहीं दे रही है? महादेव! मैं थक कर जर्झरित होगया हूँ।

४.५.१९३७

मैंने ईश्वर पर भरोसा रखा है। मैं इस दुनिया में पामर जैसा जीवन विलकुल विताने वाला नहीं हूँ । मुझे अपना जन्म और मरण दोनों को सार्थक वनाना ही चाहिए। मुझे परमात्मा पर विश्वास रखकर, इस जनन-मरण की वेड़ी से छुटकारा पाना ही चाहिए। विश्वासी व्यक्ति को सामान्य मनुष्य भी नहीं भूलते, ऐसी हालत में यह मिथ्यापवाद होगा कि भगवान् भूल वैठता है! जरूर वह भूलेगा नहीं, रक्षा करता है, जय महादेव।

ईश्वर पर विश्वास रखके आज तक कोई भी वरवाद नहीं हुआ है। पामर होने पर भी ईश्वर के राज्य में प्रजा वन सकता है। चाहे पामर हो, चाहे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महामहिम हो, ईश्वर सवको समान दृष्टि से देखता है, रक्षा करता है, रक्षा करता है, रक्षा करता है । इसमें कोई संशय नहीं है। परमात्मा के भक्त को शांति नाम का अमृत पान करने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त होता है।

स्वार्थी लोगों की निन्दा से शुद्धांतकरण व्यक्ति कभी नहीं डरता। महादेव! महादेव! तुम सचमुच परम दयालु हो। बच्चों को रोते हुए देखकर जैसे माँ कभी सहन नहीं कर सकती वैसे ही परमात्मा भी है। माता ही परमात्मा के स्वरूप में इस लोक में रहती है। ईश्वर और भक्त के मिलन के सुख को माँ-बच्चे किंचित् ही क्यों न हो अनुभव करते हैं। धीर ही परमात्मा का दर्शन पा सकता है। नास्तिक से ईश्वर दूर - बहुत दूर। धीर इस (भव) सागर को, ईश्वर की कृपा रूपी नांव पर बैठकर पार करता है। इसमें संशय नहीं; वह रक्षा करता ही रहता है।

ईश्वर रक्षीत ।
पाहि माम् जगदीश्वर! अनाथनाथ! पाहि माम्।
शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव
शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव
शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव शिव

शिवाधव! शिवाधव

गिरिजापति की जय। वावा विश्वनाथ की जय।

यह मेरा अनुभव है कि ईश्वरभक्ति ही परतर मुक्ति के लिए सुयुक्ति है। यह जन्म मेरे सौभाग्य का जन्म है। इस जन्म में कर्मफल के अनुसार किये जानेवाले कामों में ईश्वर के अनुग्रह से उसकी आज्ञा के परिपालन के लिए कोई वाधा न आ सकेगी। इस प्रकार मुझे सहारा देनेवाला उस जगदीश्वर के चरणों में मेरे अनंतानंत प्रणाम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईश्वर द्वारा दी गयी किसी भी आज्ञा को मैं इस जन्म में तिरस्कार करनेवाला नहीं हूँ । जिसे अपने हाथ में लेंगे उसकी जय निश्चित है। सत्य ही अमृत है। जो सत्य मार्ग पर चलेगा वह सर्वत्र यश पायेगा।

मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मुझमें द्रोह, कपट, दुरहंकार की बुद्धि बिलकुल नहीं है। अपनी प्रार्थना को पूर्ण करने केलिए असीम करुणासागर परमात्मा प्रत्यक्ष खड़ा है।

महादेव की जय

आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद आनंद
आनंद आनंद आनंद

५-५-१९३७

मन में जो दुर्वासनाएँ हैं वे अब तक शांत न हो पाई हैं। जब तक विषयों में सुख बुद्धि प्रत्यक्ष रूप में व परोक्ष रूप में जागृत रहेगी तब तक मानव को सुख नहीं मिलेगा। सुख चाहनेवाले को सुख की चीजों से त्याग बुद्धि होनी चाहिए। प्रापंचिक सुख वास्तव में सुख नहीं है। उनमें सुख का आभास मात्र ही गोचर होता है। अगर मन को निजानंद सुख का अनुभव अंशमात्र भी हो जाये तो वह मन इस अल्प मात्र सुख के लिए कभी मुड़कर नहीं देखेगा। इसलिए रे मानव! तुम पूर्ण विचारशील बनकर जीओ। जोश में आकर यह मत कहा करो - जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जन्म लिया है एक न एक दिन मरना ही है ; इस तरह की उपेक्षा भावना धारण करने से तुम एक अमूल्य रत्न को खो बैठोगे। सचेत रहो।

६-५-१९३७

हे ईश्वर! इस दीन का मन दिन ब दिन विकृत होता जा रहा है। दुनिया को मनाकर लगे हाथ आश्रय को सफल बना कर चलना बडा बोझ सा लग रहा है।

यदि ईश्वर मददगार नहीं होगा तो पापयोनि पाना निश्चित है। दिन व दिन उत्तम परिस्थिति नजर आती तो कोई परवाह न थी। तब ऐसा कहा जा सकता था कि हाँ, पथ मिल गया है। लेकिन दिन ब दिन उत्तरोत्तर मन निकृष्ट होता जा रहा है। हे परमात्मन्! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं कितना अपराधी हूँ। लेकिन मैं विवश हूँ। यह कहते हुए मुझें बड़ा दुःख हो रहा है कि मेरा मन बहुत नीचे गिर गया है।

हे ईश्वर! करुणाकर! आगे मुझे कुछ नहीं सूझता। कृपाकर रक्षा करोगे तो यह बेचारा पार हो जाएगा। अन्यथा दुर्दशा हो जायेगी। तुम सर्वज्ञ और उचितज्ञ भी हो। तुम्हें जो पसंद आए वही करो।

मैं अपनी परिस्थिति को तुम्हारे सामने रख चुका हूँ। जो उचित होगा उसे तुम जरूर करोगे। इसके लिए सोचना ठीक नहीं लगता। तुम पर समस्त भार सौंपकर निश्चेष्ट होकर बैठना ही मेरा कर्तव्य है। चाहे जितना बडबड़ाऊँ अपनी करनी को भोगना ही पड़ेगा। इसे किसके सामने कहूँ?

हे भगवान्! मेरी बुद्धि पर पूर्णतया अंधकार छा गया है। तुम जो चाहते हो वह करो। मैं कुछ भी तुम से माँग नहीं सकता।

- इति तुम्हारा शिवकुमारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४-६-१९३७

सर्वज्ञ! उचितज्ञ! सर्वज्ञ! उचितज्ञ
परदुःख दूर! भव दूर! भवतु मंगलम्
शंकर! भव दूर! भवतु मंगलम्
शंकर! भव दूर! भवतु मंगलम्
शंकर! सारामद्गुरु विरूपाक्ष विधानदि!

५-६-१९३७

अंतर्यामि! तुम जो कुछ करते हो उसे मैं जानता हूँ। मैं खूब जानता हूँ कि ये जो विपत्तियाँ आयी हैं, वे इसलिए आयी हैं कि अपनी वृद्धि तुममें और दृढ हो। रक्षा करो दयालु! सर्वज्ञ! उचितज्ञ!

हे भगवान्! मैं अब क्यों आँसू बहाऊँ? गुलाव अपनी सुगंध को दुनिया को बताने के लिए अपना पौधा छोड़कर, दुनिया के सामने नहीं जाता। दुनिया ही कातुरता से उसके पास पहुँचती है। इस प्रकार मेरे आदरणीय परमाराध्य परमहंसजी ने कहा है कि तुम्हारी खुशबू का पता लग जाय तो सव कोई मुग्ध हो जाते हैं। तुम क्यों चिंतित हो? छोड़ दो चिंता को। यदि तुम इस चिंता को छोड न सकोगे तो अपने हाथ का काम छोड़कर निकल जाओ। वैराग्य लेकर व्यर्थ चिंता में पडो मत। ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर! ईश्वर! शिव! अनजाने में मेरे द्वारा किये गये अपराध हजारों हो सकते हैं। तुम सर्वज्ञ हो। तुम्हारी नजर में आते ही वे सव अपने आप डर के मारे तुरंत भाग जाते हैं। क्षेत्रपाल के रहते क्या क्षेत्र में पशु घुस सकते हैं?

हे देव! एकाध बार भयंकर कड़ी परीक्षा मुझे जरूर मारणांतक कष्ट देती है। लेकिन तुम्हारे घन करुणामेघ का उदय देखते हुए मैं सांत्वना पाता हूँ। लेकिन मैं किसी भी हालत में स्वतंत्र नहीं हूँ।

रे! मन! तुम मनमाना मत बका करो। उससे तुम्हारी इज्जत विनष्ट हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जायेगी। सत्य की रक्षा के लिए जीओ। चाहे जान भी चली जाय किस बात का डर? वह अनित्य है। उसे जाना ही है। उसके लिए चिंता क्यों?

१०-६-१९३७

हे जगदीश्वर! मुझमें जो दोष हैं, वे मुझे अच्छी तरह मालूम है। उन्हें दूर करना तुम्हारे वश में है। इस दुनिया को जीतने का सामर्थ्य मुझमें कदापि नहीं हैं। मैं जरूर विषय में फँसकर बहुत दुःखी हो गया हूँ।

आत्मा को तुम्हें समर्पण करके मैं पराधीन बन गया हूँ। अब विषय भोग के लिए तरसनेवाले इस नीच को तुम्हारी आज्ञा के बिना अपने आप करना असंभव है।

देवाधिदेव! मैं तुम्हारी शरण में आकर तुम्हारे पदकमलों में आत्म समर्पण कर चुका हूँ। चाहे बिगाड़ो या उद्धार करो। तुम जो भी करोगे वे दोनों मेरे लिए तुम्हारा प्रसाद ही हैं।

१३-६-१९३७

आज कोई विशेष नहीं है। लेकिन मोह नाम की जो चीज है वह बहुत बुरी है। वह ईश्वरार्पित मन को भी पीछे खींच लेता है। ऐसे दुर्मोह के वश में होकर ईश्वर को ही धोखा देनेवाला जो मैं हूँ, अपने को ही नापसंद बन गया हूँ। फिर भी उस परमात्मा पर मुझे विश्वास है। शांतिः सुधा जीविनाम्। देवताओं के लिये अमृत सुधा है तो प्राणियों के लिए शांति ही सुधा है।

चाहे पूरे ब्रह्माण्ड में हलचल मच जाये स्थिरचित्तवाला घबडाता नहीं है।

१४-६-१९३७

"कोपः पापस्य कारणम्!" कोप ही पाप का कारण है। "मोहो मूलमधः स्थितेः" (मोह ही अधःपतन का मूल कारण है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भगवान् पर जो सुदृढ विश्वास है, वही मानव की इच्छा को पूर्ण कर सकता है। विषयलंपट जैसे विषयों के लिए तरसता है वैसे ही प्रभुप्रेमी अपने मनःपूर्वक निःस्वार्थ होकर जब प्रभु केलिए तरसने लगेगा उसी दिन प्रभु का दर्शन निश्चित होगा।

उन्मत्त होकर यह मत कहो कि भगवान नहीं है। पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान इंद्रियों के सन्निकर्ष से होता है। तुममें जव भगवान् को देखने की इंद्रिय ही बंद हो गयी है तव तुम सिर्फ ऐसा कहो कि भगवान् नहीं दिखायी दे रहा है। ऐसा मत कहो कि भगवान् ही नहीं है।

उसकी कृपा से वह इन्द्रिय तुम्हें मिल जाये तो तुम भी उसे देख सकोगे। इसलिए उस इंद्रिय को प्राप्त करने केलिए तुम दिन रात एकाग्रता से उसका स्मरण किया करो।

२०-६-१९३७

हे भगवान्! तुम्हीं बताओ कि मैंने कौनसा अपराध किया है? मुझसे क्या गलती हुई है साफ साफ बताओ। उसके लिए मुझे दंडित करो। मेरी गलतियाँ मुझे मालूम नहीं होती हैं। मैं किसी लालच में पड़नेवाला नहीं हूँ।

हे देव! हे नाथ! यह परीक्षा बहुत कठिनतर है। लेकिन मुझमें वह योग्यता न होती तो तुम मुझे पोषक बनकर कभी इस इम्तहान में नहीं बिठाते। शायद मुझमें वह बल है । लेकिन मुझे विश्वास नहीं है । तुम्हारी कृपा बल ही बल है। इस अनाथ की रक्षा करना तुम्हारे हाथ में है। चाहे अनुत्तीर्ण हो जाऊँ या उत्तीर्ण दोनों तुम्हारे हाथ में है । मैं तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कभी नहीं जाऊँगा। अंतरात्मा के आज्ञानुसार चलने के लिए मैं तैयार हूँ।

२८-६-१९३७

देवाधिदेव! मेरे मन को शांति सुधा कब मिलेगी? हे देव! मेरा मन कष्टतर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अविवेकजन्य दुःख का अनुभव करते हुए बड़ी दयनीय स्थिति में पहुँच गया है। इस अविवेक को दूर करके पालना तुम्हारा जिम्मा है।

हे जगदीश्वर! मेरे अपराध अवश्य ही अक्षम्य हैं। मन बहुत दुर्बल अवस्था में है। मुझे परिपूर्ण शक्ति प्रदान करो ताकि मुझसे कभी कोई गलती न हो। मुझे बचाना तुम्हारे हाथ में है ।

हे देव! मैं तुमसे कुछ भी नहीं मांगता हूँ। मुझे सच्ची शांति चाहिए। वह शांति तुम्हारे दर्शन कृपाशीर्वादों के बिना मिलना असंभव है। इसलिए मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ।

हे जगदीश्वर! मैं तुम्हारे लिए ही, तुम्हारी आज्ञा पालन करने के लिए ही जी रहा हूँ।

तुम चाहो मुझे पानी में डुबाओ या ऊपर उठाओ - तुम्हारी मर्जी। तुम जो भी करो मैं सब भुगतने केलिए तैयार हूँ। मैं तिलभर भी तुम्हारे इरादा के खिलाफ नहीं चलूँगा। अगर मुझसे गलती हो तो दंड देनेवाले तुम्हीं हो।

मैं तुमसे क्या मागूँ? तुम्हारी सर्वज्ञता, निष्पक्ष एवं औचित्यपूर्ण विचारशीलता इन मंगलकर गुणों को स्मरण करते हुए मुझे अद्भुत समाधान मिलता है। हे नाथ! रक्षा करो।

हे देव! क्या कम से कम आज मुझे सही शांति मिल पाएगी? मुझे कहाँ की शांति? तुम्हारे चरणदर्शन के बिना, स्पर्श के विना, शांति कैसे मिल पायेगी? रक्षा करो! नाथ! जगद्गुरो! रक्षा करो? हे देव! रक्षा करो। हे ईश्वर! त्रैलोक्यबंधो! इस अनाथ की रक्षा करो। अशरण शरण! रक्षा करो! कम से कम एक क्षण ही सही दर्शन दो।

शिव, शिव! क्या आज भी मेरी पुकार तुम तक नहीं पहुँचपायी? जगन्नाथ! मैं और कौनसा उपाय ढूँढूँ? तुम्ही बताओ। मैं थक गया हूँ। बुद्धि पर अंधेरा छा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया है। कुछ भी नहीं सूझता। अनाथनाथ! दयाभिक्षा चाहता हूँ। खाली पेट का याचक! अतिथि लौटता है। क्या तुम्हें दया नहीं आ रही है?

मैं जो कुछ भी करने को स्वतंत्र नहीं हूँ। सब कुछ भगवान् को समर्पण करके, मेरे `अहं` को मिटा चुका हूँ। मैं एक यंत्र जैसे हूँ। इस यंत्र को तुम प्रेरक जिस तरफ चाहे उस तरफ घुमा-फिरा कर अपने इष्टार्थ को पूरा कर लो। महादेव की जय!

यह विरह कब दूर होगा। दुनिया में प्रियजन दूर रहने पर वह विरह कहलाता है। पर मेरा विरह वैसा नहीं है। दूर की बात क्या है? मैं यह नहीं समझ सकता कि जब तुम मेरा प्रिय अपने हृदय में दिन रात बसे हो, एक पलक भी अलग न हो तो इसको विरह कैसे कहा जा सकता है? मेरा प्रिय दिन रात कभी भी मुझसे विछुडा नहीं है। फिर भी विरह चक्र मेरे हृदय को चीर रहा है। शायद मेरे हृदय को चीरने से अपने पिता का दर्शन हो जाय? हे पिता। इस घोरारण्य में इस नन्हें शिशु को छोड़ देना कहाँ तक उचित है? हे पिता! आ, मुझे इस कांतार से पार कर तेरे सामीप्य का सुख दो।

विषय वासना से मेरा मन पूर्ण कलुषित हो गया है। हे देव! यदि इसी प्रकार रहूँ तो मैं पुण्यजीवी कैसे बनूँगा? पवित्रता नष्ट हो जाएगी न? हे जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा के बिना सब कुछ असाध्य सा हो गया है। देवाधिदेव! यदि मेरे हृदय में इतना कल्मष भरा रहेगा तो तुम मुझमें कैसे बस सकते हो?

इसमें कोई शक नहीं है कि मैं बड़ा पापी हूँ और मैं जितना भी प्रयत्न क्यों न करूँ, आगे नहीं बढ़ सकता। नीचे लुढककर गिर रहा हूँ। कुछ भी हो। भगवान् ही मेरी गति-मति हैं। मुझसे कुछ नहीं होगा। व्यर्थ में चिंताक्रांत हूँ।

मुझे ही बड़ी लज्जा हो रही है कि मैं कैसे तुमसे विनती करूँ कि अपने पापकृत्यों को माफ करो। मेरा मुँह कुछ बोलने लायक नहीं है। जैसी तुम्हारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इच्छा! देवाधिदेव! तुम जो उचित समझो सो करो। हे सर्वज्ञ! मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं तुम से क्या कहूँ? हे नाथ! रक्षा करो, रक्षा करो। घनघोर पश्चात्ताप, भयंकर परिताप हो रहा है। हे देव! क्या तुम मुझे छोड़ दोगे? हाय! हाय! बस यह मूढ़ जन्म! अविवेक जन्म!

३-७-१९३७

हे देव! संसार से भयभीत हो गया हूँ। हृदय काँप उठा है। न जाने मेरी पाप प्रवृत्ति कब दूर होगी। प्रतिज्ञा से पापों को दूर करना भी मुश्किल है। तुम कुछ भी करो। मैं पापी होकर भी तुम्हारी प्रार्थना नहीं छोडूँगा। दिन-रात तुम्हारा नामस्मरण ही मेरे लिए परम मित्र है। अहा! महादेव! जगदीश! प्रणाम।

५-७-१९३७

ओह! मेरा पाप कृत्य वेहद वढ गया है। हे जगदीश्वर! मैं क्या प्रतिज्ञा करूँ? मन दुर्बल हो जाने के कारण प्रतिज्ञाओं का पालन करना भी दुष्कर हो गया है। जो होने को है सो हो जाय। क्या किया जाय?

आज से मुझे गंभीरता को अपनाना होगा। मैंने पहले ही लिखा है कि जिसके जीवन मे गंभीरता न हो उसका जीवन गधे का जीवन है। लेकिन उसके अनुसार नहीं चला। मुझे अपनी गलती को स्वीकार करने में तनिक भी लज्जा नहीं हो रही है। इस तरह का भ्रष्ट जीवन बेकार है। आदर्श जीवन और पवित्र चरित्र मानव की उन्नति के साधन हैं। अब तो मैं ने यह निश्चय किया है कि गंभीरता से रहना और अपने पिछले कुकृत्यों को पछताना। पता नहीं कि कब तक यह चलेगा! मुझे खुद भरोसा नहीं। भगवान्! न जाने तुम क्या समझकर मुझे ऐसी प्रेरणा कर रहे हो? औरों को दुखाकर अपने स्वार्थ को पूरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करना कहाँ तक उचित होगा? हे भगवान्! क्या इस भ्रष्ट पर अब भी दया नहीं है? रे नीच मन! क्यों इतना पापकृत्य कर रहे हो?

७-७-१९३७

रे नीच मन! तुम्हारे पाप कृत्यों की कोई सीमा ही नहीं है। इस प्रकार तुमने कितने दीन लोगों को अधो मार्ग पर पहुँचाया होगा? तुम इस प्रकार दुर्विचारों में संलग्न होकर, परमात्मा के पुत्र और तुम्हारे आश्रयदाता जीवात्मा को क्यों बंधन में डाल रहे हो ? इससे जो परहिंसा होगी क्या उसका पाप भय तुम्हें नहीं है?

मेरे लेख में तो पाठकों को सिर्फ दिखावे केलिए पश्चात्ताप की वाक्यमालाओं का सृजन हो रहा है । लेकिन अपने भीतर पाप की चिन्ता छोड नहीं रहा हूँ। रे मन! बस बस, छोड दो इस पाप की चिन्ता। व्यर्थ ही मुझे गुरुद्रोही, दैवद्रोही और देशद्रोही मत बनाओ।

९-७-१९३७

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि अमुक लोगों ने ही ऐसा किया है। यदि कहूँ, तो जो मेरा विश्वास है कि ईश्वर सर्वव्यापी है वह ढोंग में बदल जाएगा। लेकिन उन लोगों को आपस में इसे समझ लेना चाहिए। यह दुर्भाग्य की बात है कि वे ऐसा नहीं समझ पा रहे हैं। मैं जो कष्ट भुगत रहा हूँ वह क्या है? इस दुनिया में मुझसे भी बढ़कर विचित्र परीक्षाओं के शिकार बने लोग अधिक संख्या में हैं। हे भगवान्! मेरा दृढ विश्वास है कि तुम्हारी असीम कृपा मेरी रक्षा जरूर करेगी।

१०-७-१९३७

हे जगदीश्वर! तुम मुझसे सपने में ही सही यह कहो कि तुम मेरे हो। इस मूर्ख को कार्यतः समझ में नहीं आएगा। हे नाथ! इस मुग्ध की इच्छा को कब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूरा करोगे? हे मेरे प्यारे पिता! अब तक इस तरह मेरी रक्षा करते हुए आये हो कि मुझे तिलभर भी खतरे का सामना न करना पडा। मैं क्या माँगू? मुझे यह भी नहीं पता कि किसमें भलाई है और किसमें बुराई? मेरी जो कामानाएँ हैं वे सब अपनी बुराई केलिए हैं। तुम जो ठीक समझते हो वही करो; जिससे मेरी भलाई हो। इसलिए हे पिता! मेरी मनःकामनाओं को सफल बनाकर रक्षा करो हे पिता! दीन दयाल! तुम्हारे लिए अपना मन कब से तरस रहा है। तुम्हें अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ।

१२-७-१९३७

तुम सर्वज्ञ हो। तुम्हें सब कुछ मालूम है। फिर भी चुप क्यों हो? मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि तुम क्या समझकर ऐसा कर रहे हो? तुम जो कुछ कर रहे हो वह सब ठीक ही है। तुमसे अनौचित्य का काम कैसे होगा? सूरज के पास अंधेरे को ढूँढनेवाला पागल नहीं तो और क्या? देवाधिदेव! इस अनाथ का भविष्य तुम पर अवलंबित है। कुछ भी करो। मैं यह नहीं चाहता कि मुझे सुख ही दो। सिर्फ दिन-रात तुम्हारी प्रार्थना करना मेरा कर्तव्य है; धर्म है। आगे जाकर इसकेलिए तुम ही प्रमाण हो। तुम जैसे सर्वज्ञ के सामने अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करें तो तुम हँसोगे न ! इसलिए हे जगदीश्वर ! मैं मौन ही रह जाऊँगा।

१३-७-१९३७

देव देव! तुम्हारे विरह ने मुझे निर्बल बना दिया है। इस दुःख को मिटाने केलेए तुम्हारे सिवाय और कोई समर्थ नहीं है। इस दुःख को मैं किससे कहूँ? यदि तुममें दया हो तो पापी होने पर भी इस अनाथ की रक्षा करो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम मेरी रक्षा अवश्य करोगे। लेकिन मुझे मालूम नहीं हो रहा है कि तुम किस प्रकार से मेरी रक्षा करोगे। तुम्हारी महिमा ही अजीब सी है। मेरे जैसे पापी पर आपकी महिमा दृष्टिगोचर नहीं हो पाती। तुममें भूल नाम की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई वस्तु ही नहीं है। तुम मेरे लिए विरही न हो। मेरे पास रहने पर भी तुम मुझे दिखाई नहीं दे रहे हो। जो होगा होने दो। तुम्हारे सिवाय मेरा और कोई रक्षक नहीं है। इस अनाथ की रक्षा करो और इस संसार की बाधा से मुझे बचाओ। इससे और क्या अर्ज करूँ? ऐसा कौन सा विषय है जिसे तुम नहीं जानते?

१४-७-१९३७

तुम जो नाटक रचे हो वह सब इस दुनियाँ की भलाई के लिए ही होगा। तुम्हारे अंतरंग की रहस्यमयी बातें जानने का चैतन्य हम में नहीं है। इस बेचारे को तुम्हारा स्मरण मात्र का अधिकार है। तुम्हारे शरण में आया हूँ। मुझ से जितने भी अपराध हुए हैं उन सबको क्षमा करके रक्षा करो। तुम पर विश्वास रखकर सब कोई ऊपर उठ चुके हैं। मैं ही एक लाचार हूँ। मुझे भूलना मत। देवाधिदेव! इस परीक्षा का फलितांश कब निकलेगा? उस दिन मैं किस प्रकार के आनंद का अनुभव करूँगा? लेकिन तुम्हारी प्रार्थना से ही मुझे विशेष प्रकार का आनंद अनुभव होता है। रक्षा करो।

१५-७-१९३७

हमें अपनी-अपनी गलतियाँ मालूम नहीं होती। लेकिन जो विवेकी और निःस्वार्थी होगा वह समझ सकता है। दोषी अपनी आत्मा को मनाकर ही करता है। निर्दोषी भी अपनी आत्मा को मनाकर ही करता है। इन दोनों की आत्मसम्मत बुद्धि कुछ समय के बाद जब लोगों को कार्य रूप में दिखायी देगी तब इसकी असलीयत की परीक्षा होगी। अथवा उसी क्षण जगदीश्वर देखता है।

हे जगदीश्वर! मैं तुम्हारे सामने भी निस्संकोच होकर निर्दोषी कहने का साहस करता हूँ। मेरे अंतःकरण की वास्तविकता को तुमसे छिपा नहीं जाता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६-७-१९३७

आजतक इस प्रांत में दो कोल्हू में फँसकर उत्तीर्ण हो गया। यह तुम्हारे लिए गर्व की बात होगी कि मैं निर्दोषी ठहरा। इसकेलिए मुझे तनिक भी घमण्ड नहीं है। लेकिन तीसरा जो कोल्हू है वह बड़ा प्रवल है। फिर भी जो परमात्मा के कृपा का रक्षाकवच धारण किया है उसके लिए उस कोल्हू की पीडा कोई पीडा नहीं होगी वल्की अपनी प्रिय वस्तु के आलिंगन जैसा आनंद प्रदान करेगी। मैं सपने में भी इस बात को नहीं मानता कि मेरी रक्षा का भार निभानेवाला परमात्मा उदास होकर बैठा है। मनुष्य जितनी परीक्षा के फंदे में फँसता जाता है उतना ही खरा निखरने लगता है। हे जगदीश्वर! यह विलकुल सच है कि तुम सर्वज्ञ हो। "सत्यमेव जयते नानृतम्"[1] यह बात सच है न? ईश्वर की इच्छा बड़ी विचित्र होती है। सारी दुनिया उसके विनोद के लिए सृजी गई है। हमें यह समझना चाहिए कि वह जो कुछ भी करता है अपने विनोद के लिए और साथ ही साथ हम लोगों की भलाई केलिए।

देवाधिदेव! तुम यह जानते ही हो कि मैं कितना नीच हूँ। मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। तुम कुछ भी करो। तुम्हारी शरण में रहते हुए मुझे तिलभर भी चिन्ता नहीं है। मैं तुम्हारी कृपा के महत्व को अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम मेरे हजारों अपराधों को क्षमा करके अब तक रक्षा करते आये हो।

१९-७-१९३७

देवाधिदेव! तुम्हें इस अनाथ की रक्षा करनी होगी। लोगों की विचित्र बुद्धि एवं दुरहंकार की दवा देनेवाले वैद्य तुम्हीं हो।

हे ईश्वर! रक्षा करो। आज सपने में महामाता की मंगलमूर्ति का दर्शन पाया हूँ। न जाने इसका फल क्या है? यह सही में भ्रांत दर्शन नहीं है। माँ मुझे

---

[1] केवल सत्य की ही जय होगी, मिथ्या की नहीं। -(मुंडक उपनिषद् ३.१.६.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपना मानकर इस तरह की निष्कारण कृपा दिखला रही है । हे माता! तुम्हें सहस्त्र कोटि प्रणाम। जब तुमने अपने आप कृपा की है तब मुझे तुमसे अर्ज करने की कौन सी बात रह गयी है?

२०-७-१९३७

आज रात सपने में फिर महामाता के मंगल विग्रह का दर्शन हुआ। निष्कारण वत्सला! मैं अपने को इसलिए धन्य समझता हूँ कि मैं तुम्हारा कृपापात्र हूँ।

महामाता! तुम्हें इस दीन पुत्र की सहस्त्र कोटि विनतियाँ। तुम्हारे पुत्रवात्सल्य के लिए मैं आभारी हूँ। तुममें मेरे बारे में यह जो अपनापन हैं उसने मुझे अपरिमित आनंद ला दिया है। तुम्हें बार बार नमस्कार करता हूँ।

मृत्तुगदूरू* ग्रामाधिदेवता के प्रति

हे माता! मैं तुम्हारे सान्निध्य को निष्ठुरता से छोड़कर आया फिर भी तुम कुपित न होकर इस प्रकार मुझपर अभिमान से रक्षा करने हेतु कटिबद्ध होकर खड़ी तुम्हें देखकर मुझे वर्णनातीत आनंद का अनुभव हो रहा है। हे माता! तुम्हारे सानिध्य में जन्म लिया, बड़ा हुआ और यहाँ आया। तुम्हारे प्यारे पुत्र के सुख दुःख, लाभ, हानि, जय-पराजय सब तुम्हारी हैं। तुम्हारा स्मरण करते हुए मेरे मन में ये पूर्ण कामनाएँ जाग उठीं । हे माता! इसके बदले में मैं तुमसे क्या अर्ज करूँ? बस मेरा पालन करने का सारा भार तुम्हारा है। सुबह का सपना कभी झूठ नहीं निकलता। मेरे इस पुण्य भाग्य की कोई सीमा नहीं है। भक्ति से प्रणाम करता हूँ।

---

* जन्म स्थान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१-७-१९३७

माता! माता! यदि तुम्हारा यह पुत्र इस भूलोक में योग्य निकला तो वह तुम्हारे गाँव के लिए ही यशोदायक है। तुम्हारे अनन्य भक्त जो माता-पिता हैं उनके लिए कीर्तिदायक है। लेकिन हे माता! तुम्हारी इस कृपा ने मेरे सिर को झुका दिया है।

मातृप्रेम में परवश तुम्हारे प्यारे पुत्र के अपराधों को क्षमा करने केलिए तुमसे प्रार्थना करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

माँ! माँ! माँ! माँ!

माताजी मैं किस प्रकार तुम्हारे इस उपकार को चुका दूँ? मैं तुम्हारा स्मरण मात्र कर सकूँगा। अगर इस अल्प मात्र से तुम्हारा ऋण चुकाया गया तो कोई चिंता नहीं है। अन्यथा मैं तुम्हारे ऋण चुकाने केलिए जन्म-जन्मान्तर में भी तुम्हारा प्यारा पुत्र बनकर ही जीऊँगा।

हे माता! निष्कारण प्रेमदान करनेवाली तुम ऋण चुकाने की बात कभी नहीं करोगी। फिर भी तुम्हारे दर्शनानंद से उन्मत्त मैं मनमाना लिख रहा हूँ। तुम जैसे अकारण वत्सला से यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मुझे क्षमा करो।

हे माता! यह कहने की जरूरत ही नहीं है कि सर्वदा रक्षा करने का भार तुम्हारा है।यह वात सच निकली कि "अपराधपरंपरावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम्"[2] । लेकिन मैं तुम्हें याद दिला रहा हूँ कि मेरे मन की उस एकमात्र कामना को पूर्ण करो।

---

[2] पुत्र जितना भी अपराध क्यों न करे
माता तो तिल भर भी उपेक्षा नहीं करेगी - देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र श्लोक-११

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२-७-१९३७

हे जगदीश! तुम मुझे कब देखोगे? हे जगदीश! जल्दी आओ। क्या इस पुत्र की उत्कट इच्छा तुम्हें मालूम नहीं है? आओ, जल्दी आओ, आओ, आओ। कहाँ पर हो हे पिता! आड़ में खड़े होकर, मेरे प्रलापों को सुन रहे हो क्या? उससे तुम्हें खुशी हो रही है क्या? कोई प्रेमी एक क्षण मात्र का भी विरह का सहन कर सकता है क्या? आश्चर्य! कहाँ हो पिता? देरी क्यों ? मेरी रक्षा करने के लिए जल्दी आओ।

२५-७-१९३७

तुम्हारी तमन्ना से, तुमसे मिलने, तुम्हारी सेवा करने और तुम्हारे दर्शन पाने केलिए ही मैं जिन्दा हूं । हे करुणामयी भगवान्! इस महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करके आज सपने में क्षणमात्र के लिए ही सही तुम दर्शन दोगे तो मैं अपने को धन्य समझूँगा।

२६-७-१९३७

पुत्र के अभाव को दूर करो। मैं जो अनाथ बैठा हूँ, तुमसे सनाथ होना चाहता हूँ। हे करुणामय! अशरण-शरण! तुम अपनी कृपा दृष्टि दो। जगद्बंधो यथा शीघ्र मेरी रक्षा करो! तुम हो इसलिए मैं जीवित हूँ। आज नहीं तो कल ही सही, तुम जरूर मिलोगे - इस एकमात्र आशा से मैं जीवित हूँ। अगर अंश मात्र भी यह संदेह उठ जाय कि तुम नहीं मिल पाओगे तब मैं इस शरीर को त्याग दूँगा।

२८-७-१९३७

दिन-रात तुम्हारा ही ध्यान। इसके सिवाय मैं तुमसे और कुछ नहीं माँगता । तुम भी मुझे इससे ज्यादा और कुछ मत दो। इसमें जो आनंद मिल रहा है वह जीवन्मुक्ति में भी नहीं है। हे जगदीश्वर! मैं तुम्हारा दीन पुत्र हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुझे अपना मानकर रक्षा करने की कृपा करो। हे दयानिधे! हे दीनदयालो! कहाँ हो? जल्दी आओ। मुझे इस भवसागर से पार करो।

२९-७-१९३७

मैं जरूर तुमसे कुछ नहीं मागूँगा। आजतक व आगे भी, कहीं कोई माँग देखने में आयी तो उसे केवल औपचारिक समझो। जब तुम खुद मिल गये हो तब किस चीज की माँग करूँ? तुमसे बढ़कर और कौन सी वस्तु है? कुछ भी नहीं है।

यदि तुमसे माँगने वालों को तुम्हारे स्व-स्वरूप का पता लग जाय तो वे जरूर तुमसे माँगना छोड़ देंगे। मैं अपने द्वारा किये गये अपराधों के लिए क्षमा माँगता हूँ।

३०-७-१९३७

तुम इस तरह बार-बार परीक्षा लेते रहोगे तो मेरा जीना हराम हो जायेगा। तब मुझे लाचार होकर, आखिरी अवकाश के लिए जरूर मुँह खोलना पडेगा। व्यर्थ ही चिंता में तपकर मैं दुर्बल होना नहीं चाहता। मैं जो कर रहा हूँ, वह तुम्हें पसंद न हो तो क्षमा चाहता हूँ। मैं जरूर यह समझता हूँ कि यही मेरी आखिरी इम्तहान है। मुझे पार करके रक्षा करो, हे नाथ! यह तुम्हारे हाथ में है। मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। बहुत दुःख। बस करो। मेरी रक्षा करो। इस संग से मुझे जरूर मुक्त करो। मैं सह नहीं सकता। आगे मुझे दोषी मत ठहराओ। हे देव, मैं जो पाप कर रहा हूँ वे एक व दो नहीं हैं। असंख्य अपराधों को कर रहा हूँ।

यदि मेरे निर्दोष निकलने पर ही तुम प्रसन्न होगे तो, मैं निर्दोषी नहीं बना और तुम प्रसन्न नहीं हुए। इसलिए हे करुणामय! मैं जरूर तुम पर विश्वास रखता हूँ। मुझे यह सुनिश्चित मालूम है कि तुम सदा मेरे पास हो। तुम्हारे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करुणापूर्ण मेघ को देखकर मैं शान्तचित्त हूँ। तुम्हारे कृपा की हवा थोड़ी-सी भी मेरी तरफ वहेगी तो वह आकर वरसेगा। मैं धन्य हो जाऊँगा।

३१ -७-१९३७

यह बड़ा अन्याय है! घोर पाप! परम पावन चरिताओं को बुरी नजर से देखने का महा साहस करनेवाले महापातकी! तुम्हें जो भी दण्ड दिया जाय वह कम ही है। हे नीच! हे भ्रष्ट! तुमको समूल नष्ट किये विना मुझे तिलभर भी सुख नहीं है। तुम पर विश्वास रखनेवाले मुझे इस प्रकार का धोखा देना कहाँ तक उचित है? हे पापी! तुम जरूर मेरे गुप्त शत्रु हो। मित्र के रूप में अभिनय करके अपने स्वार्थ पूरा करके क्या मुझे पाताल पहुँचाना चाहते हो? परम नीच! मैं जरूर तुम्हें बलि चढ़ाऊँगा।

१-८-१९३७

हे देव! तुम सदा मेरे पास में हो! मैं तुम्हारे सान्निध्य का सुख भूलकर पाप विषयों की ओर इंद्रियों से खींचा जा रहा हूँ। विषय वस्तुओं को देखते ही यह नीच मन सव कुछ भूल वैठता है। इसकी मूर्खता की जितनी निंदा करूँ वह कम है। विषय वस्तुओं को स्मरण करके यह अपरिमित आनंद का अनुभव करता है। हे देव! मैं इसे वहुत कुछ समझाने पर भी कि यह भयंकर पाप है, यह मानता ही नहीं है। मैं क्या करूँ? तुम्हारी शरण में आया हूँ। तुम्हीं को मेरी रक्षा करनी होगी। मुझे यह जानकर वड़ा पश्चात्ताप और दुःख हो रहा है कि मेरा मन यह पाप करता है।

३-८-१९३७

हे देवाधिदेव! आज का दिन सुख से वीता। मेरी हार्दिक कामना यही है कि इसी प्रकार रोज मेरा मन पवित्र पथ पर चलते रहें । मैंने अपने मन को वहुत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खूब समझाया है। फिर भी यह मन अपने वश में नहीं आया। तब मैं विवश होकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। रक्षा करना तुम्हारे हाथ में है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५

स्थिरता और संतृप्ति

३-८-१९३७

हमारे मन की अस्थिरता से हमें जो अवहेलन होगा, वह और किसी से नहीं हो सकता है। इसलिए अस्थिर मनस्क को कोई कार्यारंभ नहीं करना चाहिए। पहले मन को स्थिर करके बाद में कार्यारम्भ करेंगे तो कामयाब होंगे। अन्यथा हमारा अधःपतन शत सिद्ध है। इसलिए हमेशा किसी को किसी कार्य करना हो तो पहले अपने मन को स्थिर कर लेना चाहिए। अन्यथा कार्य सिद्धि नहीं हो सकेगी।

मेरा मन आज स्थिर है। शांत भी है। लेकिन दुनिया को देखकर डर रहा है। कार्यक्षेत्र में उतरने से हिचकिचा रहा है। लोगों की परिस्थिति को देखते हुए बहुत पछता रहा है।

हे देव! मुझे अमित बल और धैर्य देकर रक्षा करना तुम्हारी जिम्मेदारी है। मैं अनन्य भक्ति, सद्दृढ श्रद्धा और स्थिर मन से प्रार्थना कर रहा हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४-८-१९३७

हे भगवान्! मैं इस वात को अच्छी तरह जानता हूँ कि विषयों को जीतकर मन को सदृढ बनाने पर समस्त आनंद अपने में ही मिल जाता है। अशरण शरण! मैं सर्वथा तुम्हारी शरण में आया हूँ। मैं किसी हालत में किसी विषय के वारे में छल नहीं कर रहा हूँ। यदि मैं ऐसा करूँ तो क्या वह तुमसे छिपा रह सकता है? तुम्हारी कृपा पर निश्चित ही मुझे असीम विश्वास है। मैं तुम्हारा स्मरण करके अतीव आनंद का अनुभव कर रहा हूँ। मैं आनंद परवश हो गया हूँ।

हे माता! सारा विश्व ही तुम्हारा स्वरूप है। जहाँ देखो वहाँ तुम्हारा दर्शन ही दर्शन है। तुम्हारा स्मरण करते करते आनंद परवश हो रहा हूँ। वही आनंद परवशता ने मुझे निश्चेष्ट वना रखा है।

मैं अव कुछ भी नहीं लिख सकता। माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! माँ! लोग जब मुझे और मेरी लिखावट को देख पायोंगे तव वे जरूर मुझे पागल समझकर जुगुप्सा करेंगे। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि मेरे जगन्निर्माता भगवान् (भक्ति से) उन्मत्त लोगों का प्रियकर है।

हे जगदीश्वर! मैं और किसी पर विश्वास नहीं रखता। मुझें तुम ही एकमात्र सहारा हो। मैं निष्कपट होकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। मेरे पाप और पुण्य दोनों तुम्हारे ही हैं। तुम्हीं तुम हो। `मैं` जो है वह विलकुल नहीं है। हे करुणामय! आओ, रक्षा करो। दर्शन दो। रक्षा करो।

हे देव! तुमको अनंतानंत प्रणाम। आज का दिन भी सुख से बीत।। यदि प्रति दिन इसी प्रकार वीतता जाय तो मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं रहेगी। समस्त स्त्री समाज को पूजनीय और मातृस्वरूप समझने में जो आनंद मिलता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है वह अनोखा है । फिर भी मेरा मन दृढ नहीं है । सदृढ बनाने की तमन्ना विशेष रूप से है।

हतभाग्य। फिर भी मैंने किन्हीं भगिनियों के मनों को कायेन, वचसा, मनसा नहीं बिगाड़ा है। यह तुम्हारे लिए तो अतीव गर्व की बात है। हे देव! मैं शरण में आया हूँ, रक्षा करो।

हे दुष्ट मन! सच्चाई को विपरीत अर्थ लगाकर सभी लोग मेरी ही तरह विषय वासनाओं में डूबे हुए हैं ऐसा मत सोचा करो । तुम्हारी गहराई खुद तुमको ही मालूम नहीं है । दूसरों की निंदा करने के पाप कूप में क्यों गिरने जा रहे हो? खबरदार, उस घोर पाप मत किया करो। तुम जो पाप करने जा रहे हो वह कभी माता से छिपा नहीं जाता। सतर्क रहो।

५-८-१९३७

मन को आज कारणांतर से आनंद और दुःख दोनों हो रहे हैं। रक्षा करनेवाला भगवान् है। हे जगदीश्वर! मैं शरण में आया हूँ। मेरे मन को समझाओ।

७-८-१९३७

मन पवित्र होने पर भी विषयों से सुखानुभव की बुद्धि अभी भी दूर न हो पायी है। इस केलिए कौन कारण है? यह कैसा घनघोर अज्ञान है! यह कैसा पाशवी कृत्य है! यह मार्ग तुम्हें अवनति की ओर ले जाये बिना छोड़ेगा नहीं । तुम इसे समझकर यथाशीघ्र बुद्धिमान् बनो। तभी जियोगे। अन्यथा अधोगति पाओगे। इस दुष्ट प्रवृत्ति को शीघ्रातिशीघ्र दूर कर लो। यह तुम्हारे मन केलिए कोई बड़ी बात नहीं होगी। इस जन्म के संस्कार और सहवासों का कोई दोष न रहने पर भी पुराकृत जो बलवत्तर दुर्वासनाएँ हैं वे ही कारण है। लेकिन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमात्मा पर विश्वास रखकर शरण में आया हूँ। जो भी करें, मैं उन्हें आत्मसमर्पण कर चुका हूँ। भगवान् भला करेगा।

मैं जितना भी परिताप करूँ उससे कोई फायदा नहीं है। सर्वज्ञ तुम जरूर उचितानुचित का परामर्श करोगे। मेरा परिताप ही अन्याय से भरा हुआ हो सकता है। इसलिए मैं अपनी बुद्धि का विस्मरण करके 'मैं' को मिटाकर 'तुम' में ऐक्य होने की श्रेष्ठ अभिलाषा रखता हूँ।

८-८-१९३७

आज तक मैंने किसी माता के साथ अत्याचार नहीं किया है। इस का मतलब यह नहीं कि मैं जितेंद्रिय हूँ। मेरी मानसिक परिस्थिति कभी कभी विषमता की ओर ले जाकर ढकेलती है। इसके लिए मन का दौर्बल्य ही कारण है। हे जगदीश्वर! मुझे बलवत्तर शक्ति प्रदान कर, रक्षा करो। शरण में आय हूँ।

२६-८-१९३७

हे जगद्गुरु! मैं इस जीवन से खूब ऊब गया हूँ। मैं जितना भी निर्दोषी बनकर काम क्यों न करूँ फिर भी मुझे बार बार ऐसे बुरे प्रसंग आ रहे हैं। मैं यह जनता हूँ कि तुम अपने भक्त की परीक्षा लेने केलिए ही ये सब कर रहे हो। फिर भी इन सब दुःखों को मैं ने वहुत कठिनाई से सहन किया है। इस चंचल मन को सदृढ़ बनाने के लिए तुम इस तरह के प्रसंगों को लाकर पसार रहे हो। हे देव! तुम सर्वज्ञ हो! मैं क्या अधिक बताऊँ? मैं किसी से यह कहना नहीं चाहता कि मैं भला आदमी हूँ। तुम्हें जो करना है सो करो। जन्म लेने की गलती से मैं उन सबको भुगत रहा हूँ। लेकिन, यह कहा नहीं जा सकता कि मेरे दुःख की इस परिस्थिति को तू मेरे पिता नहीं जानता है। मुझे यह अधिकार नहीं है कि मुझमें यदि स्वार्थ हो तो मुझे नरक में ढकेल दो। मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपार दुःख जरूर हो रहा है। यह दुःख अज्ञानजन्य है। मन की अस्थिरता दुःख को दुगुना बना देती है। हे देवाधिदेव! सिवाय तुम्हारे और किसके सामने रोया करूँ? इस संसार में मेरा कोई नहीं है।

हाय, हाय इस प्रकार अपने दुर्भाग्यवश के कारण चारों तरफ से विपत्तियाँ आ घेरेंगी तो मुझे कायर बनाकर छोड़ेगीं! शिव शिव! मैं कायर बनकर कैसे जीऊँ? हे शंकर! मेरे दुःख को दूर करो। मेरे परिताप की कोई सीमा नहीं है। शिव शिव! मैं क्या करूँ? यदि मैं आत्महत्या कर लूँ तो तुम पर विश्वास न रखनेवाला हो जाऊँगा। हे देव! तुम पर मुझे पूरा विश्वास है। हे देव! मुझे तो कुछ सूझता नहीं। मेरा हृदय तप रहा है। मुझे यह नहीं दिखायी दे रहा है कि मैं क्या करूँ? शांति से ही सुख, सत्य मार्ग से ही सुख। लेकिन हे देव! इस दुनिया में हमारे सत्य का मोल आँकनेवाला कोई नहीं है।

शिव शिव! पेट जल रहा है। हे देव! बस करो। मुझसे सहा नहीं जाता। हे करुणा सागर! जल्दी आकर मेरी रक्षा करो। मुझे दर्शन देकर संतृप्त कर दो। मेरे इस कष्टतर जीवन की इतिश्री कर दो। शिव शिव! कहाँ हो? क्यों चुप हो? हे नाथ! मैं सचमुच बड़ा दुःखी हूँ।

क्या तुम्हें पता नहीं है कि मैं दुःख सागर में डूबा हुआ हूँ? मैं कायर बनकर कैसे जीऊँ? हे शंकर! मेरे परम पिता! कहाँ हो? हे नाथ! कहाँ हो? प्रभो कहाँ हो? भिक्षा देकर, मेरी सांत्वना करो। हे शंकर! मेरे पिता! कहाँ हो? आओ। क्यों तुम मुझ पर निष्ठुर बन बैठे हो? क्या मेरे पापों की गिनती करना सही होगा? यदि मुझे दंड देना हो तो एक ही बार मुझे जान से मार डालो। इस चित्रहिंसा का दर्द मैं नहीं सह सकता।

चित्रहिंसा को सहने की शक्ति मुझमें नहीं है। मैं निरपराधी होते हुए भी क्यों इस दंड का पात्र बन गया? हे देव! क्या तुम मुझे भूल बैठे हो? जगद्गुरो! क्या मुझे भूल गये? हे महादेव! मुझे प्राण न रखने की नौबत आ चुकी है, हाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोड़कर प्रणाम करता हूँ। हे नाथ! शरणागत की रक्षा करो। शरणागत की परीक्षा अब यहीं समाप्त हो जाये। रक्षा करो हे देवाधिदेव!

आज की परिस्थिति न तो अक्षरों में लिखी जा सकती है, न ही मुँह से कहा जा सकती है। हे जगदीश! यदि तुम भी भूल बैठोगे तो मैं कहाँ जाऊँगा? विना गलती किये मुझे अपराधी वनना पड़ा ! समझ में नहीं आ रहा है कि यह किस जन्म के पाप का फल है। मर जाने में ही मेरा हित है; जीवित रहने में नहीं। मैं छटपटा रहा हूँ। दूसरों को संतुष्ट करना मुझसे हो नहीं सकता।

मेरी आखिरी साँस तक कायर वन कर जीना मुझसे नहीं हो सकता। चाहे कितने ही कष्टपरंपराओं की श्रृंखला मुझपर टूट पड़े, दुःख सहकर ही आगे बढ़कर, कर्मवीर वनकर, इस जन्म को निभाना है। सत्य, सत्य, सत्य, सत्य। तुम्हीं पर पूरा विश्वास रखनेवाले इस वेचारे का कभी हाथ न छोडो। गिड़गिड़ाकर प्रार्थना करता हूँ। शिव!!!

हे जगदीश्वर! बस करो इस भव को। हाय पिता! रोने को मुँह तक नहीं है। हे देव! क्या मेरी पुकार तुम्हें सुनायी नहीं दे रही है? हाय! नाथ! रक्षा करो। शिव शिव! मैं जीवित नहीं रह सकता। असाध्य पीड़ा हो रही है। हाय शंकर! कहाँ हो मेरे पिता! कहाँ हो? रक्षा करो। अपने प्रीतिपात्र की आरजू मानकर एक बार दर्शन दो। उससे बढ़कर मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

मेरे बारे में लोग कई प्रकार निन्दा करते हैं। लेकिन मुझमें कुछ नहीं है। यदि ईश्वर की कृपा हो तो सारी निन्दाएँ धीरे धीरे दूर हो जाएँगी। हे देव! मुझे यह सावित हुआ कि स्वार्थ बड़ी बुरी चीज है। मैं यह नहीं कह सकता कि इस समाज जैसे दुर्दश समाज दूसरा कोई नहीं होगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थिरता और संतृप्ति

लोगों की हालत देखकर बड़ी दया आती है। लेकिन पता नहीं कि इसके पीछे जगन्नियामक का उद्देश क्या है। क्या उस को समझना मेरे लिए संभव है? हे ईश्वर! अनाथनाथ! मुझे इस परीक्षा से पार पहुँचाना तुम्हारे वश में है। यदि मैं अनुत्तीर्ण हो जाऊँ तो तुम्हारी बेइज्जती होगी। तुममें सर्व समर्पण किया हुआ मुझको परीक्षा करके अयोग्य मानकर तुम कैसे छोड सकते हो? यदि छोड़ दोगे तो तुम्हारी "शरण्य" नाम की उपाधि निरर्थक हो जाएगी न? अहा! मैं धन्य हूँ! अपने को इसीलिये धन्य समझता हूँ कि मैं ईश्वर का कृपा पात्र बन गया। मेरे मन में तिलभर भी दुःख नहीं है। मैं भी देखूँगा कि वह कैसे मुझे नचाता है!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु संगम में शिवयोग

श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी   श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६

सद्गुरु श्रीरक्षा

२७-८-१९३७

हे गुरु देव! तुम्हीं ने इस मूर्ख की लालच को और बढ़ाया। हे देव! तुम्हीं को इस लालच को मिटा देना होगा। मैंने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है। हे गुरुदेव! यह चिंता मुझे दिन रात सता रही है। इस प्रकार वृथा चिंता से पीड़ित इस दीन की रक्षा करना तुम्हारे हाथ में है। कुछ भी हो, मुझे एक न एक दिन सपने में ही सही, मन की तृप्ति भर दर्शनामृत देने की कृपा करो। निरंतर तुम्हारे ध्यान में निरत इस पुत्र की इच्छा को पूर्णकर, रक्षा करके उबारो। हे पिता! मेरे हाथ कभी न छोड़ो। हे जगन्नाथ! तुम्हारी शरण में आया हूँ। हे करुणमयी रक्षा करो।

हे माता! मेरे दुःख की वजह तुम्हें कितना दुःख हुआ होगा। इस आलसी को तनिक भी शांति नहीं है। हे माता! तुम कैसे मेरे विरह को सहन कर रही हो? हम दोनों के मिलन में रोड़ा अटकानेवाला प्रतिबंध क्या रहा होगा? तुमको भी रोकनेवाली वह शक्ति कौन-सी होगी? तुम मेरे दुःख का शमन केलिए मुझे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साम्राज्य पदवी देकर भी शमन होनेवाला नहीं है। मेरी यह तीव्रतर उत्कण्ठा तुम्हारे दर्शन के बिना केवल प्रलोभन से कभी शांत नहीं हो पाएगी। हे माता! उत्कंठा बराबर सता रही है। दर्शन देकर रक्षा करो।

गुरुवर्य गुरुशांतेश्वर! तुम ईश्वर से भिन्न नहीं हो। इस पापी के जन्म को निग्रह करने के लिए ईश्वर ही तुम्हारा रूप धारण कर मेरे गुरु बनकर आये हैं। हे गुरुदेव! इस दीन पर तुम्हें कितना प्रेम है! हे गुरुदेव! मुझसे बढ़कर भाग्यशाली और कोई नहीं है। लेकिन कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे तुम्हारी सेवा से दूर रखकर दुःखी बनाने की तुम्हारी आज्ञा में क्या रहस्य छिपा हुआ है?

हे गुरुदेव! अज्ञान से दुःख, विपत्ति, संकट में छटपटाते हुए मुझे बड़ी लज्जा हो रही है। मुझसे भी बढ़कर दुःख में डूबे हुए लेकिन धैर्य से जीनेवाले तेरे पुत्र बहुत हैं। क्या मैं उन लोगों से भी ज्यादा दुःखी और दीन हूँ? नहीं। लेकिन मैं इस चिंता से दुःखी हूँ कि कहीं कायर होकर बहु विघ्न पूर्ण इस दुनिया में तुम्हारी आज्ञा को पूर्ण करने में सफल न हूँ। मैं सचमुच ऐहिक सुख भोग केलिए दुःखी नहीं हो रहा हूँ। मेरे दुःख के लिए कारण ही और है। तुम्हारी आज्ञाओं को पालन न कर, कही कायर न बन जाऊँ। यही चिंता मुझे दिन रात सता रही है। हे देव! महादेव! तुम सर्वज्ञ हो। मुझे शरणागति के सिवाय अन्य कोई मार्ग नहीं सूझ रहा है। मुझपर जितने भी आरोप लगा रहे हैं वे सब तुम्हारे ही हैं। केवल व्यवहार में `मैं` व `तुम` शब्दों का प्रयोग होता है लेकिन पारमार्थ में वे नहीं। हे करुणामय! मैं तुम्हारी राह को देख रहा हूँ तुम कब आओगे? हे देव, वह सुदिन मुझे देकर रक्षा करो। शंकर की जय हो।

मेरी चढपढाहठ से कोई फयदा नहीं है। तुम्हारे सर्वज्ञत्व ने मुझे चिंता से मुक्त नहीं किया है। मैं तुम्हारे इस रहस्य को अच्छी तरह जानता हूँ कि तुमने मेरे चारों ओर इन नाटकों का जो जाल फैला रखा है, वे सब तुम्हारी कसम,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी भलाई के लिए ही हैं। लेकिन कभी कभी तुम्हें भूलकर अज्ञान के वश में होकर इस नाटक के रंगमंच पर आँसू बहाता हूँ। इसकेलिए मैं तुमसे क्षमा माँगता हूँ।

हे गुरुदेव! मैं जानता हूँ कि इस दीन पर तुम्हे कितना प्रेम है। मुझे अपनी चरण सेवा में रखकर रक्षा करो। मुझे इस वात का पूर्ण विश्वास है कि मुझे अपना वनाकर जीव ब्रह्म के एकत्ववाद की सच्चाई को व्यवहार में भी दिखला दोगे। मैं समझता हूँ कि यह नाटक वहीं समाप्त होगा।

अहह! जगदीश, यह विरह कब दूर होगा? हे करुणाकर! मेरेलिए तुम्हारा ध्यान ही प्रधान है। इस बेचारे पर कृपा करके रक्षा करो। मेरा और कोई रक्षक नहीं है। तुम्हारे शरण में आया हूँ इस बेसहारे को यदि तुम भी छोड़ दोगे तो और कहाँ जाऊँ? हे अगाध दयापयोनिधे! तुम्हारे विना और कोई रक्षक नहीं है। इस तरह विशेष रूप से अपने दुःख कि बातें तुमसे कहना भी मैं समझता हूँ कि तुम्हारी सर्वज्ञता पर मेरा अविश्वास प्रकट हो जायेगा। जय जगदीश्वर! अनाथनाथ! जय! जय! जय!

२८-८-१९३७

हे गुरुदेव! निष्कारण वत्सल! मुझे त्रिभुवन में भी तुम्हारे सिवाय और कोई अपना नहीं है। तुम्हारे सिवाय और किसी से भी मैं कुछ नहीं माँगता। हा! हा! मेरे हृदय! तुम कब शांति पाओगे? हे गुरुनाथ! मैंने कभी तुमसे विनती नहीं की थी कि तुम ये सब करो। तुमने भी कभी ये सब करने मुझसे नहीं पूछा था। हे दयाधन। तुमने खुद अपने आप समझ कर मेरे अभ्युदय के द्वार को खोल कर मुझे आगे बढ़ाया है। आगे भी निष्कारण वत्सल-तुम्हारे रहते मैं अपने आत्मचिंतन करना कहाँ तक उचित होगा? नहीं। मैं तुम्हारी शरण में आकर तुम्हारी सेवा में लगा हूँ। रक्षा करो हे पिता गुरुशांतेश!

हे मेरे पिता गुरुशांत योगी। जब मैं आपके करकमल संजात हुआ उसी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिन मैं धन्य हुआ। उसी दिन से मेरा पुण्योदय हुआ। लेकिन गुरुदेव! तुम्हारे विरह मेरी भलाई के लिए ही क्यों न हों वह मुझे सह्य नहीं है। हे देव! विरह को दूर करके यदि रक्षा नहीं करोगे तो मैं आजन्म दुःखी रह जाऊँगा। यह शतसिद्ध है। तुम्हारी कृपा की छत्र छाया में तुम्हारे अमृत हस्त के स्पर्श से सुख में पले मुझे तुम विरह में ही रखोगे तो मेरे दुःख का कोई आरपार नहीं रहेगा।

यह विरहानल अशक्य है। हे पिता! इस दीन पर इतनी वड़ी विपत्ति का बोझ क्यों डाला है? इस को सहन करने में असमर्थ हूँ। हाय! हाय! हृदय जल रहा है। हे पिता! वस करो। इस पापी के जीवन में प्रकट होकर मेरे इस विपत्ति को दूर करके रक्षा करो पिता!

विरह का दुःख असाध्य है। अपने हृदय में तुम्हारे रहते हुए भी अज्ञान के वलवत्तर होने के कारण विरह का अनुभव करना पड़ रहा है। तुम इष्टलिंग के रूप में मेरे करतल में रहते हुए भी मेरे मन को शांति नहीं है। तुम्हारे अनंत अद्भुत चित् स्वरूप के दर्शन के विना विरहानल शांत न हो पायेगा। हा! हा! हृदय! सह लो, सह लो, सह लो विरह! विरहानल!

तुम्हारे अमृतानुग्रह ने मुझे निश्चिंत वना दिया है। अहह! हे प्रेम की पुतली! विरह को सहन करना वड़ा मुश्किल लग रहा है। लेकिन लाचार हूँ। "मै" व "अपना" इन दो शब्दों को मिटा कर "तुम" व "तुम्हारा" इनमें तुम्हारी इच्छा पर मुझे खुश होना चाहिए। विवश हूँ। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं तुम्हें क्या लिखूँ? मैं शर्मिंदा हूँ। इस हृदय की दीन परिस्थिति को देख कर, उसे अपने वश में रखने असमर्थ होकर मैं तुम्हारी शरण में आया और निश्चिंत हो गया।

हे सर्वज्ञ! तुम जो उचित समझोगे उसे करके ही रहोगे। मैं यह नहीं चाहता कि तुम भला ही करो; बुरा मत करो। मुझे भलाई बुराई दोनों समान हैं। तुम्हारी सर्वज्ञता की उपाधि ने मेरे मुँह पर ताला लगा दिया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सद्गुरु श्रीरक्षा

हे परमात्मन् ! मुझमें न कोई नीति न आचार न ही एक नियम है । मनमाने चलनेवाला दुराचारी हूँ मैं। इसीलिए मुझे यह भरोसा ही नहीं है कि तुम मुझे दर्शन देने की कृपा करोगे। फिर भी हे अंतरात्मन्! मैं दिन रात तुम्हारे ध्यान में निरत हूँ। मैं तुम्हारी यादगार में रोया करता हूँ और चडपडाता हूँ। मैं कोई सुख नहीं चाहता। तुम्हारे दर्शन से जो परम शांति हासिल होगी वही मेरी अभीप्सा है।

कृपया दर्शन दो हे जगन्नाथ!

मैं क्यों ज्यादा वड़वड़ाऊँ? तुम सर्वज्ञ हो। तुम पर मुझे अपरिमित विश्वास है जो मुझे जरूर उस पार पहुँचादेगा।

६-९-१९३७

देवाधिदेव! तुम सदा मेरे हृदय में विराजमान होकर वहाँ के गाढांधकार को दूर करो। अपने मन को सन्मार्ग दिखाकर मेरी रक्षा करो हे परमपिता!

७-९-१९३७

श्री गुरो! रक्षा करो। जगदीश! तुम रक्षा करो। सर्वज्ञ! पूर्ण शक्ते। निरवधिकृपासागर!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञापक पत्र ३६७
स्व हस्त की लिखावट

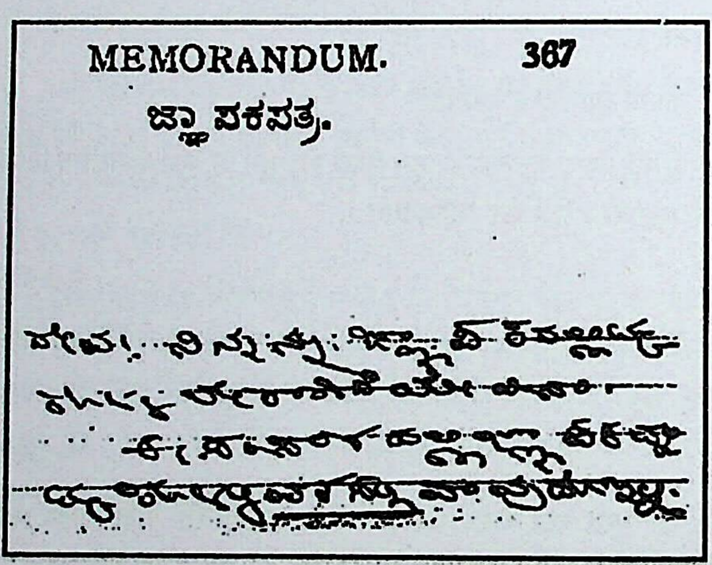
MEMORANDUM. 367

ಜ್ಞಾಪಕಪತ್ರ.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञापक पत्र (Memorandum)

हे देव! इस जिंदगी में हमेशा याद रखने लायक तुम ही हो और कोई नहीं !

स्वप्ने वापि स्वरस विकसद्दिव्यपंकेरुहाभम्
तत्पश्ये यं तव पशुपते! पादयुग्मं कदाचित् ।
क्वाहं पापः क्व तव चरणालोकभाग्यं तथापि
प्रत्याशां मे घटयति पुनर्विश्रुपापेऽनुकंपा।[1]

तू दयालु दीन हम, तू दानी हम भिखारी
हम प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी
नाथ तू अनाथ के अनाथ को, अनाथ कोन मो सो
मो सम आरत नहीं, आरत हर तू सो
ब्रह्म तू, हम जीओ, तू ठाकुर हम चेरों
तात मात गुरु सखा तू, सब विधि हित मेरो तू दयालु......।
तूँ ही मोही नाथ अनेक मानियो जो भावे।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावे।

---

[1] पापी जो मैं कहाँ, तुम्हारे चरणावलोकन का भाग्य कहाँ।
फिर भी हे पशुपते!
खिले दिव्य कमल जैसे तुम्हारे पद युग्म को
कभी एकाध बार स्वप्न में भी देख सकता हूँ
कुप्रसिद्ध इस पातकी पर जो तुम्हारा अनुकंप है।
तुम्हें देखने की अपनी तमन्ना को फिर से जगाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आत्मनिवेदन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

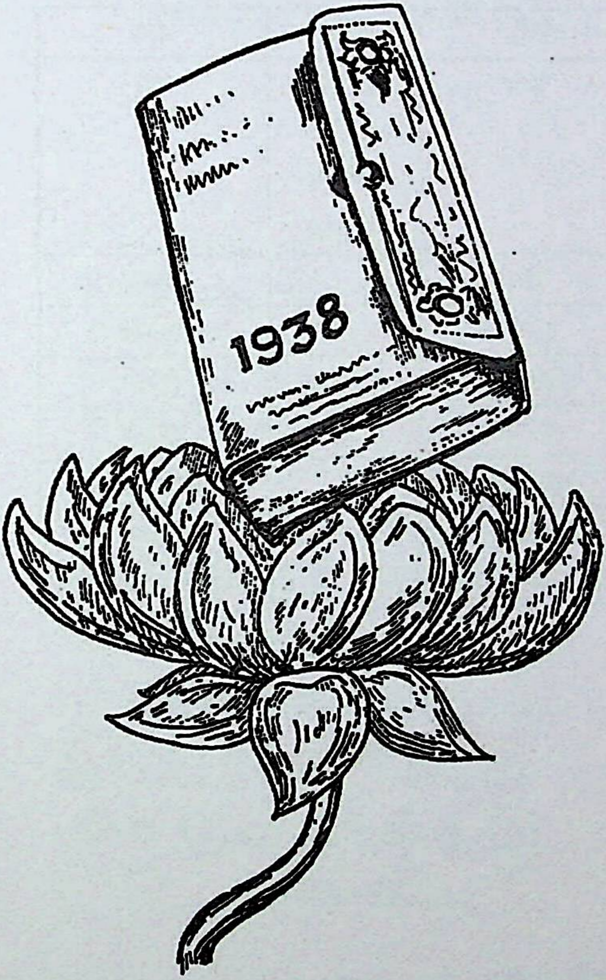

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुमुक्षु के जमा-खर्च का ब्यौरा

जमा	ब्यौरा	खर्च
पुण्य	परमेश्वर जगदीश्वर लोकेश्वर भुवनेश्वर	पाप
ज्ञान		अज्ञान
वैराग्य		लालसा
अहिंसा		हिंसा
सत्य		असत्य
गुरु भक्ति		काम भुक्ति
सौभाग्य (ईश्वर पर विश्वास)		दुर्भाग्य (ईश्वर पर अविश्वास)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

94 April 4th Monday 1938

ಏಪ್ರಿಲ್ ೪ನೇ ಸೋಮವಾರ ೧೯೩೮

ಬಹುಧಾನ್ಯ ಸಂ|| ಚೈತ್ರ ಶು|| ಚೌ ೫-೩೦ ಕೃ ೨೭-೪

ವರಗಣಪತೀ.ವ್ರತಂ

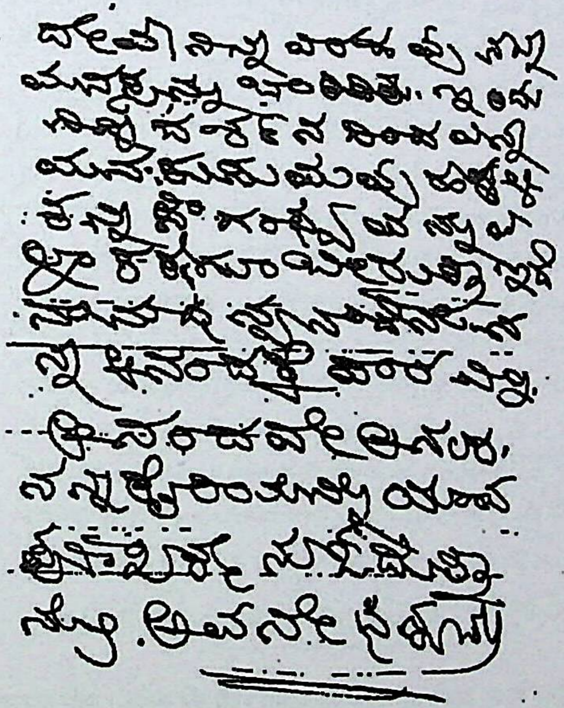

हे देव! तुम्हारे विरह ने मुझे सताया। आज तुम्हारे दर्शन से मेरा मनःकुसुम खिलकर अपनी खुशबू चारों ओर फैला रहा है। मैं धन्य हो गया हूँ। मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं है। आनंद ही आनंद है। मेरी डायरी (दिनचरी) को जो पुण्यात्मा पढ़ेगा वह अवश्य धन्य होगा!

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

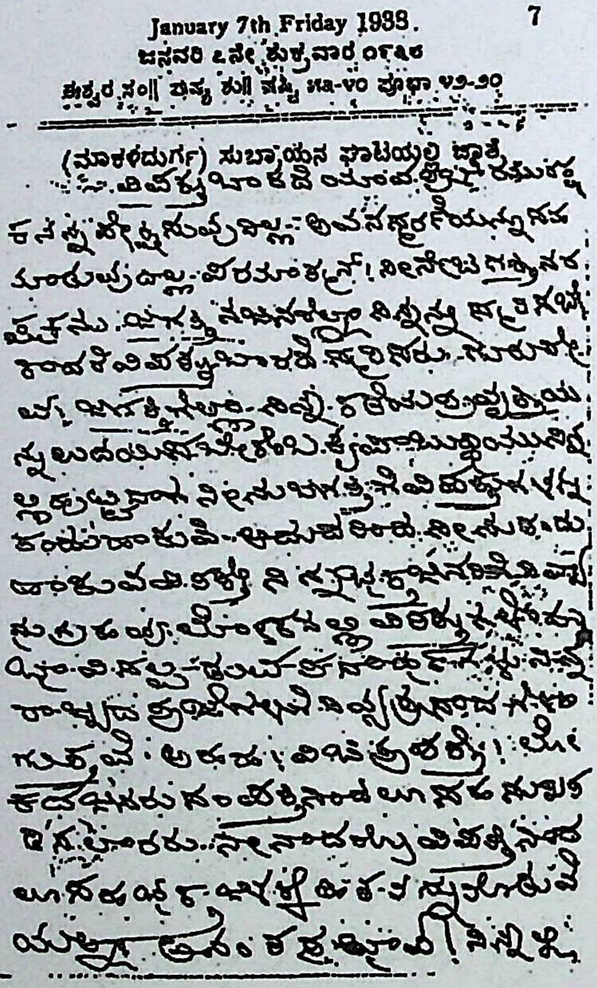
January 7th Friday 1938. 7

विपत्ति के न आने पर कोई भी प्राणी रक्षा की अपेक्षा नही करता। उसका स्मरण तक नहीं करता। हे परमात्मन! तुम्हीं जग के रक्षक हो। जगके सारे लोग तभी तुम्हारा स्मरण करेंगे जब विपत्तियाँ उन्हें आ घेरेंगी। हे गुरुदेव! जब तुम सारे जग को अपनी प्रवृत्ति की ओर आकर्षित करना चाहते हो तब उसके सामने विपत्तियों का ढेर लगा देते हो। इसलिए तुम जो विपत्तियाँ फैला दोगे वे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ही तुम्हारे भक्तजनों केलिए तुम्हारे दिव्यानुग्रह साबित होंगे। जग में जो विपत्तियों मानी जाती हैं वे सारे पदार्थ तुम्हारे राज्य की प्रजा केलिए दिव्य प्रसाद के रूप में परिणत हो जाएँगे। अहह! विचित्र शक्ति! दुनिया के लोग संपत्ति से भी सुखी न बन सकेंगे। तुम तो विपत्तियों से भी भक्त लोगों की भलाई करोगे न? वह अनंत प्रभाव तुममें है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७

विपत्ति-दिव्यानुग्रह

१-१-१९३८

पिछले वर्ष भगवान् की कृपा से द्वंद्व में फँसने पर भी न फँसकर सुख-दुःखों में समभाव रखकर उस महापुरुष के "मामेकं शरणं व्रज़"[1] प्रतिज्ञा-वाक्य को मन में रखकर हिम्मत से जीवन बिताया। अपने कार्य क्षेत्र का प्रथम वर्ष होने के कारण कई प्रकार की कष्टपरंपरा का सामना करना पड़ा। फिर भी मुझपर परमात्मा का जो दिव्यानुग्रह था, उसके परिणामस्वरूप मेरी श्रद्धा सुदृढ होती गयी। इस वर्ष को भी दिव्यानंद से बिताने में मुझे किसी प्रकार का संशय नहीं है। परमात्मा की जय हो ! तुम्हारे कृपासागर में गिरकर भी डूबे विना, आनंद से तैरकर मैं सही में धन्य हो गया।

२-१-१९३८

तुम्हारा नाम संकीर्तन ही तुम्हारे विरह में एकमात्र विनोदोपाय बन गया

---

[1] मेरी शरण में आओ । - भगवद्गीतां १८-६६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। दिन रात तुम्हारे दर्शन की चाह बढती जा रही है। लेकिन अंतरात्मन्! पता नहीं कि तुम मुझे कब दर्शन दोगे? मुझे तो संपूर्ण विश्वास है कि मैं ही धन्य हूँ। हे गुरुनाथ! मैं ही धन्य हूँ।

३-१-१९३८

परमात्मन्! मन को जितना भी मनाओ वह ठीक रास्ते पर नहीं आ रहा है। ढेर सारे पापकृत्य होते ही रहते हैं। किन्तु तुम पर मेरा पूरा विश्वास है कि तुम अवश्य रक्षा करोगे।

हे जगन्नाथ! तुम पर विश्वास रखकर मैंने इस जनन-मरण की शृंखला से छुटकारा पाया। मुझपर तुम्हारी कितनी करुणा है! तुम्हारा स्मरण होते ही मेरा मन तुम्हारे दर्शन केलिए तडपता है। हे नाथ ! मेरी इस कामना को तुम कृपा करके पूरा करो। मैं निश्चित ही तुम्हारी सर्वज्ञता को जानकर मूक विस्मित हो गया हूँ। मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि तुम अनंतस्वरूप अनंत गुणी और अनंत शक्ति पूर्ण हो। तुम्हारे ध्यान से संसार के पापों से संतप्त मेरा हृदय एक दम शीतल हो उठता है।

परमात्मन् ! तुम जो बार बार इस प्रकार के प्रसंगों को मेरे सामने रख रहे हो वे सब यद्यपि लोगों की दृष्टि में विपत्तियाँ मानी जाती हैं फिर भी मैं तेरा भक्त उनको जन्म-जन्मान्तर के दुष्टसंसर्ग की दयनीय स्थिति से मुझे ऊपर उठाने के लिए तुम से लादे गये दिव्यानुग्रह मानता हूँ। हे गुरुदेव ! ऐसे प्रसंग न आवें तो मन बाह्य चिंतनों में मग्न होकर, तुम्हें भूल जाता है। इसलिए मैं यह समझता हूँ कि तुम अपने भक्त के श्रेय के लिए ही ऐसी कठिनाइयों को प्रदान करते हो।

५-१-१९३८

हे गुरुदेव ! मेरी रक्षा की चिंता तुम्हें कितनी लगी है? यह भी चिंता तुम्हें है कि मैं अचानक बुरे रास्ते पर चलकर कहीं पतित न हो जाऊँ। अहह!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुदेव! इसकेलिए ही तुम् मेरे सामने ऐसे प्रसंगों को ला रखते हो। मुझे खरा सोना वनाने के उद्देश्य से ही ऐसी विपत्तियाँ (अनुग्रह) लाकर ठोस रहे हो। हे परमात्मन् ! मुझे इस वात का पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारी छत्र छाया में आराम से सोये हुए मुझे अपने हृदय की आकांक्षाओं को पूर्ण करके कृतार्थ कर दोगे। हे परमदैव! तुम कहाँ हो? अहह! मुझे कितना विरह संकट हो रहा है! तुम कव दया करोगे? अहह! उस दिन के सौभाग्य को पाने केलिए मैं तरस रहा हूँ! हे नाथ! मैं धन्य, धन्य, परम धन्य।

७-१-१९३८

विपत्ति के विना कोई प्राणी रक्षक की चिंता नहीं करता। इतना ही नहीं, उसका स्मरण तक नहीं करता। परमात्मन्! तुम ही इस जग के रक्षक हो। दुनिया के सारे लोग तभी तुम्हारा स्मरण करेंगे जव उन्हें विपत्तियाँ आ घेरेंगी। गुरुदेव! जव तुम्हारे मन में यह कृपा की वुद्धि जाग उठेगी कि अपनी तरफ सारे लोगों की प्रवृत्ति वन जाये तभी तुम सारे जग के सामने विपत्तियाँ फैला दोगे। इसलिए तुम जो विपत्तियाँ फैला दोगे, वे ही तुम्हारे भक्तजनों के लिए दिव्यानुग्रह होगा।

जग में विपत्ति समझे जानेवाली घटनाएँ ही तुम्हारे राज्य की प्रजा के लिए दिव्य प्रसाद वन जायेंगे। अहह विचित्रशक्ते! लोग संपत्ति को देकर भी सुखी नहीं वना सकते। लेकिन तुम विपत्तियों को ही देकर अपने भक्त जनों की भलाई करते हो। अनंत प्रभाव! तुम में कितना अत्यद्भुत चातुर्य छिपा पड़ा है! तुम ऐसे जादूगार हो कि विष को अमृत, विपत्ति को संपत्ति वना सकते हो। तुम्हारे सिवाय ऐसा करनेवाला और कोई नहीं है। विपत्ति ही तुम्हारे भक्तगण की संपत्ति है। जैसे लोग लौकिक संपत्ति से उन्नति पाते हैं वैसे ही तुम्हारे भक्तगण विपत्ति से ही उन्नति के शिखर पर चढ़ वैठते हैं। इसलिए परमात्मन्! इस जग में तुम ही एकमात्र ऐसे महान् हो जो "कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वसमर्थः"। (करने, न करने व परिवर्तन करने का पूर्ण सामर्थ्यवाला) अन्य कोई नहीं है। तुम्हारे अनंत गुणराशि को देखकर मेरी वाणी कुंठित हो गयी है। तुम्हारे अद्भुत सौंदर्य को देखते देखते मेरे नेत्र पलकना भूल गये हैं। मेरे कान दिन रात तुम्हारी कीर्ति का श्रवण करते नहीं थकते। तुम्हारे पादपद्म के दिव्य मकरंद ने अपने स्वाद से मेरे मन भृंग को संतृप्त बना दिया है। हे अंतर्यामिन्! मैं तुम्हारे अगाध कृपा सागर में पड़कर परवश हो गया हूँ। आनंद ही आनंद है।

संपूर्ण परवश होकर मैं अपने आप को भूल बैठा हूँ। तुम्हारा ध्यान करते करते फूल उठता हूँ। तुम्हारे रहने से अपना जीवन चरितार्थ बन गया है। इस संसार में आनेवाली सारी विपत्तियों को संपत्ति मानकर उनकी प्रतीक्षा में ही समय बिता रहा हूँ। परमात्मन्! तुम्हारे पुत्र की मुग्धता की कोई सीमा नहीं है। आनंद!

१०-१-१९३८

परमात्मन्! न जाने तुम मुझे कब दर्शन दोगे? हे देवाधिदेव! हृदय तुम्हारे दर्शन के लिए छटपटा रहा है। ऐसा पूरा भरोसा रख कर मैं निश्चिंत हूँ कि 'इस जन्म में ही तुम्हारा दर्शन जरूर होगा'। रामकृष्ण परमहंसजी के कथनानुसार तुम्हारे दर्शन के लिए जो व्याकुल रहता है, उसको अवश्य दर्शन मिलता है। मुझे इस विषय पर बिलकुल संशय नहीं है। मुझे भी इसका पूरा विश्वास है कि इस जन्म में ही दर्शन पाने का अधिकार मुझे है। हे अन्तर्यामिन्! मुझमें ऐसी परिशुद्ध भावना जागृत करो कि मेरे रक्त के कण कण में भी तुम रहते हो - यही तुमसे मेरी प्रार्थना है।

आम आदमी तुम्हारे ध्यान को छोडकर वृथा गपशप लडने, निंदा करने आदि हीन गोष्ठियों में अपना समय बरबाद करते हैं। हे सर्वज्ञ! मैं कभी ऐसे नीचतर जीवन को न बिता सकूँगा। मैं तुम से यह अनुग्रह पाना चाहता हूँ कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाहे मैं नरक में रहूँ या स्वर्ग में, सव जगह तुम्हारे दिव्य नामामृत का सदैव आस्वादन करता रहूँ। यदि तुम्हारा नामोच्चारण जीभ पर सदा नाचता रहेगा तो नरक में भी मैं अपने को भाग्यवान् समझता हूँ।

जो भक्तगण तुम्हारा नामोच्चारण करते हैं उनके लिए स्वर्ग-नरक नहीं है। तुम्हारा नामोच्चारण ही उनकेलिए दिव्य नामामृत है। दिन रात वे तुम्हारी चिन्ता करते हैं।

मैं अपने सर्वस्व को तुम्हारे पदतलों पर समर्पित करता हूँ। समर्पण के वाद निश्चिंत वन बैठता हूँ। तुम्हारे पादपद्मों के ध्यान में मग्न मुझे कोई भी वाधा नहीं सता रही है। मुझे देखने पर उन वाधाओं को भी मुझपर दया उपजती है। लेकिन देवाधिदेव! यह अफसोस की वात है कि इन बाधाओं को डालनेवाले उन पुण्यात्माओं को थोड़ी-सी भी दया नहीं होती है । परमपूज्य पिता! तुम, मेरी विद्यार्थी दशा में जव एक बार मैं अत्यंत दुःखी होकर सोया था तव उसी रात महाविष्णु के साथ दर्शन देकर, मुझे जो सहलाया उस सौभाग्य का वर्णन कैसे करूँ। परमपितामह! तुम्हें मेरे ऊपर कितना प्रेम है! कातरता पूर्ण पुत्र को सहलाने के लिए उस दिन भोर में दर्शनामृत का पान कराके संतृप्त करने के वावजूद भी इस दुष्ट मन को तिलभर विश्वास नहीं है। इसकी कृतघ्नता की जितनी भी निंदा करूँ वह कम ही होगी। हे देव! मैं जानता हूँ कि तुम आड़ में रहकर अपने भक्तों की भलाई के लिए क्या क्या अद्भुत लीलाओं को रच रहे हो। फिर भी हे सर्वव्यापक! मेरे मन को थोड़ा सा भी संतोष नहीं है जिससे मुझे पूर्ण पछतावा हो रहा है।

१४-१-१९३८

मैं तुम पर संपूर्ण विश्वास रखनेवाला हूँ। मैंने जितने पाप किये हैं अगर उनके बारे में सोच-विचार करें तो मुझे तुम से वहुत ही दूर रहना पडेगा। लेकिन तुम किसी दोष की परिगणना न करने के कारण मैं तुम्हारे अत्यन्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निकटवर्ती बन गया हूँ। यदि तुम दोषैकपक्षपाती बनकर दोषों को ढूँढने लगोगे तो हम बेचारे कैसे जी सकेंगे? लेकिन हे पिता! तुम्हारे विशाल हृदय के सामने सारे दुर्गुण गायब हो जाते हैं।

तुम्हारा भक्त इस दुनिया में चरितार्थ बन जाता है। उसकी धन्यता की कोई सीमा नहीं है। उसके सौभाग्य की भी कोई मिति नहीं है। हे परमदेव! मैं संपूर्ण तुम्हारी शरण में आया हूँ। तुम पर सब कुछ समर्पण कर चुका हूँ। हे देव देव! मैं यह महसूस कर रहा हूँ कि तुम मेरे हृदय में विराजमान हो । मेरे हृदय में बसे हुए तुम को देखकर मैं बहुत आनन्द परवश हो रहा हूँ । तुम मेरे हृदय में बस लेने के कारण, मेरे नर-नाडियों में प्रवहित खून के हर एक बूँद में आनंदांश चलना मेरे अनुभव में आ रहा है। अहह! मेरा हृदय तुम्हारे स्पर्श से कितना शीतल बन गया है! हे देव देव! तुम्हें मुझपर कितना प्रेम है। मैं कैसे इस ऋण भार को चुकाऊँ? मैं तुम्हारा बहुत ही ऋणी हूँ। मैं तुझे क्या देकर ऋणमुक्त हो जाऊँ?

हे परमपूज्य! तुम्हारे महोपकार से मैं पूर्ण मूक बन गया हूँ। मैं अब कुछ नहीं बोल सकता । हे परमात्मा! देव! मेरे आनंद का कारण तुम्हीं हो।

१६-१-१९३८

दूसरों की निंदा करने का गुण कैसे दूर हो पायेगा? मान लो कोई मेरी निंदा करता है । अगर मैं भी उसकी प्रतिनिंदा करने लगूँ तो वे (निंदक) मेरी निन्दा करने में और दो कदम आगे बढ़ेंगे। प्रतिनिंदा सुननेवाले वे निन्दक क्रुद्ध होकर उनको अपने दोषों को समझने का मौका ही नहीं मिल पाता। जो भले ही सत्यनिष्ठ हो, अगर निन्दक की प्रतिनिंदा करने लगे तो वह अपने पर्यावरण को प्रदूषित कर लेता है। कालांतर में वह स्वयं ही निंदक की अपख्याति प्राप्त कर लेता है और अपने आप को ठीक से न समझकर सत्यभ्रष्ट हो जाता है। लेकिन दैव भक्त के संग से सब कुछ कल्याणमय होना चाहिए न? जहाँ साधु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

संन्यासी रहते हैं वहाँ परस्पर विरोधी प्राणी भी अपने पारस्परिक द्वेष को छोडकर परस्पर प्रेमभाव से रहना हम सुन चुके हैं। यह कोई झूठ नहीं है। सत्पुरुष के संग से दुष्ट भी सत्पुरुष बन जाता है। वह कैसे? दूसरों की निंदा करनेवाला ही दुष्ट पुरुष है। सत्पुरुष उसकी प्रतिनिंदा न करके उसके बारे में उपेक्षा भाव धारण करता है। जिससे दुष्ट व्यक्ति निंदा करते करते ऊव जाता है और अन्त में थक भी जाता है। उसके बाद वह मन ही मन सोचने लगता है कि मैं क्यों पागल की तरह निंदा करने में लगा हूँ? यह परम अन्याय है। इसलिए उसमें यह समझदारी आ जाती है कि आगे चलकर, दूसरों की निंदा नहीं करनी चाहिए। सत्पुरुष परनिंदा न करके उपेक्षा भाव धारण करने से निन्दक को अपने भीतर झांककर देखने का मौका मिलता है। जिससे ज्ञानोदय का सत्परिणाम हो कर वह परिवर्तित हो जाता है। यदि कोई सत्पुरुष की निंदा करता है तो उसका `सौभाग्य` है। इसीलिए कि अन्ततो गत्वा सत्पुरुष के सहवास से निन्दक में सुज्ञान का उदय होता है। रे मानव! सुनो, मैं सच कहता हूँ। इसलिए वडे लोग कहा करते हैं कि सज्जनों के संग से दुर्जन भी सज्जन बन जाते हैं। इसीलिए सत्पुरुषों को इस दुनिया में देवताओं से भी बडकर ऊँचा स्थान मिला है।

१९-७-१९३८

हे जगदीश्वर! तुम्हारी कृपा की छत्र छाया में वसे अपने भक्त जनों के धैर्य के बारे में कहना ही क्या? अहह! मैं तो निडर बन गया हूँ। मैं तुम्हारे महदाश्चर्य जनक अद्भुत लीलाओं को देखते देखते चकित हो गया हूँ। तुम्हारे सर्वव्यापी होने की वजह से ही सबके हृदय के रहस्यों को तुम समझ सके हो। तुम्हारी लीलाओं को जाननेवाले तुम्हारे अंतरंग के भक्त जन के हृदय ही तेरा आवास स्थान है। हे परमात्मन्! तुम प्रसन्न होकर जिसे अपनी महिमा को दिखाना चाहते हो वे ही तुम्हारे रहस्य को समझ पाते हैं। हे परमपूज्य! तुम्हारे स्पर्श से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं पवित्र बन गया हूँ। दिन रात तुम्हारे पवित्र ध्यान के सिवाय मैं और कुछ नहीं माँगता।

२१-१-१९३८

मैं अपने मन को जितना भी समझाऊँ, वह संपूर्ण विषयासक्त बन बैठा है। मैं क्या करूँ? वह उसे बहुत सुखदायक समझ बैठा है। शिव शिव! वह उसे पाने के लिए छटपटा रहा है। रे मन! आगे जाकर सतर्क नहीं रहोगे? मैं तुम से क्या कहूँ? महादेव! मन की हीन परिस्थिति ने मुझे बहुत दुःखी बना दिया है। मैं अपने आप पर नाराज होकर इस जन्म को ही तिरस्कार करने लगा हूँ।

२२-१-१९३८

एक दिन मन बहुत पवित्र होकर लोकोत्तर आनंद में लीन रहता है। दूसरे दिन बहुत अपवित्र स्थिति में रहता है। इसके मुख्य कारण ये हैं कि मानसिक दौर्बल्य, आहार दोष और संग दोष। संग दो प्रकार के होते हैं - आंतरिक संगति और बाह्य संगति। आंतरिक संगति वैचारिक संगति कहलाती है। बाह्य संगति दो तरह की होती है - समीपस्थ संगति, दूरस्थ संगति। इन सब कारणों में मुझ में कौन-कौन से हैं? मानसिक दौर्बल्य मुझमें पूर्ण प्रमाण में है। इसकेलिए पुराकृत संस्कार और विषय लोलुपता ही कारण हैं। संभाव्य अस्थिरता और विचार शक्ति की दुर्बलता भी कारण बन सकते हैं। जो अपने मन के दौर्बल्य को दूर करना चाहता है उसे इन दोषों को दूर करना होगा।

आहार दोष - यह मुझमें उतना नहीं होने पर भी नहीं के बराबर तो नहीं, यह भी कुछ है। अब संगदोष की बात।

आंतरिक संगति - इसे बहुत पवित्र रखना चाहिए। मन की अपवित्रता से आंतरिक संग भी अपवित्र बन जाता है। अगर आंतरिक संगति पवित्र रहे तो,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह समझना कि मानव जन्म मुक्त हो गया। मुझ में यह दोष अत्यधिक है। इसे दूर करने केलिए विचारों का पवित्र होना जरूरी है।

वाह्य संगति - यह स्थूल रूप से संवद्ध है। मुझे इसमें पहलेवाला समीपस्थ संगति उत्तमोत्तम है। इस विषय पर मुझे कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

दूरस्थ संगति - यह मुझे उतना हितकरसा नहीं है? मेंरे दूरस्थ संगति कुछ अपवित्रसा ही है। इसे दूर करने के लिए लोगों के संसर्ग को कुछ कम कर लेना चाहिए। एकांतवास को चुनना चाहिए। अस्तु, जवतक ये सारे दोष दूर नहीं होंगे तवतक उद्धार नहीं हो सकता।

अगर साधारण आदमी अचानक घर में आयेगा तो उस घर के मालिक अपने घर को साफ-सुथरा बनाये रखने केलिए पूरा यत्न करता है। ऐसा नहीं करने से उसके आत्मगौरव पर धक्का लगता है। और घर आनेवाले भी आने में इतना खुश नहीं होंगे। वह उनके लिए गौरव की बात भी नहीं है। इसी प्रकार हमें यह समझना चाहिए कि जब साक्षात् परमेश्वर ही पधार रहा है उसके स्वागत के लिए हमें कितनी व्यवस्था करनी होगी?

देह ही देव मंदिर है। हृदय ही गर्भ गृह है। यदि परमेश्वर वहाँ आता हो तो उसे पूर्ण पवित्र रखना चाहिए। उसके लिए उसको विचार शक्ति नाम के बंधक से बाँधे हुए, ज्ञान नाम के झाडू से ऊपर कहे गये सारे दोषों के कचड़े को झाड़ कर दूर फेंक देना चाहिए। यदि घर साफ सुथरा हो तो हर एक को उसे देखने और उसमें रहने की अभिरुचि उत्पन्न होती है। जैसे देव मंदिर पवित्र होकर कई भक्त जनों के मन को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। वे उस मंदिर को देखकर संतुष्ट हो कर, जग में प्रचुर करते हैं। अपने हृदय में निरंतर रहनेवाले परमेश्वर से निवेदन करते हैं। भगवान् स्वयं अंतरंग में विचार कर लेता है। फौरन उसे भी अभिलाशा उत्पन्न होती है कि जाकर देखूँ और वहाँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर निवास करूँ। वस वह तुरंत वहाँ आकर बस जाता है। परमात्मा के निवास से भक्त का हृदय आनन्द से फूल उठता है। उसका मन सम्पूर्ण शांत हो जाता है। देवमन्दिर कितना शान्त रहता है! वैसे ही भगवान् आकर जव अपने हृदय में निवास करने लगता है तब भक्त का हृदय इस जग को पूर्ण रूप से भूल जाता है। उसकी सारी वासनाएँ दूर हो कर वह निष्कल्मश वन जाता है। उस दिन के उसके हृदय की परिस्थिति को यह काली मुँह की लेखनी क्या वर्णन कर सकेगी? वह असामान्य है। अगर यह कहें तो द्विरुक्ति होगी कि उसका जन्म सार्थक होगा। धन्यता की कोई हद नहीं। आनंद का आर पार नहीं। वह कृतार्थ है, वह सफल है। ऐसे पुण्यजीवी को मेरा कोटि कोटि प्रणाम। ऐसे पुण्यजीवी के पद पद्मों पर कोटि कोटि नमस्कार।

३१-१-१९३८

यह मन एक क्षण पवित्र होकर, दूसरे क्षण अपवित्र होकर और एक क्षण में अनिर्वचनीय दशा में पहुँच जाता है। लेकिन विचार शक्ति बढ़ते बढ़ते सुविचार बलवत्तर होकर दुर्वासनाएँ विनष्ट हो जाती हैं। प्रधान रूप से परमात्मा के अनुग्रह के बिना कोई भी मनुष्य आगे नहीं बढ सकता। सारा विश्व सुखी रहे! परमात्मा का श्रेयोराज्य अविच्छिन्न बना रहे! परमात्मा की दिव्य कृपा निरंतर भक्त जनों पर बनी रहें।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

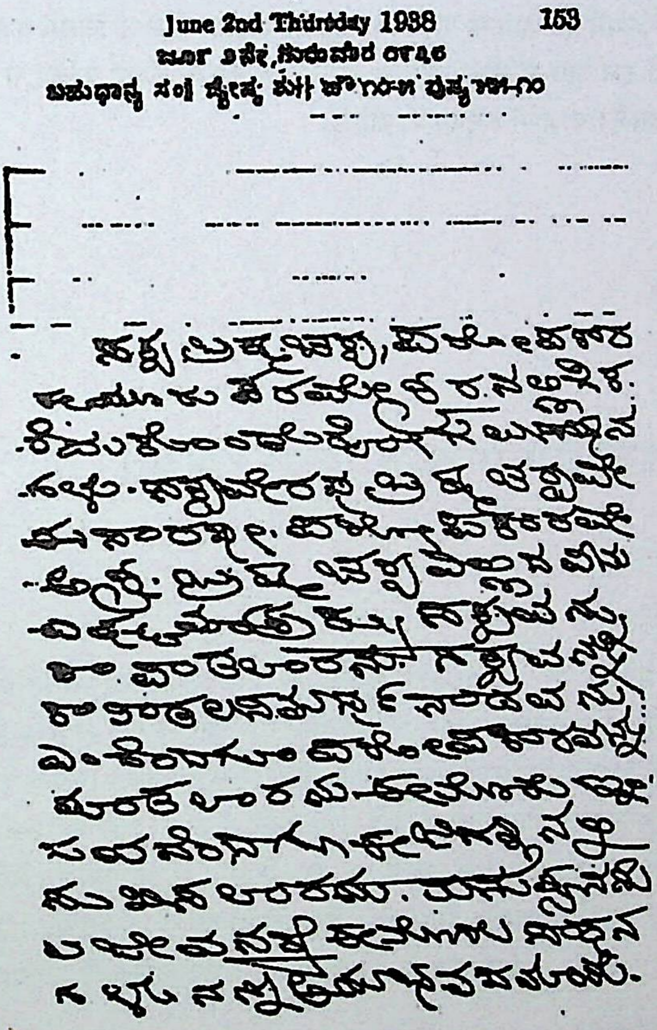
June 2nd Thursday 1938 153

सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार, ये तीनों परमेश्वर के पास ले जानेवाले साधन हैं। सत्य ही रथ है; ब्रह्मचर्य ही सारथि है; परोपकार ही अश्व है। जिसमें ब्रह्मचर्य न हो वह कभी सत्य का पालन नहीं कर सकता। जो सत्य के पालन

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

में असमर्थ हो वह कभी परोपकार नहीं कर सकता। ये तीनों जिसमें न हों वह कभी इस जग में सुखी नहीं रह सकता। मानव के जीवन केलिए ये तीनों साधन हैं। ये अपने अनुभव की बातें हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८

त्रिरत्न : सत्य -ब्रह्मचर्य-परोपकार

१६-९-१९३८

परमात्मन्! हम कितने कायर बन गये हैं। तुम जब इस विश्व के पिता हो तब हमें डरने की क्या बात है? डरना नहीं चाहिए। तुम पर विश्वास नहीं हो तो डरना ही पड़ेगा। देव देव! दूसरों के निंदा वाक्य सुन कर मुझे अतीव दुःख होता है। लेकिन उन निंदा वाक्यों के प्रेरक तुम्हीं हो। तुम्हारी प्रेरणा में कभी बुराई नहीं होती। हमारे हित के लिए ही इस जग में देश कालानुसार प्रेरणा करते रहते हो। अनंतशक्ते! अवेद्यमहिमा! तुम्हें कोटि कोटि प्रणाम। हे पिता! मुझे सत्य मार्ग पर ही रखकर इस जीवन को बिताने की कृपा करो।

१७-२-१९३८

मुझे मालूम है कि मैं अज्ञान के कारण कितने दुःख का अनुभव कर रहा हूँ। फिर भी परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि इस अज्ञान को दूरकर मेरी रक्षा करो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१८-२-१९३८

हे परमात्मन्! परमात्मन्! इस संसार की वडवाग्नि में जल जलकर मैं दुर्वल हो गया हूँ! तुम्हारे पादारविंदों में सर्वार्पण करके निश्चिंत होकर वैठा हूँ। तुम्हीं मेरे रक्षक हो। तुम पर अखंड, अछेद्य भरोसा है। मैंने तुम पर विश्वास रखकर इस भववंधन से छुटकारा पाया। मैं धन्य हूँ। मुझे अपरिमित आनंद! आनंद!

२०-२-१९३८

परमात्मन्! यदि तुम मुझे भूल वैठोगे तो मेरी रक्षा करनेवाला और कोई नहीं है। मुझे सर्वदा सत्य मार्ग पर ही चलने की प्रेरणा दो। जब मुझसे थोड़ा-सा भी गलती हो तो तत्क्षण मुझे दंड दो। हे परमेश्वर मुझे दृढ विश्वास है कि तुमपर विश्वास रखनेवाला मुझे किसी काम में हार खाने की गुंजाइश ही नहीं। अवतक तुम्हारे कृपावल से मैं असत्य की ओर नहीं गया। परास्त भी नहीं हुआ। पहाड़ जैसे आये हुए महान् विघ्न तिनके जैसे गायब हो जाते हैं। हे देव! तुम्हारा अपरिमित अनुग्रह तुम्हारी सेवा में मुझे आगे वढ़ाये। चूँकि सारा जग ही तुम्हारी कुक्षि में है, मैं समझता हूँ कि जग की सेवा ही तुम्हारी सेवा है। तुम्हारी इस सेवा में आनेवाले विघ्नों को दूर कर मेरी रक्षा करने का भार तुम पर है।

में तुम पर विश्वास रखने के कारण जो भी मुझसे विरोध करता है वह शरणागत हो जाता है। यह तुम्हारी कृपा के सिवाय और कुछ नहीं। अवतक जितने भी लोगों ने विरोध किया वे सव विफल हो कर चुप हो गये।

तुम जिस के साथ हो वह लोगों की नज़र में एकाकी होने पर भी उसे हराना नामुमकिन् है। अगर परमात्मा चाहें उसकेलिए कुछ भी असाध्य नहीं है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२३-२-१९३८

सत्य ही आत्मा का आहार है। रे मन! सत्य के लिए जीओ! सत्य में जो आनंद है उस की अनुभूति करो। सत्य के सुख को चख कर शांत रहो। सत्य, सत्य जप करते इस जीवन को पूरा करो। सत्य, ब्रह्मचर्य और परोपकार ये तीन ही परमात्मा के प्यारे गुण हैं। यदि परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हो तो इन तीनों गुणों को अपना लो। इन तीनों के लिए अपने प्राण तक वलि चढ़ाओ। अनित्य प्राण को त्यागकर नित्य सत्य कि महत्ता को सारे जग को दिखा दो।

२७-२-१९३८

आज श्री पट्टाध्यक्ष स्वामीजी पधारे हैं।

कौन जानता था कि आज तुम यहाँ आनेवाले थे? परमात्मा ने मुझे दर्शन देने की इच्छा से अपने स्वरूप से अभेद्य तुम को ही यहाँ भिजवा दिया है। देव देव! तुम्हारी महिमा विचित्रतम है। इस दीन की रक्षा करना सर्वथा तुम्हारे विना और किसी से नहीं हो सकता।

२८-२-१९३८ (महा शिवरात्रि)

यदि परमात्मा मुझपर प्रसन्न होगा तो मेरा मन शिवरात्रि के दिन अवश्य प्रसन्न रहेगा। मैं ने सोचा था कि अन्यथा होगा। मेरी इस पुकार सुनकर अपने साक्षात् परमात्मा श्री गुरुदेव तुरंत पधार कर इस शिवरात्रि में भाग ले रहे हैं इससे मैं साक्षात् ईश्वर के सांनिध्य को ही महसूस कर रहा हूँ । तुम जरूर मुझपर पूर्ण दया दृष्टि रखें हो।

४-३-१९३८

हे गुरुदेव! हर एक क्षेत्र में मुझे विजयी वनाये हो! आगे भी इस दीन का पालन तुम्हारे ही अधीन है। इसे स्वतंत्र शक्ति नहीं है। तुम्हें छोड़कर अन्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई इसको पालनेवाला नहीं है। यदि तुम भी उपेक्षा करोगे तो इसे खाने के लिए रोटी तक नहीं मिलेगी। हे परमात्मन्! मैं यही प्रर्थना करता हूँ कि मुझे रक्षा करने की पूर्ण कृपा करो।

६-३-१९३८

(---) गाँव के (---) अमुक आदमी बड़े धूर्त होने के कारण सारे गाँव में विद्वेष बडकर कई तरह की तकलीफें पैदा हो गयी हैं। ऐसे दुष्टों को गाँव से निकाले विना गाँवों को क्षेम नहीं है। इसलिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि हे जगदीश्वर! शीघ्रातिशीघ्र ऐसे दुर्जनों को दूर हटाकर जग का पालन करो।

८-३-१९३८

हे परमेश्वर! मैं दिन रात तुम्हारे ध्यान में मग्न हूँ। तुम्हारे चरणामृत का पान करके, मैं तुम्हारी भक्ति में मुग्ध हो गया हूँ। तुम्हारे लिए बिना चिन्ता अपने प्राण देने को भी मैं तैयार हूँ। ऐसे प्रसंग को मेरा भाग्योदय समझता हूँ। मेरे भाग्य के बंधो! तुम कब मुझे दर्शन देकर सांत्वना दोगे? मैं बड़ी कातुरता से तुम्हारे दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हे परमात्मन्! तुम कहाँ हो? आओ, मेरे नेत्रों को शांति प्रदान करो।

९-३-१९३८

हे परमात्मन्! तुम्हारी दया बुद्धि की प्रशंसा जितनी भी करें वह कम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम मेरे योगक्षेम को निभाओगे। मैं मानता हूँ कि यह सब चिंतामणि मंत्र का ही प्रभाव है।

१२-३-१९३८

हे पिता! मैं तुम्हारे गुणराशि से मुग्ध हूँ। तुम्हारे अनमोल कृपाश्रय में निश्चिंत हूँ। तुम्हारे पादकमलों में भ्रमर बनकर मकरंदामृत का आस्वादन करता हूँ। ओह! मुझपर तुम्हारी कितनी कृपा! मुझपर कितना प्रेम!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दीनदयालो! तुम्हारे उपकार के वोझ से मुँह से शब्द नहीं निकल रहे हैं। पतानुमुद्रा धारणकर निश्चिंत हूँ।

२०-३-१९३८

हे महेश्वर! तुम्हारे संग सुख का अनुभव, ये मूढ़ क्या जानें? हाय! अज्ञानियों! व्यर्थ से ही विषय लंपट होकर अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हो। विशुद्ध प्रेम के स्वरूप को समझने की चेष्टा क्यों नहीं करते? मोह को ही प्रेम समझकर धोखा खा गये। हे परम पितामह! क्या इन मूढ़ों को देखकर तुम्हारा हृदय पिघलता नहीं? शिव शिव! बर्बाद हो रहे हो, सावधान!

२६-३-१९३८

हे मानव! परमेश्वर पर जरूर विश्वास रखो। तुम्हें शाश्वत शांति मिलेगी। कष्टसहिष्णुता शांति साधक के लिए अत्यावश्यक है। सच्चे दिल से सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार इन तीनों गुणों को अपना लो। ये तीन ही जग को संसार सागर से उबारेंगे। सत्य ही शिव, ब्रह्मचर्य ही ब्रह्म, परोपकार ही विष्णु हैं। इन तीनों गुणों का फल ही परात्पर वस्तु है।

३-४-१९३८

मेरे पुण्य की कोई सीमा नहीं। अपने सौभाग्य की कोई मिति नहीं है। अपनी धन्यता का कोई आरपार नहीं। परुष मणि से चुम्बित लोहे के माफिक तुम्हारे स्पर्श से मैं जीवन्मुक्त हो गया। मेरा जन्म सार्थक हो गया। मेरा भव बंधन हट गया। अब मुझे जनन-मरण कि श्रृंखला नहीं है। मैं जी उठा। शिव, शिव, शिव, शिव!

४-४-१९३८

हे देव! तुम्हारे विरह ने मेरे मन को मुरझा दिया था। आज तुम्हारे दर्शन से अपना मनःकुसुम खिलकर अपनी खुशबू को चारों ओर फैला रहा है। मैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धन्य हूँ। मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं। आनंद ही आनंद! अपनी डायरी (दिनचरी) को जो पुण्यात्मा पढ़ेगा वही धन्य है!

८-४-१९३८

मेरे पूर्वाभिधान को ठीक न समझ कर मुझे तुम्हारा कुमार बनाकर शिवकुमार नाम से नूतनाभिधान किया। मेरा नाम अब दिन रात मुझे तुम्हारे पुत्रत्व की याद दिलाती है। हे पिता! मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगा।

११-४-१९३८

हे परमेश्वर! अस्थिर चित्त ही विपत्तियों का आवास स्थान है। स्थिर चित्त ही निश्चिंतता का मूलस्थान है। इसलिए मैं अनन्य भक्ति से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे तुम्हारे पदतलों में सदा अविचलित होकर रहने की कृपा कर दो। हे दीन दयालो! तुमने पहले ही स्वीकार कर लिया है कि मैं तुम्हारा प्रीतिपात्र पुत्र हूँ। देव देव! मैं तुमसे यही माँगता हूँ कि तुम मेरे अपराधों की परवाह न करके हाथ पकड़कर मेरी रक्षा करो। देवाधिदेव! तुम्हारे विरह से मैं बहुत दुःखी हो गया हूँ।

१३-४-१९३८

लेकिन हे परमेश्वर! यदि तुम कृपा नहीं करोगे तो अब तक जो यश मिला है वह सब मिट्टी में मिल जाएगा। कोई यह न समझे कि मैं यश की कामना से ही यह सब कुछ कर रहा हूँ। पिछले दिनों में प्राप्त यश यदि स्थिर बने रहें तो भविष्य के कामकाज निरातंक चलेंगे । नहीं तो लोगों के मन में श्रद्धा कम हो कर दुष्ट बुद्धि जाग उठेगी। तब अनेक तरह की विघ्न बाधाएँ उपस्थित होंगी। इसलिए मैं तुमसे यह नहीं मागँता कि अपने कार्य निरातंक से पूर्ण करा दो। क्योंकि उसमें अपना स्वार्थ नहीं है। निश्चित ही मुझमें स्वार्थ नहीं है। तुम जानते ही हो कि सत्य केलिए, समाज की भलाई के लिए मैं लडता हूँ। हे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमेश्वर! ऐसी कृपा करो कि हाथ लगे काम निरातंक से पूर्ण हो जाय। मैं जो कुछ करता हूँ वह सव कुछ तुम्हारी सेवा ही है। अगर उसमें तनिक भी स्वार्थ हो तो मैं दंड भुगतने केलिए तैयार हूँ। देवाधिदेव! इस अवसर पर मेरी इज्जत वचाना तुम्हारे ऊपर है। मैं अत्यन्त दीन होकर माँग रहा हूँ। मुझे अव तक हर काम में जो उत्साह प्रदान किया वही उत्साह आगे भी देकर, सव की सेवा करने का सुअवसर प्रदान करो। मैं इससे ज्यादा तुमसे विनति नहीं करूँगा। परम पितामह! तुम को मेरी रक्षा करनी होगी। यदि तुम्हारा अस्तित्व सच हो तो मेरी कभी हार न होगी। सर्वत्र जयशील हो जाऊँगा। मेरे मन की इच्छा यही है कि तुम्हारी सेवा में कोई विघ्न-वाधाएँ उपस्थित न हों।

मेरा तप है - ब्रह्मचर्य, सत्य, परोपकार! इन तीनों की साधना मैं कर रहा हूँ। ये तीन ही इस जग में मानव के हृदय को शांति देनेवाले हैं। इन तीनों को मैंने अपने जीवन का रत्नत्रय समझ रखा है। मैं वार-वार प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर की कृपा से इन तीनों का पालन कर सकूँ ।

२४-४-१९३८

हे शिव! तुम ही मेरे रक्षक हो। तुम्हीं रक्षा करो। देव देव! तुम ही रक्षा करो! देव देव! तुम ही रक्षा करो। देव देव! तुम ही रक्षा करो। हे देव!

परमेश्वर के पवित्र अनुग्रह से मेरा जीवन सार्थक हो, मेरा हृदय सुशीतल होकर संपूर्ण शांतभाव से भरकर छलकने लगे। इसी लक्ष्य से दिनरात उसके दिव्य नाम का स्मरण करता हूँ। उसके वारे में संपूर्ण कृतज्ञ हूँ। देव देव! तुम्हारे वारे में मैं क्या कहूँ? मैं तुम्हारे स्पर्श से पवित्र वन गया हूँ।

२९-४-१९३८

हे परमेश्वर! तुम जानते हो कि मैं तुम से कुछ भी नहीं छिपा हूँ। मुझे तुम्हारे सिवाय और कोई वंधु वांधव नहीं है। मैं तुम्हारे सिवाय और किसी की शरण में नहीं गया हूँ। यदि तुम मेरे दोषों की ओर नज़र डालोगे तो मैं तुम से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत दूर हो जाऊँगा। हे दीनबंधो! ऐसी दया करो कि मैं सर्वदा तुम्हारा कृपापात्र बना रहूँ। तुम्हारी कृपा के विना मैं और कुछ नहीं माँगता। मैं जानता हूँ कि यह जग संपूर्ण मिथ्या है। मैं एक गरीब हूँ, दीन हूँ। मेरे सारे मानापमान तुम्हारे सुपुर्द हैं। तुम्हें प्रसन्न होकर रक्षा करनी चाहिए। मैं तुम्हारे चरणकमलों पर पड़कर प्रार्थना करता हूँ।

३-५-१९३८

मैं परमेश्वर पर सदृढ विश्वास रखता हूँ। सामान्य मनुष्य भी विश्वास रखनेवाले को धोखा नहीं देता। जब वात यह है, भगवान् कैसे अपने भक्तों को धोखा देगा? जिसे भगवान् के स्वरूप का परिचय नहीं है वहीं कह सकते है कि भगवान् विश्वास रखनेवालों को भूल जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जो विश्वास रखता है उसका हाथ पकड़कर उसकी रक्षा जरूर करता है। रामकृष्ण परमहंस के कथनानुसार जो भक्त उसके लिए छटपटाता है, उसके लिए भगवान् भी छटपटाता है। यह सच है कि इस जीवन में सात्विक जीवन ही सुखी जीवन है। जो तापत्रय से मुक्त है वही सुखी है।

५-५-१९३८

आज अपने हृदय में जो आनंद हो रहा है उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। मैं कैसे बताऊँ कि वह आनन्द क्या है? मुझे तो हो रहा है: आनंद ही आनंद! अहह! आनंद आनंद! तुम नहीं जान सके? मुझे तो आनंद ही आनंद हो रहा है। आनंद! मैं आनंद परवश हूँ! आनंदित! आनंदित! आनंद! आनंद! मैं पागल बन गया हूँ। आनंदपरवश हो गया हूँ।

७-५-१९३८

मन को हजारों बार समझाने पर भी सौ वर्ष सिखायी गयी समझदारी सिर्फ एक सेकेंड में भूल जाती है। मन पर माया मुद्रा उतना बलवत्तर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माया को त्यागना ठीक-ठीक मालूम होने पर भी संग दोष से अपने स्व-स्वरूप को भी भूल जाता है। हे परमेश्वर! तुम्हारे पदतलों पर पड़कर प्रार्थना करता हूँ कि सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार इन तीनों गुणों को प्राप्त करने के लिए विशेष प्रकार की शक्ति को प्रदान कर, रक्षा करो।

२२-५-१९३८

जिसमें ब्रह्मचर्य न हो, वह चाहे अगाध गुणवान् हो, फिर भी वे गुण उसमें स्थिरता से नहीं रह पाते। छेदवाले मटके में पानी भरने जैसे व्यर्थ होता है। मैं दृढ़ता से यह कह सकता हूँ कि सुखी जीवन के लिए ब्रह्मचर्य ही प्रधान है। जो ब्रह्मचर्य को पालन नहीं करता वह शांति पा नहीं सकता।

रे मानव! तुम्हें मनुष्य बनने की इच्छा हो तो पहले ब्रह्मचर्य का पालन करो! पहले पहले मुश्किल सा लगने पर भी संग, आहार, ग्रंथों की सहायता से इस व्रत का पालन आसानी से कर सकते हो। जय! जगदीश्वर! इस जग को पालनेवाला तुम्हीं हो।

१-६-१९३८

ऐसा कोई पाप बचा नहीं है जिसे ब्रह्मचर्य को पालन न करनेवाले ने किया न हो। जो भी गुणार्जन करना हो तो पहले ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। गोंद न हो तो पदार्थ आपस में नहीं चिपकते। जैसे मानव को पृथ्वी आधारभूत है वैसे ही सुखी जीवन के लिए ब्रह्मचर्य आधारभूत है। जिसमें ब्रह्मचर्य नहीं उसमें कोई गुण नहीं के बराबर है।

सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार ये तीन परमेश्वर तक पहुँचाने के साधन हैं। सत्य ही रथ है, ब्रह्मचर्य ही सारथि है, परोपकार ही अश्व है। जो ब्रह्मचारी नहीं वह किंचित् मात्रा में भी सत्य का पालन नहीं कर सकता। जो सत्य का पालन करने में असमर्थ है वह कभी परोपकार नहीं कर सकता। जिसमें ये तीनों न हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह कदापि जग में सुखी बन नहीं सकता। मनुष्य के सुख-जीवन के लिए ये तीनों साधन हैं। यह मेरे अनुभव की बात है।

६-६-१९३८

परमेश्वर जरूर रक्षा करेगा। अपने में सत्य जबतक पक्का न होगा तबतक परमेश्वर की निंदा करना मूर्खता की बात है। दिन रात तुम्हारे ध्यान में ही मैं हूँ, मेरे मानापमान तुम्हारे ही हैं। मैं जितनी भी चिंता करूँ फायदा नहीं है। ईश्वर संकल्प के अनुसार ही होगा, अन्यथा कभी नहीं होगा। ईश्वर से बढ़कर और कौन है?

७-६-१९३८

हे परमेश्वर! मैंने पिछले दिन को सुख से बिताया। मेरे हृदय के सारे भाव तुमसे छिपे नहीं हैं। उचितानुचित को करनेवाले तुम रहते मैं क्यों सोचा करूँ?

मैं कभी तुमसे यह मांग नहीं रख सकता कि ऐसा वैसा करो। जो उचित है, जिसमें सुख है उसे तुम करोगे ही। तुम सर्वज्ञ होने के नाते मैं अगर कुछ विनती करूँ तो तुम्हारे स्वरूप का ही अपमान होगा। सब की विनतियों की जानकारी तुम को पहले ही रहती है।

८-६-१९३८

हे परमेश्वर! सदा तुम्हारे ध्यान में ही रहता हूँ! मेरे अंतरंग के बारे में तुमसे कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। हे दयामय! तुम्हारी दयालुता इस दुनियाँ के परिपालन में साबित हो जाये। अन्यथा हमारे जैसे लोगों की हालत चिंताजनक हो जाएगी। तुम्हारे सिवाय और किसी पर विश्वास नहीं।

९-६-१९३८

ऐसा प्रतीत हो रहा है कि गाढ़ांधकार दूर हो गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२-६-१९३८

हे परमेश्वर! तुम्हारे दूर हो जाने के कारण सारा जग विषादमय हो गया है। दिन-रात तुम्हारा ही ध्यान कर रहा हूँ। तुम्हारे चरण कमलों पर विश्वास रख कर, संतुष्ट हो रहा हूँ। हे देव देव! तुम्हें मेरी रक्षा करनी चाहिए। तुम्हें भूलकर एक मिनिट भी नहीं विता सकता। तुम पर मेरा समस्त भार सौंपकर निश्चिंत वन गया हूँ। देव! तुम ने विछुड़कर मुझे वहुत विरह दुःख दिया है। मैं इसकी प्रतीक्षा में हूँ कि तुम मेरे हृदय के संताप को दूर करनेवाली अमृतवृष्टि की वर्षा कव करोगे? हे देवाधिदेव! मेरी कामना यही है कि अपना हृदय सर्वदा शांत रहे।

१५-६-१९३८

जो जितेंद्रिय है वही मनुष्य सदा शांत, सात्त्विकप्रिय, विषय वैरागी और सर्वत्र अपने आप को देखने में समर्थ रहता है। आहार की परिशुद्धता के विना ब्रह्मचर्य का पालन करना संपूर्ण असंभव है। मनोदार्ढ्य रहते हुए भी विकृतेंद्रिय सन्निवेश आ पडे तो अपने कावू में नहीं रहता। इसलिए सदा जागरूकता से रहना असाध्य है।

१९-६-१९३८

हृदय दुःख से छटपटा रहा है। इस प्रकार सुख-दुःखों के वश में होकर आनंद व विषादों का अनुभव करना मुझे विलकुल ठीक नहीं लगता। कुछ भी हो, कभी किसी भी हालत में परमेश्वर मुझे भूला नहीं है। यह कहना शुद्ध असंगत होगा कि वह आज मुझे भूल वैठेगा। चाहे जितने भी कष्ट क्यों न झेलने पड़े, धैर्य से समय गुजारना होगा। मैं तुम पर निश्चित विश्वास रखता हूँ। हो जाय, मेरी परीक्षा हो जाय। मैं पूरे विश्वास के साथ इस विपत्ति का सामना करूँगा। यदि परमेश्वर को मुझपर प्रेम हो और मुझमें सत्य हो तो कार्य की सिद्धि में कोई संशय नहीं है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हे परमेश्वर! तुम्हारी सेवा समझकर ही मैं निकला हूँ। धन के लोभ से नहीं। मैं जो कुछ भी करता हूँ वह सब तुम्हारी सेवा में । मेरी हार्दिक अभिलाषा यही है कि तुम्हारी सेवा मुझसे निरातंक हो; मेरा जीवन सफल हो जाय।

देवाधिदेव! मेरे मन की अस्थिरता को देखते हुए हृदय काँप उठता है। फिर भी क्या करूँ? किसी भी हालत में हमारे रक्षक तुम रहते ही हो। मैं तुम पर सारा भार डालकर निश्चिन्त रहता हूँ। महादेव! तेरे शरण में आये मुझ को रक्षा करना तुम्हारी जिम्मेदारी है।

२०-६-१९३८

परमेश्वर! इस परिस्थिति को तुम अपनी आँखों से देख रहे हो! यदि तुम्हारी कृपा न होगी तो मुझे संपूर्ण दुःखी होना पडेगा। तुमने मेरा हाथ कभी नहीं छोडा है। यह सच है कि आज भी तुम मेरा हाथ नहीं छोड़ोगे। फिर भी हृदय पूर्ण अविश्वासी है। हे देवाधिदेव। मेरे मानापमान तुम्हारे ही हैं।

२१-६-१९३८

परमेश्वर रक्षा करता है !

दुनिया की सोच का ढंग देखकर मैं दंग रह गया हूँ। परमेश्वर! सारे जग में सत्य नहीं बचा है। यहाँ सत्य का कोई मूल्य नहीं है। देवाधिदेव! तुमने मेरी प्रार्थना सुन ली। काम पूरा हुआ। तुम्हें सहस्र धन्यवाद। मुझे पग पग पर यह महसूस हो रहा है कि तुम मेरे हाथ कभी नहीं छोड़ोगे। सत्यमेव जयते। हे परमेश्वर! मैं तुम्हारा कृपापात्र हूँ। तुम्हारे पदतलों में पूर्ण रूप से लीन हो गया हूँ।

२६-६-१९३८

परमेश्वरानुग्रह से दिन तो सुख से गुजर रहे हैं। लेकिन कोई कमाई नहीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो रही है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि परमेश्वर के रहते इस पर हम लोगों की चिंता अविवेक सावित होगी। दीनदयालो! इन दीन की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है।

३०-६-१९३८

आज गरूडनगिरि पहाड पर चढे थे। साधु-नोणंवलिंगेश्वर के दर्शन करने के वाद ऊपर शिखर में शंकरेश्वर का दर्शन करने जव गये उस समय गु.लिंगप्पा भीतर गया। वहाँ सोया हुआ भालू वाहर निकलकर गर्जन किया। एक लडके और सींघ फूँकनेवाले आदमी को घायल करके भाग गया। बाकी सव वच गये। `करडी हळळी`गाँव के भक्तजन भी साथ आये थे। गिरीशय्या भी आया था। और कोई खास घटना नहीं हुई। रक्षा हेतु ईश्वर है। सत्य, ब्रह्मचर्य, परोपकार ये तीनों हमारे सुख जीवन के साधन हैं।

२-७-१९३८

सुनने में आया कि सिरिगेरे, बूदिहाळ, मुत्तुगदूर सरहद में विशेष रूप से वर्षा हुयी है और फसल अच्छी हैं। यहाँ पर तो वर्षा न होने के कारण लोगों को वहुत तकलीफ हुई है। हमें तो वड़ा दुःख हुआ है। चिक्केगौडजी के पत्र से पता चला है कि यलहंका के सरहद में साधारण वर्षा हुई है। परमेश्वर सबका पालन करेगा।

४-७-१९३८

परमेश्वर के अनुग्रह से हाथ लगाये दोनों कार्य पूर्ण हो गये। वैसे तो हाथ लगे कोई काम विफल नहीं हुआ है। लेकिन वर्तमान परिस्थिति चिंताजनक होने पर भी परमेश्वर ही अपने होनेवाले सारे कामकाज के जिम्मेदार होने के कारण उसके बारे में ज्यादा चिंता करना विलकुल ठीक नहीं है। उसके इच्छानुसर चाहे दूध में डाले या पानी में। मैं इसे कभी मना नहीं करता, मैं निश्चिंत हूँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८-७-१९३८

परमेश्वर ने यहाँ पर भी जय ला दी। विश्वास करनेवालों की रक्षा करना उसी के ऊपर है। हे जगदीश्वर! तुम पूर्ण दयालु हो। तुम अपने भक्तों की रक्षा किये विना नहीं छोडोगे। तुम्हारे दिव्य चेतना को हजारों नमस्कार। तुम्हारी भक्तपरिपालन की विचक्षणता के लिए धन्यवाद। तुम्हारे कृपापात्र मानव का जीवन ही सार्थक है। यह मेरी विनम्र विनती है कि तुम मुझे अपना पुत्र समझ कर उद्धार करो।

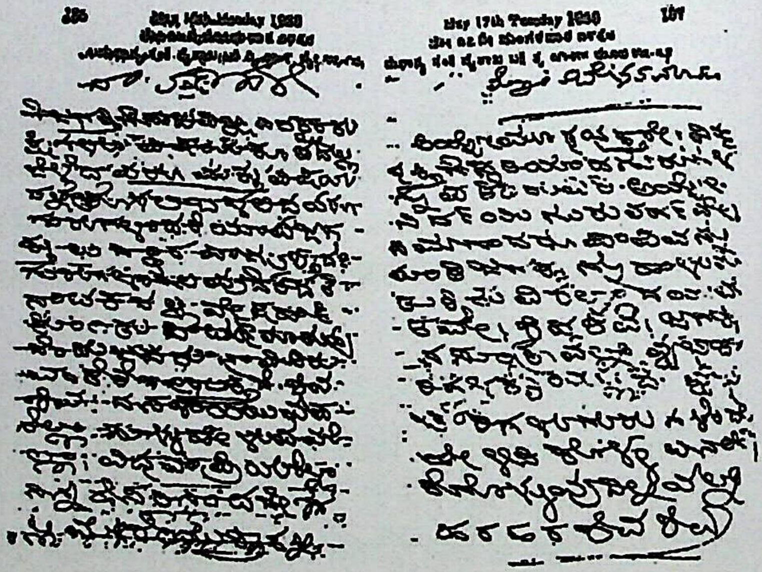

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९

अधम गुरुजन-नीच शिष्य जन

४-२-१९३८

विद्याभिवृद्धि फंड के लिए हर वर्ष एक घर को ०-८-० आनों के सेस लगाया जाय तो १२,००० - घरों की वसूली ६,००० रुपये होगी। उसमें एक हजार रुपये वसूली आदि खर्च के लिए निकाल दिया जाय तो बचे ५,००० हजार रुपये मूल धन बचत करना सुलभोपाय लगता है। परमात्मा बड़ा है। सर्वज्ञ! ऐसा कौन-सा विषय है जो तुम नहीं जानते? तुम्हारे स्मरण में मन को अखंड आनंद मिल रहा है।

५-२-१९३८

समाज की परिस्थिति इसी तरह रहने पर सुधारना बड़ा मुश्किल होगा। हमारे समाज में खास तौर पर तीन वर्गों का सुधार होना चाहिए। सबसे पहले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरुवर्ग में जो अनैक्य है उसको दूर कर सभी गुरुजनों को यह अच्छी तरह समझना चाहिए कि शिष्य सेवा ही ईश सेवा है। दूसरा, जंगम लोगों में वैदिक और धर्मिक सुधार लाना चाहिए। तीसरा यह है कि शिष्य वर्ग में धार्मिक, नैतिक और विद्याविषयक सुधार होने चाहिए। ये सब होने के लिए सारी दुनिया में रहनेवाले इस समाज के लोगों को एकता के सूत्र में बांधे बिना यह असंभव है।

एकता के लिए लोगों में जो संकुचित बुद्धि है उसे पहले दूर करना होगा। एकता के विना कोई कार्य न हो पायेगा। इसका उपाय यह है कि सारे शिष्यों को इकट्ठा कर एक केंद्र स्थान पर साधु वीरशैवों की एक संयुक्त सभा आयोजित करके इस विषय को उनके सामने रखें। इस एकता में क्या महत्तर फायदा है उसे समझाना चाहिए। ऐसा करने पर समाज में ऐक्यमत आ जायेगा। उसके बाद जो सुधार आवश्यक समझे जाते हैं वे अपने आप हो जाएँगे।

१०-२-१९३८

अगर तुम से यह नहीं हो सकेगा, तो इस मार्ग से ही दूर रहो। इस पवित्र मार्ग पर कलंक मत छाने दो। बार बार कहता हूँ! नम्रता से प्रार्थना भी करता हूँ! गुरुत्व की पवित्रता जग में शाश्वत बनी रहे। आडंबर का ढोंगी गुरुत्व त्याग दो! गुरु बनो। सच्चे गुरुत्व कि महिमा को दुनिया के सामने दिखा दो। हे जगदीश्वर! गुरुत्व की रक्षा करो।

८-५-१९३८

व्यभिचार में निरत ढोंगी गुरुओं के मुँह तक देखने को मन नहीं करता। हे भगवान्! इस को समझनेवाले इस दुनिया में कोई नहीं है! और इन गुरु लोगों को थोडा सा भी ज्ञान नहीं है । इनको शिष्यों का भय ही नहीं। मूर्ख शिष्य हैं। ऐसे नीच लोगों को क्यों न मार भगाया जाय? ऐसे लोगों को मान-मर्यादा देते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाएँगे तो यह निःसंशय है कि सारे जग की मर्यादा मिट्टी में मिल जायेगी। हाँ, जैसे चाण्डाल शिष्य वैसे चोर गुरु! हाय! हे नीच गुरुवर्ग! तुम्हारी गरिमा पहले क्या थी अब क्या है? तुम लोग भगवान् के भी भगवान् थे। आज तुम्हारी इस दुर्गति का कारण क्या है, क्या कभी सोचे हो? हे जगदीश्वर! अगर इस दुनियाँ पर तुम्हें थोडी-सी भी दया हो तो ऐसी नीच प्रवृत्ति का विनाश कर सच्चरित्र को ऊपर उठाकर रक्षा करो।

१५-५-१९३८

सारा जग विषयाभिमुखी है। जिसे जो आवश्यक नहीं है, वह उसे चाहता है। किसी को भी अपनी जिम्मेदारी का ख्याल नहीं है। आजकल के सन्यासियों से जग को भयंकर हानि हुई है। संन्यासी लोगों के अधःपतन केलिए भक्तों का अज्ञान ही कारण है। जहाँ अज्ञान है वहाँ सत्य का कोई मूल्य नहीं है। अंधविश्वास रखनेवाली दुनियाँ सुखी नहीं हो सकती। जो अनपढ हैं, विषयकूप में डूबे हुए हैं और विषयवासनाओं से ग्रस्त हैं, अगर वे लोग गुरु बन जाये तो किस जग का उद्धार होगा? ऐसा लगता है कि लोगों की भावना में गुरु बनना मतलब नाटक में वेष-भूषण धारण करके अभिनय करना! हाय हाय! शिव शिव! गाय चरानेवाले, झूठ बोलनेवाले, विधवाओं को प्यार करनेवाले ढोंगी गुरु लोग तुम्हारे नाम से इस जग में हलचल मचा रहे हैं!

हाय! मूढ भक्तगण! तुम लोगों ने अपनी भक्ति के अनुसार ही गुरु पाया हैं। हाय! हे निर्दयी गुरुवर्ग! कम से कम तुम लोगों को शरम नहीं आती कि पाप करते करते इस दुनिया को बरबाद कर रहे हैं? शिव शिव! सारे जग का सूत्र व्यभिचारियों के हाथ में है। व्यभिचारी लोग अपने को गुरु कहने पर जरा सा भी शर्मिंदा नहीं होते हैं! हर! हर! शिव! शिव!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१-५-१९३८

चाहे कोई कितना भी द्वेष करें, परमात्मा रक्षा करेगा। मानव मानव को विगाड नहीं सकता। अगर परमेश्वर की कृपा न मिलें, तो कोई रक्षा नहीं कर सकता। "मैं,मैं" इस अंहकार के सामने और कोई नहीं है। अपने में जो सच्चाई है वही हमारी रक्षा कर सकेगी, और कोई नहीं । हे देव! तुम्हें भक्ति पूर्ण प्रणाम करता हूँ।

२४-६-१९३८

आज कुंदूर चिक्केगौड और प्रभृतियों ने आकर कहा कि हम अपने गाँव में आपका मुकाम नहीं करवा सकते। दक्षिणा भी नहीं दे सकते। गुरुदक्षिणा के रूप में सारे गाँव से सिर्फ दस रूपये दे सकेंगे। इस केलिए (....) मठ के स्वामी का उपदेश ही कारण है। इस समाचार को कुन्दूर के एक लडके ने शेट्टीहळ्ळी गाँव के मरुळेगौड से कहा जो हमें बताया।

अगर ये लोग ठीक से जानते कि किसलिए गुरुजनों को दक्षिणा दी जाती है, तब (....) फलाने स्वामी के उपदेश को वे नहीं सुनते । साथ ही साथ, अगर इस गाँव का वह स्वामी गाँव के शिष्यों की दक्षिणा से इन लोगों केलिए कुछ उपकार किये होते तब ये समझ पाते कि गुरुजनों को दी गयी दक्षिणा अपनी भलाई केलिए ही होगी। लेकिन उनके गुरु ने ऐसा कर नहीं दिखाया; ये शिष्य लोग भी खुद सीख नहीं पाये। इसलिए शिष्यों के धन को लेकर मठ में रहनेवाले अपने भाइयों के बीबी-बच्चों को खिलानेवाले ये ढोंगी गुरु वर्ग जब तक समाज से हटेंगे नहीं तब तक हमारा कल्याण नहीं है। ये लोग अपने भाईयों की बीबियों से परदों के पीछे प्यार करके यह समझो कि उनके मर्दों को कमाने के परिश्रम से मुक्त करने का महोपकार कर रहे हैं। जिन मठों में संभोग, बच्चों की झोली पालना आदि घरगृहस्थी के `धर्मकार्य' चलते हैं वैसे मठ निश्चित ही पापक्षेत्र होते हैं। ऐसे पापक्षेत्रों में आकर नमस्कार करनेवाले शिष्य वर्ग का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कल्याण होना शुद्ध असंगत है। भाई वहनों की भलाई केलिए मठ है क्या? यह समझ में नहीं आ रहा है। यदि शिष्यगण इस तरह के पापकृत्यों को वन्द नहीं करायेंगे तो सचमुच उनका कल्याण नहीं है। नहीं तो यह कहना पडेगा कि हमारे समाज के जैसे मूढ़ शिष्यगण सारी दुनिया में कहीं नहीं हैं।

२०-७-१९३८

वह जमाना बीत गया जव लोग कहा करते थे कि "गुरु से ऊँचा पद और नहीं, सद्गुरु से बढकर कोई नहीं!"। अव `गुरु` केवल शब्द में रह गया है । गुरु का स्थान गिर चुका है। गुरु लोग स्त्रियों के पदतल में पड़े हैं। वे कौन कौन हैं, क्या कहूँ ? सव के सब व्यभिचारी हैं। मेरी देखा देखी सब के सव दुराचारी हैं। मुझे तो वडा दुःख हो रहा है। मेरी इस वात को कान देकर सुननेवाला कोई नहीं। वे सद्गुरु की महिमा नहीं जानते।

२४-७-१९३८

आजकल के गुरुजन जितना पाप करते हैं उतना पाप और कोई नहीं करता। रे मूर्ख शिष्य समुदाय! यह क्या तुम लोगों का पागलपन है? क्यों भ्रष्ट लोगों की पूजा करके परमेश्वर के राज्य में असत्य का मोल बढ़ा रहे हो? सत्य को जीते जीते गाड़ रहे हो? तुम लोग भ्रम में पड़े हों। हे नीच गुरुवर्ग! अधम गुरुवर्ग! जगद्रोही! तुम्हें धिक्कार है!

२६-७-१९३८

हे पतित गुरु वर्ग! तुम्हें धिक्कार है! धिक्कार! तुम को जो कुछ भी दण्ड दें, तुम्हारे पापों का प्रायश्चित्त नहीं होगा। अघोर नायक नरक में गिरोगे। रे अधम! शीघ्र यहाँ से हटो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२८-७-१९३८

'स्त्री' नाम सुनते ही गुरुवर्ग का मुँह खिल जाता है। इस गुरुवर्ग को देखकर मुझे बडी घृणा होती है। इस गुरुवर्ग के पापकृत्यों से जग का सर्वनाश हो रहा है।

आगे गुरु पीठ पर बैठनेवाले हे मानव! यदि तुम गुरुत्व के गौरव के पालने में असमर्थ निकले तो उसकी मर्यादा की रक्षा के लिए गद्दी छोड़कर जाओ संसारी बनो । कभी तुम दुराचारी गुरु मत बनो। उतार कर फेंकना न अगौरव की बात होगी न अहित की। मैं तुम्हारी भलाई केलिए यह बोल रहा हूँ। गुरुपथ को कलंकित मत करो। निकलो यहाँ से, दूर हटो, पापी कहीं का!

१-८-१९३८

जो अपने को पूज्य, वड़ा और श्रेष्ठ समझता है; वह केवल वातें बनाने में पूज्य न होकर, आवश्यक गुणों को अपनालें तो वह सब लोगों की नजर में आदरणीय बन जाता है। उसे छोडकर अगर वह झूठ, व्यभिचार इत्यादि दृष्कृत्यों को करने लगे जिन को श्री सामान्य भी करने में हिचकिचाता है, कौन भला उसका आदर करेगा? इसके बदले, वह देखते देखते अधोगति को प्राप्त कर लेता है। हे परमेश्वर! शास्त्र और शिष्टाचार के खिलाफ जानेवालों को इस समाज से दूर निकल जाना चाहिए।

२-८-१९३८

जिस के विद्रोह कृत्य जगतप्रसिद्ध हैं, वह डर के मारे सही रास्ते पर जाने का प्रयत्न न करके, सुधारकों का विरोध करे तो वह संपूर्ण बरबाद हो जायेगा।

३-८-१९३८

हे परमेश्वर! मानव की ईर्ष्या की सीमा नहीं। अहंकार की भी मिति नहीं है। मुझे भी अहंकार शोभा नहीं देता। दूसरों को भी ईर्ष्या शोभा नहीं देती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधम गुरुजन-नीच शिष्य जन

ईश्वर से विमुख हृदय को धिक्कार! अपने में जो हीन गुण हैं उनसे न पछताकर अपने आप को वड़ा तत्वज्ञानी समझकर अहंकार करना खेद की वात है। मैं तो कभी असत्य को न सहनेवाला हूँ न सत्य को छिपानेवाला। मैं असत्य का खंडन किये विना छुप नहीं वैठ सकता। इससे यदि दोषी ऊव उठे तो मैं क्या करूँ? अपने छिपे हुए दोषों को न सुधार करके, अपनी गुनाहओं के लिए अपने आप को निन्दा करना छोडकर, मुझे निन्दा करने आयेगा तो मैं पीछे हटनेवाला नहीं हूँ।

८-८-१९३८

हे परमेश्वर! जो तुम्हारे भक्त को चोट पहुँचाता है वह कभी सुखी नहीं होगा। गत काल में मैं विचित्र हिंसा का अनुभव कर चुका हूँ। लेकिन तुम्हारे करुणा कटाक्ष से मैं आसानी से पार हो गया। मैं अपने मार्ग में विजयी हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२८-७-१९३८

'स्त्री' नाम सुनते ही गुरुवर्ग का मुँह खिल जाता है। इस गुरुवर्ग को देखकर मुझे बडी घृणा होती है। इस गुरुवर्ग के पापकृत्यों से जग का सर्वनाश हो रहा है।

आगे गुरु पीठ पर बैठनेवाले हे मानव! यदि तुम गुरुत्व के गौरव के पालने में असमर्थ निकले तो उसकी मर्यादा की रक्षा के लिए गद्दी छोड़कर जाओ संसारी बनो । कभी तुम दुराचारी गुरु मत बनो। उतार कर फेंकना न अगौरव की बात होगी न अहित की। मैं तुम्हारी भलाई केलिए यह बोल रहा हूँ। गुरुपथ को कलंकित मत करो। निकलो यहाँ से, दूर हटो, पापी कहीं का!

१-८-१९३८

जो अपने को पूज्य, वड़ा और श्रेष्ठ समझता है; वह केवल बातें बनाने में पूज्य न होकर, आवश्यक गुणों को अपनालें तो वह सब लोगों की नजर में आदरणीय बन जाता है। उसे छोडकर अगर वह झूठ, व्यभिचार इत्यादि दृष्कृत्यों को करने लगे जिन को श्री सामान्य भी करने में हिचकिचाता है, कौन भला उसका आदर करेगा? इसके बदले, वह देखते देखते अधोगति को प्राप्त कर लेता है। हे परमेश्वर! शास्त्र और शिष्टाचार के खिलाफ जानेवालों को इस समाज से दूर निकल जाना चाहिए।

२-८-१९३८

जिस के विद्रोह कृत्य जगतप्रसिद्ध हैं, वह डर के मारे सही रास्ते पर जाने का प्रयत्न न करके, सुधारकों का विरोध करे तो वह संपूर्ण बरवाद हो जायेगा।

३-८-१९३८

हे परमेश्वर! मानव की ईर्ष्या की सीमा नहीं। अहंकार की भी मिति नहीं है। मुझे भी अहंकार शोभा नहीं देता। दूसरों को भी ईर्ष्या शोभा नहीं देती।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईश्वर से विमुख हृदय को धिक्कार! अपने में जो हीन गुण हैं उनसे न पछताकर अपने आप को बड़ा तत्वज्ञानी समझकर अहंकार करना खेद की बात है। मैं तो कभी असत्य को न सहनेवाला हूँ न सत्य को छिपानेवाला। मैं असत्य का खंडन किये बिना चुप नहीं बैठ सकता। इससे यदि दोषी ऊब उठे तो मैं क्या करूँ? अपने छिपे हुए दोषों को न सुधार करके, अपनी गुनाहओं के लिए अपने आप को निन्दा करना छोडकर, मुझे निन्दा करने आयेगा तो मैं पीछे हटनेवाला नहीं हूँ।

८-८-१९३८

हे परमेश्वर! जो तुम्हारे भक्त को चोट पहुँचाता है वह कभी सुखी नहीं होगा। गत काल में मैं विचित्र हिंसा का अनुभव कर चुका हूँ। लेकिन तुम्हारे करुणा कटाक्ष से मैं आसानी से पार हो गया। मैं अपने मार्ग में विजयी हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

August 5th Friday 1938 217

ಆಗಸ್ಟ್ ೫ನೇ ಶುಕ್ರವಾರ ೧೯೩೮

ಬಹುಧಾನ್ಯ ಸಂ|| ಶ್ರಾವಣ ಶು| ದಶ ೪-೫೧ ಅನೂ ೩೬-೯೬

13-8-38. ಶನಿವಾರ —

ವರಲಕ್ಷ್ಮೀ ವ್ರತ:

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधम गुरुजन-नीच शिष्य जन

218 August 6th Saturday 1938

ಆಗಸ್ಟ್ ೬ ನೇ ಶನಿವಾರ ೧೯೩೮

ಬಹುಧಾನ್ಯ ಸಂ|| ಶ್ರಾವಣ ಶು|| ಏಕಾ [illegible]

ಸರ್ವತ್ರ, ಏಕಾದಶಿ, ಶ್ರಾವಣ ಶನಿವಾರ

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

August 7th Sunday 1938 219

ಆಗಸ್ಟ್ ೭ನೇ ಭಾನುವಾರ ೧೯೩೮

ಬಹುಧಾನ್ಯ ಸಂ॥ ಶ್ರಾವಣ ಶು॥ ದ್ವಾ ೫೮-೧೬ ಮೂ ೪೭-೫೦

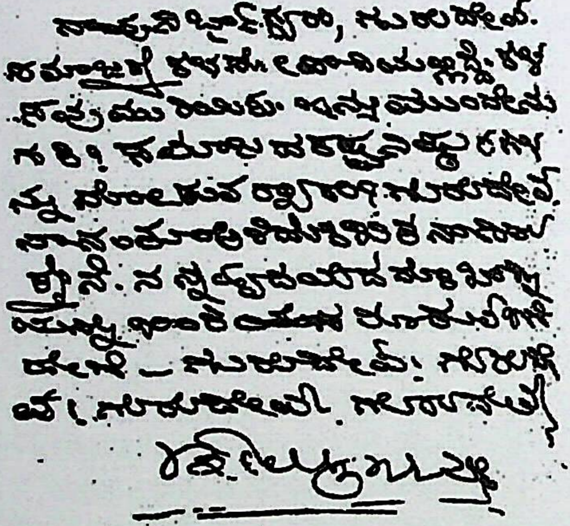

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०

षड्यंत्र-आहुति !

१२-४-१९३८

आज रात को कुनगली में (श्री पट्टाध्यक्षस्वामीजी के सम्मुख में) एक ख़ास सभा हुई जिसमें इडेहल्ली के चरमूर्ति स्वामी को, तोडरनाळु विरक्त सिद्धलिंग स्वामी को भी व्यभिचारी सिद्ध कर, उन दोनों को अधिकार से अमानत कर दिया गया। रात भर कोई सोया तक नहीं। (चरमूर्ति स्वामी और विरक्त स्वामी के) दुराचार पर एम.सी. गौड़ा जी बहुत गुस्से में आ गये थे।

२९-४-१९३८

आज समाचार मिला है कि चरमूर्तिस्वामी इस प्रकार शोरगुल मचा रहे हैं कि पट्टाध्यक्ष स्वामीजी को सिरिगेरे आते ही उन्हें खूब पीटा जाएगा, आदि आदि। इसलिए हमने कल ही सिरिगेरे जाने का निश्चय किया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०-४-१९३८

दिन में एक वजे सिरिगेरे में मुकाम किया गया। पुकार तो सहीं निकली। लेकिन जव हम सिरिगेरे पहुँचे तव चरमूर्ति स्वामी वगीचे में ठंडे दिल से वैठे रहे। कोई प्रसंग नहीं घटा।

११-८-१९३८ (गुरुवार)

आज रात को १०-३० वजे श्री सिरिगेरे तरळबाळु जगद्गुरु बृहन्मठ के पट्टाध्यक्ष श्री गुरुशांतराज देशिकेंद्र महास्वामीजी स्वर्ग सिधारे। इसके लिए कारणीभूत हैं: १- चरंत स्वामी, २-सिद्धलिंग स्वामी ३... ये तीनों इसके प्रधान कारण हैं (४,५,६,७,८,९,१०,११,१२) ये सब प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहायक हैं। अब से एक हफता पहले जव पूज्य गुरुजी ने (श्री गुरुशांत स्वामीजी) भीमसमुद्र गये थे, चरमूर्ति स्वामी आदियों के वारे में श्री एम.सी.गौडा जी से परामर्श किया था। उनके विषय में आखिरी निर्णय लेने हेतु दिनांक २०-२१ को बैठक बुलाने का निश्चय किये थे। इसे सुनकर (३...) ने सिद्धलिंग स्वामी से कहा। सिद्धलिंग स्वामी ने यह समाचार चरंत स्वामी को सुनाया। चरंत स्वामी के हाथ से तयार किया गया जहर को (३...) के हाथ से मट्ठा में मिलाकर पूज्य गुरूजी को दावणगेरे शहर से आते ही पिलाया गया। तत्पश्चात् वायु विहार जाते समय हवा के झोंकों से जहर ने प्रवल होकर जगद्गुरूजी की जान ले ली। इसी शनिवार को उनकी अन्त्येष्टी होनेवाली है। विष के प्रभाव से जीभ काली हो गई थी और मुँह से वाहर आई थी। इस सिलसिले में (३...) से डटकर पूछ-ताछ करने पर भी उसने मुँह तक नहीं खोला। उन दोनों स्वामियों से ठीक-ठीक लिखावट पाकर, उन्हें श्री मठ से बाहर निकाल दिया गया। इस दुर्धर प्रसंग ने, सारे समाज को शोक सागर में डुबो दिया।

सच में विष डालनेवाली (३...) ही है। हाल ही में ऐसा तय किया गया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षड्यंत्र-आहुति !

१३-८-१९३८ (शनिवार)

हे गुरुदेव! मुझ पर तुम्हारी कितनी दयादृष्टि थी? वह सब कहाँ गयी? अचानक तुम इस प्रकार निष्ठुर वनने का क्या कारण है? मैं ने क्या अपराध किया था? हे देव ! तुम्हारे विशाल शांत हृदय ने मेरे अपराध की क्षमा क्यों नहीं की? हे दयाधन! तुमने ऐसा निष्ठुर व्यवहार कभी नहीं किया था। इस प्रकार मुझे अकेला ही नहीं, इस वड़े समाज को ही घनघोर विरह विपत्ति में डाल दिये! परमगुरुदेव! क्या हमारा औपचारिक व्यवहार तुम्हें अप्रिय लगा? हे परमात्मन! मेरे सारे सपने भग्न हो गयें। मेरी मनःकामनाओं को किसके सामने रखूँ? मैं अव किसे गुरुदेव कहकर पुकारूँ? किसे प्रणाम करूँ? तुम्हारा वात्सल्य, दया और प्रेम को अव किसमें देखूँ? हाय! दया, सत्य, शांति गुणों! आप सवका आधार टूट पडा। अव तुम सव अनाथ हो गये। अव हम कहाँ जायेंगे? हे गुरुदेव! तुम्हारे चेहरे की वह मुस्कुराहट मेरी आँखों के सामने नाच रही है। हे परमेश्वर! इस समाज के लिए तुम गुरु, पिता, बंधु, मित्र और सव कुछ थे। विना कारण, कुछ ही दिनों में हम सव को छोडकर चल बसे। हम निर्भाग्य हैं! हे गुरुदेव! आप समाज के लिए कलश सदृश थे। वह कलश अव टूट पड़ा। अव आगे हमारी क्या दशा होगी? समाज के कष्टकार्पण्यों को कौन देखेगा? हे गुरुदेव! मैं तो बहुत दुःखी हुआ हूँ। मेरे हृदय की दुःखाग्नि को शमन करने का तरीका क्या हैं? गुरुदेव! गुरुदेव! गुरुदेव! गुरुदेव!

१४-८-१९३८

मैंने कभी आँसू नहीं बहाया था। मैंने समझ रखा था कि इस प्रसंग में आँसू वहाने का वक्त आएगा। फिर भी अपना सारा जीवन.......

१०-९-१९३८

गुरुदेव! तुम स्वर्ग सिधार गये! समाज को दुःख में डुवो दिये। लेकिन तुम्हारे इस अवतार की पूर्णता में कौन सा निगूढ समाज हित छिपा हुआ है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कौन जाने? अंजान लोग मनमाने चिल्लाते हैं। तुम्हारी माया को जानकर मैं निश्चिंत हूँ। मेरे सिवाय और किसी को यह मालूम नहीं है कि तुम्हारी हर एक लीला में कोई गूढतम उद्देश छिपा हुआ है। मैं बडे गर्व से इस बात को कहना चाहूँगा कि तुम ने अपने अवतार का चिदंबर रहस्य को जानने की शक्ति मेरे विना और किसी को दिया नहीं है।

अब मुझे मालूम हो रहा है कि तुम ने क्यों मेरी पढ़ाई को बीच में रोक दिया। यह पहले ही सोचकर कि अपने अवतार की अवधि पूरी हो रही है, तुम ने मुझे बुलाकर अपने पास रखकर समस्त लोक व्यवहार को सिखा दिया। तुम्हारे विरह से उत्पन्न यह दुःख तुम्हारी लीला माहिमा से अवश्य दूर हो जायेगा। हे देव! मैं अंदाजा नहीं कर सकता कि तुम कितने महिमाशाली हो? हे जगद्वंद्य! तुम जो भी बने रहो, तुम्हारा विरह अवश्य दुःख दिये बिना नहीं रहेगा।

हे परमेश्वर! कितनी ही परीक्षाएँ हुई। उन सभी में तुम्हारी कृपा से उत्तीर्ण हुआ। जितना रगड़ोगे उतनी चमक होगी। यही मेरे जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा है, आखिरी परीक्षा। अगर इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाऊँ तो पूर्व परीक्षाओं की कामयाबी सार्थक हो जायेगी। जब सब कुछ तुम्हारे ऊपर निर्भर है तो मैं क्या कह सकता हूँ? मैं इस इम्तहान के नतीजे की इन्तजार में हूँ। हे सर्वज्ञ! तुम जो सोचोगे सो करो। जैसी तुम्हारी इच्छा!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रद्धाञ्जलि

कारुण्यसागरगुरो गुरुशान्तदेव
सत्याग्रदारुक! नताखिलकल्पशाखिन् !
पृथ्वीतले प्रविचरन् तव कीर्तिचन्द्रः
आनन्दयेदिह जनं कमिवातिवेलम्॥ १ ॥

मुग्धा वयं तव गुणामृतपानपीताः
दग्धाः सुदीर्घविरहात् तव देशिकेन्द्र
पीयूषसारसदृशं तव नाम पीत्वा
जीवाम एव भुवने करुणाम्बुवाह॥ २ ॥

✲

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११

संस्मरणम्

इयं हि वारणासीनगरी सकलविद्यानिधानस्य भगवतश्चन्द्रमौलेः प्रियाऽऽवासभूमिः। सुरभारत्या अखिलेऽपि भारते सत्यपि प्रचारे वाराणसीक्षेत्रे तस्याः विविधरूपेण विकासः, चमत्कारः, ज्ञानचर्चा च विशिष्यते। इतः पूर्वं प्रायः तृतीयदशककाले यादृशः छात्राणामध्यापकानाञ्च विद्याविषयेऽनुरागः, लेखन-व्याख्यान-शास्त्रार्थादौ च संरम्भः समदृश्यत तादृशः वर्तमानकाले प्रायेण मन्दीभूत इव लक्ष्यते। वाराणस्यां सुदूरात् दक्षिणापथात् अन्यस्माच्च प्रदेशात् समागच्छन्तः शास्त्रमकरन्दमिलिन्दायमानाः युवानः स्वप्रतिभां गुरुचरणसेवया अत्रैव अपूपुषन्। तस्मिन्नेव काले कर्णाटकप्रदेशात् प्रबलपिपठिषया काशीमुपेताः श्रीरेवणसिद्धदेवनामानः आसन्। एत एव कालेन श्रीमदुज्जयिनीसद्धर्मसिंहासनाधीश्वराः व्यराजन्त। एभिः स्वकीयविद्यार्थिदशायां महतोत्साहेन बहुविधाः रचनाः निबन्धाः कविताः विरचय्य सरस्वतीसेवा व्यतन्यत। शिक्षाभ्यासक्रमेण च बहूनि वर्षाणि वाराणास्यां सुगृहीतनामधेयानां पण्डितवरेण्यानां साहित्यशास्त्रपारंगतानां श्रीगौरीनाथशास्त्रिपाठकवर्याणां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सविधे यथावदध्ययनं व्युत्पत्तिलाभश्च तैरर्जितः। समये समये प्रकाश्यमानासु पत्र-पत्रिकादिषु च तात्कालिकप्रौढविद्वद्कविजनानां रचनाभिः सह एतेषां रचनाः प्राकाश्यन्त। यासु विद्याभ्यासचमत्कृतिः परिशील्यमाना सहृदयान् आमोदयति। प्रसङ्गेन महाकविकालिदासकृतनाटकस्य सर्वेषामङ्कानां सारसंक्षेपः सुमधुरया गिरा एभिः प्रतिपादितः। 'छात्रेषु विनयस्यावश्यकता' इत्यादयोऽनेके लेखाः अपि समुल्लेखनीयाः सन्ति। स चाध्ययनकालः राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्य सुवर्णं युगमेवासीत्। यतः तस्मिन्काले तद् तद् विषयस्य पारंगताः अध्यापकाः गुरवः आसन्। समये समये ममाध्ययनकाले गुरुभ्यः पाठश्रवणकाले च एतेषां सहजसुलभसान्निध्यमपि मया प्राप्तमासीत्। एतेषां लेखनिबन्धे सहजप्रसारिणी सरला मधुरा च भाषा मया बहुधा समवलोकिता, काव्यरचनास्वपि एतेषां साहजिकी प्रवृत्तिरभूत्। यस्य निदर्शनभूतास्तास्ताः समस्यापूर्तयः अमरभारत्यादिपत्रिकासु दर्शनीयाः सन्ति। स्वभावतः परिश्रमशीला एते शास्त्ररहस्यमवगन्तुं गुरुचरणानां सततं सान्निध्यं भजन्ते स्म। तेषु यथा गुरुवराणां श्रीभालचन्द्रशास्त्रितैलंगपादानां सान्निध्ये मम स्मर्यते ममापि तस्मिन्नेव समये सुप्रसिद्धानामशेषदर्शनविदां दार्शनिकसार्वभौमानां गोस्वामिदामोदरलालपादानामपि सान्निध्यमेभिः उपलभ्यते स्म। सति च तत्तद् उत्सवावसरे प्रस्तुते कविसमवाये समस्यापूर्तिप्रबन्धने चैतेषामतीव अभिलाषः उत्कर्षश्च विद्वज्जनगोचरताम् अयासीत्। येषु चावसरेषु नानाविधाः सुवर्णपदक-पुस्तकादिपुरस्कारा अपि प्राप्ताः। व्याख्यानेषु च तेषाम् अभिरुचिः कौशलञ्च मयाऽन्वभावि। अहमपि तस्मिन्काले छात्रभूतः एभिस्सह सहवास-संलाप-हास-परिहासादिकुर्वाणः कालमनयम्। स खलु समयः इदानीं स्मर्यमाणः अस्मान् उत्पुलकयति। श्रीशारदाभवनस्थे श्रीगणेशोत्सवे च एतेषामस्माभिः सह शास्त्रचर्चा-समस्यापूर्तिनिर्माणं व्याख्यानादिकञ्च सुहृद्भावेन सम्पाद्यमानमद्यापि सहर्षं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्मरामि। भाविनिजीवनमार्गे एतेषां महति पीठे प्रतिष्ठायाः भविष्यं तस्मिन्नेव काले सुनिश्चितमासीत्।

एतेषां गुरुपादाः श्रीगुरुशान्तराजदेशिकेन्द्राः अपि स्मर्यन्ते, येषां सेवायां सर्वदा संलग्ना एते समदृश्यन्त। गुरुचरणानामौदार्यादिगुणचर्चा अपि काले-काले तैः श्राविता। यद्यपि वाराणस्यामध्ययनव्यसनितया शास्त्रस्पृहया च तेषां स्वप्रदेशगमने नासीत्तादृशी प्रवृत्तिः परन्तु 'गुरोराज्ञा गरीयसी' इति न्यायेन गुरुभिः कर्नाटकपीठस्थकृते आवाहिता एते तत्सेवां निजकर्तव्यप्रधान-कोटिभूतामिति मन्वानाः तत्र गन्तुमुद्युक्ताः बभूवुरिति मया प्रत्यक्षतोऽनुभूतम्। अनुकरणीया खलु एतेषां गुरुभक्तिः सम्प्रदायरक्षणजागरूकता च पदे पदे अनुभूता।

एवं पीठप्रतिष्ठानन्तरं प्रसंगात् वाराणस्यामाजग्मुरिति तदपि सानुरागं स्मृतिपक्षमेति। एवंविधानां विदुषां स्नेहसौहार्दशीलानां मदीयसुहृद्वराणामेतेषां संस्मरणानि पुस्तकाकाररूपेण प्रकाशनं तेषां सच्छिष्येण भक्तसमुदाय-शास्त्रोन्नतिसमुन्नयनतत्परेण प्राच्यपाश्चात्योभय-विद्याविद्भिः श्रीमदुज्जयिनी-सद्धर्मसिंहासनाचार्य श्री ११०८ डॉ. शिवमूर्तिशिवाचार्यमहास्वामिभिः क्रियत इति परमं प्रमोदस्थानम्। अहमेव चैकांकी शिवैक्यपदजुषां श्रीशिवकुमर-शिवाचार्यमहास्वामिवराणां शास्त्रगाम्भीर्ययोग्यता-ज्ञानसौजन्यादिगुणानां साक्षीभूत एव, तेन चात्यन्तं प्रसन्नतामनुभवामि सम्प्रति च यशःशरीरिणां तेषां कृते शिवस्मरणपूर्वकं भावपुष्पाञ्जलिमुपहरामि।

२-१२-९६ बटुकनाथशास्त्रिखिस्ते

काशी

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री गुरुशान्तराजदेशिकेन्द्रमहास्वामिनः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२

श्रीगुरुवन्दना

हर ॐ   १० .२ .११३३, बनारस् सिटि

अनाधारे शम्भौ स्वमतिभरदार्ढ्यात् सविनये
गुरौ पूर्वे शान्ते कुरुत निजबुद्धिं गुरुवरे ।
अनन्ते विद्यानां सरसि किमतो भो बुधगण
अनालम्भोऽतथ्ये जगति शपथस्ते यदि भज ॥ १॥

सदा ध्याने तिष्ठन् कुमतिरपि जाने तव रहः
करोषि त्वं यावत् प्रणतनिजभक्ताननलसान् ।
अतोऽयं लोकोऽस्ति प्रभव इति निश्चेतुमभवत्
अपारात् संसारात् त्वमिव नान्योऽवन् कलियुगे ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिवे लिङ्गे त्वस्य प्रणतिरिति वक्तुं यतिवरे
तपः पारावारे तरितसुशरीरे महति च ।
अगण्ये सद्भक्ते रचितयतिमार्गे परतरे
अनेनेदं भक्त्या विरचितमहो साङ्कुशधिया ॥ ३ ॥

त्रुटीनां सद्भावो झटिति भवतीतीह वदति
गुरोर्लोके वाचः स्खलनरहितास्तु प्रविरलाः ।
अतोऽत्र श्लोकानां कुमतिलिखिते संप्रति गणे
स तु त्याज्योऽवश्यं सुमतिभिरितीयं प्रसरता ॥ ४ ॥

साहित्यदर्पणः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

वाण्यै नमः ।

सालिग्रामममहोदयैर्विरचिता गूढार्थसम्बोधिनी
व्याख्येयं विमलाभिधा विमलया शैल्या समुल्लासिता ।
श्रीमद्दारुकदेववंशविजयख्यातीपताकापटै -
राचार्यैर्गुरूशान्तपूज्यचरणैः शिष्याय मे दीयते ॥

सालिग्राममहाशयैर्विरचिता गूढार्थविश्लेषिणी
व्याख्येयं विमलाभिधा सरलया हिन्दीगिरोल्लासिता ।
श्रीमद्दारुकदेववंशाविजयख्यातीपताकापटै-
राचार्यैर्गुरुशान्तपूज्यचरणैः शिष्याय मे दीयते ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगुरुवन्दना

(वसन्ततिलका)

साहित्यदर्पण इति प्रथिताभिधेया
श्रीविश्वनाथकविराजकृतिर्मनोज्ञा ।
आचार्य्यवर्य्यगुरुशान्तयतीशपादैः
सृष्टं सशर्मबुधरेवणसिद्धदेवे ॥

पञ्चदशी

(शार्दूलविक्रीडितम्)

हित्वा संसृतिसाध्वसं परिपतल्लोकोर्ध्वधृत्यै मुदा
संसारे विनिपातसङ्कुलमये नीत्वा जनिं रेजिरे ।
ये ते दीनमनुष्यचातकपयोमुक् सन्निभा भूतले
श्रीमत्पञ्चदशीं त एव गुरवः शान्ता अदुर्मे मुदा ॥

वेदान्तपरिभाषा

(शार्दूलविक्रीडितम्)

राजच्छ्रीसिरिगेरिरम्यनगरीराकामृगाङ्काहतः
सद्योग्यन्वयसम्भवो भवरतिः सन्नप्यरागो भवे ।
भीमे चक्रनिभे भवे जनिमृतिप्रोत्त्रस्तचित्तान् जनान्
संरक्षन् गुरुशान्तयोगिनृपतिर्वेदान्तभाषां ददौ ॥ (शिवकुमाराय)

वेदान्तसारः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

भोगं भोगिशरीरवत् प्रतिभयं संक्षीयमाणं हठा
न्मायावैभवतोऽम्बुवीचिचपलं चायुर्विदित्वा परे।
नित्येऽनित्यतया समस्तभुवनं धिक्कृत्य येऽसञ्जता-
स्ते मह्यं गुरुशान्तशान्तगुरवो वेदान्तसारं ददुः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमच्छङ्करदिग्विजयः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

श्रीमन्माधवधीरसूरिरचितं नव्यप्रणालीयुतं
श्रीमच्छङ्करदिग्विजयाभिधमहाकाव्यं रसोज्जृम्भितम् ।
उत्तङ्गीनगरीविशालविशिखारामो यमीन्द्रो गुरु-
शान्ताराध्यपदो ददौ शिवकुमाराय प्रमोदेन मे ॥

भाषापरिच्छेदः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

श्रीमत्तार्किकविश्वनाथकृतिनो भाषापरिच्छेदकं
तर्कार्थावगमोपसाधनमिमं व्यख्यास्रजा राजितम् ।
अन्तेवासिविमुग्धकैरवसुधासूतिः प्रसूतिः सतां
वस्तूनां गुरुशान्तदेशिकमहाचार्यो मुदा दत्तवान् ॥

काव्यप्रकाशः

(स्वागतम्)

मम्मटार्यकृतिनः कृतिमेतां कार्तिकेयदयितायतचेताः ।
शीलवन्द्यगुरुशान्तगुरुर्मे छात्रवेतनतया प्रमुदादात् ॥ १॥
स्वात्मवत् परजनान् परमार्थतत्त्वबोधकृतये परिकर्षन् ।
एष भूरितपसार्जिततेजाः सद्गुरुर्जयति भूतलभागे ॥ २॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राकृतप्रकाशः
(वसन्ततिलका)

श्रीदारुकार्यकुलकैरवकैरवेशैः
आचार्यवर्यगुरुशान्तयतीशपादैः ।
अत्यादराद्वररूचिग्रथितः प्रकाशः
दत्तः सशर्मबुधरेवणसिद्धनाम्ने ॥

लघुरामायणम्

गोविन्दनाथगुहसंभृतपद्यसङ्घम्
वाल्मीकिभावविशदं लघुरामवृत्तम् ।
वन्दारुलोकमुकुटोन्मुखकान्तिमन्मा-
णिलिच्चर्चितपदो गुरुरेव सोऽदात् ॥ (गुरुशान्तो नाम)

नैषधम्

कविकुमुदविधोर्यन्नैषधं नाम काव्यं
भुवि बुधजनसङ्घे ख्यातिमाप प्रशस्त्या ।
यतिपतिगुरुशान्तस्वामिपादैस्तदेतत्
विनतशिवकुमाराय प्रदत्तं मुदैव ॥

भगवद् गीता
(शार्दूलविक्रीडितम्)

राजत्काञ्चनकान्तिजालविलसत् सिंहासनोद् बृंहित-
स्वाकारद्युतिरञ्जिताखिलसभाभूभाग एषो यमी ।
भक्तस्वान्तसरोरुहारुणनिभो निःस्वेष्टकल्पद्रुमो
गीतां श्रीगुरुशान्तयोगिनृपतिर्मेऽदान्मुदेमां गुरूः ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिद्धान्तकौमुदी

(मालिनी)

सिरिगेरेपुरवासो नाशिताशेषपाशः
क्षपितकरणवेगो भक्तवृन्दाभिवन्द्यः ।
यतिपतिगुरुशान्तस्वामिपादो मुदेमां
वितरति शुभदां मे कौमुदीं योगिराजः ॥

काव्यकल्पलतावृत्तिः

(अनुष्टुप्)

काव्यकल्पलतावृत्तिं कविमार्गोपदेशिकां ।
आचार्यगुरुशान्तार्यो ददौ मोदेन मे शुभाम् ॥१॥

(वसन्ततिलका)

आचार्यवर्यगुरुशान्तयतीन्दुरेषः
आनम्रलोकचयरक्षणदक्षहस्तः ।
वृत्तिं सदा प्रमदसंभृतमानसो मे
प्रादाद् विनम्रशिरसे किल रेवणाय ॥२॥

कादम्बरी

श्रीमन्मान्यवरेण्यगण्ययतिभिः सद्भक्तकल्पद्रुमैः
वेदान्ताम्बुधिमन्थनातिनिपुणैराचार्यपीठाधिपैः ।
सद्भिः श्रीगुरुशान्तपूज्यचरणैर्बाणस्य कादम्बरी
साहित्यामृतपायिने शिवकुमाराय प्रदत्ता मुदा ॥

नभोनवनवपृथ्वीमितेऽब्दे वैक्रमे शुभे।
वैशाखीयेऽसिते पक्षे त्रयोदश्यां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तर्कसंग्रहः

सते शिवकुमाराय तर्कारण्यविविक्षवे
गुरुशान्तचरणैरेष दीयते तर्कसंग्रहः
नभोनवनवपृथ्वीमितेऽब्देवैक्रमे शुभे
वैशाखीयेऽसिते पक्षे ह्याशीर्वचनपूर्वकम् ॥

भूखण्डेन्द्रियपर्वतारुणामिते शुक्ले शके माधवे
सप्तम्यां च तिथौ ममात्मजनुषो भावी विवाहोत्सवः ।
गौरीशङ्करशर्मणो न नु बुधाः साकाख्यया कन्यया
याचेऽभ्यागतिमस्मि तत्रभवतां बद्धाञ्जलिः सादरम् ॥

काशीभूशतमन्युरेष यदधीकारात् प्रसह्याद्य माम्
कारुण्यामरभाजनं व्यधित काष्ठाकूलखेलद्यशाः ।
तस्य श्रीवटुकादिनाथविदुषः सौजन्यपाथोनिधे-
र्धन्या स्नेहवदान्यता जयति मेदिन्यामनन्या सती ॥१॥

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारुण्यसागर !

प्रलयखेलिविकर्कशमीश्वरं शमयितुं विबुधाः शमनामृतैः
शमनिधिं गुरूशान्तयतीश्वरं समनयन्नयनोत्सुकदर्शनम् ॥१॥
हतविधे वहुधान्यशरद् वर ! त्वयि गुरोरिहलोकविसर्जनम्
इति नृणामपवादमहीधरं कथममुं वहसि व्यसनावहम् ॥२॥

यत्कीर्तयो दिशि दिशि प्रचरन्ति नित्यं
यद् भाषिताच्च जनता लभते प्रमोदम् ।
यत्पादपङ्कजयुगं हृदये मदीये
संराजति प्रजयति क्षमिवासवः सः ॥ ३॥

कारुण्यसागर गुरो गुरुशान्तदेव !
सत्याग्रदारुक ! नताखिलकल्पशाखिन् !
पृथ्वीतले प्रविचरन् तव कीर्तिचन्द्रः
आनन्दयेदिह जनं कमिवातिवेलम् ॥४॥

मुग्धा वयं तव गुणामृतपानपीताः
दग्धाः सुदीर्घविरहात्तव देशिकेन्द्र।
पीयूषसारसदृशं तव नाम पीत्वा
जीवाम एव भुवने करूणाम्बुवाह ॥ ५॥

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमन्महाराजाधिराज-महिषासुरपुराधीश-बहादूर-जी.सी.एस्.ए
इत्यादिविरुदावलीविराजमानानां श्रीकृष्णराजवडेयरमहाप्रभूणां
प्राधानसचिव-माननीय-सर् श्रीमिर्जा इस्मायिल् महोदयानाम्

सादरमभिनन्दनम्

सारोदाराभ्युपायप्रशमितजनतोपद्रवो भद्रकीर्तिः
प्रक्रान्तानेकभूरिप्रकृतिहितकराकारनीतिप्रकारः ।
शान्तो दान्तः प्रजान्तःकरणसुखकृतौ नित्यमव्याकुलोऽयं
मिर्जा इस्मायिलाख्यो नरपतिसचिवो जीवितात् सर् चिराय ॥

धीमन्, निस्सीमधामन्, गुणकुमुदशशिन्,नित्यमेवोपकारिन्
श्रीमन्, संशोभिधामन्, रिपुतिमिरततेरंशुमालिन्, विचारिन् ।
संख्यावन्मौलिमालिन्, नरपतिहृदयानन्दपीयूषदायिन्,
स्वामिन्, कल्याणकारिन्, जय जय सततं सन्नयाभोगशोभिन् ॥

भ्रष्टा दुष्टा विनष्टाः सकलजनमनोनोदिका नीतिबाधाः
दुर्गा मार्गाः सुसर्गाः पथिकजनहिताः कारिताः कौशलेन ।
जातो गातः समस्तः कविजननिवहस्ते प्रशस्यस्य कीर्तेः
खातान्येतान्यमोघान्यहह ! सचिव, ते प्राज्यमेवोपकृत्यम् ॥

मन्त्रिन् तन्त्रे स्वतन्त्र, प्रचुररिपुचमूधैर्यहन्तो धरान्तो-
गन्ता ध्वान्तं स्थिरान्तः शशिधरविरहाद् वीक्षते कः कुहूषु ।
इत्थं वैधप्रपञ्चप्रतिघटनादत्तचित्तभ्रमेयं
कीर्तेर्माला विशाला चरतु तव चिरं चित्रलीलान्तराले॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(वसन्ततिलका)

उत्तङ्गिनामनगरीविशिखाविहार-
सौभाग्यभोग्यगुरुराजविराजमाने ।
श्री श्रीगिरौ गुरुमठे मिलिताय तुभ्यं
भोः स्वागतं प्रमुदिताः सचिवाय कुर्मः ॥

(स्रग्धरा)

हिन्दूमुस्लिं विवादं तिमिरमिव रविः प्रातरह्वाय दूरं
कृत्वा भूयः प्रकाशप्रसरकृतिरतः श्लाघनीयोऽतिवेलम् ।
जागृत्योल्लासितास्या वयमिद मधुना दध्महेऽभीप्सितं यद्
गौरीनाथो विदध्यात् सततमिह शुभं भक्तचिन्तामणिस्ते ॥

श्रीसिरिगेरे संस्थाने
एप्रिल् १९२६

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३

समस्यापूर्तिः

हेमन्त! मन्तुर्न ते
(शार्दूलविक्रीडितम्)

कम्पन्ते कपयो निपीय् पवनं पानीयमानीयते
शैत्यं, धीरसमीरमारमथिता निन्दन्ति दीना विधिम् ।
उष्णांशुः स खगोऽपि यत्र सततं दौर्बल्यमालम्वते
नो जाने पुनरत्र निर्दय ! कथं हेमन्त मन्तुर्न ते ॥

- अमरभारती , सं.१ अं ३ (१८ जनवरि १९३५) पृ ४२

तत्वोपदेशः
(मालिनी)

मनुकपिलकणादव्यासवाल्मीकिजैमि-
न्यतनुरिपुशुकश्रीभाष्यकारास्यजन्मा ।
दुरिततिमिरभानुः शान्तिपीयूषसूति-
र्जयति जगति तथ्यो धर्मतत्वोपदेशः ॥

- अमरभारती, सं .१अं ४(१८ फेब्रवरि १९३५) पृ .४१- ४२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जागर्ति नित्यं वधूः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

पीयूषांशुगभस्तिभिर्धवलिते काष्ठान्तराले स्फुर-
ज्जोत्स्नाजालगलत्सुधारसलवैराप्लाविते भूतले ।
कान्तं प्रोषितमञ्जसा स्मृतिपथायातं विदित्वा पुनर्
हस्तन्यस्यकपोलजाग्रदधृतिर्जागर्ति नित्यं वधूः ॥

- अमरभारती, सं. १ अं ५ (२० मार्च १९३५) पृ ३६

दोषानशेषान् स नः

(शार्दूलविक्रीडितम्)

पञ्चेषुं प्रति रोषको गिरिसुतासन्तोषपीयूषधी-
राजत् पारिषदः षडास्यसुषमो दंष्टाविषैर्भूषितः ।
ध्यायन् पूरुषकिल्बिषव्रजहरो दोषेशभूषाधरः
श्रेष्ठोऽयं तुषितेषु मृष्यतु मृडो दोषानशेषान् स नः ॥

- अमरभारती, सं .१ अं ६ (१८ एप्रिल् १९३५) पृ . ३३

इयं शर्वाणीव स्फुरतु सुरवाणी मनसि मे

(शिखरिणी)

अलङ्कारश्लेषप्रगुणमधुराङ्गी मृदुपदा
भजद्भक्तश्रेणी हृदयकुमुदेन्दुप्रतिनिधिः ।
अखण्डानन्दात्मा विगलितवहिर्मेयलयभाक् ?
गियं शर्वाणीव स्फुरतु सुरवाणी मनसि मे

- अमरभारती, सं. १ अं ७ (१८ मे १९३५) पृ.३४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वस्तु हस्तिमुखमस्तु वः श्रिये
(रथोद्धता)

सर्वकर्मसु निरन्तरायकं
पूर्तिकामजनतादिपूजितं ।
ईप्सितार्थसुरशाखिसन्निभं
वस्तु हस्तिमुखमस्तु वः श्रिये ॥

- अमरभारती ,सं .१ अं ८-९ (१६ जुलै १९३५) पृ. ७२

नान्नं धरित्रीतले
(शार्दूलविक्रीडितम्)

यूयं भोश्रवणकादिनः सुरगिरिप्राकाम्यवद्धाग्रहाः
युष्मत्तः पृथिवीतले किमपि नो कार्यं भवत्यद्भुतम् ।
इत्थं विस्मृतभारताः श्रुतिरतान् निन्दन्ति येऽनारतं
तेषां पाश्चिमशिक्षणव्यसनिनां नान्नं धरित्रीतले ॥

- अमरभारती, सं. १ अं १०-११(१२ सेप्टेम्बर १९३५) पृ. ७१

चन्द्रः प्रवालप्रभः
(शार्दूलविक्रीडितम्)

आवामम्बुधिपुत्रकावपि, तमोवालाः प्रवालाधराः
शीतं मामवधीर्य दीर्घविरहे, बालां प्रवालाधराः । (बालाः?)
जाताः किं नु विधेयमद्य विधये, चन्द्रः प्रवालप्रभः
मत्वेत्थं यदसालभूदनुदिनं, गण्यः प्रवालप्रभः ॥

- अमरभारती, सं. २ अं १-४ (७ फेब्रवरि १९३६) पृ. १४५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

***

अमरभारती १/३ १९ जनवरी १९३५ के अन्तिम पृष्ठ पर छात्रेषु विनयस्यावश्यकता निवन्ध प्रतियोगिता का घोषित परिणाम

विद्यार्थिनिबन्धपारितोषकनिर्णायः।

छात्रेषु विनयस्यावश्यकतेति विषयमवलम्ब्य विद्यार्थिभिर्लिखिताः सप्त निवन्धा अस्माकमन्तिके समुपागताः। तत्र ताभ्यां विद्यार्थिभ्यामर्धमर्धं २॥ सार्धरुप्यकद्वयात्मकं पारितोषिकं प्रदीयते। तच्च ताभ्यां छात्राभ्याममरभारतीकार्यालये समुपस्थाय ग्राह्यम्।

२॥) रु. (१) भवानीशंकर ककी। काशिकाराजकीयपाठालये पुराणेतिहासाध्यापकानां पं. श्रीमदनन्तशास्त्रिफडके महोदयानां छात्रः।

२॥) रु. (२) रेवणसिद्धदेवः (शारदाभवन्म्, ६३ अगस्त्यकुण्डम्, काशी) श्रीमतां गौरीनाथपाठकसाहित्याचार्याणां छात्रः।

निर्णायकः
महामहोपाध्यायः
श्रीगोपीनाथ कविराजशर्मा एम्. ए

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

संक्षिप्तकथासारसंग्रहः

प्रथमाङ्कः-

अत्रभवान् कविकुलकमलदिवाकरः श्रीमान् महाकविः कालिदासः शाकुन्तलोपाख्यानमधिकृत्य शाकुन्तलं नाम नाटकं प्रणिनिनीषुरादौ स्वाभीष्टदेवाष्टमूर्तिविभूतिसंश्लिष्टाममन्दानन्दसन्दोहजननीं परिषन्मनोहारिणी-मावबन्ध नान्दीम्।

अत्र आमुखे नटीसूत्रधारौ प्रविश्य नाटकीयवस्तूपक्षेपपूर्वकं प्रखरदिनकरकरालं निदाघकालमभ्यवर्णयताम्। नटीगीतविमुग्धश्च सूत्रधारः पुनः स्मृतिमभिनीय सारङ्गमनुधावतः सरथसारथेर्दुष्यन्तस्य प्रवेशं सूचयित्वा नट्या साकं निश्चक्राम रङ्गस्थलात्।

मृगयाव्यसनी चासौ दुष्यन्तः केनाप्यतिजविना हरिणेन दूरमानीयमानस्तत्क्षणप्रविष्टाभ्यां तापसवटुभ्यां कृताशीर्वचनाभ्यां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः" इति प्रतिषिद्धः। आनतपूर्वकायश्च स तयोराशिषं गृहीत्वा ताभ्यां निर्दिष्टं कुलपतेः कण्वस्य शकुन्तलाधिष्ठितमनुमालिनीतीरमाश्रमपदमभिपेदे।

तत्र च शुश्राव श्रुतिसुभगं कलहंसकामिनीकलरवमनोरमं रमणीरवम्। अथ लोकोत्तररवाकृष्टचेतास्तत्कारणजिज्ञासयेतस्ततः पर्यटन्, अनुसूयाप्रियंवदाभ्यामनवरतमनुसेवमानामप्सरोगर्भसंभूतां तरुसेचनव्यापृतामवधीरितसुरसुन्दरीसौन्दर्य्यां तापसकुमारिकामवलोकयामास। अवलोक्य च सौन्दर्यविस्मितो वृक्षसेचननियोक्तारं कण्वमहर्षिमात्मनि बहु गर्हयन्, सखीभ्यां कथाप्रसङ्गेषु व्यपदिष्टं शकुन्तलेति तन्नामाश्रौषीत्।

एवं सलीलमालिषु खेलन्तीषु, भ्रमराभिभूता शकुन्तला "मां परित्रायेथाम्" इति सकरुणं सख्यौ व्याजहार। तयोरपि सख्योराश्रमपीडापरिहर्तारं राजानं दुष्यन्तमाक्रन्देति व्याहरन्त्योः सहसा प्रविश्याकस्मिकपुरुषावलोकनचकिताभ्यस्ताभ्य आत्मपरिचयं दुष्यन्तातिरिक्तत्वेन ददन्, सहजसौन्दर्यं शकुन्तलाया अवलोक्य, समर्थ्य च तस्याः क्षत्रपरिग्रहक्षमतां, नितरां मनोभवनिदेशवर्ती बभूव। शकुन्तलापि नवयौवनसुलभोत्कलिकाकुलीक्रियमाणमानसा लोकोत्तरसौन्दर्यावधीरितकुमारं मन्मथप्रतिमं तमवलोक्य दीर्घं निश्वसितवती।

अनन्तरं कौशिकेन मेनकायां जनितां शकुन्तलां, स्वसुतोचितवरान्वेषणव्यापृतं च कण्वं कथालापेषु सखीमुखाद्व विज्ञाय, विचार्य च तत्रात्मनो निरतिशयामासक्तिं, तां सुप्रापाममन्यत।

अत्रान्तरे सा शकुन्तलाप्येनमात्मनोऽनुरूपं विजानानापि बालिकासुलभचापल्येनाकृत्वैवाभ्यागतसमादरं, व्याजकोपं प्रकटयन्ती ततोऽन्यतो गन्तुं प्रवृत्ता। तदा प्रियंवदा तरुसेचनर्णमोचनच्छलेनैनां गमनव्यापारान् न्यवारयत् । राजा तु कुसुमकोमलतनोस्तनुसेचनमयोग्यं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन्यमानस्ततस्तस्या विमुक्तये सखीभ्यां स्वीयमङ्गुलीयकं ददौ । तेऽपि सख्यौ तदादाय वाचयित्वा च तत्रत्यानि नामाक्षराणि परं विस्मयमापतुः । दुष्यन्तस्तु "राज्ञा मे प्रसादीकृतमेतदिति" वदन् ताभ्यामन्यथा प्रतिगृहीतः ।

अत्रान्तर एव सेनासंघातपरित्रस्तः कोऽपि वन्यो गजपतिराश्रमं प्रविश्य महान्तं संक्षोभमकरोत् । उत्थितश्च तदा महान् भयचकितचित्तानां सवृद्धवनिताशिशूनां तापसानां कोलाहलः । अस्मिंश्चावसरे मातरं गौतमीं गजपतिसंक्षोभभीतां तर्कयन्त्यो राज्ञ आज्ञां गृहीत्वा तिस्रोऽपि ताः कन्यका जननीसमवलोकनार्थं ततो निर्ययुः । यान्तीषु च तासु प्रत्यग्रदर्भप्ररोहपरिक्षतपादपल्लवा कुरवकशाखाव्यतिषक्तवल्कला शकुन्तला "प्रतीक्षेतां मां" यावदितो मुक्ता स्यामिति जल्पन्ती सव्याजं राजानं मुहुर्मुहुरवलोकयन्ती सह सखीभ्यां निष्क्रान्ता। दुष्यन्तोऽपि शकुन्तलासंसक्तचित्तस्तत्क्षणानुभूततद्वियोगेन नितान्तमन्तर्दूयमानमानसो आश्रमवाधा यथा न जायेत, तथा यतिष्य इति वदन् निष्क्रान्तः।

द्वितीयाङ्कः-

अत्र तत्रभवतो मृगयाशीलस्य दुष्यन्तस्य नर्म्मसचिवः प्रियवयस्यो विदूषकः प्रचण्डमार्तण्डमयूखसन्तप्ते मध्यन्दिनेऽपि ग्रीष्मे मृगयार्थमितस्ततो वने परिभ्रमन्तं मृगयाव्यसनिनं राजानं बहु गर्हयन्, स्वयं चानवरतसंचरणशिथिलितशरीरसन्धिरेकपदमपि गन्तुमशक्यमिवात्मानं दर्शयन्, तिरस्कृतमृगयाव्यापारो विलपनपरः परिश्रमापनयनाय गृहीतवेत्रयष्टी राजानं प्रतीक्षमाणश्चिरमतिष्ठत्।

अनन्तरं राजा हृदयेशयां हृदयेश्वरीं तत्रभवतः कुलपतेः कण्वस्य दुहितरं शकुन्तलामधिकृत्य दुर्वचां मनोभवबाधामनुभवन्, तथास्थितं सर्वकालमित्रं माधव्यमपश्यत्। सोऽपि नृपतिमवलोक्य कथमप्युपसृत्याभिनय-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पूर्वकमुदीरितजयशब्दोऽत्यर्थमनुरुरोध मृगयातो विरन्तुं प्रियवयस्यम्। अयाचत चात्मनो विश्रान्तिम्। एतदाकर्ण्य राज्ञा "सेनापतिमाह्वय" इत्याज्ञप्तोऽन्यतमो दौवारिकः "यदाज्ञापयति देवः" इति निष्क्रम्य, पविश्य च पुनःसह सेनानायकेन, तस्मै राजानमदर्शयत्। सेनापतिरपि स्वामिनमवलोक्य जयशब्दमुच्चार्य साञ्जलिबन्धमुपतस्थौ। "हतोत्साहःकृतोऽस्मि मृगयाविदूषकेण विदूषकेणेति" राज्ञाभिहितो भद्रसेनः सेनापतिः सह विदूषकेण चिरं विवदन्नेव निवारितः। आदिष्टश्च भद्रसेनः साम्प्रतमसाम्प्रतमस्माकमाश्रमसन्निवर्तिनामेष व्यापारस्तद्यत्प्रियवयस्येन निवेदितं, तदनुष्ठीयतामिति। स च तथेत्युक्त्वा निष्क्रम्य न्यवारयत्स्कन्धावारं तपोवनोपरोधात्।

ततश्च विदूषको विशश्रमिषू राजानमादाय कस्मिंश्चित्पद्मिनीपलाश-परिशोभिते पाषाणतले समुपाविशत्। राजा तु तामेवाव्याजसुन्दरीं दिव्यकन्यकामाश्रित्य विस्तारयामास गोष्ठीवन्धम्।

अत्रन्तरे द्वौ तापसकुमारावुपसृत्य राजानं वीक्ष्य कृताशीर्वचनौ कुलपतेरसान्निध्याद्राक्षसानामुपद्रवं श्रावयामासतुः। एतदाकर्ण्यानुपदमेवा-गच्छामीति वदन् तौ सप्रणामं विसर्ज्यादिदेश परिजनं रथमानेतुम्। अस्मिन्नेवावसरे नगरीतो देवीनामादेशहरः करभको नाम परिचारकः प्रविश्य राज्ञे न्यवेदयत्। - देव ! जननी देवमाज्ञापयति, यदागामिनि चतुर्थे वासरे सुतपिण्डपालनो नामोपवासो भविष्यति। तत्रायुष्मता वयमवश्यं सम्मानयितव्या इति।

एतच्छ्रुत्वेतिकर्तव्यताविमूढो मेदिनीपतिर्मुहूर्तं विचिन्त्य विदूषकमेव तत्र गन्तुं युक्त्याऽनुनिनाय। पुनश्च "चपलोऽयं बटुः" कदाचिद् गत्वाऽन्तःपुरिकाभ्यः शकुन्तलावृत्तान्तं निवेदयेदिति चेतसि विचार्य, "परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यातां वचः" इत्युदीर्य विदूषकं स्वां पुरीं प्रति प्रस्थापयामास। स्वयं च तपोवनान्तरायदूरीकरणाय यामीति निश्चक्राम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीयाङ्कः-

अत्रादौ यजमानशिष्यः कश्चित्तापसः कुशानानेतुमितस्ततः कानने परिभ्रमन् दुष्यंतकृतां तपोवनस्य निरुपप्लवतां प्रशंसन् अपश्यद् दूरस्थितां शीतलोपकरणसंग्रहणव्यापृतां प्रियवदां, तत्र चायं शीतलोपकरणमवलोक्यापृच्छत्। "कस्येदमुशीरानुलेपनं मृणालवन्ति च नलिनीदलानि नीयन्त इति। पृष्टया च तया "बलवदस्वस्थशरीरा शकुन्तला, तदर्थमेवैतान्युपकरणानि नीयन्त" इति विज्ञप्तः "सम्यगुपचर कुलपतेः प्राणसमां शकुन्तलाम्" इत्यभिधाय तस्या एव वैतानिकशान्तितोयं गौतमीहस्ते समर्पयितुं ततः प्राचलत्।

अथ कुसुमायुधशरनिकरजर्जरितशरीरो दुष्यन्तस्तामेव हृदयालयलीनां स्वान्ते नितान्तमनुचिन्तयन् आश्रमोपकण्ठेऽपि पुष्पबाणजामपि पीड़ां सोढुमसहमानो मदनमत्यर्थमुपालभन् निरन्तरतरुनिचयोपचितमाससाद मालिनीतीरम्। अपश्यच्च तत्र तरुषण्डमण्डिते लतामण्डपे प्रियसखीभ्यां शीतलोपकरणैः शुश्रूषमाणां कोमलकमलिनीदलतल्पललितं शिलातलमधिशयानां शकुन्तलाम्। दृष्ट्वा च तत्सङ्गमोत्सुकोऽपि तन्मनोमन्दिरेऽधिशयानं युवानं नामतोऽधिगन्तुमभिलषन् सहसा तत्रानुपसृत्यैव लताप्रतानान्तरितो नितान्तक्लान्तकायस्तासामात्माश्रयान् विश्रम्भालापानाकर्णयन् स्थितः।

अत्रान्तरे प्रियसखीभ्यां हृदयाधिहेतुं सनिर्बन्धं पृष्टापि सा नवयौवनदुश्चेष्टितं निवेदयितुमसमर्था केवलं कुचतटविन्यस्तहस्तपल्लवा भृशं निशश्वास। पुनः पुनश्च ताभ्यां पियसखीभ्यामनुरुध्यमाना स्वमनोभवस्य लक्ष्यं दुष्यन्तं कथयमास।

ततश्च सखीमनोरथसम्पादने कमप्युपायमपश्यन्त्यौ चिन्तानिमग्नमानसे मुहुर्तमचिन्तयतां प्रियवयस्ये। अस्मिंश्चावसरे प्रियंवदा किंचिदिव ध्यात्वा "प्रियसखि! मदनलेखनमिदानीमस्य क्रियताम्। तच्चाहं कुसुमसमूहनिलीनं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृत्वा तस्य हस्तं प्रापयिष्यामीति कथयामास। समर्थिततदुपाया शकुन्तला प्रियंवदानीते नलिनीदले स्वाभिप्रायावेदयित्रीं मदनपत्रिकामालिख्य पपाठ। दुष्यन्तश्चेमं रमण्या रमणीयोपन्यासम् आकर्ण्य सहसा तरुगहनान्निष्क्रम्योपसृत्य च सुललितैरालापैरालपन्, सखीसविधे "कुलप्रतिष्ठा ममेयं ते प्रियवयस्येति" स्वीकृत्य नर्मालापैर्विरहशोकपरिभूतां तां परिसान्त्वयन् तया सह तत्रैव क्षणं समयं निनाय।

प्रियंवदानुसूये च "जातमनयोः सख्यम्" इति मन्यमाने हरिणीशावकानुगमनमिषेण स्थानात्तस्मान्निर्जग्मतुः।

अनन्तरमसाववनिपालः प्राणसमां प्रणयिनीं प्रियां मधुरालापशतैः प्रीणयन् रेमे। अश्रृणोच्च गौतमीसमागमसूचकं दूरस्थसखीस्वरसंयोगम्।

आकर्ण्य च क्षिप्रमपसर्पति नरपतौ विटपान्तरालं, समायातायां च शान्तिसलिलभाजनहस्तायां गौतम्यां, अभिषिक्ते च तया शान्तिसलिले कमलदलकोमले शकुन्तलाशरीरे, अस्ताभिमुखे च भगवति गभस्तिमालिनि सरोजिनीजीवितेश्वरे भास्करे, सह तनयया निष्क्रान्ता गौतमी। राजापि कान्तासहभुक्तं लतामण्डपं पुनरागत्येतस्ततो निसृष्टदृष्टिरकाण्डविघटनं गर्हयन् , मुनिजनैरुच्चैरुच्चरितां सायन्तनेष्टिप्रत्यूहप्रवृत्तिमाकर्ण्य तद्व-व्यपनयनायागमत्।

चतुर्थाङ्कः-

अत्र शकुन्तलायाः प्रियवयस्ये पुष्पावचयार्थमागत्य , "इतः प्रतिनिवृत्तो राजा शकुन्तलां स्मरति न वा? सम्प्रति सोमतीर्थादागतस्तातः कण्वः शकुन्तलावृत्तान्तमिमं ज्ञात्वा किं विधास्यतीति" मिथ आलपन्त्यौ पूजार्थं कुसुमान्यवाचिनुताम्। श्रुतश्च ताभ्यां तस्मिन्नवसरे "अयमहं भोः" इत्यभ्यागतस्वरसंयोगः। प्रस्थानोन्मुखाभ्यां च ताभ्यामतिथिमुखात् कोपातिशयव्यञ्जकं "विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोनिधिं वेत्सि न

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मामुपस्थितम्। स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिवेति" हृदयविदारकं वाक्यमाकर्णितम्। एतदाकर्ण्य च स्वरसंयोगमहिम्ना अस्य वचसो वक्तारं तत्रभवन्तं सुलभकोपं दुर्वाससममन्येताम्। अचिन्तयतां च चेतसि "सत्वरमुपसृत्य यथा कथञ्चिदपि नूनमनुनेतव्योऽयं महर्षिरिति।

अनन्तरमनुसूया तं दुर्वाससं परिसान्त्वयितुं सत्वरं ततः प्रतस्थे। अनुनीतश्च तयानुनयमहिम्ना गरिम्णा स महर्षिः। "न मे वचनमन्यथा भवितुमर्हति, तथाप्याभरणाभिज्ञानदर्शनपर्य्यवसानोऽयं मे शाप" इति तद्विमुक्त्युपायमुक्त्वाऽन्तर्दधौ। श्रावयित्वा च प्रियमप्यप्रियमिव प्रियंवदां मुनिशापावसानं, सन्तापसन्तप्तस्वान्ता च सा कथमपि प्रियंवदया सह शकुन्तलां समाश्वासयितुं निर्जगाम।

अथ प्रभातप्रायां च यामिन्यां कश्चित् कण्वशिष्यः प्रविश्य ज्ञात्वा च प्रभातप्रायां वेलां गुरवे विज्ञापयितुमगमत्। चिरचिन्तानलदन्दह्यमान-मानसानुसूया तु कथमिमं वृत्तान्तं तातो ज्ञास्यतीति चिरमचिन्तयत्। तदैव प्रियंवदाऽपि, आकाशवाण्या शकुन्तलाया गान्धर्वविवाहं विज्ञाय प्रमुदितचेता महर्षिः कण्वोऽद्यैव शकुन्तलां प्रतिगृहं प्रेषयिष्यतीति विज्ञाप्य शकुन्तलाप्रस्थानोचितमङ्गसंभारोपसंग्रहणाय नितरामनुरुरोध। अनुसूयाऽपि प्रियंवदां सहकारशाखावलम्बितात् नारिकेल समुद्गकात् सखीनिमित्तमेव निक्षिप्तां केशरगुण्डिकामानयेति व्यादिश्य, स्वयं च प्रस्थानमङ्गलसमालम्भनानि विरचयितुमुदचलत्।

अनन्तरं कण्वेन शकुन्तलामनुगन्तुं व्यादिष्टे शार्ङ्गरवप्रभृतौ, शिष्यजने, आशिषा तन्मङ्गलाभिवृद्धये चोपस्थिते वृद्धतापसीगणे, कण्वादेशात्तापोवन-पादपवनदेवतादिभिः समर्पितविविधवसनविभूषणसंभारं शकुन्तलायै समर्पयितुम् उपसृते च हरितनामधेये मुनितनये, समर्प्य च गुरवे निवेदयितुं प्रतिनिवृत्ते तस्मिन्, प्रियसख्यौ शकुन्तलां पतिसमागमोत्सुकां विविधालङ्कारैरलञ्चक्रतुः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ भविष्यत्तनयावियोगखिन्नचेतास्तत्रभवान् कण्वो विलपनपरां प्रियतनयां शकुन्तलां कथमपि समाश्वस्य वैतानिकाननलान् प्रदक्षिणीकर्तुं तां समादिदेश। अनन्तरं गन्तुमुद्युक्तायां तनयायां, अनुगच्छति च गौतमीसनाथे शार्ङ्गरवशारद्वतनाम्नि मुनिबालयुगले, तनयागमनार्थमनुमन्वति चारण्यतरुदेवताप्रमुखे, तनयावियोगविधुरोऽधीर इव क्षणं भगवान् कण्वश्चलितचित्तवृत्तिरवर्तत। अथ समुद्गीते वनदेवताभिर्गमनगीतिमङ्गले, ताभ्यः प्रणतायां च गौतमीवचनचोदितायां शकुन्तलायां, आश्लिष्टायां च भगिनीमाधवीलतायां, समर्पितायां च तस्यां सखीद्वयहस्ते, मृगवधूप्रसवप्रवृत्तिं विसर्जयितुं विज्ञापिते च भगवति कुलपतौ, निवारिते च पदानुसारिणि जननीरहिते हरिणपोते, तत्रभवता कण्वेन मुहुर्मुहुरुपदिश्यमाना शकुन्तला पतिसमागमोत्सुकापि कुलपतिवियोगदुःखिता कथङ्कथमपि यातुं प्रावर्त्तत।

अथैवं सानुकम्पं प्रचलितायां सपरिजनायां शकुन्तलायां, कुलपतिः कण्वः क्षणमात्रं तीरतरुच्छायायां विश्रम्य सह सर्वैः, राजोचितमुदन्तञ्च सन्दिश्य, सम्यगुपदिश्य च दुहितरं, पतिगृहे विनयौदार्यादिगुणगरिम्णा भर्त्तारमनुरञ्जयितुं, प्रणामलालसां तां उरसाश्लिष्य गन्तुमाज्ञापयामास। ततस्ते सख्यावपि यदि स राजर्षिः प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत् तदा प्रदर्शयतामिदमङ्गुलीयकमित्युक्त्वा च जोषमास्ताम्। शकुन्तलापि भाविविरहशोषितान्तःकरणा सख्यावालिलिङ्ग। कण्वोऽपि पुनस्तपोवनागमनाभिलाषिणीं तनयां समुचितैर्वाक्यैराश्वास्य विसर्जयामास। विसर्ज्य च लब्धमिदानीं स्वास्थ्यमिति वदन् अनुसूयाप्रियंवदाभ्यां साकम् आश्रमं प्रतिनिवृत्तस्तत्रभवान् कण्वः।

पञ्चमाङ्कः-

अत्र तपोवनादागतान्मुनिशिष्यजनादाकर्णितकण्वर्षिसन्देशः कञ्चुकी राज्ञे निवेदयितुमन्तः प्रविशन् स्खलितगतिरात्मनो जरादशां नितरां निन्दन्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तदानीमेवोत्थिताय धर्मासनान्नरपतये निवेदयितुं शङ्कितमनाः किंचिच्चिरञ्चितयन् तूष्णीमतिष्ठत्।

एतस्मिन्नेवावसरे विदूषकेण समं समासीनोऽधिकारजनित-निर्वेदादन्तर्दूयमानमानसः; राज्यपालनं नाम नितान्तस्वान्तसन्तापकारीति कथयन् वैतालिकमुखनिःसृतं तदानीन्तनान्तःकरणसन्तापापनोदकं लोकोत्तरभाववद्धं गानमश्रृणोत्।

आकर्ण्य च मोदमानमानसः सह वयस्येन समयं यापयन् सङ्गीतगृहनिःसृतां हंसवतीकरकमलकोमलवादितां वीणां कलहंसकुलकामिनी-कलकण्ठकोमलां गीतिकाञ्चाकर्ण्य गृहीतगीतार्थः प्राहिणोत्तत्र विदूषकम्। नरपतिश्च कान्ताविरहविसंष्ठुले मानसेऽनेकधा तर्कयन्, सहसा दौवारिकनिवेदितं तापसजनागमनमाकर्ण्य सविस्मयः "त्वरितं प्रवेशये" त्यादिश्य मुनिजनमनोरमं यज्ञागारं प्रविशत्।

अत्रान्तरे तापसावपि इतस्ततो राजभवने निसृष्टदृष्टी प्रशंसितराजचरितौ प्रविश्य यज्ञागारं, क्षितिपतिं चावलोक्य "जय राजन्" इत्युदीर्य यथाश्रुतं कुलपतिसन्देशमादिशतां राज्ञे। अथ सुलभकोपमहामुनिदुर्वासःशापविमूढमतिः स राजा तां तापसमुखनिर्गतां भारतीं पथ्यामप्यपथ्यामिव भावयन् विपरीतवृत्तिः शकुन्तलासहकृतगान्धर्वसम्वन्धं स्मार्यमाणोऽपि तत्र प्रमाणमनधिगच्छन् निजपुरोहितमतानुसारं शकुन्तलां निजभवने परीक्षणार्थम्प्रसवपर्यन्तं स्थापयितुमनुमान्य मुनिवालौ च विसर्ज्य विस्मयस्तिमितचित्तवृत्तिर्निर्जगाम यज्ञागारात्। शकुन्तलापि विस्मृत-पूर्वसम्वन्धं निष्ठुरं क्षितिपतिमात्मानं च विगर्हयन्ती निजसखीजन-विरहातिखिन्नतया च परिदेवयन्ती सहाचार्येण निष्क्रान्ता।

एवं तत्रैव किंचित्कालं यापयन्ती निराकरणखिन्नमानसाऽतिविह्वला शकुन्तला जननीप्रहितया कयापि त्रिदशाङ्गनयाऽनीयतान्तरिक्षमकाण्ड एव।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नरपतिरपि पुरोहितमुखादिमं वृत्तान्तमाकर्ण्याश्चर्यचकितचेतोवृत्तिर्मुनिशापस्य दुर्लंघ्यतया विस्मृतकान्तावृत्तान्त आरूढसन्देहदोलस्तद्भवनान्निरगात्।

पञ्चमाङ्काशोऽङ्कावतारः-

अत्रादौ नगररक्षकः कश्चिद्राजपुरुषाभ्यां सह गृहीतराजनामाङ्कितांगुरीयकं पुरुषमेकं "चौरोऽयमिति मत्वा, गृहीतवान्। अप्राक्षीच्चैनम् - रे "कृतस्त्वयैतदासादितं सत्यं सत्यं कथय" इति। स च धीवरो जालगृहीतमत्स्योदराभ्यन्तरान्मया लब्धमित्यकथयत्। समाकर्ण्य धीवरवचनं नगररक्षकः सन्दिहानो राजान्तिकमेवैनं नेतुकामो राजपुरुषान्तिके तं संस्थाप्य राज्ञे वृत्तान्तमिमं निवेदयितुं साङ्गुलीयको निर्ययौ राजान्तिकम्। अचिरेण च ततः समागत्य धीवराय नृपतिप्रसादं दत्वा तं मुमोच बन्धनात्।

अथ प्राप्तनृपतिप्रसादेन धीवरेण साकं नरपतेः करुणवृत्तन्तमालपन्तौ राजपुरुषौ तत्रात्मनोऽप्यंशं कथयित्वा, गृहीत्वा च ततः किञ्चिन् मधुपानार्थं शौण्डिकालयमविशताम्।

षष्ठाङ्कः-

अत्र प्रथमं मिश्रकेशी नाम काचिद् देववनिता पर्यायनिवर्तनीयमप्सरोभिरादिष्टं सम्पाद्य, स्वसुतार्थं मेनकासन्देशमनुस्मरन्ती दुष्यन्तवृत्तन्तं ज्ञातुमाकाशयानेनोपवनान्तिकमाजगाम। वसन्तोत्सवसमयेऽपि निरुत्सवं अवलोक्य च राजकुलं, तत्र च कारणं जिज्ञासमाना तिरस्करिण्यन्तरितनिजावयवा क्षणं तूष्णीमतिष्ठत्।

अनन्तरं मदनोत्सवं आरब्धुं समायाते चेटीद्वये, सहसा प्रविश्य कञ्चुकी निर्भर्त्सयन् प्रतिषिद्धवान् मदनोत्सवम्। प्रतिषेधकारणाकर्णनकुतूहलिनीभ्याञ्च ताभ्यामङ्गुलीयकदर्शनात्प्रभृति राज्ञः करुणप्रवृत्तिं वसन्तोत्सवप्रतिषेधादेशञ्च निवेद्य, मुहूर्तमस्थात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नृपतेः करुणवार्ता आकर्ण्य प्रचलिते चेटीद्वन्द्वे, अकारणनिराकरण-कातरमना नृपतिः प्रतिहारीवयस्याभ्यां सहोपवनं प्रविश्य, प्रियाविरहेण नितान्तक्लान्तकाय आत्मनो राजकार्यकरणाक्षमतां सचिवाय प्रतिहारीमुखेन सन्दिश्य, कार्य्यान्तरमिषेण कञ्चुकिनमपि संप्रेष्य, एकान्त एकान्तप्रियेण विदूषकेण सह शकुन्तलासम्बन्धिगोष्ठीबन्धं व्यरचयत्।

अत्रान्तरे शकुन्तलाप्रतिकृतिमादायोपस्थितायां चेट्यां चतुरिकायां, दृष्ट्वा च तत्राविकलं प्रियास्वरूपं स्वयञ्च पुनस्तत्रैवान्यत्र किञ्चिच्चित्रयितुकामश्चेटीमादिश्य वर्तिकानयनाय, भर्त्सयंश्च चित्रलिखितं प्रियाधरमधुपानलालसं मधुपं, चित्रोऽयमिति स्मारितो वयस्येन नितान्तमतप्यत।

अथैत्य च सा "चतुरिकाभिधाना चेटी आलेख्य लेखनार्थं वर्तिकाकरण्डकं स्वामिसमीपं नयतीति पश्य पश्य" इति पिङ्गलिकयावेदिता देवी वसुमती भवदन्तिकं प्रस्थिताया मम हस्तात्—"अहमेव आर्यपुत्रस्य उपनेष्यामि।" इति भणित्वा सबलात्कारं तद् गृहीतवती। अहञ्च ततः कथमपि आत्मानं मोचयित्वेतः समागतास्मीत्यकथयत्। राजा च महिषीसमागमप्रवृत्तिं आकर्ण्य संभ्रान्तस्वान्तः प्रियाप्रतिकृतिसङ्गोपनार्थं विदूषकं नियोज्य, सचिवपत्रपाण्या प्रतीहार्या सहालपत्। महिषी गमनव्यापारान्निवृत्तेति प्रतीहार्य्या निवेद्यमानस्तत्पत्रमनुवाच्य, ज्ञात्वा च "धनवृद्धिर्नाम वणिग् वाणिज्यार्थं जलपथमुपगतो नौव्यसनेन मृतश्च, अपुत्रतया च तद्धनमिदानीं राजस्वतामुपपद्यते तदधुनात्र किं कर्तव्यमिति, अनेकदारस्य तस्य काचित्पत्नी चेदन्तवत्नी, सैतद् गृह्णातुमर्हतीति सन्दिश्य, आत्मनोऽप्यपुत्रतया नितान्तमन्तस्तापमवाप।

अथ मिश्रकेश्यपि समस्तं राजवृत्तान्तमाकर्ण्य तेन वृत्तान्तेन शकुन्तलां समाश्वासयितुं सुरलोकमारुरोह। अथ नृपतिराकस्मिकं वयस्यस्यार्तनादमाकर्ण्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्कारणावगतये कञ्चुकिनं व्यादिश्य, ज्ञात्वा च तन्मुखाद् भूताविष्टं प्रियवयस्यं, तद् वधार्थमाकृष्टधन्वा मातलिं सुरनाथसारथिमपश्यत्।

मातलिवचनेन दुर्जयदानवोपद्रवोपशमनार्थमात्मन इन्द्रलोकप्रस्थानं, कोपसंवर्द्धनार्थं च विदूषकनिग्रहणं विज्ञाय, सम्यक् प्रजाः पालनीया इति मन्त्रिणं समादिश्य, इन्द्रदर्शनोत्सुको विमानमारुह्येन्द्रलोकं जगाम।

सप्तमाङ्कः-

अत्रादावुपशमितदानवोपद्रवस्य पृथिवीपतेर्दुष्यन्तस्य मातलिना सार्धं गगनमुत्पतता रथेन सह सङ्गमः। तत्र स्थितस्य तस्योपान्त इन्द्रकृतादरातिशयमवर्णयत्। मातलिरपि समस्तं तत् समर्थितवान्। एवमेव वर्णनक्रमेण प्रथमं प्रवहस्य, तदनन्तरं, चावहस्य वायोर्मार्गवर्णनम्। रथावरोहणवेगवशाद् विपरिवर्तितमर्त्यलोकस्य तदानीन्तनविस्मनीय-दशावर्णनम्। मारीचाधिष्ठितहेमकूटाचलवर्णनं, रथावरोहणकाले दुष्यन्तकृता रथावरोहणप्रशंसा, आश्रमोऽयमिति मातलिकथनानन्तरं दुष्यन्तकृताश्रम-वर्णनम्।

ततश्चाकाशवाण्या पतिव्रताधर्मसमाकर्णनार्थमदितिप्रभृतीनां मुनिवनितानां कश्यपेन समं समागमः। तदादेशलाभमिषेण मातलेरपि तत्र गमनम्। दुष्यन्तस्य दक्षिणभुजस्पन्दनं च।

अनन्तरं तापसीयुगलपरिपालितस्य जननीस्तनन्धयसिंहशावकमाकृष्य खेलतोऽवालसत्वस्य शिशोः प्रवेशः। अवलोक्य नृपतिकृतं तस्य बाल्यपराक्रमातिशयवर्णनम्। "पश्य शकुन्तलावण्यमिति" कयाचित्तापस-कुमार्याभिहिते, निजजननीनामाकर्णनोत्कण्ठस्य बालस्य तत्काल-जातावस्थामवलोक्य शकुन्तलागर्भसंभूतत्वस्य स्फुटप्रतीतिः। दुष्यन्त-करस्पर्शेन बालहस्तस्थिताया महौषध्याः भूमौ पतनम्। ततश्च बालेन "दुष्यन्तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम तातः, न खलु त्वमि" त्यभिहिते स्फुटमात्मनि तत्पितृत्वप्रतीतः। ततश्च अचिरादेव विरहदुर्बलायाः शकुन्तलायास्तत्रागमनम्। अथ दम्पत्योर्विविधविस्रम्भालापः। मातलिना समं सपुत्रकलत्रस्य तस्य मुनिसमीपगमनम्। तत्र च दुर्वाससः शापेनैवेदमापतितमिति स्वमोहहेतुश्रवणम्। कण्वसमीपे पतिपत्नीपुत्रसमागमवृत्तान्तप्रेषणम्।

गृहीताशीर्वादस्य पुत्रकलत्रसमन्वितस्य राज्ञो दुष्यन्तस्य निजनगरप्रस्थानम्। अथ नटकृतप्रशस्तिवर्णना चेति।

- शिवकुमारः

***

....एतद्ग्रन्थप्रकशनसमये शरीरस्यास्वस्थतया कार्यवाहुल्येन च संशोधनादिकार्यं सम्यक्संपादयितुमसमर्थेन मया वालस्याप्यवालस्यैव व्युत्पत्तिशालिनोऽन्तेवासिनो दीर्घायुषः श्रीशिवकुमारशास्त्रिणः सुमहत्साहाय्यमन्तरान्तरा समुपलब्धमिति सततंतदध्ययनाभिवृद्धये वाङ्मयाधिकृतां शारदेन्दुसमप्रभां भगवतीं भारतीमनिशमनुचिन्तयामि।....

श्रीगौरीनाथपाठकः

वैक्रमाब्दा १९९१ नागपञ्चमी

शारदाभवनम्, काशी।

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

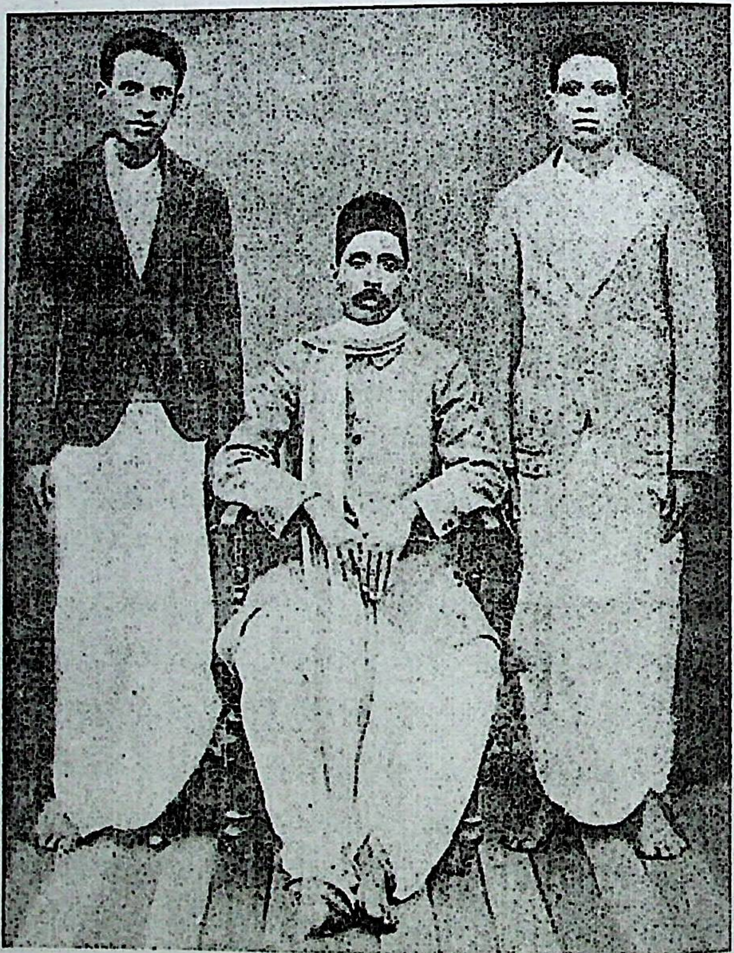

महालिङ्गशास्त्री, गौरीनाथ पाठकः, शिवकुमारशास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५

पत्रावलिः

२८.९.१९४३

पूज्य गुरुदेव !

सादरं प्रणम्य विज्ञापयामि। महती हि मौनमुद्रा तत्रभवतां या प्रयततापि अद्यापि मया विमोचयितुं न शक्येतेति महदाश्चर्यम्। परन्तु अतीव कौतुकमुत्पादयति भवतामेतत् समाचरणम्।

किं नु कारणं स्यात् ? शिष्यजनस्योपरि कोपः किम् ? उत औदासीन्यम् ? किं वान्यत् किमपि स्यात्। यत्किञ्चिदपि भवतु। अद्यावधि सुखेऽपि दुःखेऽपि यं दासजनं तत्रभवन्तः समभागिनममन्यन्त त एवाद्यैतादृशीं मौनमुद्रां धारयन्तीति महदेतन्मे हृदयशल्यम्। परन्तु न हि निवारयितुं मया तत् साध्यते। किन्तु गुरवः! तत्रभवतां तादृशं शिष्यजनस्योपरि वात्सल्यं क्वाद्य गतम् ? केन कारणेन भवान् रुष्टो मयोपरि ? आज्ञापयतु भवान्, येन तत्परिमार्जयितुं यतिष्ये। न हि शक्यमेतत् सोढुं गुरुजनौदासीन्यम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तस्मात्सविनयमञ्जलिं शिरसि विधाय वारं वारं पादमूलेऽभ्यर्थये। अतीतेष्वपि बहुषु पत्रेषु बहवो विषया लिखिता आसन्। परन्तु सर्वत्रौदासीन्यम्।

इदानीमपि कृपया पत्रमेकं प्रेषणीयमिति न बहु निवेद्यते। एतानि च पुस्तकानि प्रेषणीयानि।

उत्तररामचरितम्	१	(कलिकाता टीका)
रूक्मिणीहरणम्	१	(")
श्रीहर्षचरितम्	१	सरलटीकोपेतम्
महानाटकम्	२	
कादम्बरी	१	(कलिकाता टीका)
मालतीमाधवम्	१	(कलिकाता टीका)

इयन्ति पुस्तकानि शीघ्रं प्रेषणीयानि।

२८.९.१९४३ शिवकुमारः

११.११.१९४३

गुरुदेव !

सादरं सविनयं च प्रणम्य विज्ञापयामि।

कलिकान्तीयकादम्बरी साम्प्रतमत्यावश्येति पत्रमिदं भवत्सन्निधौ प्रहीयते। यदि कुत्रापि न लभ्यते तर्हि भवदीयपुस्तकभण्डारे यदासीत् तदेवावश्यं प्रेषयितुं कृपा विधेया। सा हि अध्येतृणां महती सुविधा ददातीति पुनः पुनः प्रार्थ्यते। यत्र कुत्राचिदपि पुराणानि वाऽन्विष्य प्रेषणीयानि। अतिशीघ्रं प्रत्युत्तरेणानुग्राह्यः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्यच्च काशीस्थसंस्कृतपरीक्षा कदा प्रारभ्यत इति ज्ञातुमस्ति महतीच्छा।

११.११.१९४३ शिवकुमारः

१५.१२.४३

पूज्य गुरुदेव !

सादरं सविनयं च प्राणम्य विज्ञापयामि। तत्रभवद्भिरर्चनीयचरणैः सम्प्रेषितानि श्रीहर्षचरितमहानाटकोत्तररामचरितकादम्बरीदुर्गसप्तशतीप्रभृतीनि पुस्तकानि लब्धानि।

अत्र वयं सर्वे गुरुजनाशिषा सुखेन तिष्ठामः। इह तु यद्यपि वृष्टिरधिका, धान्योत्पत्तिरपि महती, तथापि प्रभुत्वस्य निर्वन्धेन हस्तगतमप्याहारं भोक्तुं न शक्यते। अस्मिन् वर्षेऽत्र द्वौ छात्रौ काव्ये तीर्थपरीक्षायां, त्रयश्च मध्यमायां, एकश्चाद्यपरीक्षायामिति षट् छात्राः वर्तन्ते। परन्तु साम्प्रतं वृत्तपत्रेषु कलिकान्तानगरस्योपरि शत्रुभिः कृतमाक्रमणं श्रुत्वा चिन्तितोऽस्मि। यद्येवमेवाक्रमणं निरन्तरं सम्पद्येत तदा प्रायः परीक्षा न चलेत। छात्राणां वर्ष एकः व्यर्थः स्यात्। एतादृश्यामवस्थायां काशीस्थसंस्कृतविद्यालयाध्यक्षैः कीदृशी व्यवस्था स्वीक्रियत इति ज्ञातुमस्ति महत्युत्कण्ठा। भाविनि वर्षे सर्वानपि काशीसाहित्यमध्यमायामुपवेशितुमाशा वर्तते।

अस्माकं बीरूपाठशाला साम्प्रतं सम्यक् न चलति। यदा प्रभृति श्रीगौरीशङ्करशास्त्रिणा सा त्यक्ता तदा प्रभृति तत्रस्थास्त्रयोऽपि पण्डिता अस्मद्विपक्षीयाः। अस्मज्जातौ हि महान् मतीयविद्वेषोऽस्ति। काश्यां ये जङ्गमवाटिकायां, रेवडीतटाके चास्मज्जातीया वर्तन्ते, ते सर्वेऽपि सर्वदाऽस्मान्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्विषन्ति। तत्पक्षीयानेवास्मत्पाठशालायां साम्प्रतं संस्थापितवन्तो वयम्। अस्मदीये स्वमते श्रीगौरीशङ्करं विहाय कोऽपि संस्कृतज्ञः एव नास्ति। यदा श्रीगौरीशङ्करः प्रधानाध्यापकपदे आसीत् तदा कोऽपि द्वेषः बहिरङ्गे न दृष्टः। इदानीं तु पदे पदे महान् विद्वेषोऽनुभूयते। मुहुर्मुहुः कृताग्रहोऽपि तत्र पाठयितुं न मनुते गौरीशङ्करः। तदर्थमेवास्मन्मते संस्कृतपण्डितान् निर्मातुमहं कृतयत्नोऽस्मि। देवपादानुग्रहेण स्वल्पेषु एव दिवसेषु पण्डितान् द्रष्टुमस्ति महती प्रत्याशा।

भारतदेशस्योपरि शत्रव आगमिष्यन्ति चेत् काशीनगरस्योपर्य्यप्याक्रमणं प्रायः भवेत्। तदा तत्रभवन्तः किं करिष्यन्तिं। महती हि विपत्स्यात्।

अन्यच्च पूज्यचरणानां भावचित्रस्यावश्यकता ममास्ति। इह हि तस्य बृहदाकारः कार्यते। तदवश्यं पण्डितसमुदाचारमाश्रितमेकं चित्रं (फोटो) प्रेषणीयमवश्यम् । यादृशं चित्रं मनोरमं स्यात्तादृशं तत्रभवन्तः एवालोच्य प्रेषयन्तु। मम तु एतादृशं रोचते यत् शरीरस्योपरि भागे कट्युपरि किमापि वस्त्रं न स्यात्। हस्ते पुस्तकं स्यात्। पश्चात् भागे रम्यमुपाधानं स्यात् (लोड)। समक्षमेका पुस्तकराशिः स्यात्। ललाटे च तिलकः। यज्ञोपवीतं बहिर्दृश्यमानं स्यात्। एतादृशेन भावेनोपविष्टानां तत्रभवतां चित्रं कृपया प्रेषणीयम्। अत्र हि मया एको वाचनालयः प्रारब्धो वर्तते। तत्र गुरुपादानां भावचित्रमत्यावश्यकम्। तदर्थमत्रैव मया तस्य बृहदाकारः कार्यते (यन्लार्ज)। बहूनां चात्रत्यानामस्मच्छिष्याणां तादृशी स्पृहा वर्तते। यदि अत्र विषये कृपा क्रियते चेद् धन्यंमन्यो भविष्यामि। तस्यापि चित्रस्य यावन्मूल्यमाज्ञाप्यः। अतिशीघ्रं कार्यमेतत् स्यादिति विश्वसिमि। अन्यः कोऽपि विषयो नास्ति। सदा तत्रभवतां कारुण्यमपेक्षे।

१५.१२.४३
मुकाम्-यलहङ्कश्रीमठ

भवदीयः
शिवकुमारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९.९.१९४४
बीरूरु P.O
मैसूरु स्टेट

परमपूज्य गुरुदेव !

सादरं सविनयं च प्राणम्य विज्ञापयामि। तत्रभवतां पूज्यचरणानां दर्शनार्थं भवदादेशानुसारेण श्रीमन्तं गौरीशङ्करशर्माणं भवदन्तिके प्रेषितवानस्मि। अस्मात् पत्तनात् काशीयात्रानिमित्तमस्मच्छिष्याः केचित्तेन साकं तत्रागताः सन्ति। अस्मदीयं सर्वं वृत्तान्तजातं श्रीमतो गौरीशङ्करशर्मणो मुखाद् विदितं भविष्यति। तत्रभवतां मयि शिष्यवात्सल्यमनन्यादृशमेव। आनृण्यं लब्धुं नैव शक्यते। मम जीवने श्रीमतां चिरपरिचयः उपदेशश्च बहूपकुरुतः। न जाने किं वस्तु दत्वा कृतज्ञंमन्यो भविष्यामि। नास्त्यवकाशो भवत्स्नेहबन्धनान्निर्गन्तुम्। अयं तु मे निश्चयः यत् यथावकाशं यथासाध्यं सेवासमर्पणेनात्मा पावयितुं साध्यः। तदद्य कामपि सेवां समर्पयितुमुत्सहे। परन्तु पूज्यचरणानां वात्सल्यं सेवया गणयितुं नैव साध्यमित्यपि जानाम्येव। तथापि किंकर्तव्यतामूढोऽस्मि। अस्मद्भक्तिसदृशं किमपि कर्तुं मन उत्सहते। तेन परवशो भूत्वा गौरीशङ्करशर्मणा सार्धं किञ्चित् प्रेषितवानस्मि। कृपयाऽङ्गीकृत्वायं शिष्योऽनुग्राह्य इति पुनः पुनः प्रार्थये। यद् वस्तु प्रेषितवानस्मि, तत्स्वयं भ्रातृभ्यां भगिन्या च स्वीकारयित्वा यदि संस्मरणीयो भविष्यामि तदा आत्मानं पूतं मन्ये।

नास्ति शक्तिसञ्चयो गुरुचरणेषु बहु निवेदितुम्। क्षन्तव्यमिदमत्याहितं शिष्यस्येति मुहुः सम्प्रार्थ्य विरतो भवामि।

तत्रभवतां श्रीचरणकमलयोर्भ्रमरायमाणोऽनन्यभक्तः

१९.९.१९४४ शिवकुमारः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आत्मनिवेदन

२.१२. १९४३

अयि चिरञ्जीविनः।

पत्राण्यधिगतानि वः। त्रयाणामपि युष्माकं लेखनानि सम्यगवलोकिनानि। तत्र ये दोषाः सन्ति, तान् युष्मदक्षिगोचारान् कर्तुं तानि सर्वाणि युष्मत्पत्राणि प्रतिनिवर्त्यन्ते। तानि पत्रणि स्वानि स्वानि सूक्ष्मेक्षिकया युष्माभिर्द्रष्टव्यानि। तत्र तत्र प्रभूता अशुद्धयः सन्ति। युष्माभिः या या अशुद्धिः कृता आसीत्, सा सा अस्माभिः समीचीना कृता वर्तते। यादृश्यः लेखनेऽशुद्धयः इदानीं सन्ति भाविनि लेखे तादृश्यः अशुद्धयो न सम्भविष्यन्तीति विश्वसिमः।

लेखने पठने च महत्पाटवमावश्यकम्। यततां हि सिद्धिर्हस्तगैव। प्रतिनित्यमस्मत्तो यानि परीक्षितानि युष्मल्लेखानानि इतः प्रतिनिवृत्यागमिष्यन्ति, तेषु ये ये दोषा युष्माकं स्युः, ते ते युष्माभिरवष्यं द्रष्टव्याः। येनाशुद्धिः परिशुद्धा भविष्यति। सदा युष्माकमभ्युदयमेव सर्वस्वं मन्यमानानामस्माकं मनोरथं सफलं करिष्यतेति महती प्रत्याशा वर्तते।

अन्यच्च युष्मद्देहसौख्यं अन्यदावश्यकं यत्किञ्चिन्निवेद्यम्।

२.१२.१९४३ इत्याशिषः

तव लेखने बहवो दोषाः सन्ति। विशुद्धीकृतेऽपि न तथा ज्ञातुं शक्नुयाः इति प्रतिपत्रं लिखित्वा प्रेष्यते। तत्सम्यक् पठित्वा ये दोषाः भवेयुः तान् त्वमेव जानीहि।

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शतकत्रयम्

शतकत्रये शिवाधवशिववल्लभमहदैपुरीश्वराः इति पदाङ्कितानि त्रीणि शतकानि सन्ति। एतस्मात् कारणात् इदं पुस्तकं "शतकत्रयम्" इति नाम्ना प्रसिद्धं भवति। त्रिषु शतकेष्वपि वीरशैवागमोक्तं मानमनुसृत्य भक्तिज्ञानवैराग्याणां लक्षणानि रचितानि॥ प्राचीनाः वीरशैवकवयः अनेकेषां शतकानां रचनां चक्रुः॥ किन्तु तेषु पुस्तकेषु भक्तिप्रधानभूतानि बहूनि सन्ति। इदं पस्तकं तु वीरशैवानामादरणीयानि भक्तिज्ञानाचरणानि कीदृशानि स्थितानि इति सुस्पष्टं लिखितं शास्त्रमिव वर्तते। अनेकेषां वचनशास्त्ररहस्यानां मूलं इदमेव आसीत्। तस्मात् कारणात् "इदं अद्वितीयम्" इति कथनेन अनौचित्यं न स्यात्। अस्मदुत्तरं लेखं श्वः लिखिष्यामि।

अद्य मया कृतानि कार्याणि एवं सन्ति। अहमपि मम मित्रे इव ब्राह्मे मुहूर्ते शयनादुत्थाय प्रातः नववादनपर्यन्तं साहित्यदर्पणं अपठम्। तदनन्दरं नित्यकर्माणि पूरयित्वा ९ घण्टातः किरातार्जुनीयस्य द्वितीयसर्गे मध्याह्नपर्यन्तं श्लोकानां विंशतिं पठित्वा, किरातार्जुनीयस्य प्रथमे सर्गे पञ्चानां श्लोकानां व्याख्यां, अस्मिन् स्थितं लेखं च अलिखम्। इतः परं सर्वाणि कार्याणि मम मित्रे इव आचरिष्यामि। भवादृशां ज्ञानवतां सन्निधौ इतः अधिकं किञ्चिदपि लिखितुं न शक्तोऽस्मि।

तत्रभवतां किङ्करः अथवा तत्रभवतामन्तेवासी अथवा
तत्रभवतां पादाश्रितः अथवा तत्रभवतां पादपद्मोपजीवी अथवा
तत्रभवतां कृपाश्रितः

****

दोषाणां बहुलतया शोधयितुमपारयद्भिरस्माभिस्त्वल्लेखस्य प्रतिलिपिरेव शुद्धा लिखिता। इतः परे जागरूकेण त्वया भवितव्यम्। अत्रत्यैर्मित्रैर्यानि पत्राणि प्रोषितानि तान्यवश्यं त्वया द्रष्टव्यानि। प्रतिपत्रे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्लोकद्वयस्यैव व्याख्या प्रेष्या अथवा स्वल्पोऽनुवादः प्रेष्यः। अस्माकं कार्यबहुलतया प्रभूते प्रेषिते शोधयितुं न शक्यते।

श्रीशिवकुमारः

८.१२. १९४३

प्रिय वत्साः!

युष्माकं पत्रेषु व्यख्यानुवादयोश्च बहवो दोषाः भवन्ति। ये दोषा एकदास्माभिर्विशुद्धाः क्रियन्ते, ते दोषाः पुनरपि नागच्छेयुर्यथा तथा यतिष्यत। तस्माद्यदा युष्माकं लिखितानि प्रतिनिवृत्य युष्मत्समीपमागच्छन्ति, तदा प्रथमं तानि हस्ते गृहीत्वा यत्र यत्र दोषाः परिशुद्धीकृता वर्तन्ते इति पश्यत।

लिङ्गवचनविभक्तीनां ज्ञानं युष्माकं स्वल्पमपि नास्ति। विशेष्याणां पदानामेव लिङ्गवचनविभक्तयः विशेषणानां भवन्ति। इत्येतत्सदा स्मर्तव्यम्। साहित्यदर्पणे दोषालङ्कारपरिच्छेदौ द्वौ स्तः। तत्र युष्माकं दोषालङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि केवलानि कण्ठस्थानि कर्तव्यानि। प्रथमं यूयं तथा तयोर्लक्षणोदाहरणानि कण्ठस्थानि कुरुत। कदाचिदवकाशो लभेत चेत् पाठयिष्यामः। प्रथमं द्वावपि परिच्छेदौ लक्षणोदाहरणभागौ कण्ठस्थौ स्याताम्। यश्च तत्र शास्त्रीयविषयो वर्तते स युष्माकमावश्यको न भवति। तस्मात् यथास्माभिर्लिखितं वर्तते तथा कार्यम्।

युष्माकं यावन्ति लेखनानि सर्वाणि प्रतिप्रेषितानि। प्रतिनित्यं द्वौ श्लोकौ लिखित्वा प्रेषयत। अथवा एकस्मिन् दिने अनुवादः। एकस्मिन् दिने व्याख्या इति क्रमप्रकारं लिखत। श्लोकप्रणामाभिप्रायादिशब्दाः पुल्लिङ्गे वर्तन्ते। यूयं च तेषां नपुंसके कुरुत। कोऽपि हे मल्लिकार्जुन! इति लिखितव्ये मल्लिकार्जुना इति दीर्घं लिखितवानस्ति। शिवमूर्तिविश्वेश्वरौ 'भवदीयः' इत्यन्ते लिखितव्ये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्रावलिः

भवदीया इति अलिखताम्। किं तौ द्वावपि स्त्रियौ अभूताम्। अनुवादः पुल्लिङ्गे वर्तते। सर्वैरपि स शब्दः नपुंसके प्रयोज्यते। एवं प्रचुराः दोषाः मिलन्ति। एवं दोषाणामवकाशो न स्यात्तथा यतितव्यम्। अन्यत्किमुच्यते। सर्वथा कुशलाश्चतुराश्च भवतेत्याशास्महे।

ता० ८.१२. १९४३ भवदीयः

यलहङ्क श्रीशिवकुमारः

१०।१२।४३

प्रिया वत्साः

युष्माकं ता० ६।७।८ तमानां दिनानां पत्राण्यधिगतानि। युष्माकं लेखनेषु दोषाः बहवो भवन्ति। तत्र केचित्क्षम्याः, केचिदक्षम्याः भवन्ति। मत्यैरिति विश्वो लिखति। साहित्यमध्यमायां पठतस्तस्य मतिशब्दः स्त्रीलिङ्गः मतिभिरिति भवतीति कथं न विदितम्। विषयः सदा पुल्लिंङ्ग एव। सदा यूयं नपुंसके तस्य प्रयोगं कुरुत। परिशोधितं मया बहुवारम्। "चतुर्थोऽङ्कः"इति लिखितव्यम्। अथवा "चतुर्थाङ्कः" इति। परन्तु "चतुर्थोऽङ्कं" इति भिन्नविभक्तिः कथं ?

विश्वद्वयेन "भवदीया" इति लिख्यते। मूर्तिस्तु नपुंसको जातः, येन "हिताभिलाषि" इति लिखितम्। "भवदीयः भवदीया भवदीयं" इति लिंङ्गत्रये रूपत्रयमस्ति। तत्र युष्माभिर्भवदीयः इत्येव प्रयोक्तव्यः। हिताभिलाषी, हिताभिलाषिणी, हिताभिलाषि" इति लिंङ्गत्रये रूपत्रयं वर्तते। तत्र शिवमूर्तिना पुलिंङ्गरूपं त्यक्त्वा नपुंसकरूपं गृहितम्। एतत्सर्वं स्म्यग् ज्ञातव्यम्। ह्यस्तने पत्रे सर्वो विषयो विशदो वर्तते। किं बहूना?

१०।१२।४३ भवदीयः

c/o प. चि. हलेबीडु श्रीशिवकुमारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१।१२।४३

आयि विश्वकुमार शर्मन्!

अस्मत्तः पत्रमपेक्षसे। परन्तु किं तव लिखितव्यमित्येव न व्यज्यते। तत्किमपि न लिखितुं शक्यते इत्येव पर्याप्तमिति मन्ये।

२१।१२।४३ भवदीयः

१५.११.१९६५

आशिषः,

आङ्ग्लभाषा तव समीचीना वर्तते । एवमेव संस्कृतभाषाऽपि वृद्धिं गच्छतीति विश्वासोऽस्माकम्। भाषणेन वाचनशक्तिः लेखनेन लेखनशक्तिर्वर्धते। तस्मात् प्रतिदिनं संस्कृतभाषयैव पत्रं लेख्यम्। पूर्वमस्माकं लेखनशैली रम्याऽऽसीत्। इदानीं लेखनपरिपाठस्य त्यागात् सर्वथा भ्रष्टाऽभवत्। तवैकमन्यत्पत्रं वर्तते । तस्य परिशोधनाय समयस्याभावात् कर्तुं न लभतेऽवकाशः । तथापि रात्रौ परिशोध्य श्व एव ते प्रेषयिष्यामः ।

इत्याशिषः

६.१२.१९६५

आशिषः,

अद्य प्रातरेवेतो निर्गतः शुभायुष्मान् .मरुळसिद्धेश्वरो मैसूरुनगराभिमुखम्। तत्सम्बन्धे वार्ता तन्त्रीमुखेन तवाधुनैव प्रेषिता त्वया प्राप्तैव स्यात्। शुभायुष्मते तस्मै पाठप्रवचनाय द्वौ प्राध्यापकौ द्वाभ्यां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विषयाभ्यामनिवार्य्यौ। स चातीवदुर्बलः द्वयोर्विषयोः। अवश्यं स उत्तीर्णो यथा भवेत् तथा प्रयियितव्यम्। अस्मिन् विषये कुरु मौदासीन्यम्।

अस्मिन् वर्षे सस्तत्रैव परीक्षां दातुं व्यवस्था कार्या। तस्य मैसूरुसंप्राप्तिः श्वे एव लेख्या।

अत्र वर्षा नितरां नास्ति। जनता अतीवचिन्ताकुलाः

इत्याशिषः।

८.१२.१९६५

आशिषः,

कौमुदीपाठस्यारम्भोऽतीवशीघ्रं कार्यः। दिसेम्बरमासस्य तथा एप्रिल्मेमासयोर्विरामदिनानि कौमूदीपाठाय नियतानि स्युः।

एक एव वर्षो मैसूरवासस्य शेषः। मैसूरुवासावधौ कौमुदीं चेत् सम्यक् पठिता, संस्कृते प्रौढिमा वर्धते। का हिन्दीपरीक्षा इदानीं तव वर्तते लिख्यताम्। बि.ए. परीक्षानन्तरं तवाभ्यासः काश्यां हिंन्दूविश्वविद्यालय इति निश्चितः। तत्र तवाभ्यासे वर्षचतुष्कपर्य्यन्तमिति जानीहि। एम्.ए. तथा पि.हेच्.डि. परीक्षा तत्रैव भवितव्या। एतदवधौ संस्कृतस्य प्रत्येकतयाऽभ्यासः, महाराष्ट्र-वङ्गभाषाशिक्षणमावश्यकम्। एवमेव दक्षिणभारतीये आन्ध्रतमिलुभाषेऽभ्यसितव्य इति निश्चिनु।

उत्तरभारतस्य दृष्टया हिन्दी-महाराष्ट्र-वङ्ग इति तिस्रो भाषाः, दक्षिणभारतस्य दृष्टया कर्नाटक-आन्ध्र-तमिळु इति तिस्रः। अखिलभारतस्य दृष्टया संस्कृतभाषा, तथाऽन्तरा राष्ट्रीयदृष्टया आङ्गलभाषावश्यमध्ययनीया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तव यानि विद्यार्थिमित्राणि तथा परिचिताः स्नेहपरा अध्यापकाः सन्ति तेषु प्रचलिते पत्रव्यवहारे त्वयाङ्गलभाषा प्रयोक्तव्या। यत्पत्रं राजशेखरमहोदयाय लिखितमङ्ग्लभाषया तत् प्रशंसनीयमासीदिति राजशेखरेण कथितम्।

इत्याशिषः।

१८.१.१९६६

इदं पत्रमद्य तुभ्यं प्रेषितम्। अस्मिन् पत्रे यल्लिखितं तत्सर्वं पठ। तथा सर्वं ते मित्रेभ्यो वद।

इदानीं वयं तरळबाळुपूर्णिमायै भाषणं लिखामः। आह्वानपत्राणि च सर्वत्र गतानि सहस्रशः। तुभ्यमप्येकमनेन सह प्रेषितमस्ति। अद्य सायं एकः स्वामी मृतस्य प्रधानिनः संस्मरणार्थं संस्कृतभाषायां सन्तापसूचनात्मकं भाषणं प्रसारयामास। त्वमपि प्रतिनित्यं संस्कृते पत्रं लिख। तव यावन्ति पत्राणि आगमिष्यन्ति तेभ्यः सर्वेभ्योऽस्माभिरुत्तरं दासयिष्यते। बहूनि दिनान्यतीतानि संस्कृतं त्यक्त्वा। तस्माल्लेखनेऽस्माकमपि बहवो दोषा भवन्ति। तथापि त्वदर्थमनिवार्यमस्माकं संस्कृतलेखनं भवति।

अस्मिन् वर्षे शीतं सामान्यं वर्तते। तथापि सिरिगेरे ग्रामेऽधिकमेव वर्तते। शान्तवीरप्प इदानीं पूर्णिमाकार्यार्थं गुडिगेरेग्रामे तिष्ठति। तत्र तस्य बहूनि कार्य्याणि वर्तन्ते। दिनानि स्वल्पानि कार्याणि तु बहुलानि। तत्रैक एव सर्वं निर्वहति। तत्रत्या जनाः केवलं वाचालाः न कृतिशीलाः। तथापि तैरेव सर्वं साधयितव्यम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अस्मिन् वर्षे त्वं परीक्षायां प्रथमश्रेण्यामुत्तीर्णः स्या इति संकल्पोऽस्माकम्। सोमशेखरश्चापि सम्यक् पठ्योत्तीर्णो यथा स्यात् तथा त्वया कर्तव्यम्। मरुळसिद्धेश्वरः कीदृशो वर्तते ? सम्यक् पठते वा न वा ? शीघ्रं लिख। ब्रूहि सम्यक् पठितुम्। पत्रे ते दोषा इदानीमपि वहवः सन्ति। सम्यगालोच्य लिख यथा दोषा न भवन्ति।

मल्लप्पोऽपि वर्षे भविष्यति मैसूरनगरे पठितुमागच्छति। सोऽपि सभ्यः शान्तः शिष्टः। तव त्वेक एव वर्षोऽवशिष्टो मैसूरुवासस्य। एतदवधौ त्वं हिन्दीमपि सम्यक् पठ। काश्यां तु विना हिन्द्या न चलति व्यवहारः। सम्भाषणं तत्र हिन्द्यां आङ्गलभाषायामनिवार्य्यम्। अस्मिन् पत्रे यत्किञ्चिल्लिखितं तत्सर्वं ते कल्याणाय।

१८.१.१९६६ इत्याशिषः।
सिरिगेरे

***

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

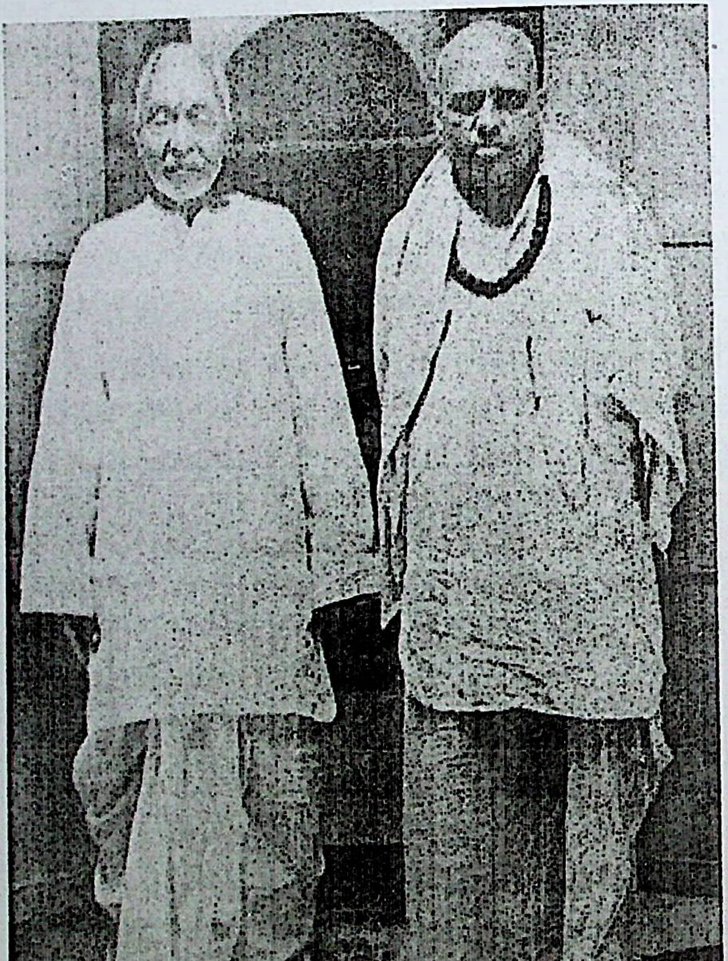

श्री गौरीनाथ पाठकः, श्री शिवकुमर शिवाचार्य महास्वामिनः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६

श्रीगुरुःशरणम्

श्रीविश्वरो विजयते

श्रीतरळबाळुपूर्णिमामहोत्सवावसरे उपहारीकृताभिनन्दन-पत्रोत्तररूपं वाराणसेयश्रीगौरीनाथपाठकविद्यासागरमहोदयानाम् अभिभाषणम्

१९५९

अयि माननीयाः सनातनधर्मसंरक्षणविलक्षणविचक्षणा यमनियमासन प्राणायामप्रत्याहार ध्यान धारणासमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठतपश्चरण-चर्याचक्रवर्त्त्यनाद्यविच्छिन्नगुरुपरम्पराप्राप्तमतस्थापनाचार्याः परमाराध्य-चरणाः परिषदध्यक्षाः श्रीमन्तो जगद्गुरवः श्रीशृङ्गेरिशंकराचार्यमहानुभावाः, विविधविधविद्यातमानमानसाः साहित्यसौहित्यपरिणतमतयः पण्डितमण्डला विद्वन्महाभागाः! नक्तन्दिनं नवनवतिचक्रचङ्क्रममाणा व्यवसायपरमाचार्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्यापारिचक्रचूडामणयः! श्रीतरलबालुजगद्गुरुबृहन्मठान्तेवासिनः, पूर्णिमामहोत्सव-स्वागतसमितिसदस्या अन्ये च समादरणीया बन्धुबान्धवाः सहृदया देव्यश्च।

परेसहस्रं क्रोशेभ्योऽभ्यधिके सुदूरवर्तिन्यस्मिन् प्रान्ते समायोजितायां विद्वद्वरिष्ठगरिष्ठायामस्यां महाजनसमवायसंसदि विद्यागन्धसम्बन्ध-विधुरस्याकिञ्चनस्याप्यस्य जनस्य अभिनन्दनपत्र-प्रदानादिना यदकारि तत्रभवद्भिः श्रीमद्भिर्भिर्लोकोत्तरं गौरवम्, तेन चिरायोपकृतः कृतोऽयं जनः कैः शब्दैः कया वा रीत्यात्मन आनृण्यं विदध इति विनिश्चेतुं यद्यपि सर्वथा असमर्थस्तथापि 'पृथुरित्थमथाणुरस्तु सा न विशेषे विदुषामिह ग्रहः' इति श्रीहर्षवचनं स्मारं स्मारमकिञ्चनतया केवलं मस्तकन्यस्तहस्तस्तबकं भवतां समेषां विदुषामाभारं सादरमुररीकुर्वन्तो वितरन्तश्च कोटिशो धन्यवादान् कथञ्चन मनस्तोषमावहामहे।

महामान्याः !

अद्येमामतिमहतीं विपश्चिदपश्चिमानां श्रीमतां परिषदमधिष्ठाय न केवलमहमात्मानं धन्यम्मन्यमेव मन्ये अपितु निजस्य जन्मनः साफल्यमपि नूनमनुजाने, तत्रापि च विशेषतस्तदग्रासनमलङ्कुर्वाणानां पूज्यपादजगद्गुरुश्रीकुडली-शृङ्गेरिशङ्कराचार्यमहास्वामिमहानुभावानां, महामहिमशालिनामन्येषां मठाधिपतीनां महात्मनां महतां, विश्वकल्याणनिदानैकभूतश्रुतिशास्त्रशेवधे रिरक्षयिषया सततम-ध्ययनाध्यापनैकनिरतानां सुरसरस्वतीसमाराधनसमासादितकुशाग्र- निशिताशेष-शेमुषीजुषां विपश्चितां श्रीतरलबालुजगद्गुरुबृहन्मठान्ते-वासिनां, पूर्णिमामहोत्सव-स्वागतसमितिसदस्यानाञ्च सविग्रहमनुग्रहं निर्विचिकित्सं विनिश्चिन्महे।

आदरणीया महानुभावाः !

अमरगवीवनविहरणपरायणानां विदितव्यस्ताव्यस्तासमस्तवस्तुतत्वानां भवतां पुरस्तात् किमिहोच्यते, यद्दूरदर्शिनां भवतामप्यविदितं भवेत्, तथापि संस्कृतभाषामधिकृत्य पञ्चषशब्दान् श्रीमतां पुरत उपस्थाप्याविरिरंसामहे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगुरुःशरणम्

इदन्तु प्रायः सर्वे एव जानन्ति यद् भारतीयानामस्माकमैहिकमामुष्मि-कञ्च यद्वस्तुतत्त्वं तत्सर्वं सरहस्यं संस्कृतभाषायामेव वरीवर्तीति तत्परिज्ञानं अन्यत्सर्वं विहाय सर्वप्रथमं सर्वात्मना अस्माभिः सर्वैर्विधेयम्।

भाषा नाम मनोभावाविर्भावको वर्णात्मकः शब्दः।सा च सर्वशुक्ला कापि देवीव कमपि सरसं दिव्यमालोकं अस्मभ्यो वितरति। इत्यत एवेयं सरस्वती देवीत्युच्यते। इयं हि देवी मणिदीपिकेव निरञ्जनया आलोकशक्त्या गृहगतानिव मनोगतान् भावान् प्रकाशयति, क्वचन विद्युद्दीपकेव तीव्रतीव्रया चाकचिक्यमय्यया अर्चिषा सूक्ष्मातिसूक्ष्मानपि स्वान्तःस्थितानाशयान् सुव्यक्तमाविष्करोति। क्वचिच्च सूर्यदीधितिरिव प्रखरेणालोकेन व्यवहितानपि भावान् अक्षिसमक्षमुपनयति। किमन्यदिहावोचाम। यदीयं भगवती सुरसरस्वती मामकीने अस्मिन् संसारे नास्थास्यत्तदा पशव इव मनुजा अपि महामोहान्धतमसि न्यमङ् क्ष्यन्। यदुक्तमाचार्यचरणेन महाकविना दण्डिना-

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

मनुजा हि भाषयैव आविर्भावयन्त्यात्मनो भावान् सर्वाणि प्रयोजनानि चान्योन्यम्, आविष्कुर्वन्ति च नानाविद्याः कलाः कौशलानि। यासां प्रभावेण मनुजाः देवैः सहापि स्पर्धन्ते, अनिर्वचनीयास्तासां विद्यानां प्रभावाः।

किञ्च, भाषा मिथः परिचयम् उत्पादयति, सौहार्दं जनयति, स्रजमिव समस्तमेतद् विश्वं ऐक्यसूत्रेणैकतायां ग्रन्थाति। परन्त्वियं भाषा सर्वेषु देशेषु सर्वेषु च कालेषु एकरूपा न भवति, देशे देशे काले काले च भिन्नभिन्ना एव दरीदृश्यते। एकैकेषु महादेशेष्वपि परस्परं भाषाणां मिथो महान्तो भेदाः सन्तोऽपि तत्तन्महादेशेषु यावन्तः क्षुद्रप्रदेशा वर्तन्ते, तावस्वपि प्रदेशेषु भाषाणां परस्परं बहूनि पार्थक्यानि समवलोक्यन्ते। इत्थं भाषाणां सूक्ष्मा अनुसूक्ष्मा बहवो भेदाः सन्ति, अत एव च प्रतिचतुःक्रोशं भाषा भिद्यत इति प्राचीनानामाचार्याणां प्रवादोऽनुश्रूयते। यद्यपीमे भेदा आपामरैः सर्वैर्लक्षितुं न शक्यन्ते तथापि सूक्ष्मेक्षिकया भाषाविद्भिरवश्यमेवावगम्यन्ते। एवं क्रमेण दूरदूरतरेषु स्थानेषु तावान् महान् महत्तरो वा भेदो जायते यावता सैवेयं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाषेयं भाषेति प्रत्यभिज्ञातुमपि न शक्यते। परन्तु अस्माकं संस्कृतभाषायामेषा विषमा समस्या न समुदेति।

इयं हि आ प्रादुर्भावकालमद्यावधि भूतभविष्यद्वर्तमानेषु त्रिष्वपि कालेषु, सर्वासु च अवस्थासु, सर्वेष्वपि देशविदेशेषु एकविधा नित्या निरञ्जना निर्विकारा स्थित्वैवेदमशेषं विश्वं व्याप्रियमाणा अस्थात्, अवतिष्ठते, आमहाप्रलयमेवमेव स्थास्यति च।

अपि च यां भाषां व्यवहरद्भिः जनैरन्यासां भाषाणां वर्णोच्चारणं विना प्रयत्नं कर्तुं शक्यते, सैव भाषाऽन्याभ्यः सर्वाभ्यो भाषाभ्योऽभ्यर्हिततमा। तस्या एवैकस्या अस्या व्याकरणस्य ज्ञानेन अन्यभाषा अपि सुखेनावबोद्धुं शक्यन्ते। यतो हि भारतवर्षीयाः सर्वा भाषाः संस्कृतमूलका अतः सर्वासां भाषाणां वृद्धप्रमातामह्या अस्या एवादौ अभ्यासेन भारतवासिभिरन्यासामपि भाषाणां वर्णाः सुखेनोच्चार्यन्ते। एतद्धि संस्कृतं देवानां भाषा। अत एवास्या 'गीर्वाणवाणी' त्यप्यपरमभिधानं वर्तते। तथाचोक्तमाचार्यचरणैर्दण्डि-महाकविभिः-

'संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।' इति। दूरेऽस्तु तावत् संस्कृतस्य कथा, संस्कृतमूलकासु लौकिकीष्वपि भाषासु यावन्तो वर्णा यावन्ति वा उच्चारणवैचित्र्याणि वर्तन्ते, आंगल-पारसीकादिभाषासु नापि तावन्तो वर्णा नापि च तावन्त्युच्चारणानि श्रूयन्ते।

अस्याः गीर्वाणगिर उत्कर्षहेतवोन्येऽपि बहवो गुणा वर्तन्ते। प्रथमतस्तु तावदत्रत्यं वाक्यं भाषान्तराणां वाक्येभ्यः संक्षेपेण प्रयुक्तं भवति, यद्धि मितं वाक्यं सर्वैः प्रशस्यते। यथोक्तं नैषधे-

'गरौ गिरः पल्लवनार्थलाघवे मितञ्च सारञ्च वचो हि वाग्मिता'

तत्प्रकाराश्च सन्धितद्धितसमासाः सन्यङादिप्रत्ययाश्च सन्ति। यथा -'नदी+एषा + अस्ति' इति षड्-वर्णात्मकं वाक्यं सन्धिप्रक्रिया 'नद्येषास्ती'ति चतुर्भिर्वर्णैः संक्षिप्यते, तद्धितप्रक्रियया यथा - पुरोरपत्यं पुमान् इति सप्तवर्णघटितं वाक्यखण्डं पौरव इति वर्णत्रयेण संक्षिप्तं भवति, समासप्रक्रियया यथा - मृगस्य लोचने इव लोचने यस्या इति त्रयोदशवर्णघटितं पदं मृगलोचनेति पञ्चवर्णघटितेन संक्षिप्यते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगुरुःशरणम्

एवं सन् प्रत्ययेन, यथा - 'कर्तुमिच्छति' इति पञ्चवर्णात्मकं वाक्यं 'चिकीर्षती' ति चतुर्भिर्वर्णैः संक्षिप्यते, यङ् प्रत्ययेन यथा -पुनः पुनः पचतीत्यर्थे पापच्यत इति स्वल्पाक्षरैरुच्चारयितुं शक्यत इत्यादीनि बहूनि उदाहरणानि अन्यभाषापेक्षया अस्या भाषाया लाघवे प्रदर्शयितुं शक्यन्ते।

अपि च भाषान्तराणां कारकापेक्षया संस्कृतकारकाण्यपि अधिकसंख्यकानि वर्तन्त इत्यतोऽपि संस्कृतवाक्यं संक्षिप्तं भवति। भाषान्तरेषु प्रायेण कर्तृकर्मातिरिक्तानि कारकाणि दृश्यन्ते, तेन तत्र-तत्र भाषायां प्रायः सम्प्रदानादिकाराणामर्थो वाचकशब्दैरेव प्रकाशनीया भवन्ति, संस्कृते तु तत्तद्विभक्तिभिरेव तेषामर्थः प्रकाशयन्ते।

आंग्लभाषायां करणादिकारकाभावात् करणार्थ By शब्देन, सम्प्रदानार्थः to शब्देन, अपादानार्थः From शब्देन, अधिकरणार्थः in शष्देन च प्रतिपाद्यते। अनया रीत्या भाषान्तरे करणादिकारकान्तराणामर्थप्रतिपादने महद् गौरवं जायते वाक्यञ्च दीर्घं भवति।

अन्यञ्च सकलज्ञानविज्ञानरत्नाकारायिताः समन्त्रकाः सब्राह्मणाः सशिरस्करहस्याश्चत्वारोऽपि वेदास्तथा तदर्थावबोधनसाधनीभूतानि शिक्षाव्याकरणादीनि च गीर्वाणवाण्यैव उपलभ्यन्ते। वेदाङ्गषट्कमध्ये प्रामुख्यं गतवता व्याकरणेनैव प्रकृतिप्रत्ययादिपरिज्ञानपुरःसरं व्यासासीनां महर्षीणां वाल्मीक्यादीनां महाकवीनाञ्च सुभाषितानि याथातथ्येनावगन्तुं शक्यन्ते।

महापुरुषचरितानि इतिहासपुराणादीनि, सदाचारप्रतिपादका मनुयाज्ञवल्क्यादयः स्मृतिग्रन्था अपि संस्कृतभाषाज्ञानमन्तरा न संविज्ञायन्ते, एवमेव शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनमिति प्राधान्येन परिकीर्तितस्य नित्यनैमित्तिकादिसकल-कर्मधर्मानुष्ठानसाधनीभूतस्य शरीरस्य नौरुज्यार्थं प्रवृत्तैश्चरकसुश्रुत-वाग्भटादिभिरार्तलौकानुजिघृक्षया संकलिता आयुर्वेदनिबन्धा अपि गीर्वाणवाणी निबद्धा एव सन्ति।

अनया विचारसरण्या यद्यप्यस्माकं निखिलमपि ज्ञानविज्ञान-सम्पत्तिसाधनं संस्कृतवाङ्मयं देवभाषायामेव निधापितमस्ति, यद्यपि सर्वासां भाषाणामियं मातेति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिदधतो विजातीया अपि पाश्चात्य-विपश्चिदपश्चिमा मुक्तकण्ठेनैनां प्रशंसन्ति। तथापि चैकतः किल येषामनया सह मनागपि कश्चन सम्वन्धो न वरीवृत्यते, हिन्दूधर्ममनन्यमानास्ते काबुलीया यावना अपि स्वाफगानस्थानीयविद्यालयेषु यत्र-तत्र परीक्षा-शिक्षाकक्षायामस्या अध्ययनाध्यापनयोरनिवार्यत्वं समुद्घोषयन्ति, तस्यैवापरत्र न केवलं हिन्दूधर्मं मन्यमानेषु अपितु हिन्दूधर्माभिमानिषु अस्मास्वेव केचनांग्लशिक्षादूषित-स्वान्तास्तामिमां 'मृतभाषेयमिति' वदन्तीत्यहो प्रभावः किल करालकलिकालहतकस्य।

सत्यं, नास्ति किल किमपि दुष्करं नाम समस्तवस्तुजातजनकस्य अघटितघटनापटीयसः सर्वजननमस्यस्यास्य कालस्य। योऽयं कौवेरैश्वर्यसदृशानपि धनकनकसम्पन्नान् श्रीमतो भिक्षुकतां, भिक्षुकापसदमपि निमेषमात्रादेव सार्वभौमतां प्रापयति, ब्राह्मणमपि शूद्रतामधिगमयति, शूद्रमपि ब्राह्मणभावमधिष्ठापयति, सुवर्णमपि भस्मसात्कुरुते, भस्ममपि सुवर्णभावमासादयति।

अयं हि कुत्र कदा कथं केन कीदृक् चिक्रीड, क्रीडति, क्रीडिष्यति वेति तदतीतानागतज्ञानामतिदूरदर्शिनां, सूक्ष्मातिसूक्ष्ममतीनामपि अविदितं, किम्पुनर्वर्तमानेऽप्यनभिप्रविष्टचेतसामतिस्थूलमतीनामेकदर्शिनामस्माकम्। यन्न वितर्कितं, न विचिन्तितं, न विभावितं, न विलोकितं, नानुभूतं, अस्माभिः, कदापि, तदपि भगवतः कालस्यैव महामहिम्ना करतलगतकुवलयदलवदनवरतं वितर्क्यते, विचिन्त्यते, विभाव्यते, अनुभूयते च। को नाम जानाति स्म यद् राज्याभिषेकायाहूतो मर्यादापुरुषोत्तमः श्रीरामचन्द्रः, चतुर्दशवर्षस्य कृते वनं प्रेषयिष्यते। को नाम जानाति स्म यत् साक्षात् धर्मराजो युधिष्ठिरः त्रयोदशवर्षपर्यन्तं वनवासार्थं एकवर्षपर्यन्तमज्ञातवासार्थंश्च वने गमयिष्यते। को नाम जानाति स्म, यत् कौरवराजसभायां वयोवृद्धानां धर्ममर्मज्ञानां विद्वद्वीराणां तथा महाराजस्य धृतराष्ट्रस्य, पितामहस्य भीष्मस्य, गुरोर्द्रोणाचार्यस्य, किमन्यत् पञ्चानामपि पतीनामक्षिसमक्षं राजभवनान्तःपुरनिवासिनी असूर्यम्पश्या रजस्वला महाराज्ञी द्रौपदी नग्नीकरिष्यते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगुरुः शरणम्

अहो! स्वप्नेऽपि यत्स्मर्तुं न शक्यते तदपि स्वयमेवोपतिष्ठते कालप्रसादेन। किमधिकनिहोक्तेन, यद्यन्नाम किमपि साधु वाऽसाधु वा सम्पद्यते तदेतदखिलमपि कालस्यैव भगवतश्चेष्टितमिति नैतदविदितं विदितवेदितव्यानां प्रेक्षावताम्।

तदेतत्सर्वं सम्यगालोच्य विश्वकल्याणकामनया श्रुतिशास्त्रशेवधे रिरक्षयिषया च इदमेव केवलमन्ते विनिवेद्य अद्य वयमिदमुपसंहरामः, यदस्माभिः संस्कृतवाङ्मयसंरक्षणे संवर्द्धने च सर्वात्मना प्रयतितव्यम्, संस्कृतभाषामध्येतुं वर्द्धयितुञ्च सर्वथा अभिलषितव्यम्, आपामरजने च तस्याः प्रचुरः प्रचारः कामयितव्यः, संस्कृतभाषामनधीत्य अन्यासु भाषासु श्रमोऽस्माभिर्नाभिपेतव्यः।

मान्याः!

यद्यस्मिन्नसारेऽपि संसारे सारायमानं सुरैरिवाहरहः पेपीयमानं सौधं रसं भवद्भिरपि आस्वादयितुं अभिलष्यते, घनसमयताडिद्विलासनाभोगपूर्णं कर्मफलभोगं वा चिराय परित्यक्तुमिष्यते, ब्रह्मानन्द-महोदधावुन्मज्जन-निमज्जनाऽनुभवानन्दमधिहृदय-मनुभवितुमधिमँस्यते, मलमूत्राद्यधिष्ठान-भूतेनानेन विनश्वरेण शरीरेण भवभयाम्भोधिपारं तरीतुममरभोदञ्चाधिगन्तुं यदि सञ्चिन्त्यते तदा चक्षुषी निमील्य सर्वैरेव संस्कृतमवश्यमध्येतव्यम्, श्रोतव्यं मन्तव्यम्, निदिध्यासितव्यम्।

श्रीमन्तः स्वागतसमितिसदस्याः, मठान्तेवासिनश्च !

किमधिकं ब्रूमो वयम् , इदमेवान्ते विनिवेद्यतेऽद्य , यद् भवतां परमपूज्यैः श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशिवकुमारशिवाचार्यमहास्वामिमहोदयैर स्मत्पुनर्न केवलं परमप्रियशिष्यकोटिप्रविष्टैरपि तु सुतनिर्विशेषैरप्येभिः क्रियमाणामस्मिन् प्रान्ते सामाजिक-धार्मिक-शैक्षणिककार्येषु लोकोत्तरामभूतपूर्वां क्रान्तिं , मठपीठाश्रयेऽध्येतुं निवसतां सहस्राधिकच्छात्राणां सौकर्याय चाविरतं क्रियमाणं सर्वविधमानुकूल्यं श्रावं श्रावं , तदेव पुनरद्य प्रत्यक्षं दर्शं दर्शञ्च मे मानसं नितान्तमन्दानन्दसंदोहमहोदधौ सामोदमवगाहनमनुभवति।

किमन्यत्, भक्तान्तेवसतां हिताय व्यापकं सांस्कृतिकं कर्म कुर्वतां, प्रान्ते सर्वतः प्रसृतयशःसौरभाणां, शाश्वतिकं समाजकल्याणं विदधतामेतेषामादर्शं कार्यजातं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोकैरनुकरणीयं गाम्भीर्यं, यत्र तत्र च्छात्रावासनिर्मित्सया विधीयमानमनवरतमविश्रमं परिश्रमं, आदरणीयामनूचानामविगीत-शिष्टाचारामार्यमर्यादाञ्च लोके लोकमेषामितोऽप्यधिकमभ्युदयं दीर्घायुष्ञ्च श्रीविश्वनाथचरणसरसीरुहेषु सादरमभ्यर्थयामहे।

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवीसस्यशालिनी।
देशोऽयमीतिरहितो भक्ताः सन्तु विनिर्भयाः।
शिष्या लभन्तां वैदुष्यं विजयञ्चापि सन्ततम्।
अधना धनमासाद्य जीवन्तु शरदां शतम्॥

॥ इतिशम्॥

★★★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीगुरुगणेशः ॥

श्रीमतां माननीयानां सहृदयधुरीणानां
प्राच्यप्रतीच्योभयविधविद्याविद्योतितस्वान्तानां सौजन्यधन्यजनुषां
श्रीमज्जगद्गुरुविश्वबन्धुमरुळसिद्धेश्वराचार्यसंस्थापित-
श्रीमदुज्जयिनीसद्धर्मसिंहासनाधीश्वराणां
तरळबालु श्रीमज्जगद्गुरु श्री ११०८
श्रीशिवकुमारशिवाचार्यमहास्वामिशिष्यकोटिप्रविष्टानां
तरळबाळु डॉ. शिवमूर्तिशिवाचार्यमहास्वामिमहानुभावानां
करकञ्जपुञ्जे
श्रीसद्धर्मसिंहासनपीठाधिरोहणापट्टभिषेकमहोत्सवप्रसङ्गे समर्प्यमाणः
शुभाशंसनप्रसूनोपहारः

(१)

परमशिवसमानः प्राप्तमानो धराया-
मविरतशिवशास्त्राशेषरक्षातिदक्षः।
जयति मरुळसिद्धस्तेजसा यः समृद्धः
प्रथमगुरुवरेण्यश्चारुकारुण्यपुण्यः॥

(२)

तदनु तदनु गामी तेलगुबालुसिद्धे-
श्वर इति विदितो यः श्रीमठोन्नायकार्यः।
विहितविपुलकार्यैःशिष्यवृन्दानुधारा-
धवलितधरणीन्द्रः शैवसिद्धेश्वरोऽभूत्॥
धवलितधरणीन्द्रः शैवसिद्धेश्वरोऽभूत् ॥

(३)

प्रसरदसमविद्याद्योतमाना गुरूणां
जगति जयति काचिच्चिन्मयी धोरणीयम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लसति शिवकुमारः श्रीशिवाचार्यवर्य-
स्तदिह महति पीठे सम्प्रदायाग्रयायी॥

(४)

तदाधिगतसुविद्यः शीलसौजन्यसिन्धु-
र्वंशयति शिवमूर्तिर्नित्यमध्यात्मविद्याम्।
स इह गुरुवराणां धर्ममभ्युन्निनीषु-
र्विदितविविधविद्याद्योतमानो विभाति॥

(५)

शिवपुरि कृतपूर्णाभ्यासवेदी विदेशे-
ष्वपि नवमवगम्य ज्ञानविज्ञानमार्गम्।
विमलवचनधाराधौतभक्तान्तरङ्गः –
कलयति नवपीठाचार्यपट्टाभिषेकम् ॥

(६)

इह हि मठवरेण्यालम्बनादुज्जिहानाः
दधति परमशोभां भूरि विद्यालयौघाः।
यदुदितसुयशोभिर्भात्यसौ भूतधात्री
किरणमसृणमुक्तामालिकाऽलङ्कृताङ्गी॥

(७)

सुविरचितविकासोत्तुङ्गदेवालयश्री-
र्दलितजनकृपार्द्रस्तत्र बद्धोपकारः।
सकलजनसमाजाभ्युन्नतौ बद्धदीक्षः
श्रयतु चिरमतन्द्रं पीठमाचार्यवर्यः॥

(८)

इह हि महति पीठे सिरिगिरौ चित्रदुर्गे
प्रथितपरमपीठे पूर्णिमातन्यमाने।
अवतु स शिवमूर्तिर्नूतनाचार्यधुर्यः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगुरुः शरणम्

शिवसरणिकृपाब्धिर्भारतीयान् समस्तान्॥

(९)

शिवपुरि बुधगौरीनाथशास्त्री तदीयं
शुभमतिशयमीशात्प्रार्थयन् तोषमेति।
तदनुगुणमिदानीं तस्य सूनुर्विनोदो-
प्यहमपि नवपुष्पस्त्रग्भिरभ्यर्चयामि।

इति शुभाकाङ्क्षसक्तौ
श्रीगौरीनाथपाठकः
विनोदरावपाठकश्च

शारदाभवनमगस्त्यकुण्डम्
वारणासी
माघशुद्धपूर्णिमा
पञ्चत्रिशून्यद्विमिताब्दे २०३५

★★★

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

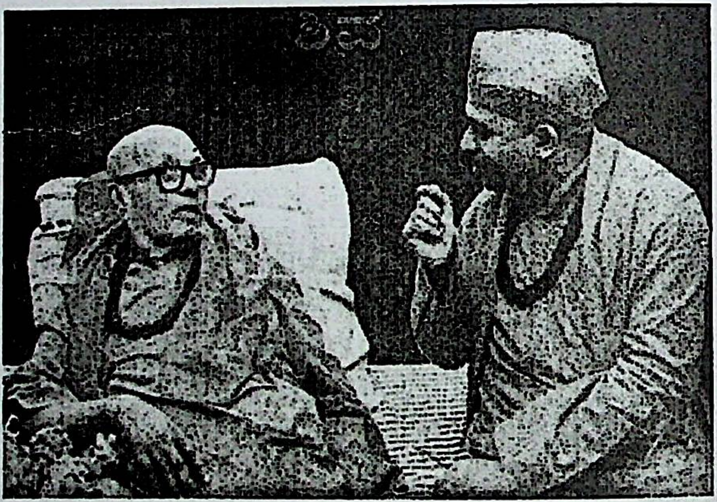

श्रीमदुज्जयिनीसद्धर्मसिंहासनाधीशाः

श्रीतरळबाळुजगद्गुरुश्रीशिवकुमारशिवाचार्यमहास्वामिनः

तथा च

तत्करकमलसञ्जाताः श्रीशिवमूर्तिशिवाचार्यमहास्वामिनः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनाधारे [illegible] कुमतिभर[illegible] कलावस्मिन्
गुरौ पूर्वे याते [illegible] गुरुवरे।
भवन्ते विश्वानां सरासि भ्रमतो [illegible]
अनालम्बोऽलभ्ये जगति [illegible] यदि भवे ॥१॥
तदा ध्याते [illegible] कुमतिनापि [illegible] तव पद
मोषि [illegible] प्रणतनिजभक्तान् अनलसान्।
अतोऽयं लोकोऽस्मिन् प्रभव इति निश्चेतुमभवत्
अपारात् संसारात् [illegible] कलियुगे ॥२॥
[illegible] प्रणतिमिति [illegible]
तपःपारावारे [illegible] महान्तः।
[illegible] तरन्ति मार्गो [illegible]
[illegible] अनेनैव भक्त्या [illegible] ॥३॥
[illegible] सद्भावो [illegible] भवतीति यदि।
गुरो लोके [illegible] ॥ [illegible]
अतोऽत्र लोकानां कुमतिकलिते सम्प्रति गणे
स तु त्याज्यो ऽवश्यं सुमतिभिरितीयं [illegible] ॥४॥
[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीविश्वनाथकविराजकृतः

साहित्यदर्पणः

विद्यावाचस्पति, श्रीशालग्रामशास्त्रि, साहित्याचार्यविरचितया

विमलाख्यया हिन्दीव्याख्यया विभूषितः

प्रथमपरिच्छेदात् षष्ठपरिच्छेदपर्यन्तः

प्रकाशक—

श्रीश्यामसुन्दरशर्मा भिषग्रत्न

श्रीमृत्युञ्जयऔषधालय

नं० ३२६ अमीनाबाद

लखनऊ

सं० १९७८ वि०

——:०:——

मुद्रक—

केसरीदास सेठ सुपरिंटेंडेंट, नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

मूल्य ३)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

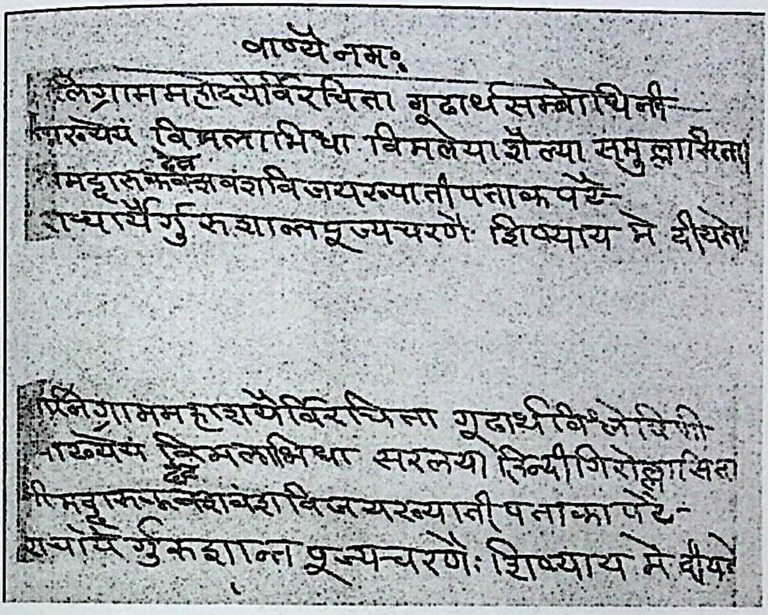

...ण्यै नमः

...लिग्राममहोदयैर्विरचिता गूढार्थसम्बोधिनी
...ख्येयं विमलाभिधा विमलया शैल्या समुल्लासिता
...मद्दास्कन्दवंशविजयख्यातीपताकापरैः
...चार्यैर्गुरुशान्तपूज्यचरणैः शिष्याय मे दीयते

...लिग्राममहाशयैर्विरचिता गूढार्थविबोधिनी
...ख्येयं विमलाभिधा सरलया हिन्दीगिरोल्लासिता
...मद्दुस्कन्दवंशविजयख्यातीपताकापरैः
...चार्यैर्गुरुशान्तपूज्यचरणैः शिष्याय मे दीयते

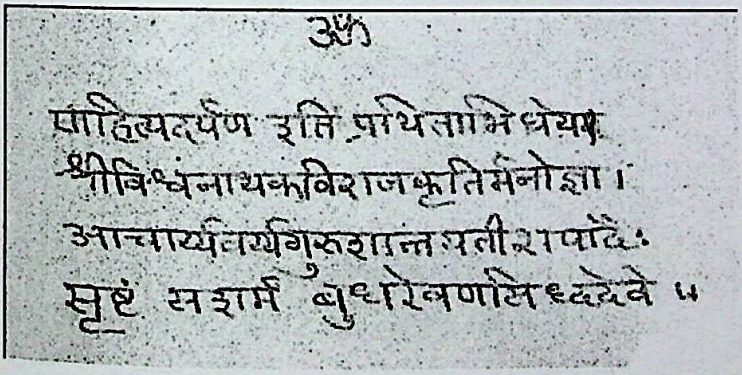

ॐ

साहित्यदर्पण इति प्रथिताभिधेया
श्रीविश्वनाथकविराजकृतिर्मनोज्ञा।
आचार्यवर्यगुरुशान्तयतीशपादैः
सृष्टं सशर्म बुधरञ्जनासिद्धये ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

PANCHADASHÎ

With the Commentary of Râmkṛishṇa.

EDITED BY

WÂSUDEV LAXMAṆ S'ÂSTRÎ PANSÎKAR.

Fifth Edition.

PUBLISHED BY

PÂNDURANG JÂWAJÎ,

PROPRIETOR OF THE 'NIRNAYA-SAGAR' PRESS,

BOMBAY.

1926.

Price 1 Rupee.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

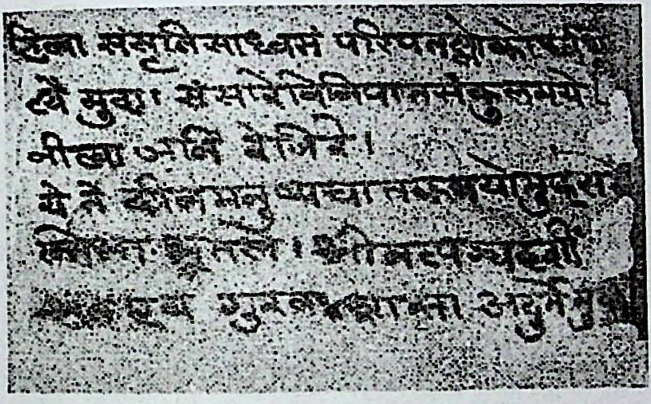

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

The

HARIDAS-SANSKRIT-SERIES.

6

VEDĀNTA PARIBHĀSHĀ

By

DHARMARĀJĀDHVARINDRA.

With a Commentary Arthadīpikā
of
S'ivadatta Pandit.

Edited with notes etc.
BY
Tryambakarāma S'āstrī Vedāntāchārya.
And
Nyāyopādhyāya Ḍhuṇḍhirāja S'āstrī.

PRINTED, PUBLISHED & SOLD BY
JAI KRISHNADAS-HARIDAS GUPTA,
Chowkhamba Sanskrit Series office, Vidya Vilas Press,
North of Gopalmandir, Benares City.
1927.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

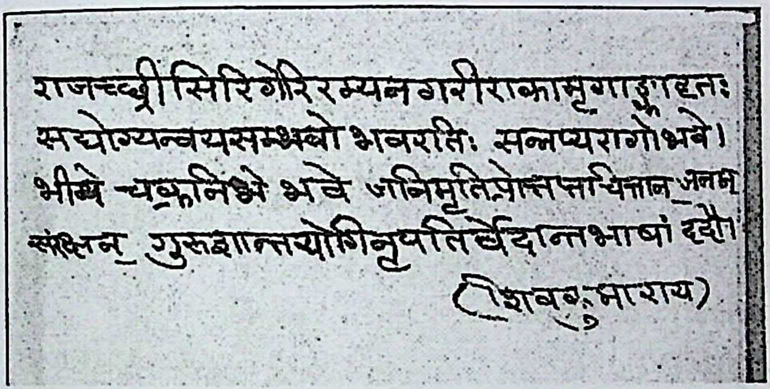
राजच्छ्री सिरिगेरिरम्यनगरीराकामृगाङ्काहृतः
स्योग्यन्वयसम्भवो भवरतिः सन्नप्यरागोऽभवे।
भीमे चक्रनिभे भवे जनिमृतिप्रोत्तप्तचेताः अनघ
संक्षिन्न गुरुशान्तयोगिनृपतिर्वेदान्तभाषां ददौ।
(शिवकुमारस्य)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

आनन्दाश्रमसंस्कृतग्रन्थावलिः ।

ग्रन्थाङ्कः २२

श्रीविद्यारण्यस्वामिविरचितः

श्रीमच्छंकरदिग्विजयः ।

अद्वैतराज्यलक्ष्मीटीकान्तर्गतविशेषविभागटिप्पणीभिस्तथा धनपतिसूरिकृतडिण्डिमाख्यटीकया च समेतः ।

एतत्पुस्तकमानन्दाश्रमस्थपण्डितैः संशोधितम् ।

तच्च

बी. ए. इत्युपपदधारिभिः

विनायक गणेश आपटे

इत्येतैः

पुण्याख्यपत्तने

श्रीमन् ' महादेव चिमणाजी आपटे ' इत्यभिधेय-महाभागप्रतिष्ठापिते

आनन्दाश्रममुद्रणालये

आयसाक्षरैर्मुद्रयित्वा

प्रकाशितम् ।

तृतीयेयमङ्कनावृत्तिः ।

शालिवाहनशकाब्दाः १८७४

ख्रिस्ताब्दाः १९५२

(अस्य सर्वेऽधिकारा राजशासनानुसारेण स्वायत्तीकृताः) ।

मूल्यं रूपकषट्कम् (६) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

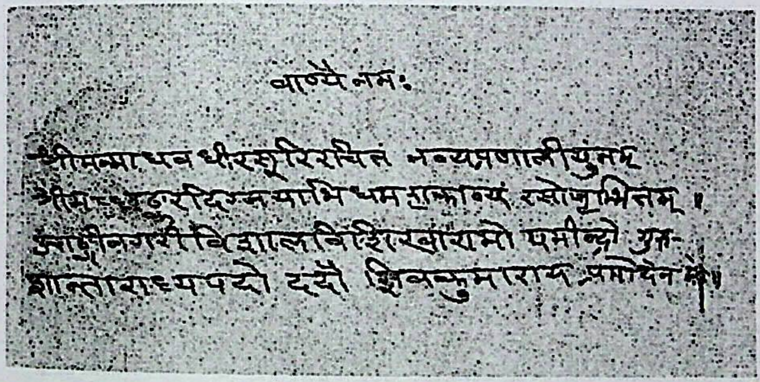

वाण्यै नमः

श्रीमन्माधवधीरसूरिरचितं नव्यप्रणालीयुतम्
श्रीमच्छङ्करदिग्जयाभिधमहाकाव्यं रसोज्जृम्भितम् ।
काशीनगरीविशालविशिखायामो धर्मीन्द्रो गुरु-
शास्त्राराध्यपदो ददौ शिवकुमाराद् प्रमोदेन मे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीः ।

भाषापरिच्छेदः ।

पुराविविधविरुदावलीविराजमानमानोन्नतमहाराजाधिराजमिथिलेशश्री
मल्लक्ष्मीश्वरसिंहबहादुर-जी-सी-आइ-ई महोदयानां ज्येष्ठ-
धर्मपत्न्याः श्री५ मल्लक्ष्मीवतीत्यन्वर्थाख्याविभूषि-
ताया धर्माधिकारिपदवीमनुसंदधता,
साम्प्रतञ्च मुजफ्फरपुरीय धर्म्मसमाजसंस्कृतमहाविद्यालये कर्म्म-
काण्डाध्यापकपदमलङ्कुर्वता
मैथिलझोपाख्यपण्डितश्रीमुकुन्दशर्मणा सङ्कलितया
अन्वितार्थप्रदीपिकाख्यया व्याख्यया
संवलितः
तेनैवोक्तपण्डितवरेण सुपरिष्कृतः संशोधितश्च.

(द्वितीयावृत्तिः)

स एष
मुम्बय्यां
पाण्डुरङ्ग जावजी
इत्येतैः स्वीये निर्णयसागराख्यमुद्रणालये मुद्रयित्वा प्रकाशितः.

शाकः १८४४ सन १९२२.

मूल्यं १० आणकाः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

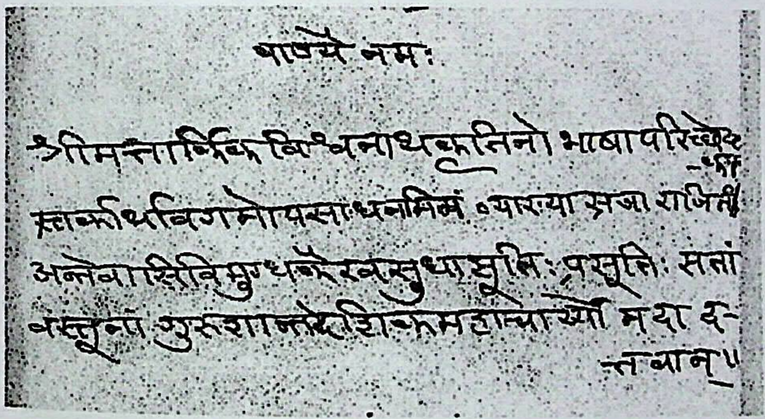

वाण्यै नमः

श्रीमत्तार्किकविश्वनाथकृतिनो भाषापरिच्छेद -गां
कारिकार्थविगमोपसाधनमिमं व्याख्या सभा राजितां
अन्तेवासिविमुग्धकैरवसुधासूतिः प्रसूतिः सतां
वस्तूनां गुरुशान्तदेशिकमहात्मार्यो मया द-
त्तवान्॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

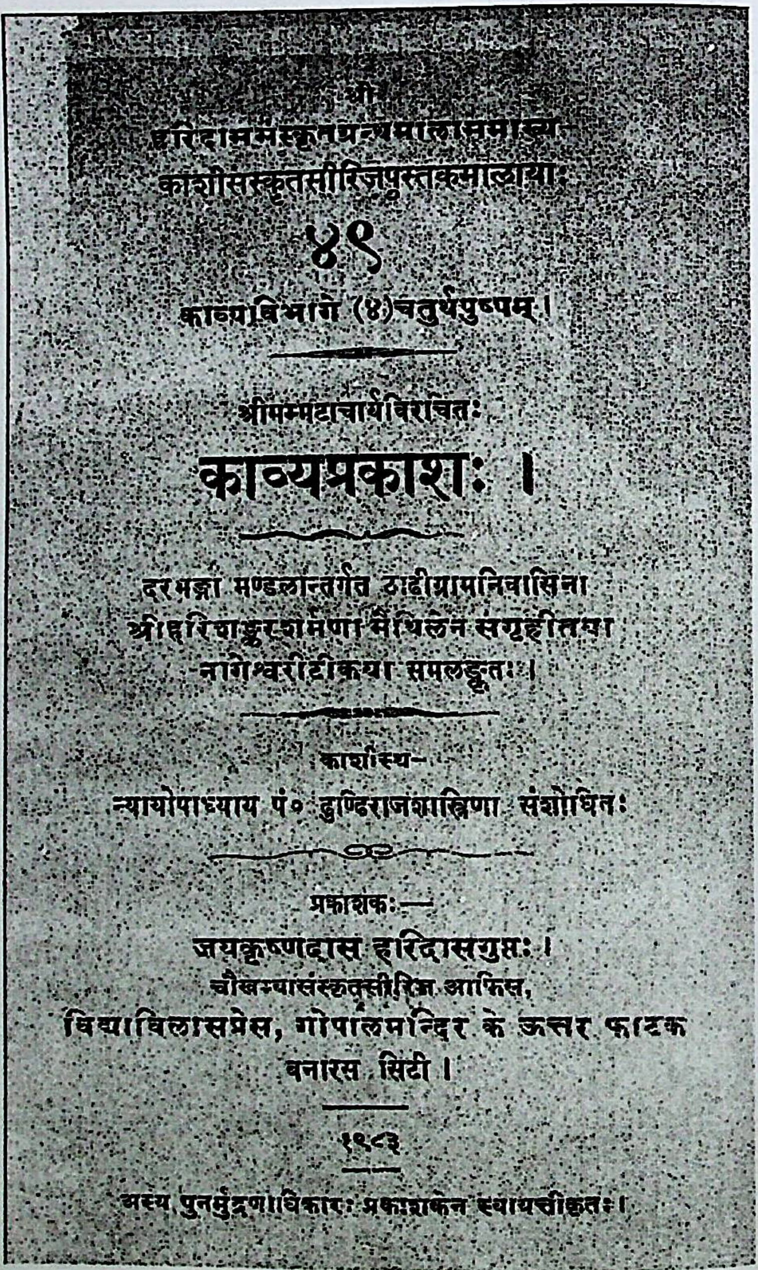

श्री

हरिदाससंस्कृतग्रन्थमालासमाख्य-
काशीसंस्कृतसीरिज़पुस्तकमालायाः

४९

काव्यविभागे (४) चतुर्थपुष्पम् ।

श्रीमम्मटाचार्यविरचितः

काव्यप्रकाशः ।

दरभङ्गा मण्डलान्तर्गत ठाढीग्रामनिवासिना
श्रीहरिशङ्करशर्मणा मैथिलेन संगृहीतया
नागेश्वरीटीकया समलङ्कृतः ।

काशीस्थ-
न्यायोपाध्याय पं० दुण्ढिराजशास्त्रिणा संशोधितः

प्रकाशकः—
जयकृष्णदास हरिदासगुप्तः ।
चौखम्बासंस्कृतसीरिज आफिस,
विद्याविलासप्रेस, गोपालमन्दिर के उत्तर फाटक
बनारस सिटी ।

१९८३

अस्य पुनर्मुद्रणाधिकारः प्रकाशकेन स्वायत्तीकृतः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

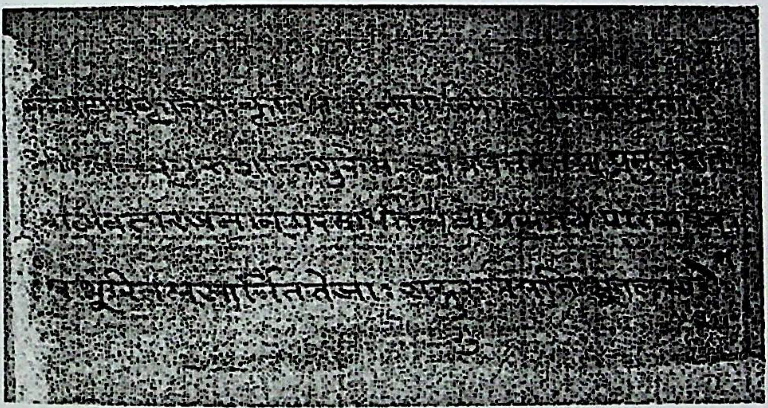

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

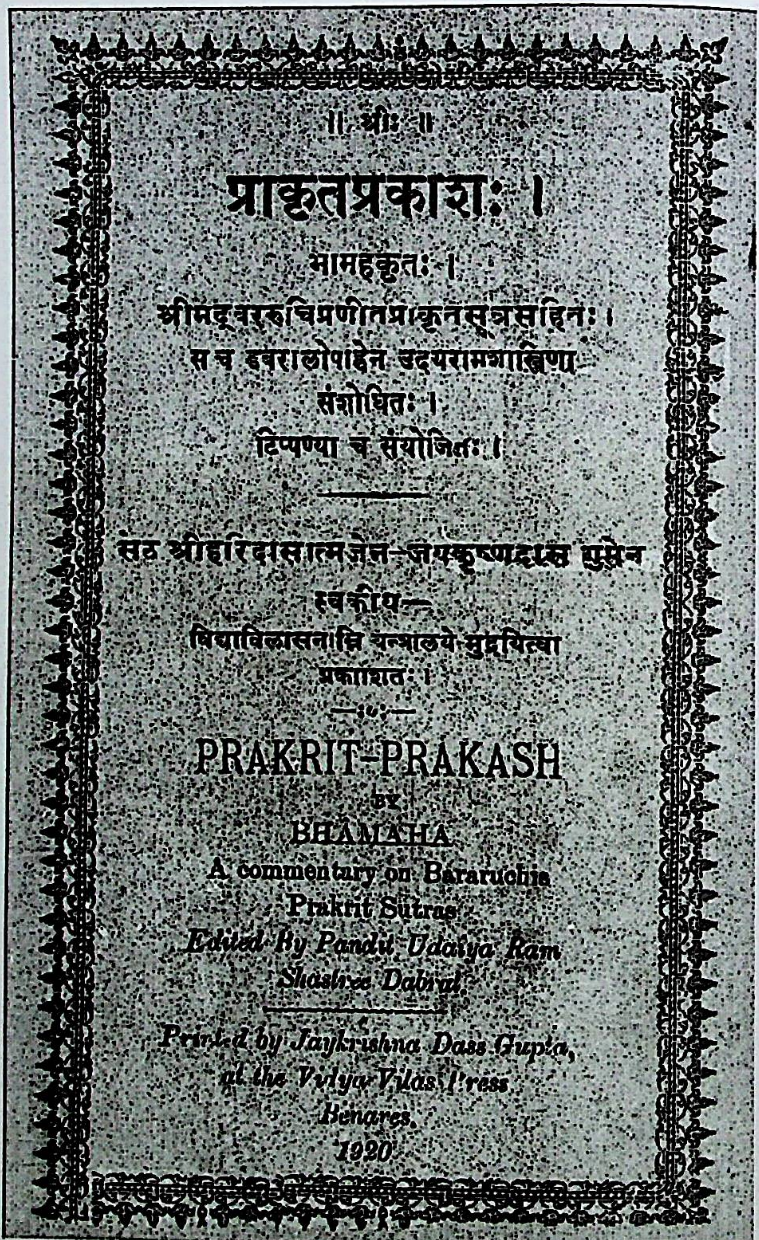

॥ श्रीः ॥

प्राकृतप्रकाशः ।

भामहकृतः ।

श्रीमद्वररुचिप्रणीतप्राकृतसूत्रसहितः ।

स च डबरालोपाह्वेन उदयरामशास्त्रिणा

संशोधितः ।

टिप्पण्या च संयोजितः ।

सठ श्रीहरिदासात्मजेन–जयकृष्णदास गुप्तेन

स्वकीय–

विद्याविलासनाम्नि यन्त्रालये मुद्रयित्वा

प्रकाशितः ।

—:o:—

PRAKRIT-PRAKASH

BY

BHAMAHA

A commentary on Bararuchis

Prakrit Sutras

Edited By Pandit Udaiya Ram

Shastree Dabral

Printed by Jaykrishna Dass Gupta,

at the Vidya Vilas Press

Benares.

1920

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीदारुकार्यकुलकैरवकैरवेशौ:

वच्छेदकावच्छिन्नसामान्यासम्बन्धिनिरूपितहेतुसम्बन्धिका या या प्रतियोगिता तदनवच्छेदकं यत्साध्यतावच्छेदकं तदवच्छिन्नसाध्यसामानाधिकरण्यं व्याप्तिरिति दीधितिकृता चिन्तामणिसिद्धान्तलक्षणस्यार्थं निष्कृष्य तत्रापि वह्निमान् धूमादित्यादावसम्भवस्य प्रतियोगिताव्यक्तिषु साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्वं निवेश्य स्वावच्छेदकसम्बन्धेनेत्यत्र साध्यतावच्छेदकसम्बन्धेनेत्युक्त्या वा निवारणेऽपि कालो घटवान् कालपरिमाणादित्यादौ अव्याप्तिं प्रदर्श्य [८]स्वावच्छेदकसम्बन्धेन स्वावच्छेदकावच्छिन्नसामान्यासम्बन्धिनिरूपकहेतुसम्बन्धिकप्रतियोगितासामान्ये साध्यतावच्छेदकसम्बन्धावच्छिन्नत्व-यद्धर्मनिष्ठपर्याप्तावच्छेदकत्वोभयाभावस्तद्धर्मावच्छिन्नसाध्यसामानाधिकरण्यमित्यर्थं कृतवन्तः । इत्थं चोक्तस्थले समवायादिसम्बन्धावच्छिन्नघटाद्यभावप्रतियोगितामादाय प्रसिद्धिसंभवेनाव्याप्तिवारणं सुलभमेव । घटवानित्यज्ञानत्वादित्यादौ वृत्त्यनियामकविषयतादिसम्बन्धेन साध्यतायामव्याप्तिवारणं च वृत्तिनियामकसम्बन्धवत् वृत्त्यनियामकसम्बन्धस्याप्यभावप्रतियोगितावच्छेदकत्वं स्वीकुर्वद्भिर्मथुरानाथतर्कवागीशैर्जगदीशतर्कालङ्काराणामुक्त[४]लक्षणार्थकरणप्रयासो व्यर्थतामापादितः । एवं तादात्म्यादिवृत्त्यनियामकसम्बन्धेन साध्यत्वे हेतुत्वे चाव्याप्तिवारणायाधिकरणत्वं वृत्तित्वमपहाय सम्बन्धित्वविवेशं शोभनं मन्वानेन मथुरानाथेन दीधितिकाटीकायाः ताद्द-

---

समस्य विद्वद्वरस्योक्तश्रीरामतर्कालङ्कारस्यैव सविधे न्यायशास्त्रमधीत्य माथुरीतिनाम्ना सुप्रथितां मणिग्रन्थस्य व्याख्यां चक्रे । सर्वासु च चिन्तामणिव्याख्यासु अधिकं सरलतया नास्यास्तादृग् प्रचारो नवद्वीपेऽभूद्यथा जागदीश्याः । निम्नलिखिता ग्रन्था मथुरानाथतर्कवागीशेन निबद्धाः—

(१) तत्त्वचिन्तामणिरहस्यम् (माथुरी)
(२) मण्यालोकरहस्यम् ।
(३) दीधितिरहस्यम् ।
(४) सिद्धान्तरहस्यम् ।
(५) लीलावतीप्रकाशरहस्यम् ।
(६) लीलावतीप्रकाशदीधितिरहस्यम् ।
(७) बौद्धाधिकाररहस्यम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाकविश्रीबाणभट्टतत्तनयविरचिता

कादम्बरी ।

महोपाध्यायभानुचन्द्रसिद्धचन्द्राभ्यां कृतया टीकयानुगता ।

काशीनाथ पाण्डुरङ्ग परब

इत्यनेन

पाठान्तरैः संयोज्य संशोधिता ।

तस्या इयं सप्तमावृत्तिः

पणशीकरोपाह्वविद्वद्वरलक्ष्मणशर्मतनुजनुषा

वासुदेवशर्मणा संस्कृता ।

सा च

शाके १८४९ वत्सरे

मुम्बय्यां

निर्णयसागरयन्त्रालयाधिपतिना मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीता ।

मूल्यं ६ रूप्यकषट्कम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

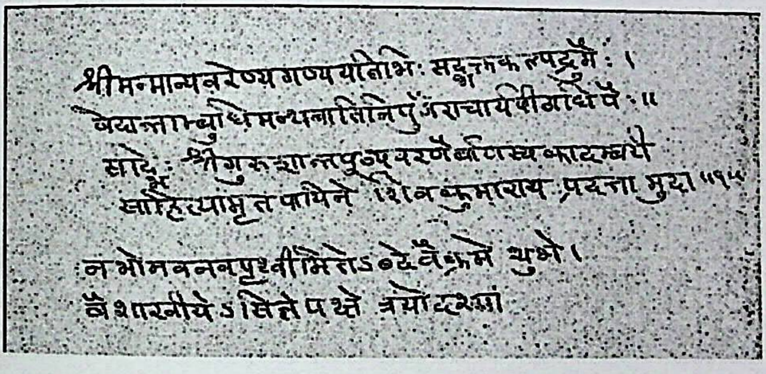

श्रीमन्मान्यवरेण्यगण्ययतिभिः सद्गुणकल्पद्रुमैः ।
जयज्ञाम्बुधिमन्थनासिनिपुणैराचार्यधीगाधिपैः ॥
साधुः श्रीगुरुशान्तपुण्यचरणैर्बालस्य कारुण्यतो
साहित्यामृतपायिने शिवकुमाराय प्रदत्ता मुदा ॥१५

नभोमवननपृथ्वीमितेऽब्दे वैक्रमे शुभे ।
वैशाखीये ऽसिते पक्षे त्रयोदश्यां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तर्कसंग्रहः

श्रीमदन्नम्भट्टविरचितः

ग्रन्थकृत्प्रणीतया

तर्कदीपिकया

श्रीगोवर्द्धनमिश्रकृतया

न्यायबोधिन्या

सिद्धान्तमुक्तावली-प्रभादिनिबन्धकारेण

काशीहिन्दूविश्वविद्यालयाध्यापकेन

श्रीहरिहरशास्त्रिणा

प्रणीतया

ध्रुवपदाख्यविवृत्या च

समेतः

विवृतिकारेणैव

संस्कृतश्च

—

प्रकाशकः—

नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स,

बुकसेलर्स, चौक, बनारस।

१९३० मूल्यम् १)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सते शिवकुमाराय तर्कारण्यविविक्षवे
गुरुशान्तचरणैरेष दीयते तर्कसङ्ग्रहः

नभोनवपृथ्वीमितेऽब्दे वैक्रमे शुचे
वैशाखीये सिते पक्षे ह्यारोभिचमनूकम ५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

M. Shivakumar Sharma

लघु-रामायणम्

वाल्मीकीयम्

(त्रि-साहस्री संहिता)

आदि-काव्य-वचनैः (गुरुशास्त्री नाम)

माद्राज-प्रदेश-स्थ-ब्रह्मपुर-कलेज-पूर्वतनाध्यक्ष-कलिकाता-सिटि-कलेज-
भूतपूर्वाध्यापक-संस्कृतसोपानादि-व्याकरण-प्रणेतृ-

श्रीगोविन्दनाथ-गुह-एम्. ए.-प्रोक्तम्

'यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले,
तावद् रामायण-कथा लोकेषु प्रचरिष्यति'

तृतीय संस्करणम्

कलिकातायाम्

१०८-नारकेलडाङ्गा-मेन्-रोड् स्वर्ण-यन्त्रे श्रीलक्ष्मणामयाचार्येण मुद्रितम्

Publisher :

Govindanath Guha, M.A.

39, Harrison Road, Calcutta.

Agents :

Calcutta : Bhattacharyya & Son, 65, College Street.

LAHORE :

Mehr Chand Lachhman Das | **Motilal Banarsi Das**
Said Mitha Bazar. | *Said Mitha Bazar.*

३।०

Rs. 3/4

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्रावलिः

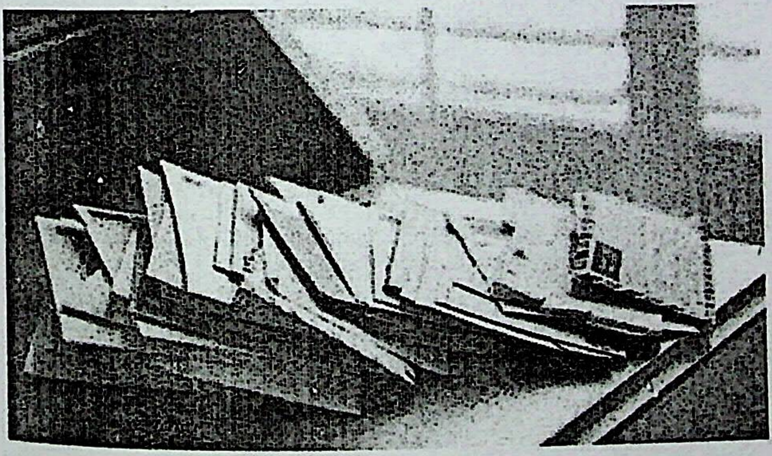

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

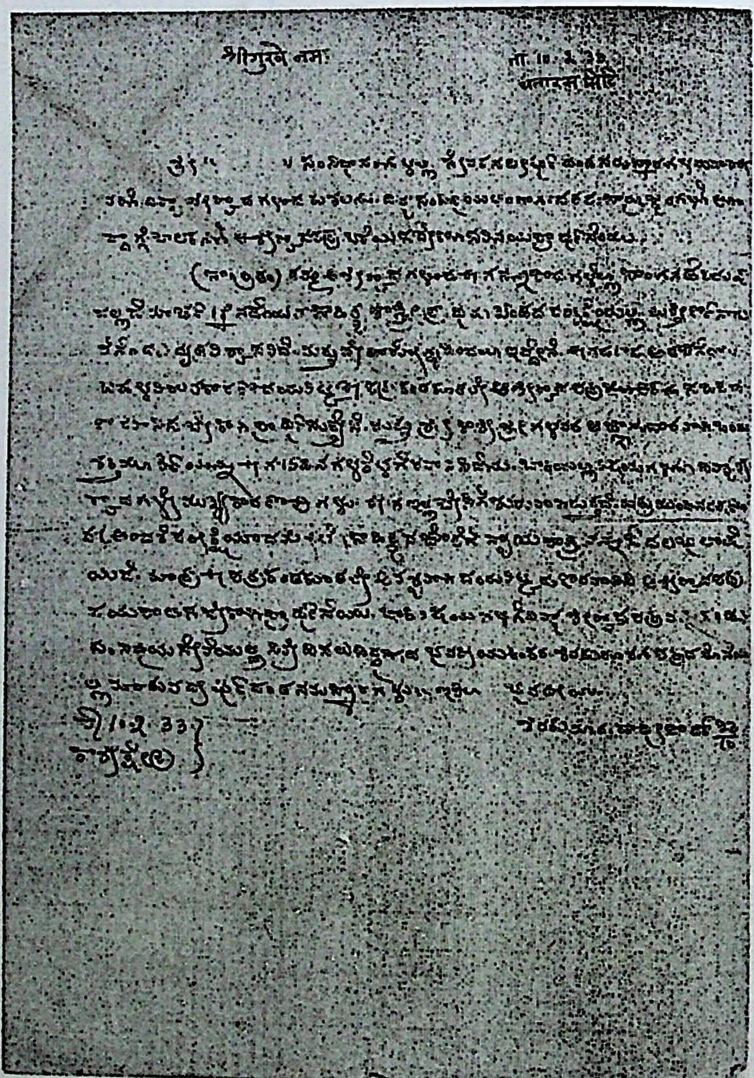

श्रीगुरवे नमः

ता. 10.2.33

[illegible]

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हर ॐ

अनाधारे शम्भौ स्वमतिभरदाक्षांत सविनये
गुरौ पूर्वे शान्ते कुरुत निजबुद्धिं गुरुवरे ।
अनन्ते विद्यानां सरसि निमतो भो बुधगण ।
अनालम्भोऽलक्ष्यो जगति शपथस्ते यदि भज ॥१॥
सदा ध्याने तिष्ठन् कुमतिरपि जाने तव रहः
करोषि त्वं यावत् प्रणतनिजभक्तान् अनलसान् ।
अतोऽयं लोकोऽस्ति प्रभव इति निश्चेतुमभवत्
अपारात् संसारात् त्वमिव नान्योऽत्र कलियुगे ॥२॥
शिवे लिङ्गे त्वस्य प्रणतिरिति कुं यतिवरे
तपःपारावारे तरितसुशरीरे महति च ।
अगण्ये सद्भक्तैः रचितयतिमार्गे परतरे
अयं आत्मा अनेनैः भक्त्या स्थितमहो साधुधिया ॥३॥
गुरूणां सद्भावो झटिति भवतीतीह वदति ।
गुरोर्लोके वाचो ~~ह्यसहितविदोषा असुलभाः~~ ॥ स्खलनरहितास्तु प्रतिभाः ।
अतोऽत्र लोकानां कुमतिलिखिते सम्प्रति गणे
स तु त्याज्यो ऽवश्यं सुमतिभिरितीयं प्रसरता ॥४॥

शिवकुमार शास्त्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

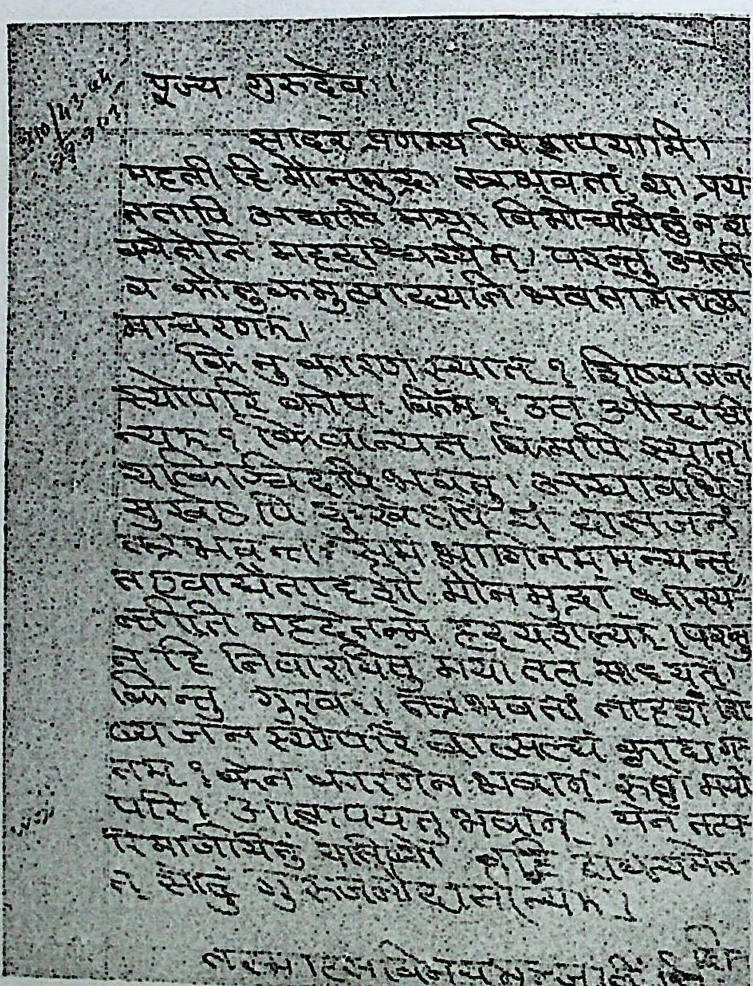

पूज्य गुरुदेव!

सादरं प्रणम्य विज्ञापयामि।
महती हि मे [illegible] भवतां [illegible]
[illegible] बिमोचयितुं न [illegible]
[illegible] परन्तु [illegible]
[illegible] भवतामेतत् [illegible]
आचरणम्।
किन्तु कारणं स्यात्? शिष्यजन[illegible]
[illegible] कोप: किम्? उत औदासी[illegible]
[illegible] किमपि स्यात्।
[illegible] भवतु। अद्यावधि [illegible]
[illegible]
[illegible] आगमनमभ्यन्त[illegible]
[illegible] मौनमुद्रा [illegible]
[illegible] परन्तु
न हि [illegible] मया तत् सह्यते।
किन्तु गुरुवर! [illegible]
[illegible]
[illegible] कारणेन भवान् [illegible]
[illegible] आज्ञापयतु भवान्, येन तस्य
[illegible]
[illegible]

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible] पादमूले ऽर्पये।
[illegible] बहवः पत्रम् [illegible] विषया
लिखिता आसन्। परन्तु [illegible] सर्वतो
[illegible]न्यम् ।

इदानीमपि [illegible]
[illegible] प्रेषणीयानीति [illegible] लिखेत। एत
[illegible] पुस्तकानि प्रेषणीयानि।

उत्तररामचरितम् १ ([illegible])
[illegible] २ (")
श्रीहर्षचरितम् २ ([illegible])
महानाटकम् २
[illegible] १ ([illegible])
मालतीमाधवम् १ (")

इमानि पुस्तकानि शीघ्रं प्रेषणीयानि।

[illegible signature]

[illegible] तारकबालु [illegible]
[illegible] P.O.
[illegible]

२४/९/७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रिय वत्साः । 5.1-12.63

युष्माकं पत्रेषु व्याख्यानुवादयोः बहवो दोषाः
भवन्ति । ये दोषा एकवारमस्माभिर्विशुद्धाः क्रियन्ते,
ते दोषाः पुनरपि आगच्छेयुर्यथा तथा यतिष्यत।
तस्मादद्य युष्माकं लिखितानि पत्राणि निवृत्य युष्म-
त्समीपमागच्छन्ति, तदा प्रथमं तानि हस्ते गृही-
त्वा यत्र यत्र दोषाः परिशुद्धीकृता वर्तन्ते
तान् पश्यत।

लिङ्गवचनविभक्तीनां ज्ञानं युष्माकं स्वल्प-
मपि नास्ति। विशेष्याणां पदानामेव लिङ्गवचनवि-
भक्तयो विशेषणानां भवन्ति। इत्येतत्सदा स्मर्तव्यम्।
साहित्यदर्पणे दोषालङ्कारपरिच्छेदौ स्तः। तत्र
युष्माकं दोषालङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि
केवलानि कण्ठस्थानि कर्तव्यानि। प्रथमं
सूत्रं तथा तल्लक्षणोदाहरणानि कण्ठस्थानि
कुरुत। कदाचिदवकाशो लभेत चेत्
पाठयिष्यामः। प्रथमं द्वावपि परिच्छेदौ
लक्षणोदाहरणभागौ कण्ठस्थौ स्याताम्।
मध्ये तत्र शास्त्रीयविषयो वर्तते स युष्माकं ना-
वश्यको न भवति। तस्मात् यथास्माभिर्नि-
र्दिष्टं वर्तते तथा कार्यम्।—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युष्माभिः प्रेषितानि लेखनानि सर्वाणि प्रतिप्रेषितानि।

प्रतिलिपिं डॉ० शर्मा लिखित्वा प्रेषयन्तु। अथवा एकस्मिन् पृष्ठे अनुवादः एकस्मिन् पृष्ठे व्याख्या। इति प्रकारं लिखन्तु।

श्लोकप्रणामाभिप्रायादिशब्दाः [illegible] [illegible]। सुखं च [illegible] तेषां प्रयोगं नपुंसके कुरुत। कोऽपीह [illegible] अर्जुन। इति लिखितव्ये [illegible] इति [illegible] लिखितवानस्ति। [illegible] "भवदीयः" इत्यस्य लिखितव्ये "भवदीया" इति लिखितवान्। [illegible] अनुवादः [illegible] शब्दः नपुंसके [illegible]। एवं दोषाणाम् [illegible] प्रतिलिप्यम्। [illegible]

भवदीयः

ता० ८.१२.९२

पत्र ०७

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ಗೇ. ನಂ. 528

—॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥—

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನೀ ಸಾಧುಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ ಸುಕ್ಷೇತ್ರ,
ಶ್ರೀ ಎಲೆಯಂಕ ಮಠವಾಸ್ತವ್ಯ ಪಾಲ್ಕುರಿಕೆ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನದ
ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನದಿಂದಾ.

[illegible]

लेखे मे ये दोषाः युष्माकं स्युः [illegible] तानि
स्वकीयानि [illegible] । भगवत्कृपया परिशुद्ध
[illegible] । सदा युष्माकम[illegible]
मेव सर्वेषां [illegible]
मनोरथं सफलं [illegible]
[illegible]

आनन्दय [illegible]
[illegible]

[illegible]

2.12.53.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रियवत्स [illegible] शु: [illegible]
[illegible] ता. ६-७-८ [illegible] लिखितानि पत्राण्य-
[illegible] जाताः बहवो भवन्ति तत्र
केचिद्धातवः, केचित् [illegible] भवन्ति। तत्र
[illegible] लिखन्ति। [illegible]
[illegible] स्त्रीलिङ्गः [illegible]
[illegible] न विदितम्। [illegible]
[illegible] पुंलिङ्ग एव। [illegible] नपुंसके [illegible]
प्रयोगो [illegible]। परिशोधितं मया बहुवारम्।
"चतुर्थोऽङ्कः" इति लिखितव्यम्। [illegible] चतु-
र्थाङ्कः" इति। परन्तु "चतुर्थोऽङ्कः" [illegible]

[illegible] "भवदीया" इति लिख्यते। [illegible]
पुंसको [illegible], येन "हिताभिलाषि" इति लिखि-
तम्। भवदीयम्, भवदीया, भवदीयः" इति लि-
ङ्गत्रये [illegible]। तत्र [illegible]
[illegible] प्रयोगः [illegible] हिताभिलाषी, हिताभिला-
षिणी, हिताभिलाषि" इति लिङ्गत्रये [illegible]
[illegible] पुंलिङ्गे [illegible]
[illegible] नपुंसके [illegible]। [illegible]
[illegible] सर्वे [illegible]
[illegible] भवदीय:
१०. प. वि. [illegible] १०.१२.५३ [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

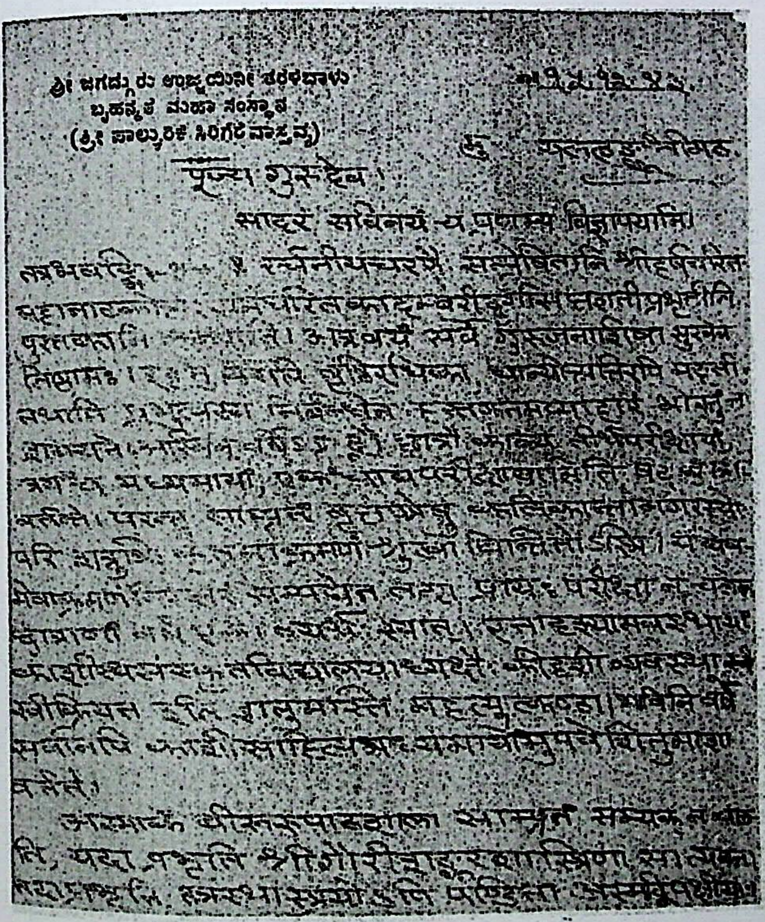

[illegible]

पूज्य गुरुदेव !

सादरं सविनयं च प्रणम्य विज्ञापयामि।

[illegible] आश्चर्यं सर्वे गुरुजनाशिषा सुखेन [illegible]

[illegible]

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

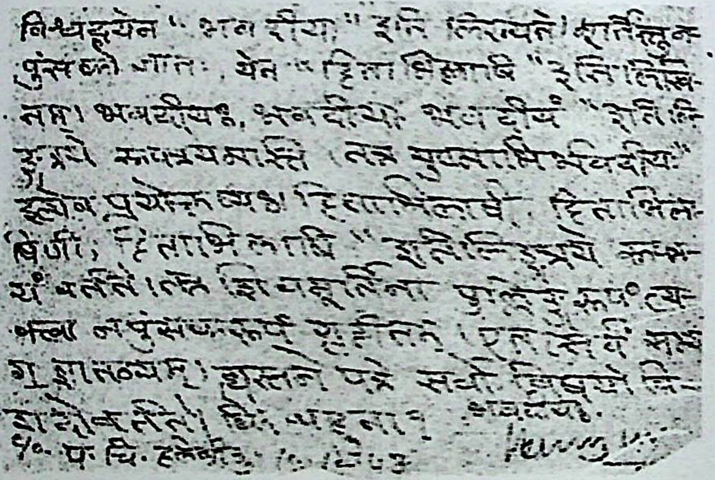

निश्चयद्वयेन "भवदीया" इति लिख्यते। यतस्तु न
पुंसको जातः, येन "हिताभिलाषि" इति लिख-
नम्। भवदीयः, भवदीया, भवदीयं इति लि-
ङ्गत्रये रूपत्रयमस्ति। तत्र पुरुषोऽपि भवदीयः
स्त्रीत्व प्रयोगे च [illegible] हिताभिलाषी, हिताभिला-
षिणी, हिताभिलाषि इति लिङ्गत्रये रूप-
त्रयं भवति। [illegible] हिताभिलाषिना [illegible]
[illegible] नपुंसकरूपं गृहीतम्। [illegible]
[illegible] हलन्ते पक्षे सर्वो विद्वद्भिः
[illegible] भवदीयो
[illegible] [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನೀ ತರಳಬಾಳು [illegible]
ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾ ಸಂಸ್ಥಾನ
(ಶ್ರೀ [illegible] ಸಿರಿಗೆರೆ [illegible])

[illegible]

पूज्य गुरुदेव!

सादरं सविनयं च प्रणम्य विज्ञापयामि।

[illegible] अर्चनीयचरणे समर्पितानि श्रीहर्षचरित [illegible] चरित [illegible] प्रभृतीनि पुस्तकानि [illegible]। अत्र वयं सर्वे गुरुजनाशिषा सुखेन तिष्ठामः। [illegible] लिपि महती [illegible] प्रायः परीक्षा [illegible] स्यात्। [illegible] माता [illegible]।

[illegible] श्रीगौरी [illegible]

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

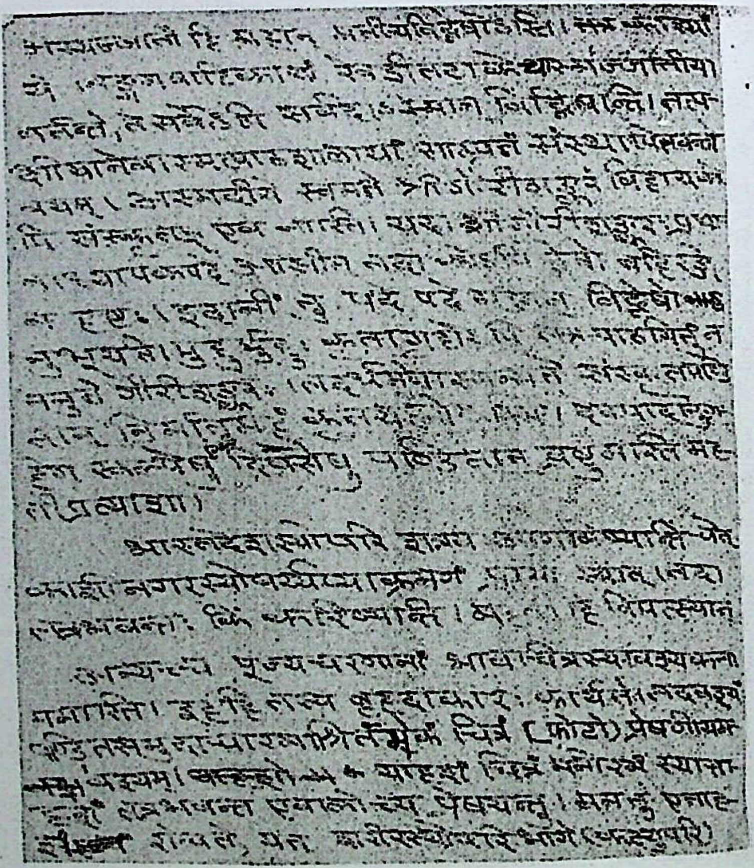

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

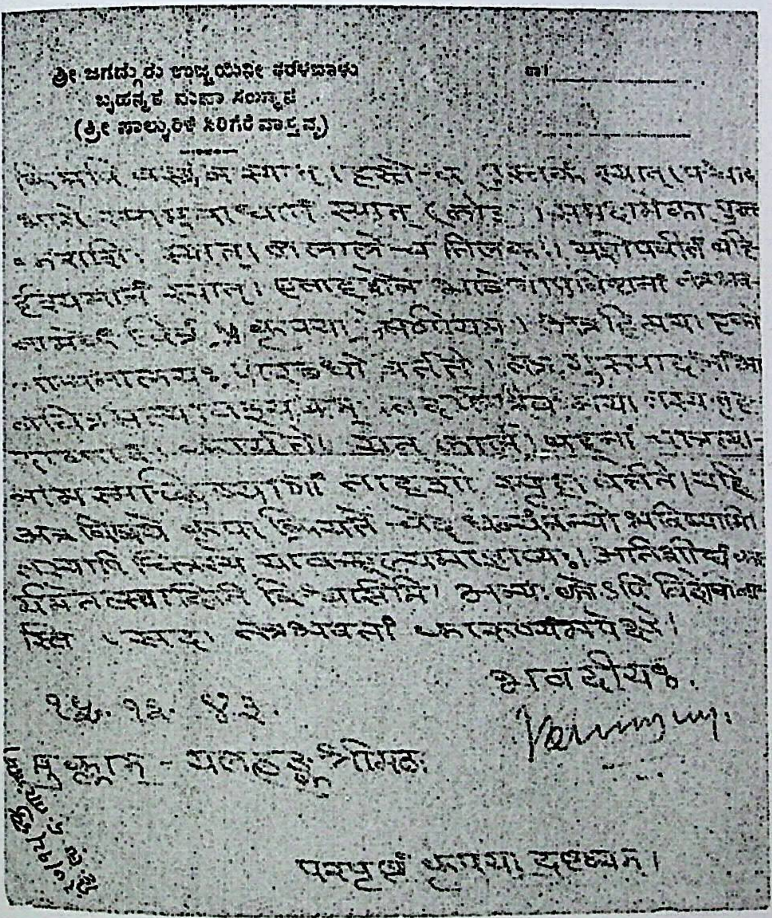
भवदीयः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

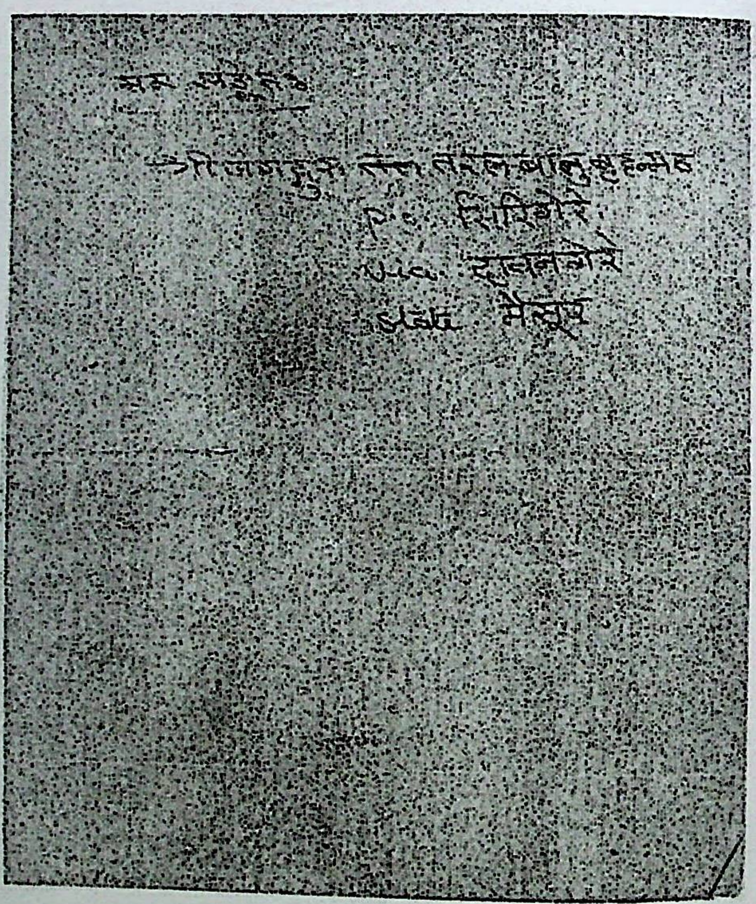

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

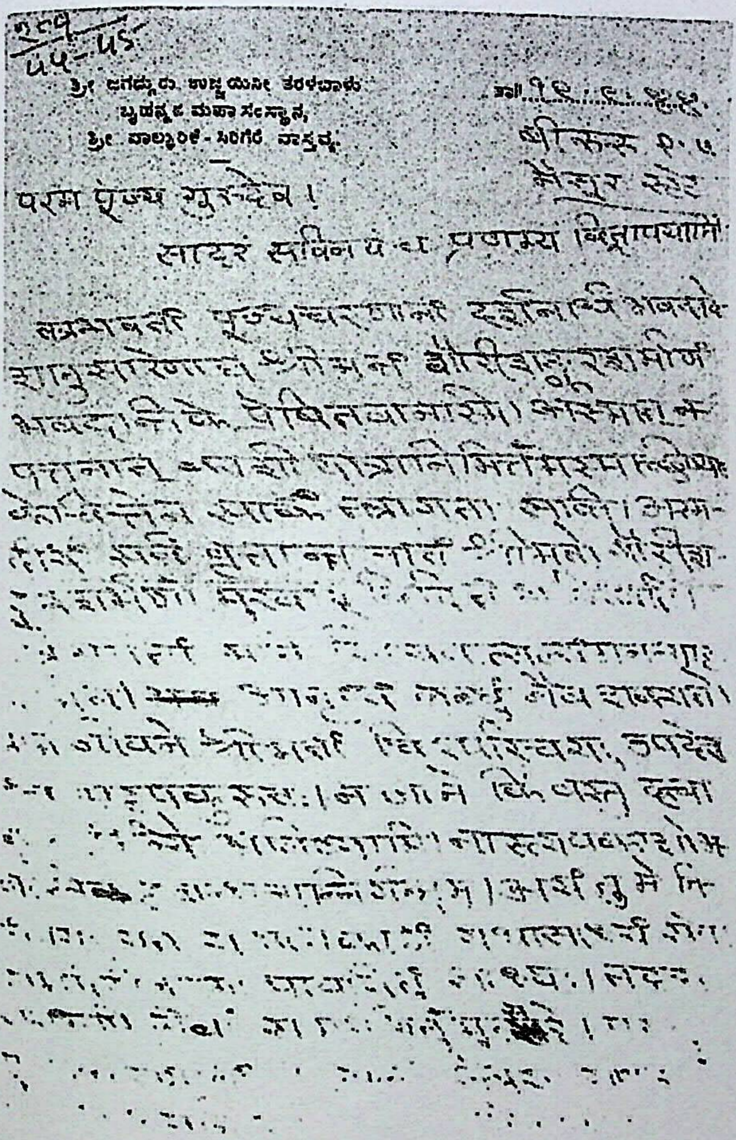

परम पूज्य गुरुदेव !

सादरं सविनयं च प्रणामं विज्ञापयामि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

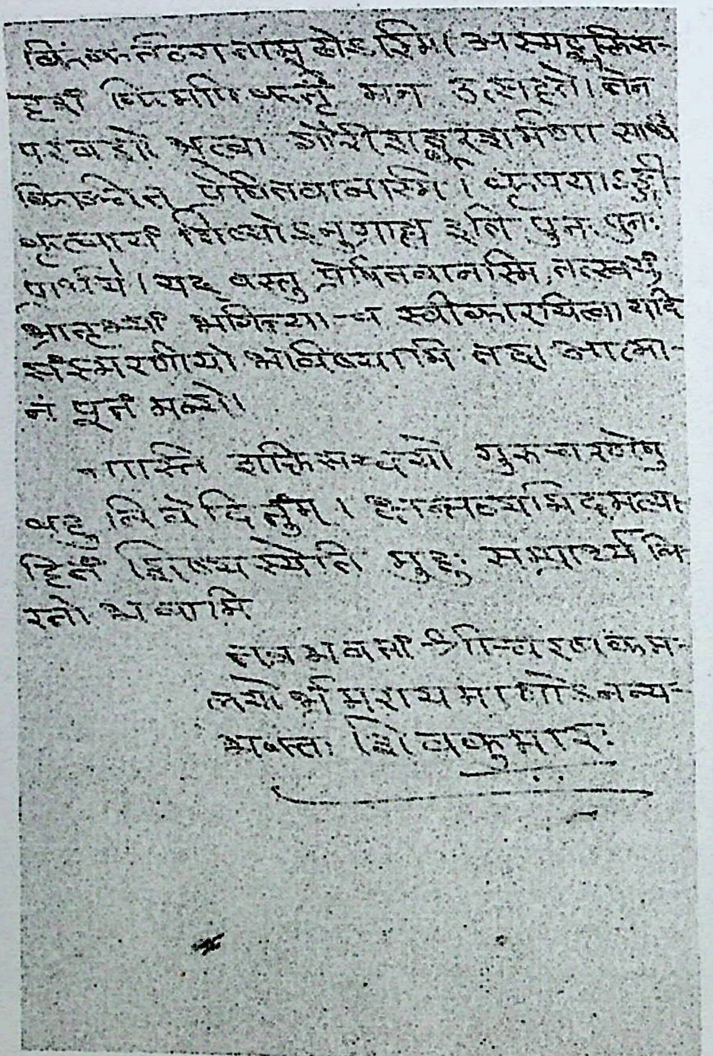

[illegible] अस्मद्विश-
[illegible] मम उत्साहो। तेन
[illegible]
[illegible] कृपया [illegible]
[illegible] इति पुनः पुनः
प्रार्थये। यद् वस्तु प्रेषितवानस्मि, तत्सर्वं
[illegible] स्वीकारयिष्यामि यदि
[illegible] भविष्यामि तदा आलो-
[illegible] मन्ये।
नास्ति [illegible] गुरुचरणेषु
[illegible] निवेदितुम्। [illegible]
[illegible]
[illegible] भवामि

[illegible]
[illegible]
[illegible] शिवकुमारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

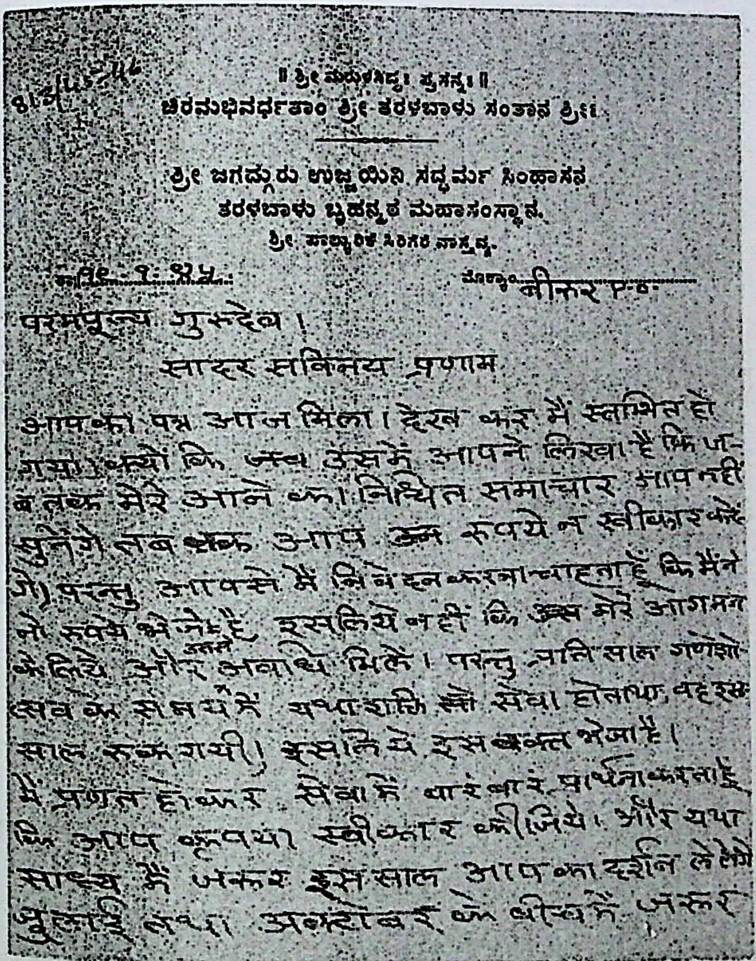

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥
ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ.
ಶ್ರೀ ಪಾಲ್ಕುರಿಕೆ ಸಿರಿಗೆರೆ ಸಾನ್ನಿಧ್ಯ.

ತಾ॥ ೧೯-೧-೫೫ ಮೊಕ್ಕಾಂ बीकानेर ७-८-

परमपूज्य गुरुदेव !
सादर सविनय प्रणाम
आपका पत्र आज मिला। देख कर मैं स्तम्भित हो
गया। क्योंकि जब उसमें आपने लिखा है कि ज-
ब तक मेरे आने का निश्चित समाचार आप नहीं
सुनेंगे तब तक आप रुपये न स्वीकार करें-
गे। परन्तु आपसे मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि मैंने
जो रुपये भेजे हैं इसलिये नहीं कि मेरे आगमन
के लिये और उससे अबाधित मिले। परन्तु प्रति साल गणेशो-
त्सव के समय में यथाशक्ति जो सेवा होती थी, वह इस
साल रुक गयी। इसलिये इस वक्त भेजा है।
मैं प्रणत होकर सेवा में बारंबार प्रार्थना करता हूँ
कि आप कृपया स्वीकार कीजिये। और यथा
साध्य मैं जरूर इस साल आपका दर्शन लेऊँगा
जुलाई तथा अक्टोबर के बीच में जरूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आने का निश्चय किया है। वहाँ तक
तो मुझे किसी तरह से फुरसत नहीं मि-
लेगी। परन्तु आप का पत्र देखने के
बाद मैंने यह निश्चय कर लिया
है कि अवश्य इस साल मैं आपका
दर्शन लेऊँगा।

कृपया तब तक अवकाश देने के लिये
प्रार्थना करता हूँ।

इस साल जरूर मैं आऊँगा। आ-
प निश्चय समझ लीजिये। अभी से
ही उसके लिये मैं सब सिद्ध कर लेंगे

भवदीय:

शिवकुमार:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

996/45 ...6

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥
ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ
ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು
ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳು

ತಾ. ೨...೨...೬೮ — ಮೊಕ್ಕಾಂ: सिरिगेरे

परमाराध्य परमपूज्य गुरुदेव !

सविनय प्रणाम

बहुत सोचने पर भी मुझे मालूम नहीं होता कि आ-
पको क्या लिखूँ। अचानक विपत्त आने पर धीर
पुरुष भी विह्वल हो जाता है। मेरे प्रेम का एकमात्र
आश्रय वही था। परमेश्वर का हृदय इतना कठो-
न होता हो तो अधीर मानव क्या कर सकता है
अब तो मैं सर्वथा उत्साहहीन हो रहा हूँ। माता के
लिये वही एकमात्र पुत्र था। फिर ऐसा धीर पुत्र मिल-
ना सम्भव नहीं है। परन्तु यह तो मानव के अधि-
कार में नहीं है कि कोई भी विधि के उस व्या-
पार को रोक सके। इतना तो सन्तोष है कि उस
दिन आप स्वयं आखिर तक उसकी रक्षा में
थे। यही मैं समझता हूँ कि वही भाग्यवान है
जिसने आखिर काल में अपने देव समान गुरु
जी के सान्निध्य में अन्त्यलीला समाप्त की है।
मैं आपका और ऋणी हुआ। इसे चुकाना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

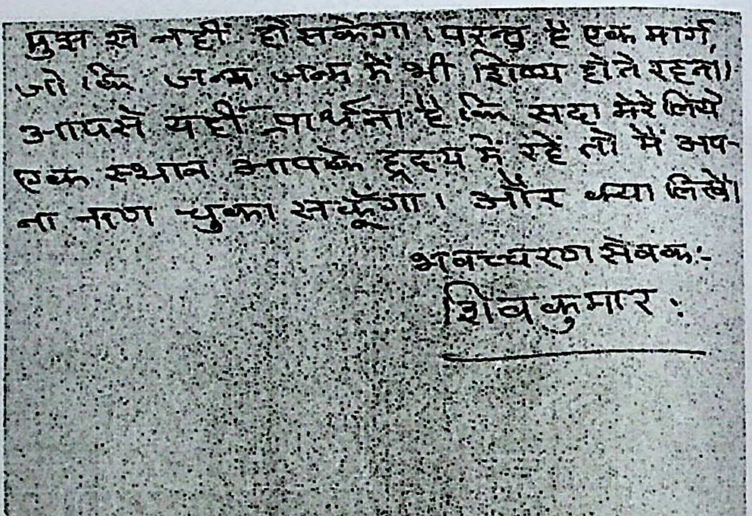

मुझ से नहीं हो सकेगा। परन्तु है एक मार्ग,
जो कि जन्म जन्म में भी शिष्य होते रहना।
आपसे यही प्रार्थना है कि सदा मेरे लिये
एक स्थान आपके हृदय में रहे तो मैं आप-
का ऋण चुका सकूँगा। और क्या लिखें।

भवच्चरणसेवक:-
शिवकुमार :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

2017/115-49
16-3

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥
ಚಿರಮಾಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀ ॥

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ
ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು
ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳು

ತಾ|| ೧೬...೩...೪೯ ಮೊಕ್ಕಾಂ: बीरूर

परमाराध्य परमपूज्य गुरुदेव !

सविनय प्रणाम

आप का कृपापत्र आज मिला। पढ़कर दुःख हुआ। दुःख भूलना कठिन है। भागीरथ की माता बहुत दुःखित हैं। तीन दिन के पीछे मैं श्रीगौरीशङ्कर के साथ वहाँ मैं गया था। उन की अवस्था अत्यन्त शोचनीय है। आहार छोड़ दिया है। बहुत कुछ समाधान किया। फिर भी स्थिति वैसी ही है।

इस साल हमारे मठ से एक हाईस्कूल प्रारम्भ होगी। प्रेस प्रारम्भ करने के लिये कोशिश कर रहा हूँ। प्रेस का प्रास्पेक्टस भी इसके साथ है। यहाँ क्षाम पड़ा है। लोग बहुत चिन्तित हो रहे हैं। पुनः युद्ध शुरु होने की आशङ्का है। और ~~सब~~ कोई विशेष नहीं है।

भवदीय

शिवकुमार

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

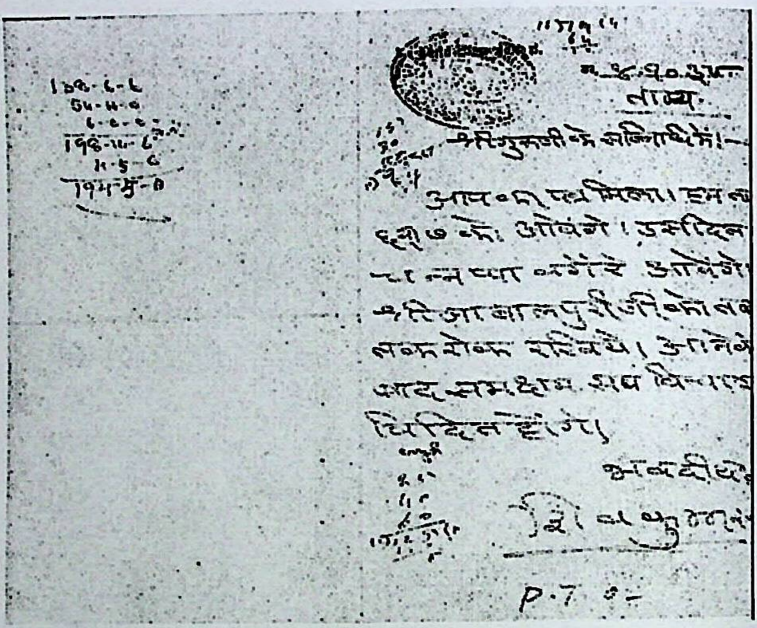

१७८-६-८
५५-५-०
६-८-०
१९६-१०-८
१-५-६
१९५-१-०

श्रीगुरुजी के सन्निधि में।—

आपका पत्र मिला। हम [illegible] को आवेंगे। उस दिन [illegible] आवेंगे। श्री [illegible] को [illegible] आनेके [illegible] होंगे।

आशीर्वाद

[illegible]

P.7 0 –

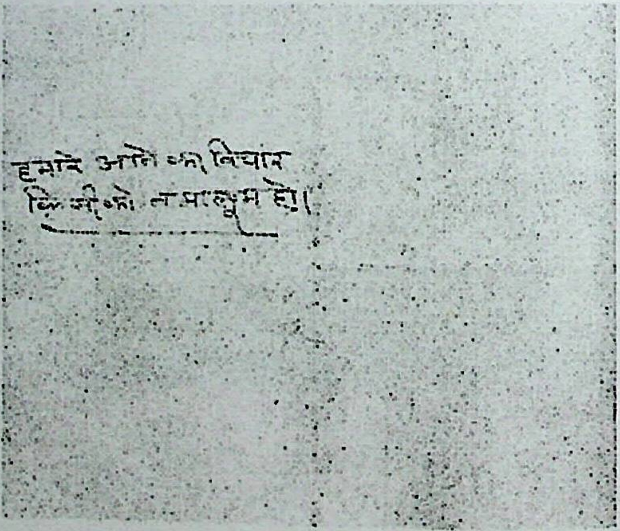

हमारे आने का विचार [illegible] को न मालूम हो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

SREE SIRIGERE
MAHA SAMSTHANA,
ಶ್ರೀ ಸಿರಿಗೆರೆ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ.

ತಾ. 14 : 10 : 1939.
ಮುಕ್ಕಾಂ सिरिगेरे

परमपूज्य गुरुदेव के चरणारविन्दों में

साभिवादन निवेदन है कि आपका कृपापत्र करगत होकर बहुत दिन हुए। ज्वर से पीड़ित रहने के कारण शीघ्र जवाब न दे सका। इसलिये क्षमा चाहता हूं। आपने पत्र में यह लिखा है कि उस पाचक के विषय में सचेत रहना। वस्तु ठीक ही है परन्तु इस समय वह मेरे पास नहीं है। स्वामीजी के देहान्त होने के कुछ ही क्षण में आपने आप ही भाग गया था। फिर उस को पकड़वाकर सब विषय उस से जानकर छोड़ दिया। वह आज कल अपने घर में रहता है। इस लिये आज का सन्निवेश अच्छा है। डरने की जरूरत नहीं है। अभी सरकार से अनुमति हुई नहीं है। अवश्य होगी। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

आप आजकल ज्वर भीत-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ही है। अच्छा हूँ। गौरीशङ्कर स्वामी
के विराम के कारण आजकल घर
में रहता है। और कोई विशेष नहीं है।
कृपापत्र की निरीक्षा में हूँ।

भवदीय

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible] ता॥ 17-3-1950.
सिरिंगेरे -

परम पूज्य गुरुदेव के चरणारविन्दों में
सविनय नमस्कार।

निवेदन है कि कृपापत्र आया देख कर सन्तोष हुआ। बहुत दिन से इधर आपके पत्र न देखकर चिन्ता हुई थी। इधर सकुशल मैं क्रम से ~~[illegible]~~ सुख और [illegible] क्रम क्रम से काम कर रहे हैं।

पट्टाभिषेक के लिये ता० ६-३-१९५० को सरकार से अनुमति मिली। ता० ३-२-५० को प्रधान सचिव को मठ में बुलाये थे। उनको इसका सब वृत्तान्त सुनाया था। गत स्वामीजी से इन का मधुर सम्बन्ध था। ता० ~~[illegible]~~ ९-५-५० को पट्टाभिषेक का मुहूर्त निश्चय हुआ है। मैसूर सरकार की तरफ से प्रधान सचिव उस दिन आवेंगे। और शिष्य मण्डली भी बहुत आवेगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसी कार्य में गुरुदेव का भी आगमन अभीष्ट था। परन्तु कुछ कारण के वश आपका आगमन इस समय स्थगित करना चाहता हूँ। आप आवेंगे तो अधिक हिन्दुस्थान सब प्रान्त से जनता आयेगी है। इस समय ऐसा होने में सुभीता नहीं है। यह सब झंझट से निवृत्त होने के बाद आपको आने के लिये प्रार्थना करूँगा। पुनः विशेष [illegible] निवेदन करूँगा। आशीर्वाद रहे।

भवदीय
[signature]

ठि.
श्री तरलबाळु सिरिगेरे मठ
भरमसागर पोस्ट
चित्रदुर्ग जिल्ला
मैसूर स्टेट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ಶ್ರೀ ಸಾಧುವೀರಶೈವ ಜಗದ್ಗುರು ಪೀಠ
ಶ್ರೀ ಹಾಲ್ಕುರಿಕೆ ಶಿರಿಗೆರೆ.

ತಾ|| 31-8-50.
ಸ್ಥಳ: सिरिगेरे

परमपूज्य गुरुदेव के चरणारविन्दों में

साद्र सविनय प्रणाम पूर्वक निवेदन है कि

आप की कृपा आज मुझे मिली। परन्तु मुझसे जितने अपराध होते हैं, उसके लिए विशाल और उदार, और करुणामय आपके हृदय में स्थान नहीं है, इस विचार से मोहित होकर मैं बार बार अपराध करता ही रहता हूँ। इसलिये मैं आपके पावन चरणारविन्दों में भक्ति से विनत होकर क्षमा माँगता हूँ।

तथा गुरुदेव ~~जी~~ के आज्ञानुसार 25) रु० आज भेज रहा हूँ। अन्यच्च सेव्य पदकों की

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं ही प्रतिवर्ष भेजता रहता हूँ इस साल भी दो पद्य शीघ्र ही भेजेंगे।

और विषयों के लिये दूसरा पत्र लिखेंगे।

अनुनीत कीजिये। पुनः पुनः क्षमा मांगता हूँ

~~भवदीय~~

~~[illegible]~~

भवदीय

डॉ. ब[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ಶ್ರೀ ಸಾಧುವೀರಶೈವ ಜಗದ್ಗುರು ಪೀಠ
ಶ್ರೀ ಪಾಲ್ಕುರಿಕೆ ಸಿರಿಗೆರೆ.

ತಾ|| ೨೪...೧೨...೫೮
ಕ್ಯಾಂಪ್ बी. दुर्ग.

पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में

प्रणाम पूर्वक निवेदन है कि

गुरुदेव के आज्ञानुसार (४५)
रु० [illegible] शैव पद्धति हृदय में उसी स-
मय भेजा था। अभी तक आपसे उ-
स विषय में पत्र नहीं आया। गणेश-
सब कैसे हुआ। यह भी मालूम
नहीं हुआ। कल गौरीशंकर मुझ
से मिला था। उससे मालूम हुआ कि
वह भी आपको पत्र भेजा था, आ-
पने जवाब नहीं दिये हैं।

~~आज तक~~ हमारे यहाँ विज-
यदशमी में प्रतिवर्ष महोत्सव हो-
ता है। इस साल यह समारम्भ
भक्तादियों के प्रार्थनानुसार

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को होळलकेरे के टवन में ता. ६ से
११ ता. तक होता है। इस कार्य
में व्यापृत रहनेके कारण आपको
पत्र नहीं लिखा। क्षमा करनेकी
प्रार्थना है। और कोई विशेष
नहीं है। कृपया जवाब दीजि
ये।

[illegible signature]

पता:-
सिरिगेरे मठ.
भरमसागर P.O.
चित्रदुर्ग- जिला
मैसूर स्टेट.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

परमात्मा परमपूज्य श्री गुरुदेव के
चरणारविन्दों में

आदर और सविनय प्रणाम करते निवेदन करता हूं कि परमपूज्य का कृपापत्र आज मिला अत्यन्त सन्तोष हुआ। बहुत दिनों से आपके तरफ से कोई समाचार न आने से बहुत ही दुश्चिन्ता था। परन्तु आप हार के इहां से आपने को भी ऐसा समय पत्र लिखने में उत्साह नहीं आता।

आठ दस दिन के पीछे श्रीमान श्री ठाकुर पत्नी पुत्री समेत बड़ौदे में ही बुखार की चिकित्सा निमित्त थे। आज बीकानेर में हैं। उन्हों-
है। पुत्री हुई है। प्रथम मीरा थी। द्वि-

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

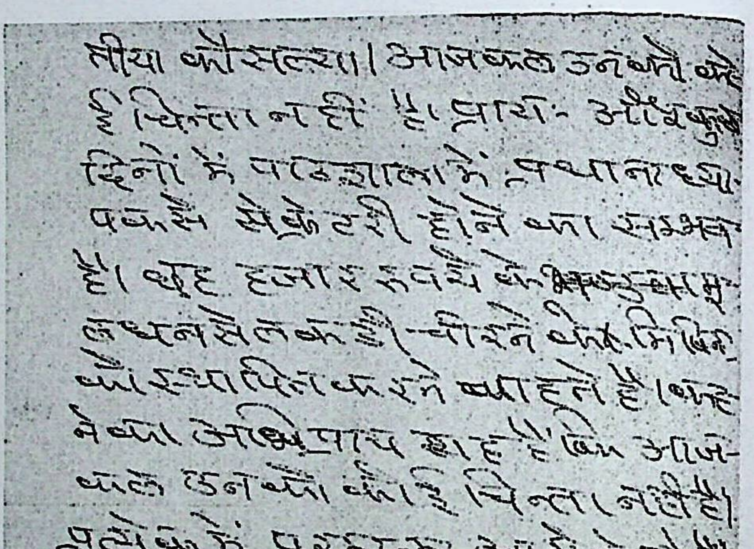

नीया कौसल्या। आजकल उनको कोई चिन्ता नहीं है। प्रायः और कुछ दिनों में पाठशाला में प्रधानाध्यापक से सेक्रेटरी होने का सम्भव है। वह हजार रुपये के मूलधन से लक्ष्मी-नीरने चैरि. मिशि को स्थापित करने चाहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि आजकल उनको कोई चिन्ता नहीं है। प्रत्येक में परमात्मा जागे रहे हैं। आपका आशीर्वाद पत्र पाता जाता हूँ।

मेरा काशी आने का समय आ गये साल है। इसलिये जब आऊँगा, कुछ दिन के पहिले निवेदन करूँगा। इतना तो निश्चित है कि आगे साल अवश्य आऊँगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणेशोत्सवके मूल धरातलि
पर मैंने जो इन सूत्रोंमें लिखा
है। उसके बारेमें जो आप
पूछे हैं। उसमें तो कि मैं केवल
ऐसा समझता हूँ और दूसरे
में निवेदन करूँगा। जोभी
मेरी तो यही इच्छा है कि सब
इस पुरुषके ऊपर कृपा हो ...
मेरी तो यही इच्छा है कि आपने गु-
रुजी के आनन्द स्वरूप आपने को
समझकर इसीमें आनन्द मनाते
इसीसे जीवन का परम श्रेयस्कर-
साकार कृतार्थ हो जाऊँ।

२ इस साल भी आपके अनु-
सार स्वतः पर कुछ सेवाओंमें जाऊँ-
गा। तथा गणेशजीकी स्थापना कि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दक्षिणा भी भेजूंगा।

श्रीगुरु जी की कृपा सब ही है। सब प्रसन्न हैं।

भवदीय चरण सेवक

[illegible]

२५/५/५१। हनगवाडी.

पता:-
श्री सिरिगेरे मठ
P.O. भरमसागर
मैसूर स्टेट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ॐ

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನೀ ಸಾಧು ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ಜಗದ್ಗುರು ಪೀಠ,
ಶ್ರೀ ಹಾಲ್ಮುರಿಕೆ - ಸಿರಿಗೆರೆ.

ತಾ॥ 18-7-53
ಮೊಕ್ಕಾಂ [illegible]

पूज्य गुरु जी के पादारविन्दों में
सादर सप्रणाम निवेदन है कि
ईश्वर के आप के आशीर्वाद से
सब कुशल है। बहुत दिन से आपसे
एक भी आशीर्वाद पत्र नहीं आया
आज तो कल लिखेंगे करते अभिप्रा
य रहा है कि कुछ किताबें चा
हिये। इसलिये कृपा करके वी
पी द्वारा नीचे लिखे किताबें भे
जने की कृपा करें।

P.T.O.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वप्नवासवदत्ताम् २.

वेणीसंहारनाटकम् ३.

श्रीपञ्चाननतर्करत्नकृत अमरमङ्गल २.
(टीका सहित होना चाहिये)

श्रीहर्षचरितम् (चतुर्थोच्छ्वास पर्यन्त) १
(यह काशी में ही मध्यमा के लिये रखी गया है उसके लिये काशीस्थ पण्डितों के द्वारा जो टीका लिखी गयी है, वही चाहिये।

महानाटकम् २.

मूल अमरकोश ५.

कुल १४ चौदह पुस्तकें भेजने की कृपा करें।

एजन्ट
सिरिगेरे मठ.
P.O. भरमसागर.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

—॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥—

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನೀ ಸಾಧುಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ ಸುಕ್ಷೇತ್ರ,
ಶ್ರೀ ಎಲೆಯಂಕ ಮಠವಾಸ್ತವ್ಯ ಪಾಲ್ಕುರಿಕೆ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನದ
ಅಧಿಕಾರಸ್ಥಾನದಿಂದಾ.

नवलेखने बहवो दोषाः सन्ति । विदुषी [illegible]ऽपि न तथा ज्ञातुं शक्नुयाः इति प्रतिपत्रं लिख[illegible] पश्यति। तत्र [illegible] पठित्वा ये दोषाः भवेयुः तान् [illegible] जानीहि ।

शतकत्रयम्

शतकत्रये [illegible] [illegible] इति पदाङ्कितानि त्रीणि शतकानि सन्ति। एतस्मात्कारणा-त् इदं पुस्तकं "शतकत्रयम्" इति नाम्ना प्रसिद्धम्। [illegible] शतकेष्वपि वीरशैवागमोक्त [illegible] [illegible] [illegible]। प्राचीनाः वीर-शैवकवयः अनेकेषां शतकानां रचनां चक्रुः। किन्तु तेषु पुस्तकेषु भक्तिप्रधानभूतानि बहूनि सन्ति। इदं पुस्तकं तु वीरशैवानां [illegible] [illegible] इति सुस्पष्टं लिखितं [illegible]। [illegible] आसीत्। [illegible] "[illegible]" इति [illegible] अनौचित्यं न स्यात्। अस्मादुत्तरं [illegible] लिखिष्यामि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

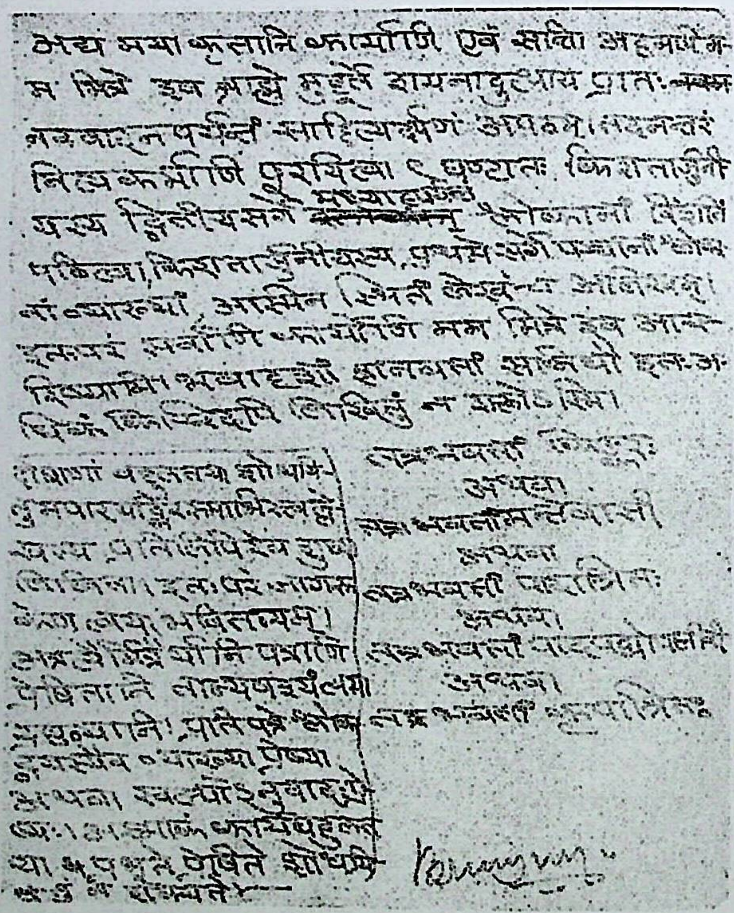

अद्य मया कृतानि कर्माणि एवं सन्ति। [illegible]
[illegible] ब्राह्मे मुहूर्ते शयनादुत्थाय प्रातः [illegible]
[illegible] साहित्यदर्पणं आरब्धम्। तदनन्तरं
नित्यकर्माणि पूरयित्वा ९ वादनात: किरातार्जुनी-
यस्य द्वितीयसर्गे मध्याह्नपर्यन्तं [illegible] श्लोकानां विंशति
[illegible]
[illegible] आस्मिन [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] न [illegible]

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

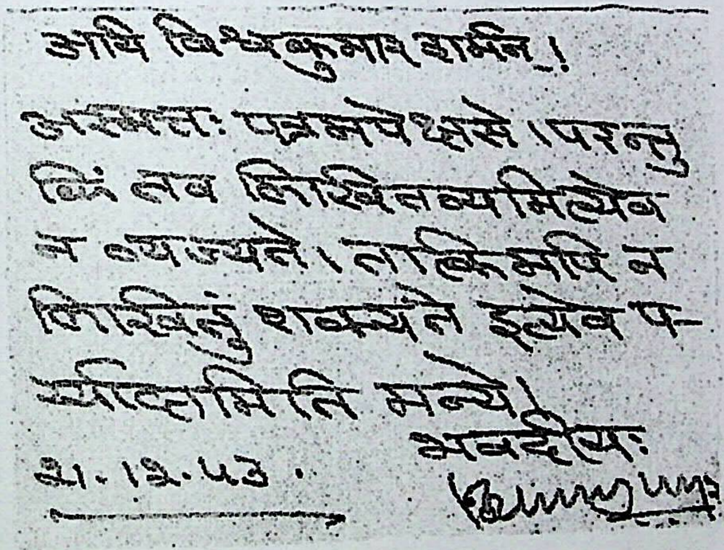

अयि विश्वकुमार शर्मन् !
अस्वस्थः पत्रं प्रेषयसे । परन्तु
किं तव लिखितव्यमित्येव
न ज्ञायते । तत्किमपि न
लिखितुं शक्यते इत्येव प-
र्याप्तमिति मन्ये ।
भवदीयः
३१.१२.५३.

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

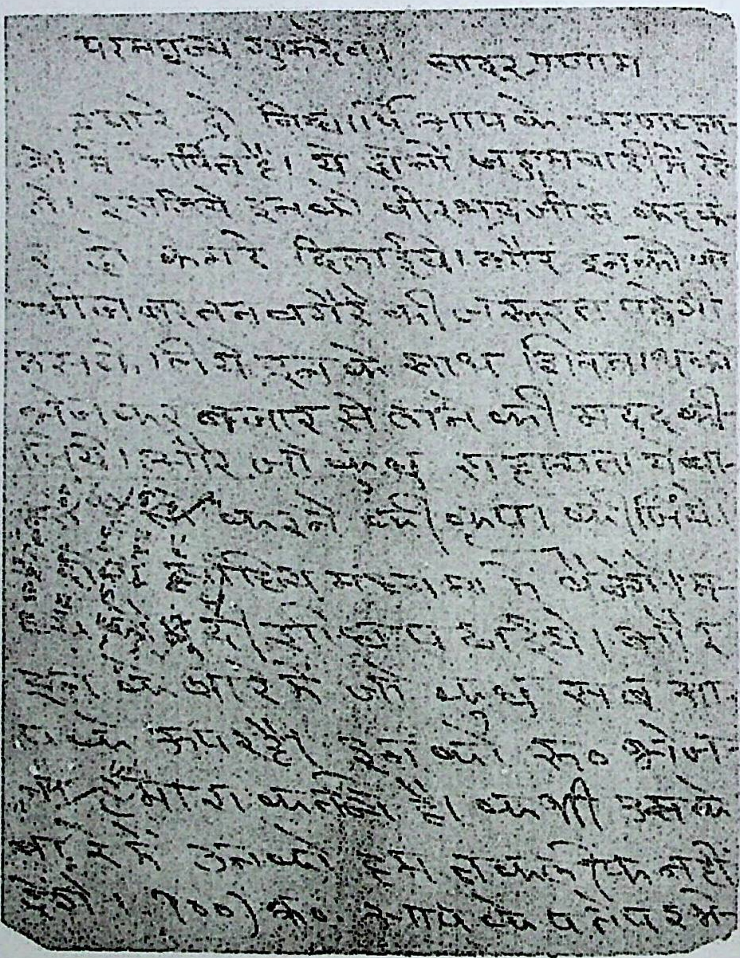
परमपूज्य गुरुदेव, सादर प्रणाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

८.८.३१

१०) ८.११.३२
२५) २१.१२.३८
७) ३१.१.४०
७) २१-११-४४
२२.११.६६
२०) ३.२.६१
२५) १०-११-६२
३॥) १७-११.६१
४) १.११.६३
४) १२.११.६३
१०) ११.१२.६३

३/ २६-११-६०
३/ २८-११-६१
३) ८।१।६४
३) ७.६.-६१
३) २७-९-६१
३) २०-४-६२
३) ६-१-६२

२

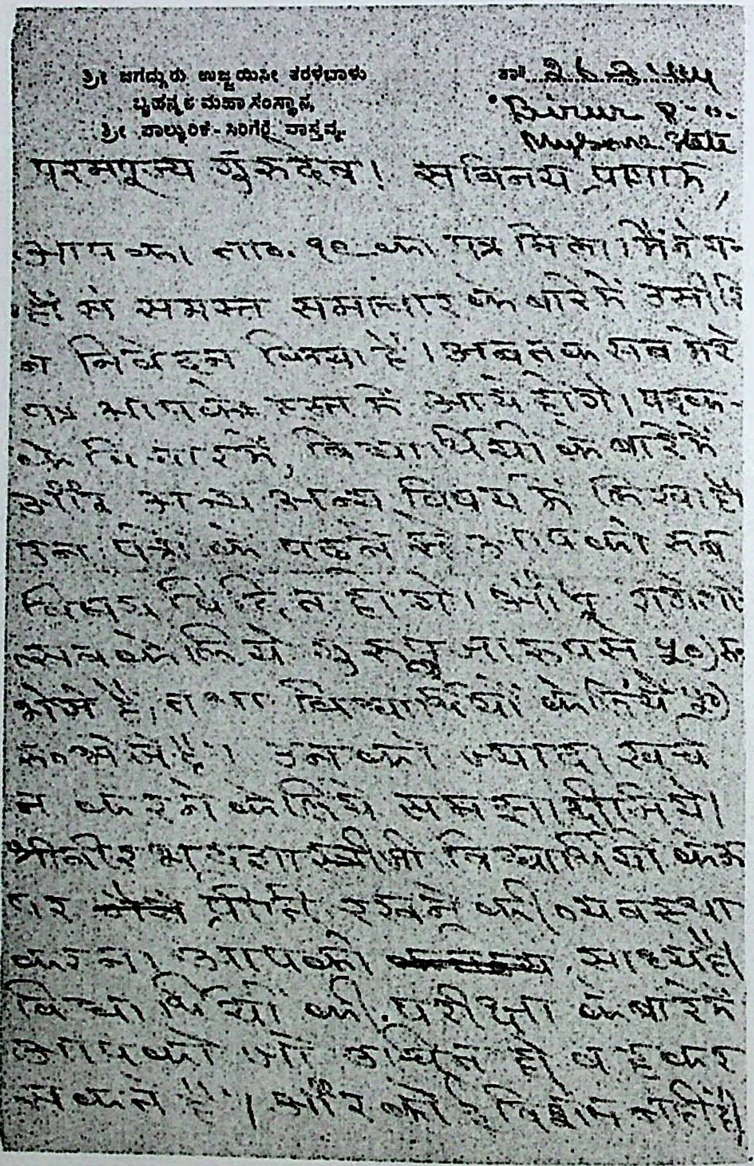

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನೀ ತರಳಬಾಳು
ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾ ಸಂಸ್ಥಾನ,
ಶ್ರೀ ತಾಲ್ಲೂಕ - ಸಿರಿಗೆರೆ ವಾಸ್ತವ್ಯ.

ತಾ॥ [illegible]
Birur [illegible]
Mysore State

परमपूज्य गुरुदेव! सविनय प्रणाम,

आपका ता. १०-का पत्र मिला। मैंने पाठों के समस्त समाचार के बारे में उसी दिन निवेदन किया है। अब तक सब मेरे पत्र आपके हस्त में आये होंगे। पाठशाला के निवास में, विद्यार्थियों के बारे में और अन्य अन्य विषय में किया है। उन पैसों के बदले में [illegible] को सब विवरण दिये होंगे। और गणेश अनन्त जी से [illegible] ५०) रु. भेजे हैं। चार विद्यार्थियों के लिये (४) भेजे हैं। उनको ज्यादा खर्च न करने के लिये समझा दीजिये। और वीर भद्र स्वामी जी विद्यार्थियों के द्वार [illegible] भेजे हैं। इनके भी [illegible] करना। आपको [illegible], साथ में विद्यार्थियों की परीक्षा के बारे में आपको जो उचित हो वह इधर भेजने हैं। और [illegible] नहीं है।

श्री [illegible] को [illegible]
[illegible] जी को [illegible]
[illegible] और
[illegible]
[illegible] । [illegible]
पाते हैं। डा. [illegible]
[illegible]
[illegible] सूचित करने
की कृपा करें। और कोई
विशेष बात नहीं है।

भवदीय:
शिवकुमार:

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

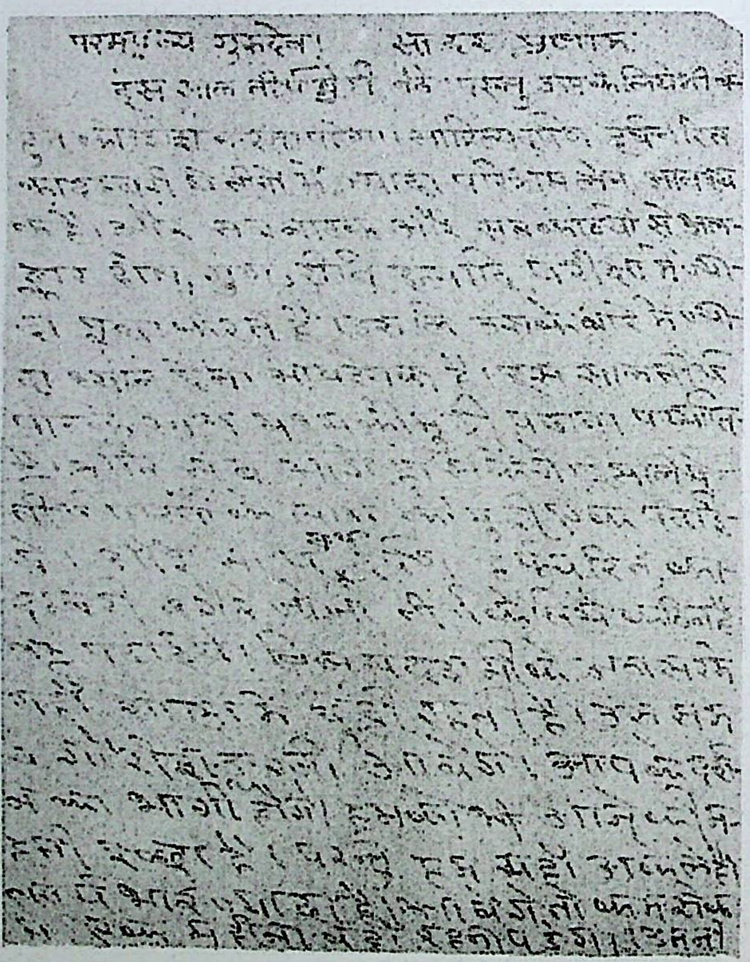

परमपूज्य गुरुदेव! सादर प्रणाम।

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

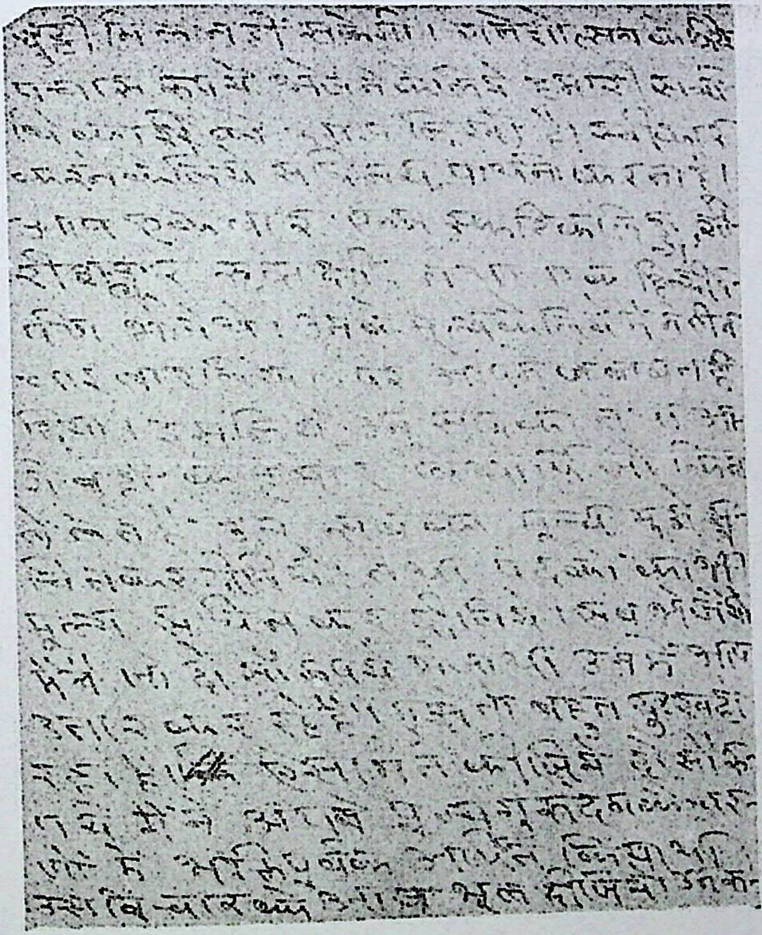

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

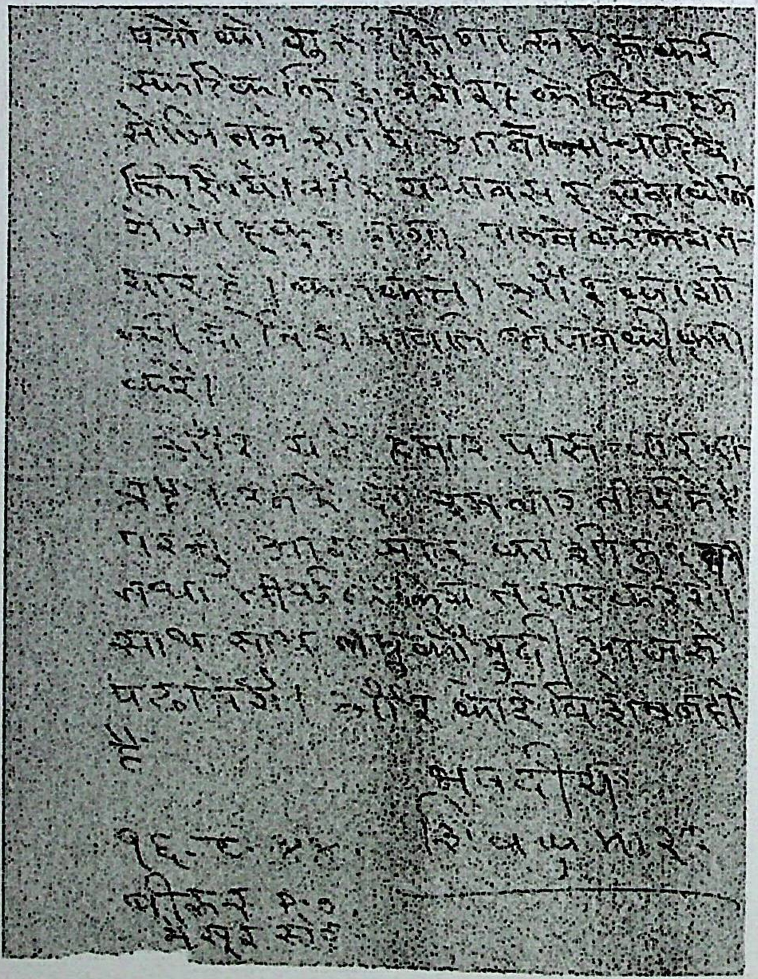

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्रावलिः

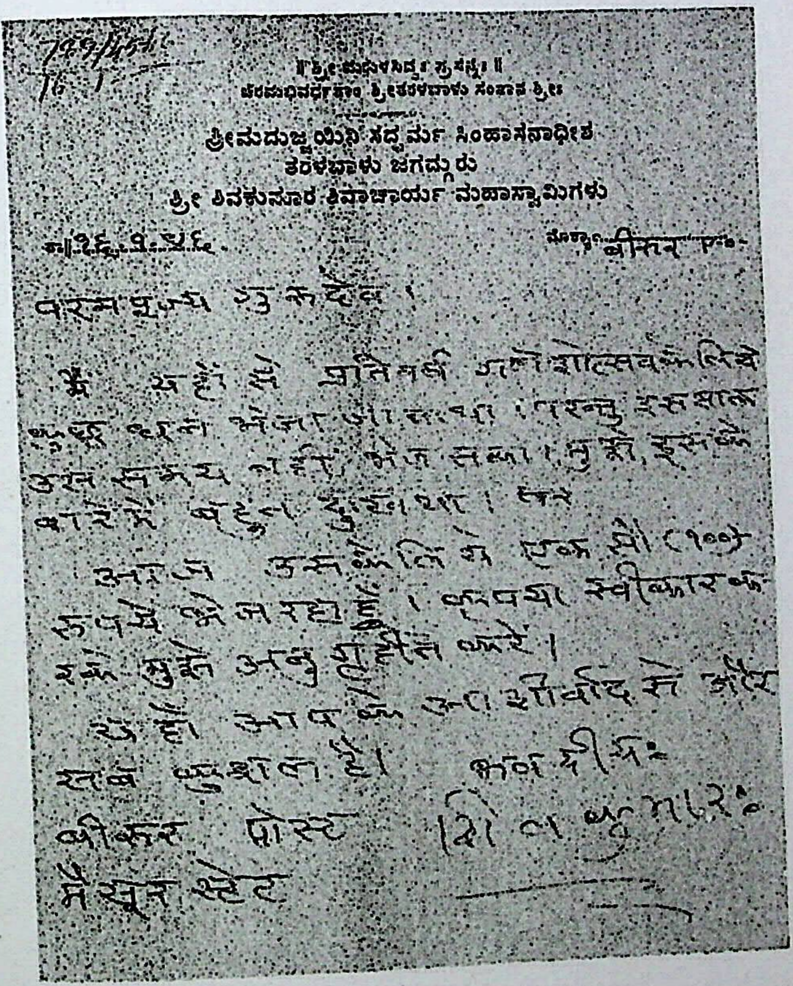

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥
ಪರಮಾಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ
ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು
ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳು

ತಾ॥ [illegible] ಮೊಕ್ಕಾಂ बीरूर

परमपूज्य गुरुदेव।

मैं यहाँ से प्रतिवर्ष गणेशोत्सव के लिये कुछ धन भेजा करता था। परन्तु इस साल उस समय नहीं भेज सका। मुझे इसके बारे में बहुत दुःख था। अब

आज उसके लिये एक सौ (१००) रुपये भेज रहा हूँ। कृपया स्वीकार करके मुझे अनुगृहीत करें।

यहाँ आपके आशीर्वाद से और सब कुशल है। [illegible]

बीरूर पोस्ट [illegible]
मैसूर स्टेट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

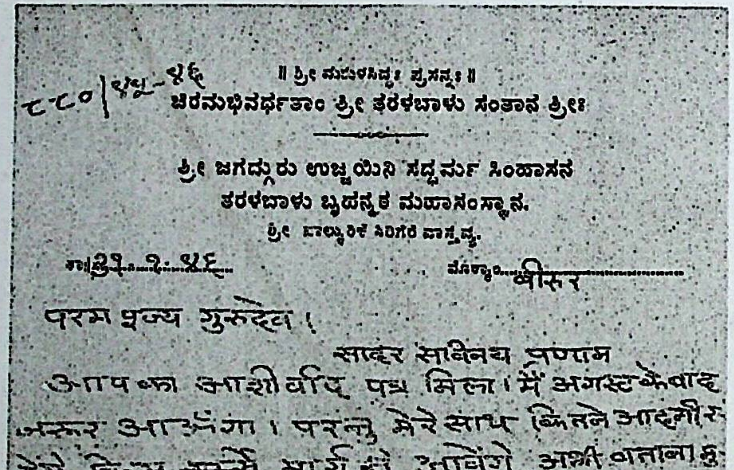

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧಃ ಪ್ರಸನ್ನಃ ॥
ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ.
ಶ್ರೀ [illegible] ಸಿರಿಗೆರೆ [illegible]

ತಾ|| ೩೧-೭-೫೬ ಮೊಕ್ಕಾಂ बीसर

परम पूज्य गुरुदेव !

सादर साविनय प्रणाम

आपका आशीर्वाद पत्र मिला। मैं अगस्त के बाद
जरूर आऊँगा। परन्तु मेरे साथ कितने आदमी र-
हेंगे, किस मार्ग से आवेंगे, अभी बताना मु-
श्किल है। प्रयाण का दिन निश्चित होने के बाद प-
न्द्रह दिन पहिले वह सब निश्चित रूप से कह
सकूँगा। अभी तो यह विचार है कि मैं अकेला
रेल में यात्रा करूँ। परन्तु गौरीशङ्कर जी कहते हैं
कि उत्तर भारत यात्रा पूरा करना चाहिये, सा-
थ में बीस पच्चीस आदमी मिलके मोटर का-
र में जाना चाहिये। लेकिन वृथा खर्च करने
में मैं उत्साहित नहीं हूँ। पेट्रोल कण्ट्रोल तब त-
क तो नहीं रहेगा तो मेरे लिये मोटर का-
र में जाना अच्छा होगा। रास्ते में हमारे दे-
शवासियों के बार ठहरने के लिये जगह पहिले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ही से निश्चित करना पड़ता है। यह सबस
सोच रहा हूँ।

और यहाँ सब कुशल है। आजम-
ठों से निकल कर अपने मठ (सिरो
से) आ रहा हूँ। फिर दस दिन के बाद
यहाँ आ जाऊँगा। और कोई विशेष
नहीं है।

भवदीयः
शिवकुमार

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

॥ಶ್ರೀ ಗುರುಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ॥
1346/45 ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ.

परम पूज्य गुरुदेव !

सादर सविनय प्रणाम

आपने चन्दन तैल भेजने के लिये आज्ञा दी है। शीघ्र भेजने की व्यवस्था करता हूं। आज कल वर्षा अधिक हो रही है। आहार का अभाव विशेष है। इस साल जून २ मास से एक हाईस्कूल हमारे मठ के तरफ से चलेगी। और कोई विशेष नहीं है।

भवदीय
शिवकुमार

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

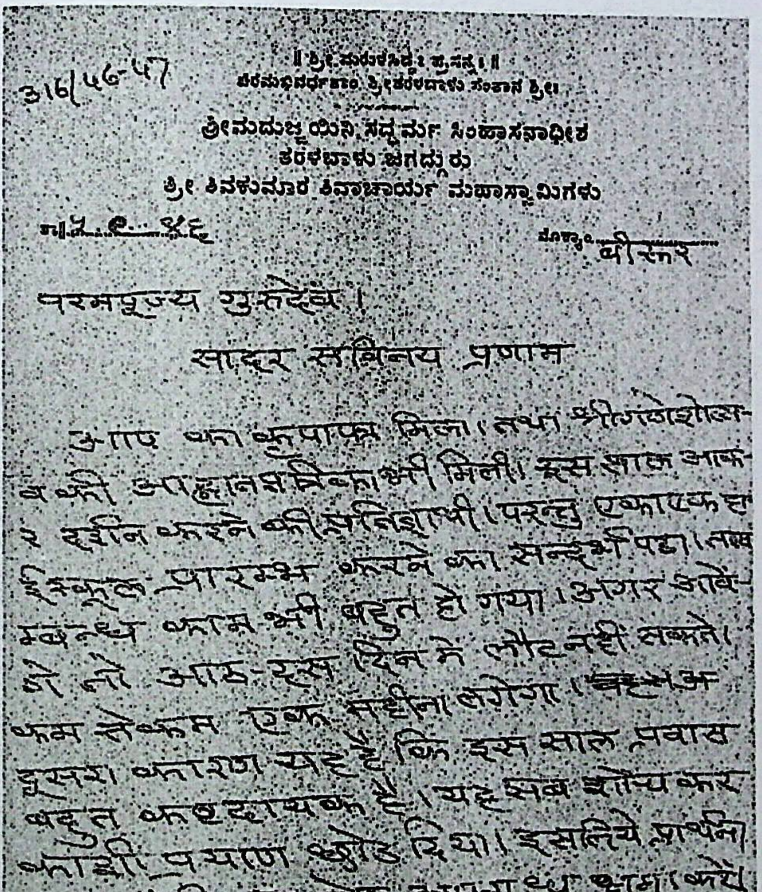

३।६।५८-५९

|| ಶ್ರೀ ಗುರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ||
ಪರಮಾಭಿವರ್ಧಕಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀ:

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ
ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು
ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳು

ತಾ|| ೬—೮—೫೮ ಮೊಕ್ಕಾಂ: बीदर

परमपूज्य गुरुदेव !

सादर सविनय प्रणाम

आप का कृपापत्र मिला। तथा श्रीगंगोत्स-
व की आह्वानपत्रिका भी मिली। इस साल आक-
र दर्शन करने की भी अभिलाषा थी। परन्तु एकाएक हा-
ईस्कूल प्रारम्भ करने का सन्दर्भ पड़ा। तथा
मठसम्बन्ध काम भी बहुत हो गया। अगर आवें-
गे तो आठ-दस दिन में लौट नहीं सकते।
कम से कम एक महीना लगेगा। ~~[illegible]~~
दूसरा। कारण यह है कि इस साल प्रवास
बहुत कष्टदायक है। यह सब सोच कर
जाना ही प्रयाण छोड़ दिया। इसलिये प्रार्थना
करता हूँ कि यह मेरा अपराध क्षमा करें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

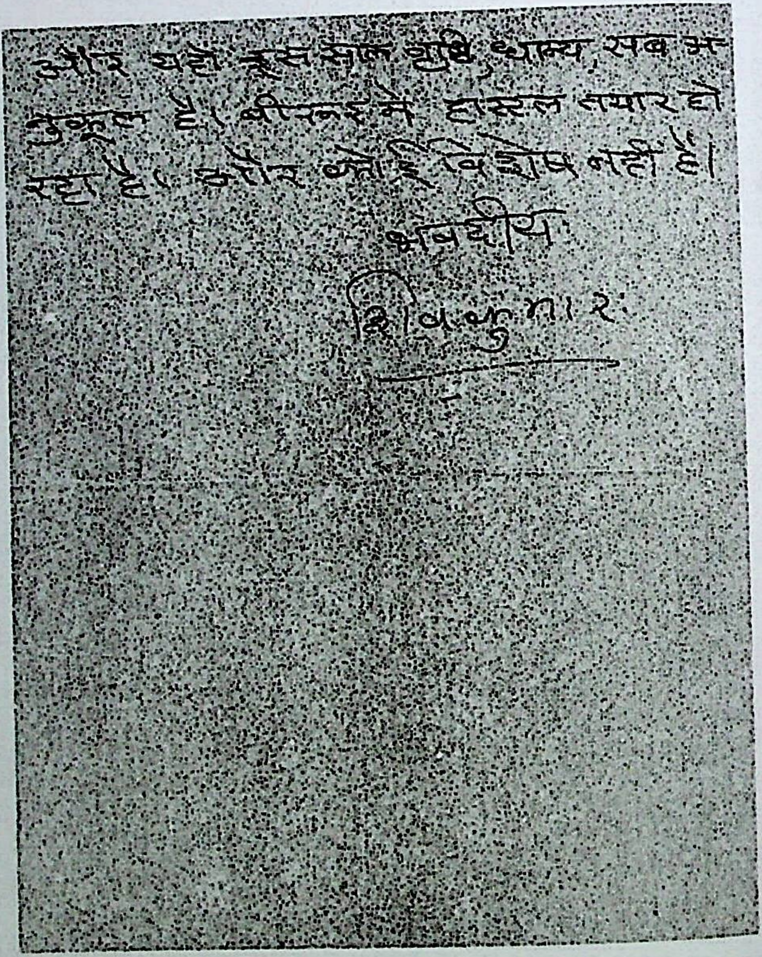

और यहाँ इस साल वृष्टि, धान्य, सब अनुकूल है। बीच में हास्टल तैयार हो रहा है। और कोई विशेष नहीं है।

भवदीय

शिवकुमार:

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

19/5-0-51

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥

ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾ ಸಂಸ್ಥಾನ

ತಾ 7-5-50 ಶ್ರೀ [illegible] ಸಿರಿಗೆರೆ

परमाराध्य परमपूजनीय
गुरुदेव !

साविनय प्रणाम,

आप का पत्र मिला। आज्ञा ...र उद-
बत्ती, सुपारी और गरी तथा चन्द ... तेल से-
वा ... में ... गये हैं। दूस ... है ...
ना हूँ। आपका इधर आगमन का निश्च-
य सुनकर मैं सन्तुष्ट हूँ। म... तो आ-
पने जो लिखा था वही अच्छा है। इधर
कहीं कहीं जायेंगे। आपके साथ और
रहेंगे। सब विशद ... नेकी कृ-
पा कीजिये। बहुत दिन बीत गये पर
मैंने सेवा में एक पत्र भी नहीं भेजा।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह बात दूसरे के बारे में जाकर अपरा-
ध [illegible] जायगा, पर मैं तो दृढ़ वि-
श्वस[illegible] हूँ कि मैं अपराधी नहीं हूँ,
क्यों[illegible] मैं आपके को सर्वोपरि [illegible]
जि[illegible] पदतल में किया समझता हूँ,
[illegible] आराध्य देव का हृदय मेरे
विषय में ऐसा समझना नहीं चाहि-
[illegible] मैं तो [illegible] हूँ पर
मे[illegible] रहता हूँ जिसके कारण पत्र
[illegible] मे उत्साह ही नहीं आता
हो [illegible] तौर [illegible] है कि प[illegible]
हार[illegible] अपनी भक्ति प्रदर्शन करने में
मुझसे [illegible] बात नहीं है।

अब एक रहस्य विषय आपको
सुना[illegible] चाहता हूँ। मेरे एक शिष्य
जिसका नाम चन्द्रशेखर है वह
आजकल काशी में विश्वेश्वर के
साथ है। जिसने यहाँ से [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ಶ್ರೀ ಗುರುಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ

ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾ ಸಂಸ್ಥಾನ
ಶ್ರೀ ಕ್ಷೇತ್ರ ಸಿರಿಗೆರೆ [illegible]

ತಾ|| .... ದಿನ ....

हजार रुपये खर्च कर बिना [illegible] की
काशी भेजाया है। जिससे यहाँ शिष्य
समुदाय में मेरी प्रतिष्ठा पर चोट पहुँची
[illegible] उनके नाम से [illegible] दूर [illegible]
करना, और मठके सम्प[illegible] को
उल्लंघन करना। बहुत [illegible] जनक
है। [illegible] इन लोगों [illegible] है।
उ पूछने वालों को जवा[illegible] देना बहु
त मुश्किल हो गया है। [illegible] य बन
कर ऐसा स्वेच्छावर्तन [illegible] रना भी
बड़ा पाप है। यह तो यह [illegible] नहीं
समझा होगा। लेकिन [illegible] सभी)
परिणाम अच्छा नहीं होगा। इस
लिये इसके बारे में मैं जो लि[illegible]

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

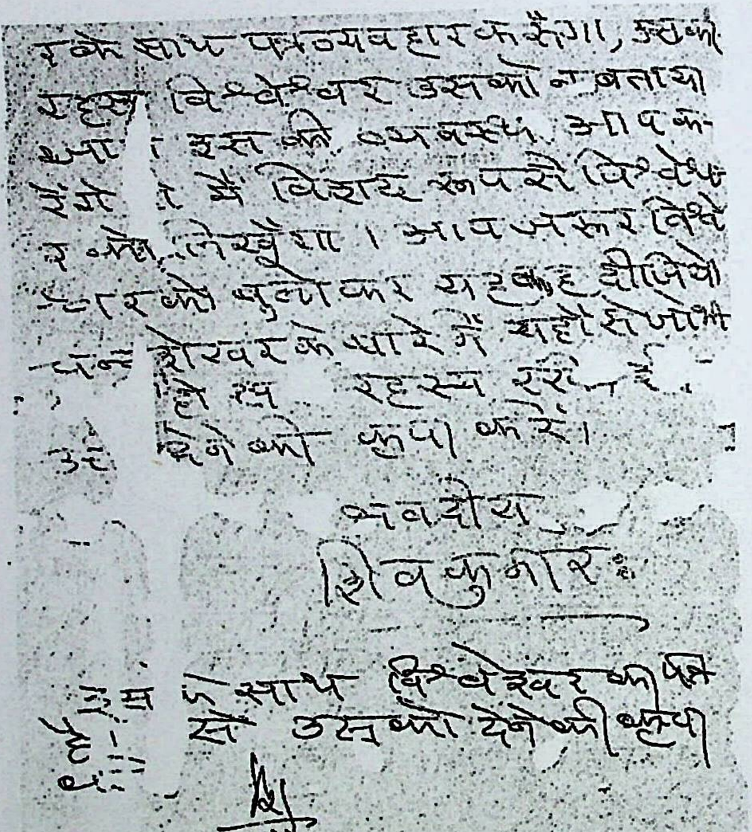
र के साथ पत्रव्यवहार करूँगा, इसको
रहस्य विश्वेश्वर उसको न बताया
था। इस की व्यवस्था आप क-
रेंगे। मैं विशद रूप से विश्वे-
र को लिखूँगा। आप उत्तर विश्वे
श्वर को बुलाकर समझा दीजिये
ईश्वर के बारे में शास्त्रों से जो
हो रहस्य
देने की कृपा करें।

भवदीय
शिवकुमार

इसके साथ विश्वेश्वर को
से उनको देने की कृपा
है

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible]

शिमोगे

परम पूज्य श्री परमाराध्य गुरुदेव,

सादर और सविनय प्रणाम

आप से भेजी गई ता. १ की रजिस्टरी प्राप्त है। इसके पूर्व की रजिस्टरी और पत्र भी प्राप्त है। किन्तु कई ऐसे ऐसे कार्य आ पड़ते हैं कि जवाब देना भी दुश्वर हो जाता है। इसलिए हम आप से क्षमा चाहते हैं।

दो-चार दिनों में चिक्कमगलूर, चन्नगिरि और दावणगेरे इन तीन तालुक में दौरा करने के लिए जाना है। वापस आने में करीब तीन महीने लगेंगे। प्रवास के स्थगित करना असम्भव सा हो गया है। क्योंकि उन्हीं तीनों तालुकों में एक-एक हाईस्कूल की स्थापना की गई है। जिनके लिए कुछ ही दिनों के अन्दर नब्बे हजार रुपये ट्रेजरी में जमा करने हैं। नहीं तो सरकार से मिलनेवाली ग्रांट

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थगित कर दी जायगी। इन सब कारणों से हमारे यहाँ एप्रिल या मई में आने की कृपा करें। हमारे यहाँ आने में यह कोई आवश्यकता नहीं है कि जब आप दक्षिण भारत के प्रवास में रहेंगे तभी आवें। आप सीधे बनारस से केवल हमारे लिए ही सिरिंगेरे आ सकते हैं। इस की सब व्यवस्था हम करेंगे।

आप को एप्रिल या मई में बुलाने में कई कारण हैं। हमारे हैस्कूल का भवन तब तक पूर्ण तय्यार हो जाएगा। जो कुछ भी कार्य आरंभ या समाप्त होते हैं एप्रिल या मई में ही। इन सब कारणों के पीछे और भी कई उद्देश हैं जिनके लिए हम आप से एप्रिल या मई में आने की प्रार्थना कर रहे हैं।

आशा है कि आप हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। यह पत्र प्राप्त होते ही आप के निश्चय के लिए पत्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय
शिवकुमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1103/44-45

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನೀ ತರಳಬಾಳು
ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾ ಸಂಸ್ಥಾನ,
ಶ್ರೀ [illegible] - ಸಿರಿಗೆರೆ ವಾಸ್ತವ್ಯ.

ತಾ॥ 11.5.45

[illegible]

परमपूज्य गुरुदेव !

कृपा से यहाँ सब कुशल है। आप की भेजी से भी। पत्र आया, उसे पढ़कर मुझे बहुत ही दुःख हुआ। लेकिन मेरे हाथ में दुःख करने के [illegible] करना ही नहीं सूझता। उन दोनों का साहित्य, परिवार का [illegible] रखते हो- गा। हम ऐसे आकस्मिक के [illegible] [illegible] दुःख [illegible] सहने के लिए [illegible] गुरु-भक्तों का [illegible] श्री [illegible] को [illegible] लग रहा है। और आप [illegible] [illegible] का दूसरा हमारे पीठ का ऊपर [illegible] आशीर्वाद का भार पड़ा है। [illegible] [illegible] [illegible] नहीं है। हम समझते हैं कि इस का [illegible] दोनों को निभाना [illegible] [illegible] होगा। [illegible] [illegible] समाज [illegible] [illegible] रहा है। हम [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

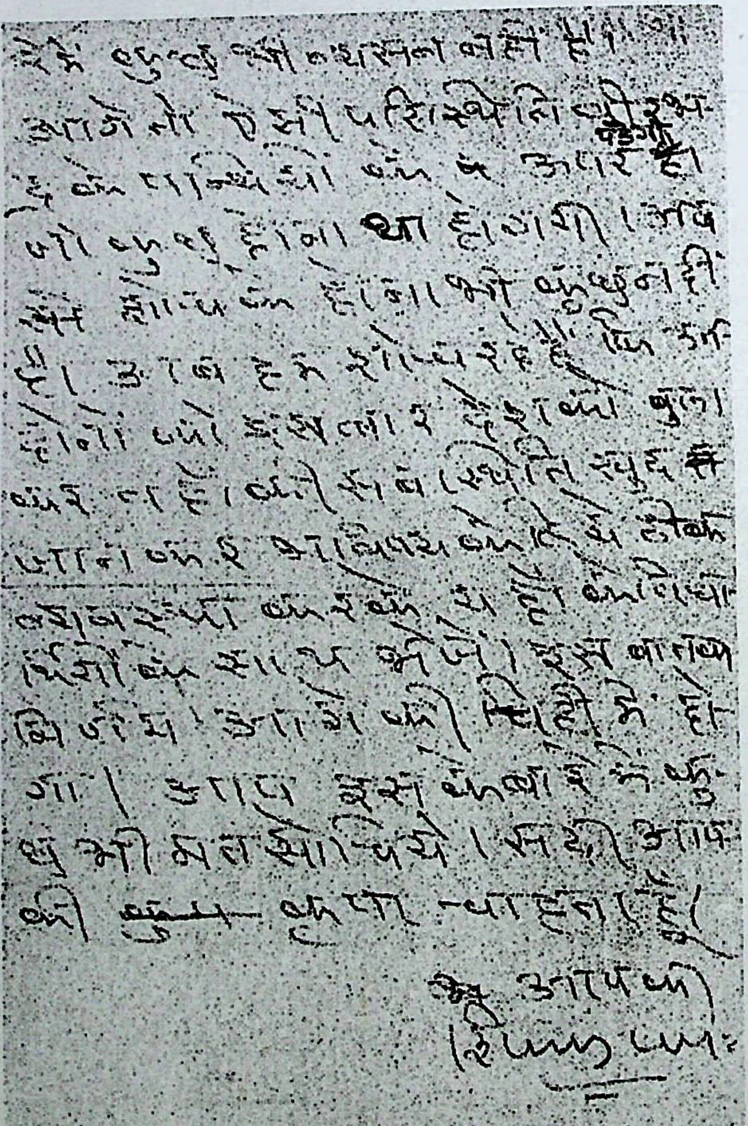

मैं कुछ भी [illegible] नहीं हो पाता।
आज जो ऐसी परिस्थिति [illegible]
[illegible] आई है।
जो कुछ होना था हो गया। अब
[illegible] होना भी कुछ नहीं
है। आज हम सोच रहे हैं कि [illegible]
[illegible] को इस प्रकार [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] आप [illegible]
[illegible] आप
को [illegible] चाहता हूँ।

आपका
[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

132(45-46

|| ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ||
ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ
ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು
ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳು

ತಾ|| ೩...೬...೪೬

ಮೊಕ್ಕಾಂ बीकर
संस्कृतशाला

परम पूज्य गुरुदेव !

सादर सविनय प्रणाम,

बहुत दिनसे मैंने पत्र नहीं लिखा। इसलिये आपसे क्ष-
मा चाहता हूँ। इधर बहुत काम के गड़बड़ में पत्र लिखना
छोड़ दिया था। बार बार प्रार्थना करता हूँ कि मेरा इस
अपराध का क्षमा करें। इस साल हमारे देश में खास
कर मेरे प्रान्त में वर्षा नहीं होने के कारण मेरा
सब अन्दाजा उलटा हो गया है। इसको संभाल-
ने में मैं व्यग्र था। इसलिये मैंने आपको चिट्ठी
नहीं भेजा। भरोसा है कि इस महीने के बाद
मैं कुछ मेरी परिस्थिति सुधर सकेगी। यहाँ तो
बहुत लोग [illegible] अनाज के अभाव से घबरा
गये हैं। सरकार भी कोशिश करती है, परन्तु
अनाज बाँटने में लोग असमर्थ हो रहे हैं। आगे
क्या दशा होगी, कल्पना करना मुश्किल है।
हमारे चार होस्टलों में लगभग चार सौ छात्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन सब की व्यवस्था करना मुश्किल है। फिर भी और बाकी तीन महीने किसी तरह से मिल जाते हैं। गौरीशङ्कर इसी शाला में कुशल से हैं। हमारे यहाँ के विद्यार्थियों के पत्र से आपका कुशल वार्ता मिलती ही रहती है।

यहाँ तो और कोई विशेष नहीं है। बीस्टर हास्टल का बिल्डिङ्ग तयार हो रहा है। सरकार से रु 25000) रुपये मिले हैं। काम शुरु हुआ है। भाई महादेवप्पा नमस्कार आपको समर्पित करते हैं।

पत्र न लिखने का अपराध जो मेरे ऊपर है उसे क्षमा करने की प्रार्थना पुनः करता हूं।

भवदीय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

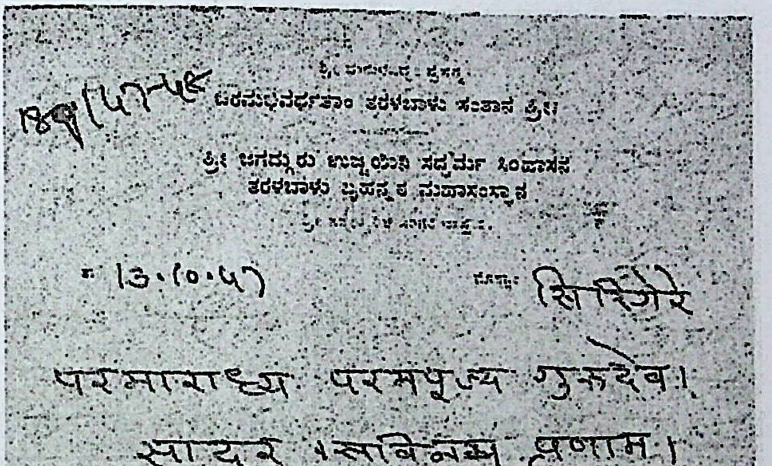

ಶ್ರೀ ... ಪ್ರಸನ್ನ

... ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ... ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ

13.10.57 ... सिरिगेरे

परमाराध्य परमपूज्य गुरुदेव।

सादर। सविनय प्रणाम।

आप का कृपाशीर्वाद पत्र मिला। परन्तु बहुत दिन से मैंने आपको कोई भी पत्र नहीं लिखा। कारण तो यह है कि मैं बहुत संसट में फंस गया था। लिखने में उत्साह ही नहीं होता था। एक के बाद एक विपत्त आती ही रहती है। दुःख तो आर्थिक विपत्त तो

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सदा से है ही। इसलिये मैं निस-
न्देह होकर आपको पत्र
लिखना छोड़ दिया। कृपया
कर इस अपराध को क्षमा
कीजै।
यहाँ आजकल कांग्रेस आन्दो-
लन चला है। लेकिन सरकार
ने [illegible] कुछ प्रमुखों को जाना-
[illegible] बाहर जाना है।
और सब कुशल है। आशी-
र्वाद पत्र भेजियेगा।
इति शीघ्रं यच्छ पत्रम्। भवदीय
शिवकुमारः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्रावलिः

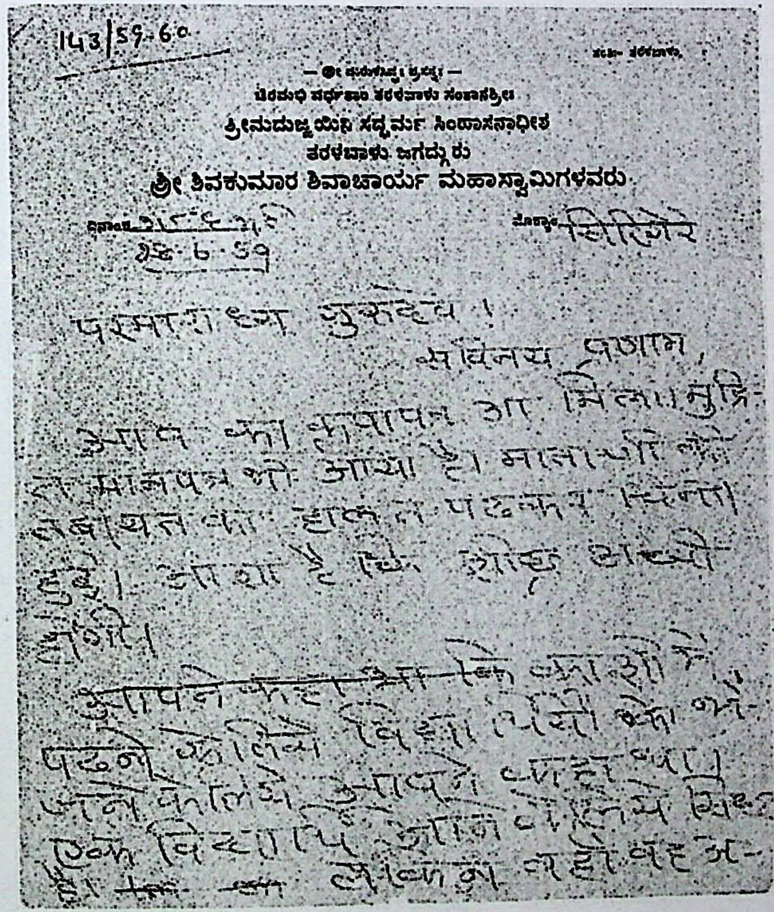

143/59-60

ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ

ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು

ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳವರು

ದಿನಾಂಕ [illegible]
28-6-59 ಮೊಕ್ಕಾಂ ಸಿರಿಗೆರೆ

परमाराध्य गुरुदेव !

सविनय प्रणाम,

आप का कृपापत्र आ मिला। [illegible] मानपत्र जो आया है [illegible] तबियत का हाल न पढ़कर चिन्ता हुई। आशा है कि शीघ्र अच्छी होंगी।

~~आपने कहा था कि~~ काशी में [illegible] पढ़ने भेजिये। विद्यार्थियों को [illegible] आपने [illegible] छात्र विद्यार्थी [illegible] लेकिन नहीं [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

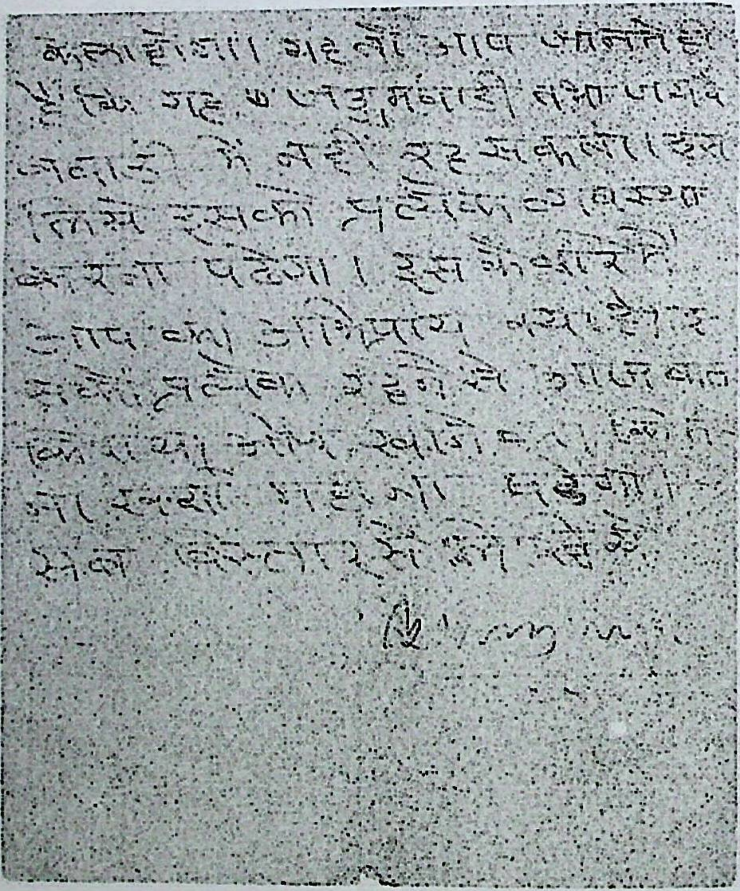
कहना होगा। यह तो आप जानते ही
हैं कि यह [illegible]
[illegible] में नहीं रह सकेगा। इस
लिये इसको [illegible]
करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में
आप का अभिप्राय क्या है? [illegible]
[illegible] होने से आजकल
[illegible]
[illegible] पहुँचा।
[illegible] हैं

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

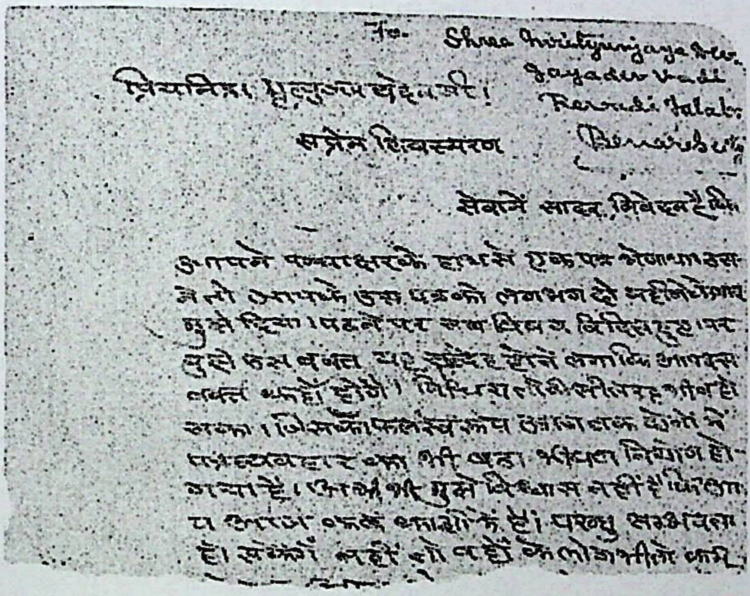

To- Shree Mrityunjaya Dev.
Jayadev Vadi
Ravudi Talab
Benares [illegible]

प्रियमित्र! मृत्युञ्जय देवजी!

सप्रेम शिवस्मरण

सेवामें सादर निवेदन है कि

आपने पत्रवाहक के हाथसे एक पत्र भेजा था उस
में तो आपने उक्त पत्रको लगभग दो महीने के बाद
मुझे दिया। पढ़ने पर सब विषय विदित हुए। पर
मुझे इस वक्त यह संदेह होने लगा कि आपका
उत्तर नहीं होगा। [illegible]
सकता। [illegible] दोनों में
[illegible]
[illegible] मुझे विश्वास नहीं है [illegible]
[illegible] परन्तु सम्भावना
है। [illegible] नहीं तो नहीं [illegible]

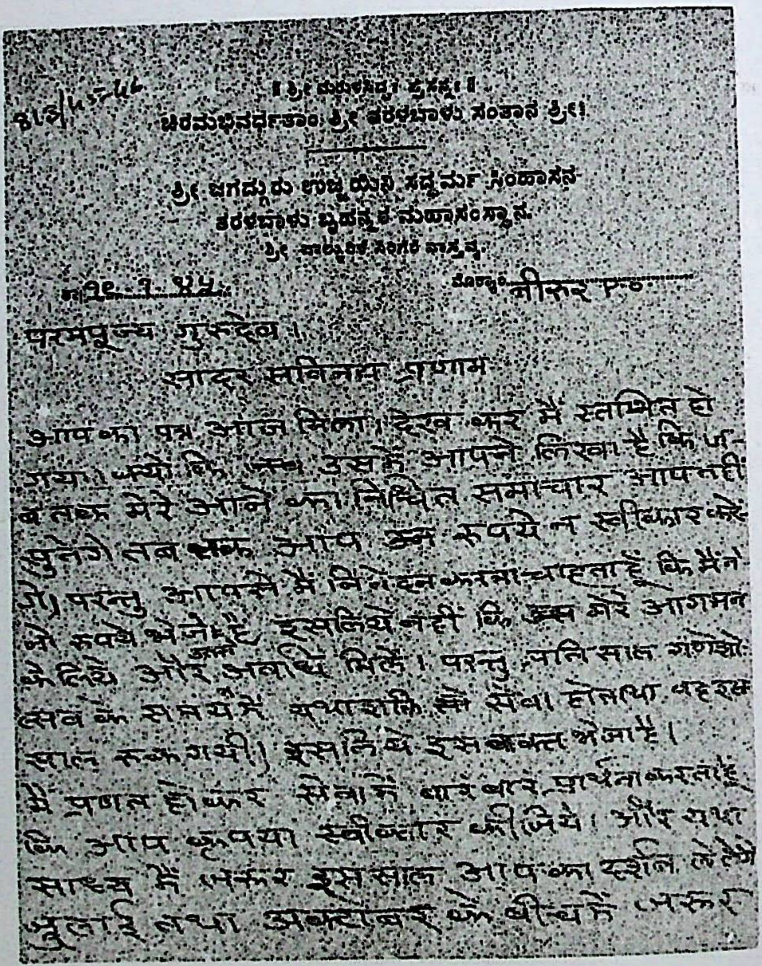

८१/४५-४६

॥ ಶ್ರೀ ಮರುಳಸಿದ್ಧ ಪ್ರಸನ್ನ ॥
ಚಿರಮಭಿವರ್ಧತಾಂ ಶ್ರೀ ತರಳಬಾಳು ಸಂತಾನ ಶ್ರೀಃ

ಶ್ರೀ ಜಗದ್ಗುರು ಉಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನ
ತರಳಬಾಳು ಬೃಹನ್ಮಠ ಮಹಾಸಂಸ್ಥಾನ
ಶ್ರೀ ...

ता १९-१-५५   ಮುಕ್ಕಾಂ नीरूर P.O.

परमपूज्य गुरुदेव।

सादर सविनय प्रणाम

आपका पत्र आज मिला। देख कर मैं स्तम्भित हो
गया। क्यों कि उसमें आपने लिखा है कि ज-
ब तक मेरे आने का निश्चित समाचार आप नहीं
सुनेंगे तब तक आप रुपये न स्वीकार करें
गे। परन्तु आपसे मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि मैंने
जो रुपये भेजे हैं इसलिये नहीं कि मेरे आगमन
के लिये और उनको अवधि मिले। परन्तु प्रति साल गणेशो-
त्सव के समय में यथाशक्ति जो सेवा होती थी वह इस
साल रुक गयी। इसलिये इस वक्त भेजा है।
मैं प्रणत होकर सेवा में बार बार प्रार्थना करता हूँ
कि आप कृपया स्वीकार कीजिये। और यथा
साध्य मैं जरूर इस साल आपका दर्शन लेऊंगा
जुलाई तथा अक्टोबर के बीच में जरूर

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आने का निश्चय किया है। वहाँ तक
तो मुझे किसी तरह से फुरसत नहीं मि-
लेगी। परन्तु आप का पत्र देखने
के बाद मैं ने यह निश्चय कर लिया
है कि जरूर इस साल मैं आपका
दर्शन लेऊँगा।

कृपया तब तक अवकाश देने के लिये
प्रार्थना करता हूँ।

इस साल जरूर मैं आऊँगा। आ-
प निश्चय समझ लीजिये। अभी से
ही उसके लिये मैं सब सिद्ध कर लेंगे

भवदीय०

शिवकुमार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

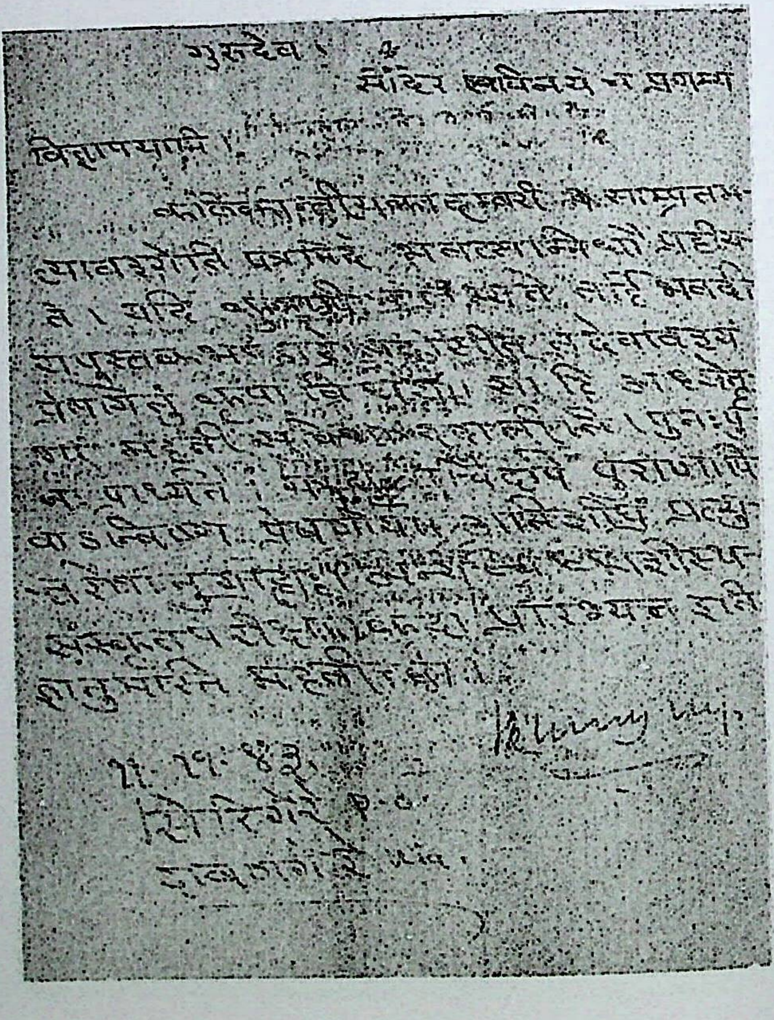

गुरुदेव !

सादरं अभिवादये च प्रणमामि

विज्ञापयामि !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

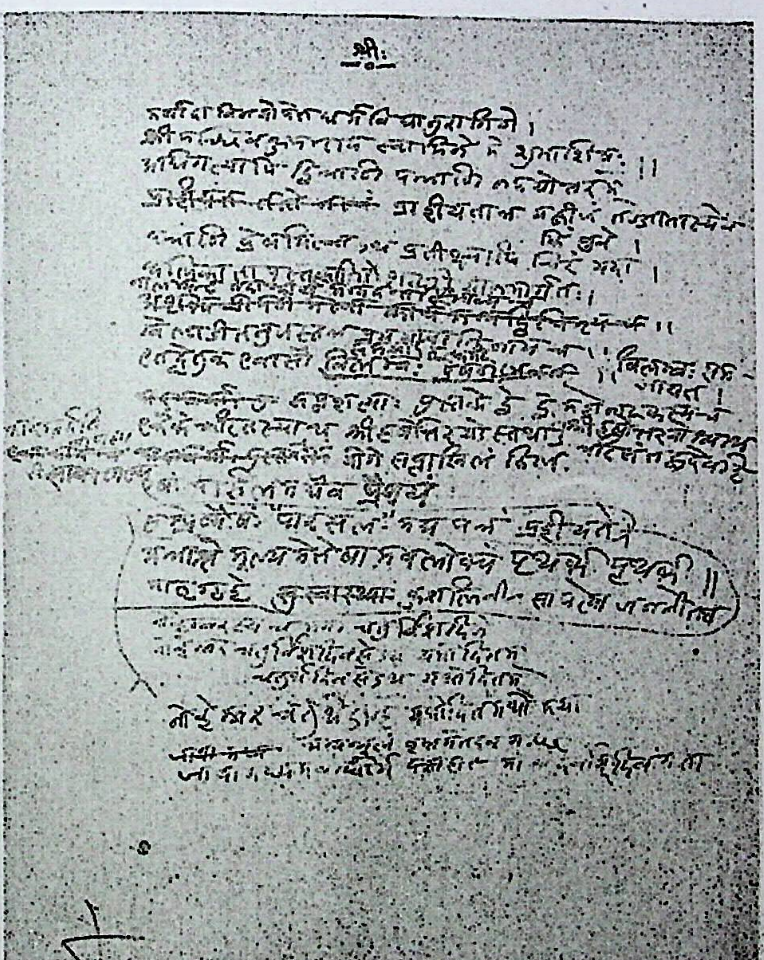
श्रीः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು

ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳವರು

सिरिगेरे

आशिषः,

आङ्ग्लभाषा तव समीचीना वर्तते। ए-
वमेव संस्कृतभाषाऽपि वृद्धिं गच्छतीति
विश्वासोऽस्माकम्। भाषणेन वाचनशक्तिः
लेखनेन लेखनशक्तिः वर्धते। तस्मात्
प्रतिदिनं संस्कृतभाषयैव पत्रं लेख्यम्।
पूर्वमस्माकं लेखनशैली रम्याऽऽसीत्।
इदानीं लेखनपरिपाठस्य त्यागात्
सर्वथा भ्रष्टाऽभवत्।
अद्य [illegible]

P.T.O. इत्याशिषः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

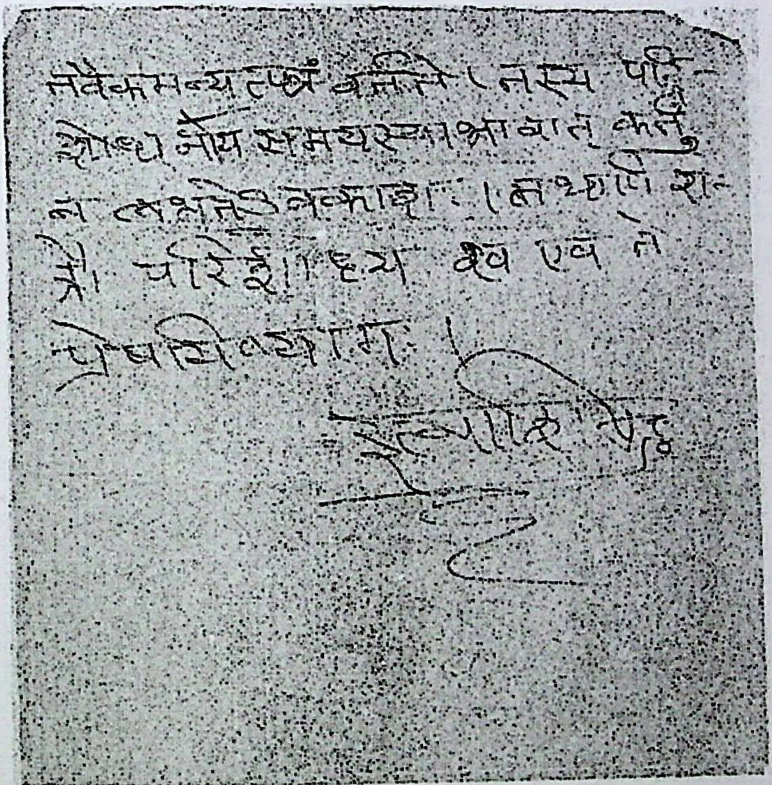

नैवैकमत्यं तत्र वर्तते। तस्य परि-
शोधनाय समयस्याभावात् कर्तुं
न लभ्यतेऽवकाशः। तथापि श-
नैः परिशोध्य श्व एव ते
प्रेषयिष्यामः।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

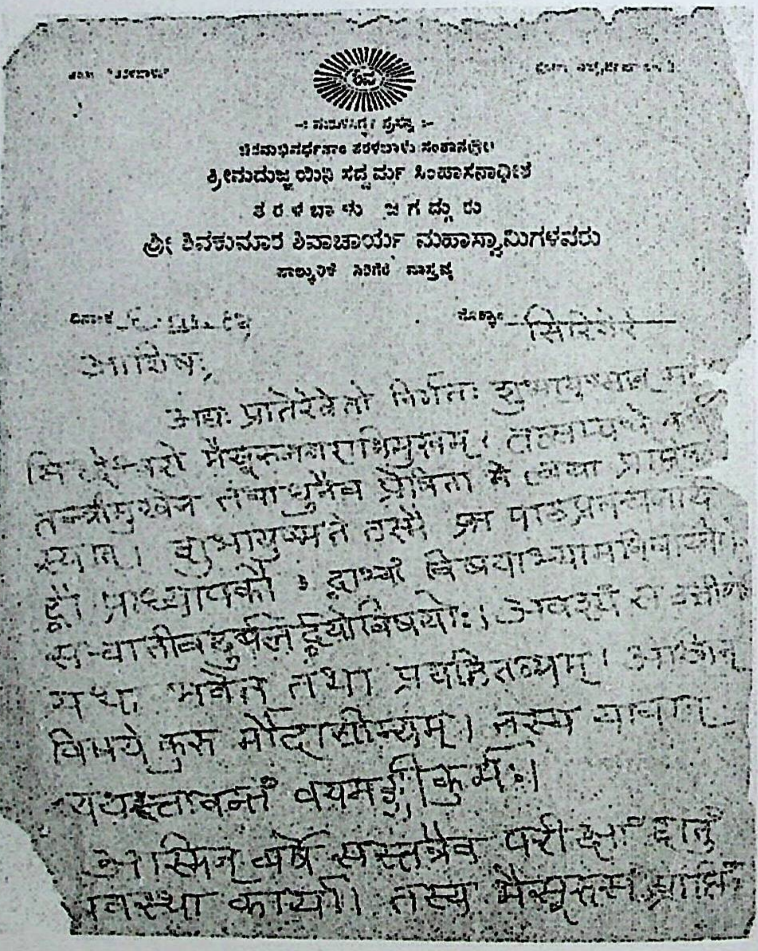
ಶ್ರೀಮದುಜ್ಜಯಿನಿ ಸದ್ಧರ್ಮ ಸಿಂಹಾಸನಾಧೀಶ

ತರಳಬಾಳು ಜಗದ್ಗುರು

ಶ್ರೀ ಶಿವಕುಮಾರ ಶಿವಾಚಾರ್ಯ ಮಹಾಸ್ವಾಮಿಗಳವರು

[illegible] ಸಿರಿಗೆರೆ [illegible]

सिरिगेरे

आशिष:,

अद्य प्रातरेवेतो निर्गतः [illegible] सिरिगेरेतो मैसूरुनगराभिमुखम्। [illegible] तन्मध्ये [illegible] [illegible]

शुभाशुभं [illegible] [illegible] विषयो: [illegible] प्रवर्तितव्यम्। [illegible]

[illegible] वयमत्र [illegible]

[illegible] परीक्षां [illegible] व्यवस्था कार्या। तस्य मैसूरुनगरे [illegible]

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

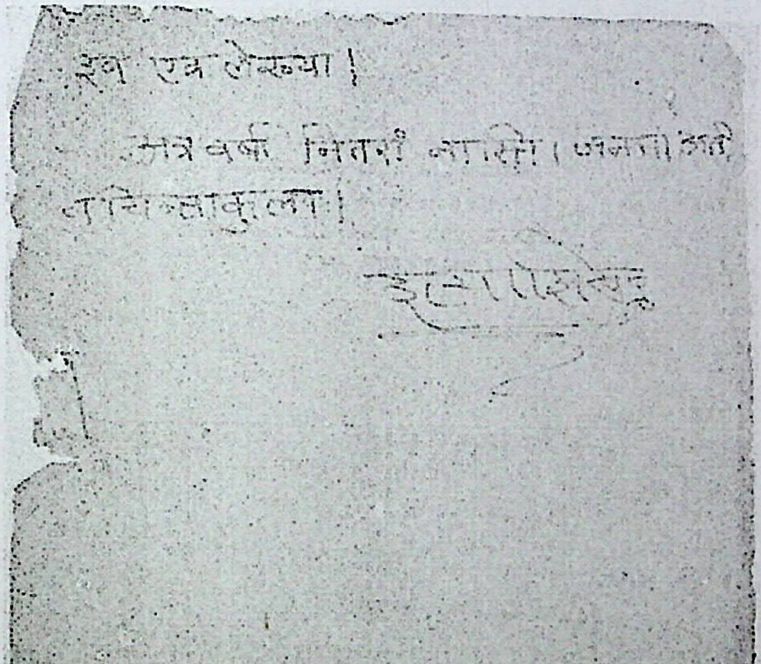
इत एव लेखन्या ।
अत्र वर्षा नितरां नास्ति । जनता अति व्याकुला ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

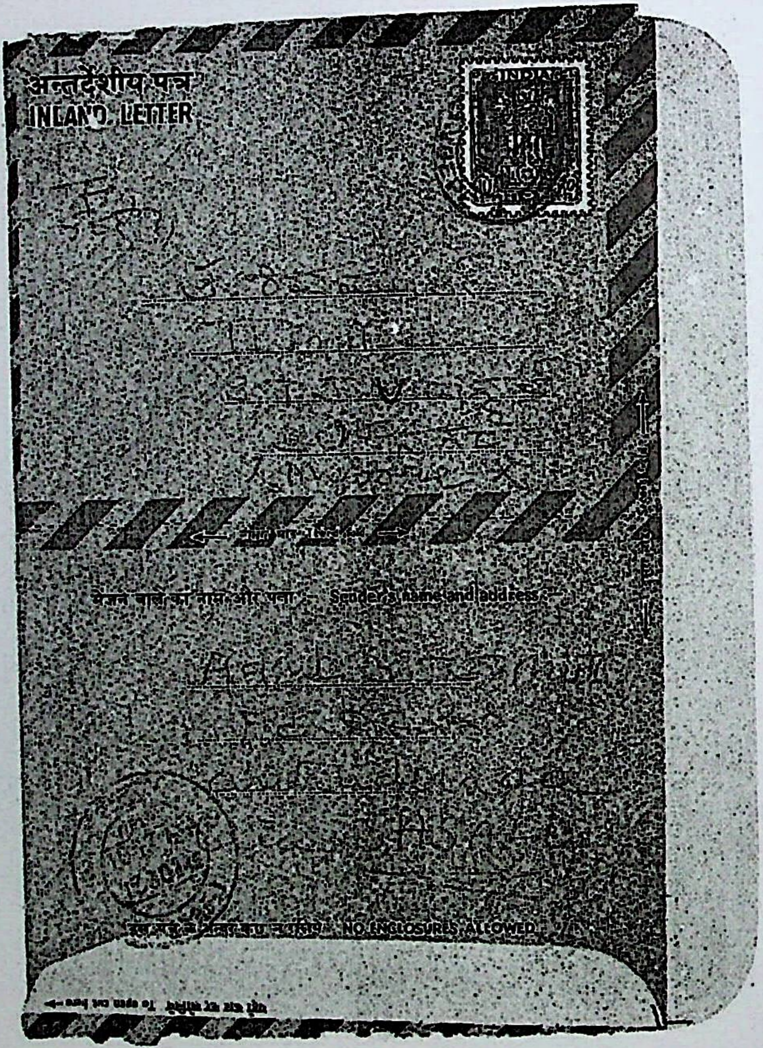

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible],   ८. ११. ७१
                                                १९७१

कौमुदीपाठस्यारम्भोऽतीवशीघ्रं का-
र्यः। दिसेम्बरमासस्य तथा एप्रिल
मे मासयोर्विरामदिनानि कौमुदी-
पाठाय नियतानि स्युः। सर्वे
स्युः।
एक एव वर्षो मे सुखवासस्य शेषः।
मे सुखवासावधौ कौमुदी चेत् सम्य-
क् पठिता। संस्कृते प्रौढिमा व-
र्धते। का हिन्दीपरीक्षा इदानीं
तव वर्तते लिख्यताम्।
बि.ए परीक्षानन्तरं तवाभ्या-
सः काश्यां हिन्दूविश्वविद्याल-
ये इति निश्चितः। तत्र तवाभ्या-
सो वर्षचतुष्टयपर्यन्तं [illegible]
नी हि। एम.ए तथा पि.एच.डि
परीक्षा तत्रैव भवितव्या।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एतदवध्यौ संस्कृतस्य प्रत्ये-
कतयाऽभ्यासः, महाराष्ट्र-वङ्ग,
भाषाशिक्षणमावश्यकम्।
एवमेव दाक्षिणभारतीये
आन्ध्रतमिलुभाषेऽभ्यासेस-
क्य इति निश्चिनु।
उत्तरभारतस्य इच्छा
हिन्दी-महाराष्ट्र-वङ्ग इति-
तिस्रो भाषाः, दाक्षिणभार-
तस्य इच्छा। कर्नाटक
आन्ध्र-तमिलु इति तिस्रः,
आखिलभारतस्य
इच्छा संस्कृतभाषा,
तथाऽन्तरा राष्ट्रीयइच्छा
आङ्ग्लभाषावश्यमेव यनी-
या। P.T.O. इत्यादि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तव यानि विद्यार्थिप्रिया-
णि तथा परिचितानि स्नेह-
परा अध्यापकाः सन्ति
तेषु प्रचलिते पत्रव्यवहारे
~~[illegible]~~ अयाङ्ग्लभाषा
प्रयोक्तव्या ।
यत्पत्रं राजशेखरमहोदयस्य
लिखितमातृभाषया तत्
प्रशंसनीयमस्तीति
राजशेखरेण कथितम्
इत्याशिषः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इदं पत्रं भवद्भ्यः [illegible] । आर्मेनियन पत्रे यल्लिखितं तत्सर्वं पठ । तथा सर्वे ते मित्रेभ्यो [illegible] वद ।

इदानीं वयं तरङ्गबाधुपूर्णिमायां भारते लिखामः । [illegible] च सर्वत्र गतानि [illegible] । तव तुभ्यमप्येकमनः [illegible] । अद्य [illegible] एकः स्वामी [illegible] संस्कृतभाषायां सल्लापरूपेण [illegible] भारते प्रसारयामासः । [illegible] संस्कृते पत्रं लिख ।

तव [illegible] पत्राणि [illegible] सर्वेभ्योऽस्माभिः [illegible] । बहूनि [illegible] संस्कृते [illegible], तस्मात् [illegible] अस्माकमपि बहवो दोषा भवन्ति । तथापि [illegible] संस्कृते स्वर्ग भवति ।

[illegible] सामान्यं वर्तते । तथापि [illegible] । [illegible] इदानीं पूर्णिमा [illegible] । तत्र [illegible] बहूनि [illegible] सन्ति । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] अस्माकम् । [illegible] । [illegible] [illegible] । [illegible] । [illegible] लिख, यथा [illegible] ।

[illegible] अपि वयं [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] ।

[illegible]
[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी (१९३७)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

बाए से बैठे हुए : जाबालपुरि श्रीमठके श्री प्रभुलिंग स्वामीजी श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी
बाए से खड़े हुए : मैसूर में श्री तरळबाळु जगद्गुरु विद्यार्थी निलयके निर्माण में मुख्य कार्यकर्ता [illegible] और गुरिकार् श्री बसवलिंगप्पाजी (१९३७)

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाये से श्री हेच् सिद्धवीरप्पाजी श्री रामस्वामीजी डीसी., श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी
जगलूरु श्री इमाम् साहेबजी श्री जी. चन्नाप्पाजी और पारुपत्यगार श्री शिवलिंगप्पाजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

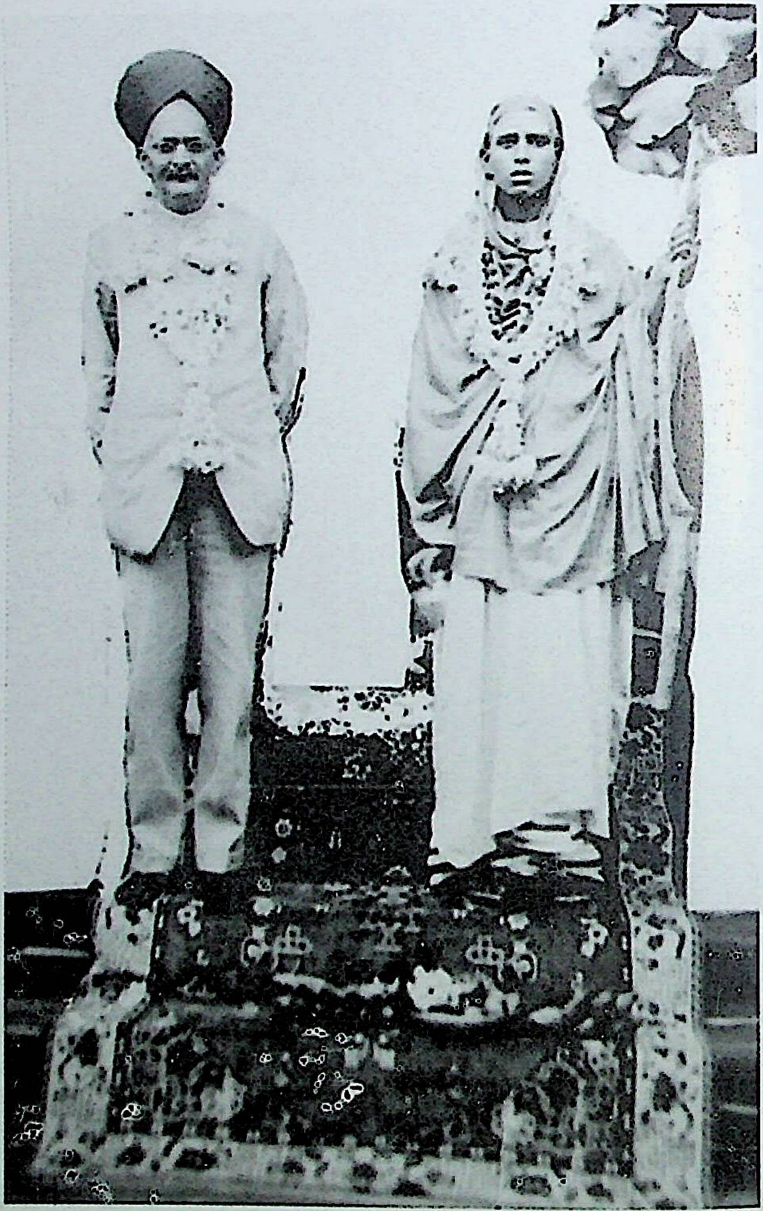

श्री चन्नराज अरस् डी. सी. हासन्

श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री शिवकुमार
शिवाचार्य महास्वामीजी हासन् जिल्ला के
यलहंक मठ को पट्टाभिषेक्तहोने का संदर्भ (२.८.१९३३)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

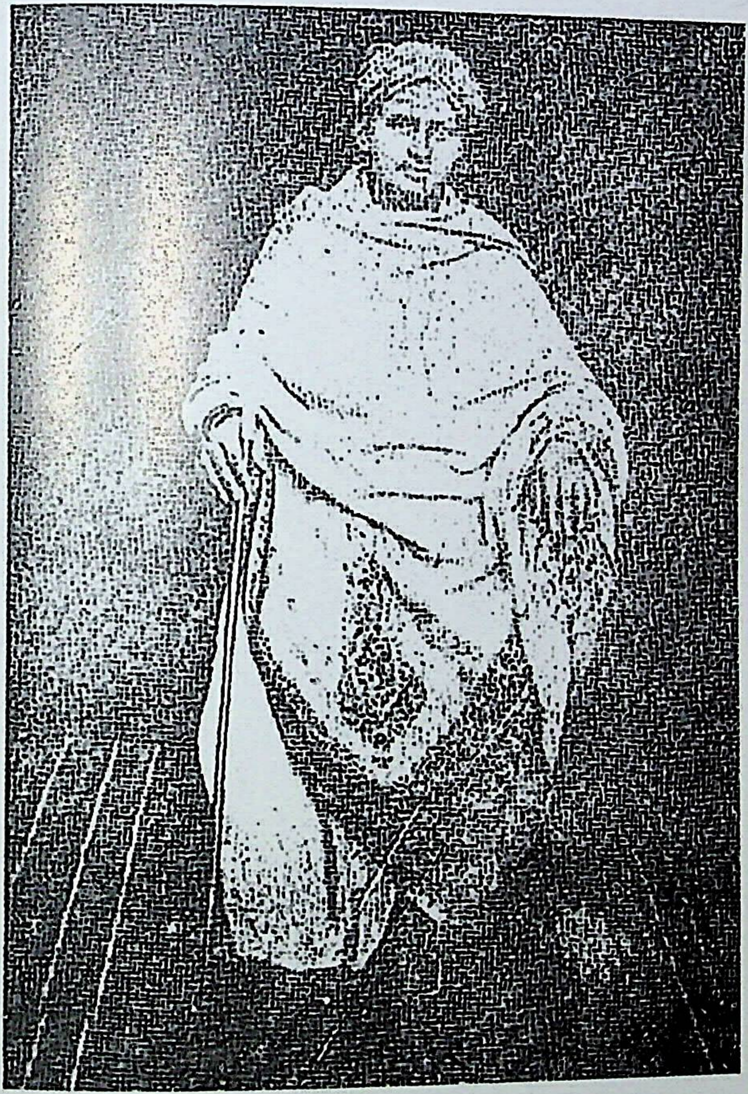

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

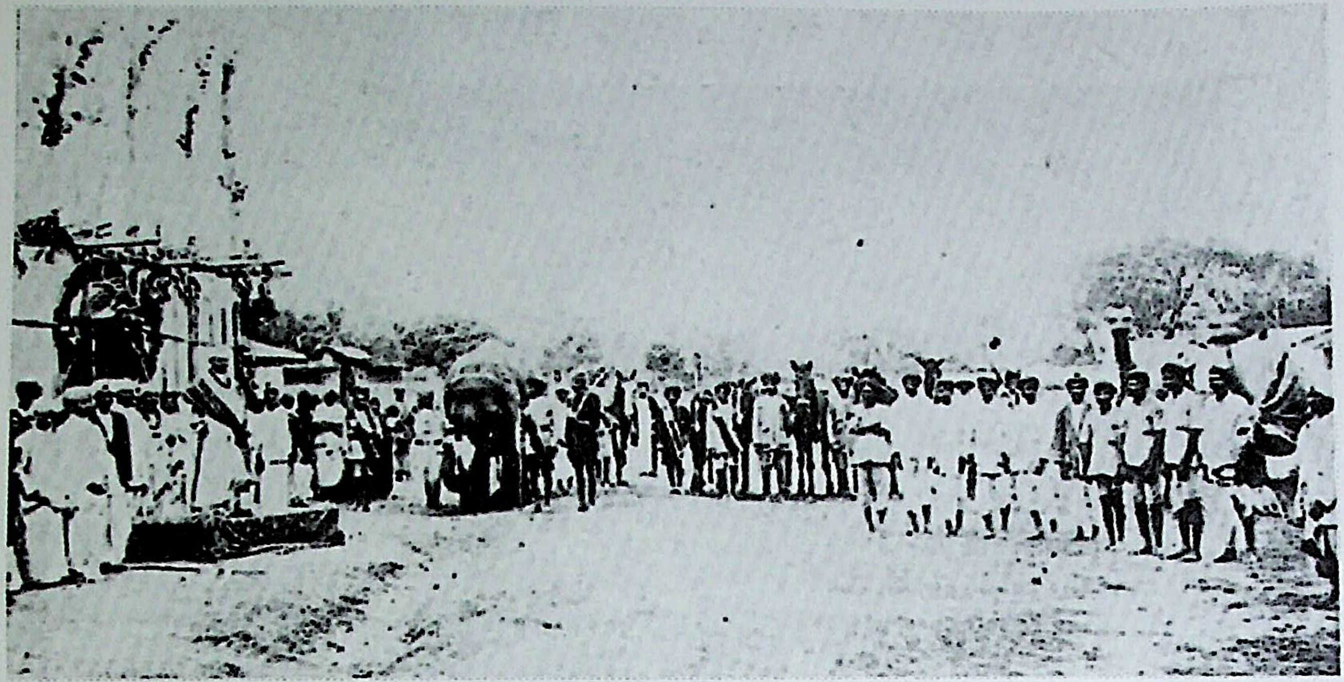

श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री गुरुशांतराज देशीकेंद्र महास्वामीजी बीदर के [illegible] का शुभ संदर्भ में

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री तरळबाळु जगद्गुरु
श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी (१९४०)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी सिरिगेरे में पट्टाभिषेक का शुभसंदर्भ में (१९४०)

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

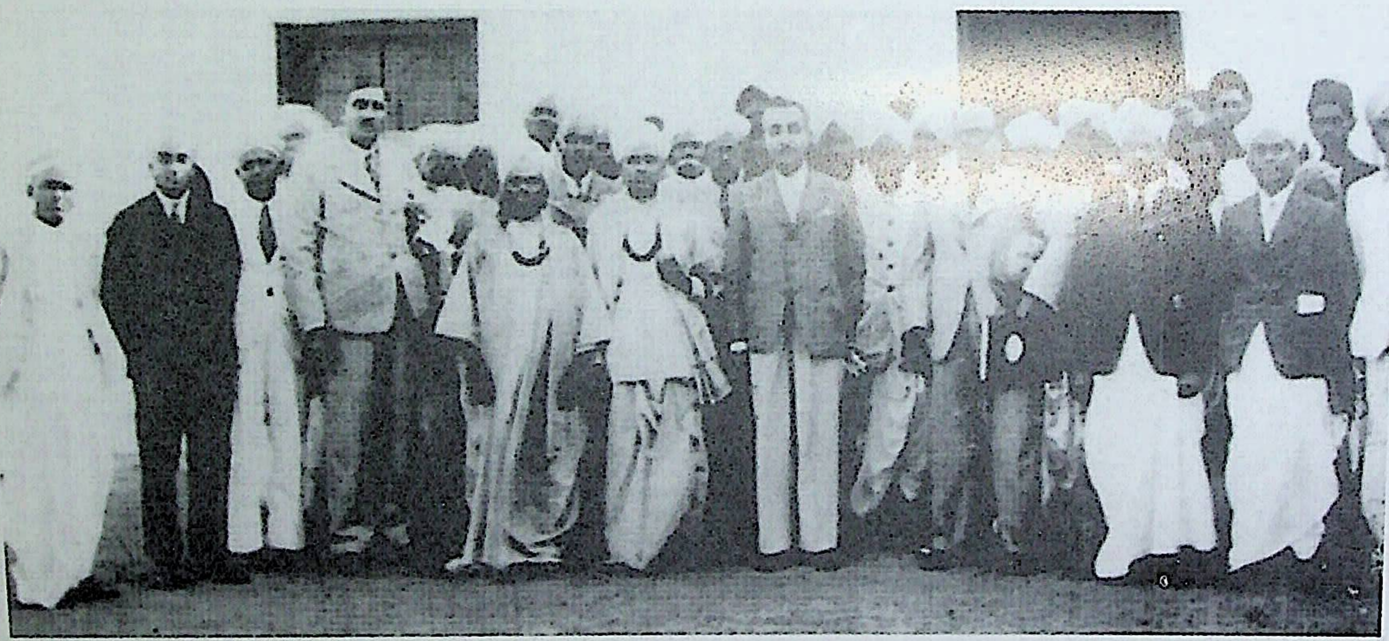

बाये से : श्री हेच् सिद्धवीरप्पाजी(१), जगळूर श्री इमाम् साहेबजी(४), श्री काशी महालिंग स्वामीजी(५), श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी(६), मैसूर का दीवान् सर् मिर्जा इस्माइल्जी(७), श्री जी चन्नाप्पाजी (दायिने कोने में)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समाज के प्रमुख व्यक्ति श्री एल् सिद्धाप्पाजी, श्री तरळबाळु जगद्गुरु श्री शिवकुमार शिवाचार्य महास्वामीजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री तरळबाळु जगद्गुरु बृहन्मठ, सिरिगेरे-५७७ ५४१, चित्रदुर्ग जिला, कर्नाटक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi